आईकास ज्योतिष श्रृंखला

अष्टकवर्ग
भाग्य बिन्दु

विनय आदित्य

अष्टकवर्ग
भाग्य बिन्दु

विनय आदित्य
बी.टेक.-आई.आई.टी. कानपुर
ज्योतिष भानु (आईकास)

R.V.S BOOK DISTRIBUTOR
VEDIC ASTROLOGY NUMBERLOGY, VASTU, TANTRA & MANTRA, YANTRA, AND PIOUS, AYURVEDIC ETC.
G-4/30, Gali Vo. 3, 5th Pusta, Sonia Vihar, Delhi-110090
(M)9953918219, 8750874336

अष्टकवर्ग भाग्य बिन्दु

मूल पुस्तक DOTS OF DESTINY का हिन्दी अनुवाद

लेखक

विनय आदित्य

© विनय आदित्य

प्रथम प्रकाशन (हिन्दी) : सितम्बर 2005

द्वितीय संस्करण : फरवरी 2016

तृतीय परिवर्द्धित संस्करण : जून 2023

प्रकाशन:

परीक्षा नियंत्रक भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद्

नं. 418, 15वां क्रॉस, 12वां मेन, पूर्णप्रगना नगर,

उत्तरहल्ली, बैंग्लुरु-560 061

ई-मेल: controllerofexaminations@gmail.com

www.eshopicas.com • www.icasindia.org

मुखपृष्ठ सज्जा: विनय आदित्य

पृष्ठ सज्जा: यशवंत रावत

मुद्रण: प्रिन्टफोर्स, दिल्ली-110 092

ई-मेल: rawatys2011@gmail.com

मूल्य: ₹ 350/-

ISBN: 978-81-954998-3-0

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्कर प्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वती ॥

भगवान शंकर की प्रिया हे अन्नपूर्णा माँ,
आप स्वयं में परिपूर्ण हैं।
अतः हे पार्वती माँ,
आप हमें ज्ञान एवं वैराग्य सिद्ध करने की भिक्षा दें।।

समर्पण

पूज्य पिता स्व. श्री क्षितीश वेदालंकार की मान्यता थी कि मनुष्य जीवन तभी सफल कहा जा सकता है जब:

- कम से कम एक सन्तान हो;
- कम से कम एक मकान बनाया हो;
- कम से कम एक पेड़ लगाया हो;
- कम से कम एक पुस्तक लिखी हो।

उनका अपना जीवन इन चारों मानकों पर खरा उतरता है। उन्होंने 22 पुस्तकें, अनगिनत लेख व संपादकीय लिखे। यह मेरी प्रथम हिन्दी पुस्तक उनके श्री चरणों में समर्पित है।

---

* *सूत्रत: व्यक्ति समाज के सर्वांगीण विकास में इन चार कार्यों द्वारा अपने बहुविध कर्त्तव्य पूरे करता है:*

- प्रथम कार्य मानव जाति की निरन्तरता एवं पितृऋण से उऋण होने के लिए आवश्यक है।
- द्वितीय कार्य आर्थिक समृद्धि एवं शांतिपूर्ण रहन-सहन के लिए आपके पुरुषार्थ का द्योतक है।
- तृतीय कार्य पर्यावरण चेतना और सुरक्षा को इंगित करता है।
- चतुर्थ कार्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान-विज्ञान के विकास एवं प्रसार में आपके योगदान को रेखांकित करता है।

विषय सूची

	प्रथम एवं तृतीय हिन्दी संस्करण की भूमिका	vii
	मूल पुस्तक के प्रथम संस्करण की भूमिका (1996)	x
	मूल पुस्तक के द्वितीय संस्करण की भूमिका (1998)	xii
	आमुख	xvii
	परीक्षा-नियंत्रक की कलम से	xix
1.	अष्टकवर्ग : भारतीय ज्योतिष की एक विशिष्ट विधि	1
2.	अष्टकवर्ग गणित	6
3.	सर्वाष्टकवर्ग: नियति के संचित बिन्दु	16
4.	लुढ़कते ताज, डोलते सिंहासन	29
5.	कक्ष्या : सूक्ष्म काल निर्धारण	49
6.	ग्रहों के भिन्नाष्टकवर्ग: सामान्य प्रवृत्तियां	54
7.	सूर्य का अष्टकवर्ग	58
8.	चन्द्रमा का अष्टकवर्ग	61
9.	मंगल का अष्टकवर्ग	65
10.	बुध का अष्टकवर्ग	68
11.	बृहस्पति का अष्टकवर्ग	74
12.	शुक्र का अष्टकवर्ग	81
13.	शनि का अष्टकवर्ग	89
14.	विशिष्ट व्यक्तियों के उदाहरण	93
15.	शोधन एवं शोध्य पिंड	113
16.	शोध्य पिंड का प्रयोग: एक मानक विधि	128
17.	विंशोत्तरी दशा एवं अष्टकवर्ग	144
18.	आयु विचार	150
19.	एकादश कहां से (इन्दु लग्न)	158
20.	विवादास्पद विषय	180
	परिशिष्ट: सर्वशंसाचक्र	191

उदाहरण कुंडलियों की सूची

जे. एफ. कैनेडी	9, 101
मिस्र का बादशाह फारुख़	31
हैदराबाद के निज़ाम	34
ड्यूक ऑफ विण्ड्सर	37
सम्राट जार्ज (VI)	40
महारानी ऐलिज़ाबेथ-II	42
महारानी विक्टोरिया	47
के. एन. राव	71
अटल बिहारी वाजपेयी	77
पी. वी. नरसिंह राव	83, 94, 163
राजीव गांधी	96
इंदिरा गांधी	98
शंकरदयाल शर्मा (पूर्व राष्ट्रपति)	105
डी. एन. दीक्षित	107
जोसेफ स्टालिन	109
अमिताभ बच्चन	167
डॉ. दीपक चोपड़ा	170
प्रिंस चार्ल्स	143
जेफ बीजोज़	179

प्रथम हिन्दी संस्करण की
भूमिका

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण अंग्रेजी* में सन 1996 में आ गया था, किन्तु हिन्दी संस्करण बनाने में नौ वर्षों का लम्बा समय निकल गया। इस अन्तराल में अनेक बार अपने ही विद्यार्थियों की झिड़कियां सुननी पड़ीं कि यह पुस्तक हिन्दी में उपलब्ध क्यों नहीं है। इस कारण हिन्दी का प्रथम संस्करण पाठकों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष एवं सन्तोष है कि अन्ततः.....।

हिन्दी पाठकों की अपनी ही प्रकार की अलग संवेदनशीलता को ध्यान में रखकर इस पुस्तक को अंग्रेजी की मूल पुस्तक का अनुवाद मात्र नहीं रहने दिया गया है। आशा है कि पाठकों को पुस्तक का यह पक्ष पसन्द आएगा।

तृतीय हिन्दी संस्करण की भूमिका

भाग्यबिन्दु के प्रथम संस्करण के प्रकाशन को 17 वर्ष हो गए हैं। दूसरा संस्करण 2016 में प्रकाशित हुआ था। प्रयत्न रहता है कि हर नया संस्करण परिमार्जित और परिवर्धित बने और उसमें उस सबका समावेश रहे जो इस अन्तराल में हमने नया सीखा हो अथवा जिस प्रविधि का उपयोग/प्रयोग किया हो।

पाठकों द्वारा इस पुस्तक को जो स्नेह एवं प्रशंसा मिली उससे मुझे कुछ नफा और कुछ नुकसान भुगतना पड़ा। 'प्रशंसा' के कारण मुझे देश-विदेश से अष्टकवर्ग पर प्रस्तुतियां देने के लिए अनेक निमंत्रण मिलते रहे, यह नफा हुआ। नुकसान यह हुआ कि मेरी छवि ऐसी बन गई कि अष्टकवर्ग के बाहर

---

*Dots of Destiny: Applications of Ashtakavarga

यह व्यक्ति किसी काम का नहीं होगा। मैं अपने ही बनाए हुए पिंजरे में कैद हो गया। इस छवि से बाहर आने में मुझे बड़ा परिश्रम एवं समय लगा। परिणामतः मुझे अष्टकवर्ग के बाहर कुछ सारगर्भित और ठोस विषयों की खोज करते रहने की आदत डालनी पड़ी।

किन्तु यहां हम केवल अष्टकवर्ग के बारे में ही बात करेंगे। इस यात्रा में मेरे सम्मुख अनेक प्रश्न उपस्थित हुए। एक है- यदि ग्रह के अष्टकवर्ग में बिन्दु कम हों किन्तु उसका षड्बल प्रबल हो तो क्या समझना चाहिए। महात्मा गांधी के दूसरे भाव में शनि अवस्थित है और वहां भिन्नाष्टक में उसके '0' बिन्दु हैं। शनि के षड्बल में 100 प्रतिशत से ऊपर हैं और वह सर्वाधिक बली है। हमारे शोध के अनुसार महात्मा गांधी के जीवन की घटनाएं बिन्दु-रहित शनि के अनुसार रहीं हालांकि उनके वैराग्य-भाव पर कभी किसी ने उंगली नहीं उठाई सिवाय उनके 'ब्रह्मचर्य के प्रयोगों' के। इसके विपरीत अटल बिहारी वाजपेयी की वृश्चिक लग्न की कुंडली के बृहस्पति के भिन्नाष्टक में तीन स्थानों पर— द्वितीय भाव जहां बृहस्पति स्वगृही बैठा है, पंचम स्थान जहां का वह कारक है और एकादश भाव। फिर भी आधिकारिक तौर पर उनकी कोई संतान नहीं थी। लेकिन उनके पास वाक्पटुता और भाषण देने की कला अवश्य थी जिसने उन्हें अपने दल का मुखिया और उसी कारण प्रधानमंत्री पद दिलवाया। यह उनके बृहस्पति के बिन्दुबली होने के कारण ही संभव हुआ। षड्बल में बृहस्पति केवल औसत (100 प्रतिशत) ही स्कोर कर पाया है। षड्बल में अटल जी का शनि भी 160 प्रतिशत के पास ही है।

अष्टकवर्ग और षड्बल के प्रभावों पर अधिक गहन विमर्श की आवश्यकता है। दोनों ही ग्रहों के बल को दर्शाते हैं किन्तु उनका मूल आधार एकदम भिन्न है। अतएव, उनके फलों में भी भिन्नता होनी चाहिए।

एक पाठक ने कुछ समय पहले मुझे एक व्यक्ति की पत्री भेजी। उसकी पत्नी ने तीसरी मंज़िल से कूदकर आत्महत्या कर ली थी। पाठक ने शिकायत भरे अंदाज़ में कहा कि इस घटना का कोई इशारा, न दशा में, न गोचर में, न अष्टकवर्ग में 'दिखाई' दे रहा है। उसकी पत्नी की कुंडली उपलब्ध नहीं थी। हमने उस पाठक को सुझाव दिया कि वह उस व्यक्ति

का नवांश बनाए और नवांश का अलग से अष्टकवर्ग बनाए, और फिर देखकर बताए। उसका फीडबैक आया कि अब सब कुछ 'दिख' रहा है।

हमारे शोध में एक क्षेत्र और ऐसा सामने आया है जिसमें अष्टकवर्ग की पैनी निगाह का उपयोग किया जा सकता है। यह क्षेत्र है आरूढ़ पदों के चार्ट पर अष्टकवर्ग (विशेषकर सर्वाष्टक) बिन्दुओं का प्रभाव। बिन्दु वही रहेंगे जो राशि कुंडली में सामान्यतः होते हैं परन्तु उनके अर्थ बदल जाएंगे। यदि पद लग्न (1P अथवा 11P) के सर्वाष्टक में अच्छे बिन्दु हैं तो यह शुभ चिन्ह है। इसी तरह हर भाव के पद के बिन्दु देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि दशम पद के बिन्दु अच्छे हैं तो यह कार्यक्षेत्र के बारे में शुभ संकेत है। यही निष्कर्ष तब निकलेगा जब पद लग्न से दशम स्थान पर अच्छे बिन्दु होंगे। 1P एवं 7P के बिन्दुओं का, या 10P एवं 11P के बिन्दुओं का या 10P एवं 5P के बिन्दुओं का तुलनात्मक अध्ययन कुछ दिलचस्प पहलुओं का खुलासा कर सकता है। नए शोधार्थियों के लिए इस पर काम करने के अच्छे अवसर हैं।

इस संस्करण में हमने इन्दु लग्न की विशिष्टताएं दर्शाने के लिए 'अमेजन' के संस्थापक जेफ बीजोज़ की कुंडली का उपयोग किया है। इन पक्तियों के लिखने के समय वे दुनिया के सर्वाधिक धनिकों की पंक्ति में 177 बिलियन डालर्स की सम्पदा एकत्र करके, प्रथम/द्वितीय स्थान पर विराजमान हैं।

कर्मठ शोधकर्त्ताओं को पुरातन ऋषियों ने अष्टकवर्ग के रूप में एक अन्तहीन विधा आशीर्वाद स्वरूप प्रदान की है। इसका समुचित उपयोग करना हमारे अपने पुरुषार्थ पर निर्भर करता है।

22 अक्टूबर, 2022 विनय आदित्य

मूल अंग्रेजी पुस्तक के प्रथम संस्करण की

भूमिका

जिन दिनों मैं भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली, में ज्योतिष की कक्षाओं में खगोल-शास्त्र पढ़ा रहा था तभी एक दिन मुझे आदेश हुआ कि मैं अष्टकवर्ग की कक्षाएं लूं क्योंकि संबंधित अध्यापक लम्बे अवकाश पर चले गये हैं। मैंने इस विषय को पढ़ाना शुरू किया और जैसे-जैसे समय बीतता गया यह मेरे दिलो-दिमाग पर छाने लगा और लिखने के लिये 'अष्टकवर्ग' का चयन इस तरह सोच समझकर नहीं, वरन संयोगवश ही हुआ। धीरे-धीरे मैं अपने काम में डूबता चला गया और अंत में मुझे इस उक्ति को स्वीकार करना पड़ा कि जब कुछ अपने किये नहीं बल्कि संयोगवश हो जाये, तो उसे विधि का विधान मानकर शिरोधार्य करना चाहिये।

वैसे, कंप्यूटर युग में 'अष्टकवर्ग' जैसे विषय पर लिखना एक सौभाग्य की बात है। मैं अपने पूर्ववर्ती लेखकों के प्रति श्रद्धा से नत हूं जिन्होंने केवल इस विषय से अपने प्रेम के कारण इतनी श्रमसाध्य पुस्तकें लिखीं और इस विषय को जीवित रखा। श्रमसाध्य होने के साथ-साथ निरन्तर त्रुटियों की संभावनाओं के कारण अष्टकवर्ग का प्रयोग उत्तरोत्तर कम होता गया था।

किंतु अव वह समय आ गया है जब इस विधि का पुनरुद्धार हो। वास्तविकता तो यह है कि अष्टकवर्ग, आधुनिक युग के लिए ही उपयुक्त विधि है, क्योंकि अब ज्योतिषी रसहीन और श्रम-साध्य गणनाओं को कंप्यूटर द्वारा पल भर में कर सकते हैं। यह विधि, जन्मकुंडली के गुह्य रहस्यों में सुगमतापूर्वक सेंध लगा लेती है और कई बार बहुत चौंकाने वाले, परंतु उपयोगी, तथ्य बाहर निकाल लाती है।

अत: 'जब भी अनिश्चय में हों, अष्टकवर्ग अवश्य देखें' – यह नया मंत्र है, जिसका उच्चारण मैं मन ही मन करता रहता हूं– विशेषकर दु:स्थानों के संदर्भ में। दु:स्थानों की जो व्याख्या शास्त्रों में की गई है, वह आज के जटिल एवं

स्पर्धापूर्ण जगत में नये अर्थ ले चुकी है, क्योंकि दु:स्थानों का बल, सफलता या असफलता का आधार बन सकता है। आज की अवसरवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था में केंद्र और त्रिकोण तो शक्ति-स्तम्भों के रूप में पृष्ठभूमि में ही चले गये प्रतीत होते हैं। किंतु आप पुरानी व्याख्या पर विश्वास करें या नई व्याख्या का भी परीक्षण करके देखें, 'अष्टकवर्ग' ज्योतिषियों के सम्मुख इस चयन की सुविधा और आधार, दोनों प्रदान करता है।

कंप्यूटरों के प्रयोग ने स्वयं 'अष्टकवर्ग' के क्षेत्र में सार्थक अनुसंधान संभव कर दिया है। अत: अनुसंधान में दिलचस्पी लेने वाले छात्र न केवल भविष्य में उन विवादों को हल कर सकेंगे, जिनसे आज यह विषय घिरा हुआ है, बल्कि नित नए प्रयोगों के लिये भी नयी दिशायें, उनके सम्मुख खुल सकती हैं। आवश्यकता उस कंप्यूटर की है जो किसी भी लग्न और किसी भी वर्ग आदि के लिये, अष्टकवर्ग बना दे। 'प्रश्न' अथवा 'वर्षफल' कुंडलियों को, 'अष्टकवर्ग' एक नया आयाम प्रदान करेगा। जो 'जैमिनी ज्योतिष' का अभ्यास करते हैं, 'पद-लग्न' और 'कारकांश' आदि पर अष्टकवर्ग तैयार कर सकते हैं और अपने क्षेत्र में सुप्त-प्राय अनुसंधान को नई गति प्रदान कर सकते हैं। कहने का आशय यह है कि ज्योतिष शास्त्र के हर अंग में प्रयुक्त होने के लिये 'अष्टकवर्ग विधि' तत्पर है, केवल प्रयोगशील, अनुसंधान-उत्साही ज्योतिष-अध्यवासियों की आवश्यकता है।

अभी तक, देखा जाये तो, 'कंप्यूटर-ज्योतिष' बहुत सार्थक नहीं रहा है। इसका समुचित उपयोग केवल ज्योतिष के गणित पक्ष के लिये ही हुआ है। मैं आशान्वित हूं कि भविष्य में ऐसे कम्प्यूटर प्रोग्राम तैयार होंगे जो केवल 'अष्टकवर्ग' और 'गोचर' पर आधारित नितांत नवीन प्रकार के वर्षफल निकाल सकेंगे आपकी अपनी जन्म कुंडली पर आधारित *'आपका आज का दिन कैसा होगा'*जैसे लोकप्रिय स्तम्भ भी कंप्यूटर द्वारा अधिक सार्थक और सटीक बनाए जा सकेंगे। चन्द्र राशि और सूर्य राशि के आधार पर जो इसी तरह की भविष्यवाणियां आजकल पत्र-पत्रिकाओं में छपती हैं, वे इतनी सरलीकृत होती हैं कि उन पर विश्वास करना हास्यास्पद लगता है। उनकी लोकप्रियता का कारण सॉंख्यिकी के नियमों का स्वत:-सिद्ध होना ही है।

अप्रैल, 13, 1996 विनय आदित्य

मूल अंग्रेजी पुस्तक के द्वितीय संस्करण की

भूमिका

इस पुस्तक का दूसरा संस्करण ज्योतिष के छात्रों को सौंपते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता है। जहां-जहां आवश्यकता अनुभव हुई, कुछ परिवर्तन, संशोधन और कुछ नई जानकारियों का इस संस्करण में समावेश किया गया है। अष्टकवर्ग प्रायः फलित ज्योतिष की मुख्य धारा में नहीं रहा है, इसे देखते हुए यह बहुत उत्साहवर्द्धक है कि इस पुस्तक का पहला संस्करण दो साल की अल्पावधि में ही निश्शेष हो गया।

प्रथम संस्करण की भूमिका में मैंने निवेदन किया था कि 'अष्टकवर्ग' मात्र जन्मकुंडली पर ही नहीं, बल्कि दूसरी कुंडलियों पर भी प्रयुक्त किया जाना चाहिए, जैसे वर्गों पर, प्रश्न पर, वर्षफल पर, कारकांश इत्यादि पर तथा पाराशरी ज्योतिष के साथ-साथ ताजिक या जैमिनी ज्योतिष के नियमों को भी उन पर लागू करना चाहिए।

मुझे अपने पाठकों को यह बताने में बहुत संतोष हो रहा है कि इस सुझाव की प्रतिक्रिया स्वरूप भारत और अमेरिका में बड़ी संख्या में ज्योतिषविदों ने 'अष्टकवर्ग' को लेकर नए-नए प्रयोग किये और अत्यंत उत्साहवर्द्धक परिणाम प्राप्त किए। अधिक सटीक भविष्यवाणियां कर सकने के लिए उपयुक्त सूत्रों और पद्धतियों के अनुसंधान में गति तब आयी जब कुछ साहसी कंप्यूटर प्रोग्रामरों ने 'अष्टकवर्गों' की रचना उपर्युक्त सभी प्रकार की कुंडलियों के लिए संभव बना दी। कुछ कंप्यूटर-शोधियों ने तो वाकई आपका *'आज का दिन कैसा होगा'* की गणना, अष्टकवर्ग के आधार पर, आशातीत सफलता के साथ, करके दिखा दी।

'अष्टकवर्ग' की सफलता का रहस्य

ज्योतिष शास्त्र का मूलभूत आधार ग्रहों की परस्पर सक्रियता में निहित है। 'अष्टकवर्ग' ही एकमात्र ऐसी पद्धति है जिसमें ग्रहों के परस्पर संबंधों को

प्रभावशाली ढंग से एक सूत्र में पिरोया गया है। एक ग्रह अपने बल के अनुसार ही कार्य करेगा। इस बल को मापने की अन्य विधियां, जैसे षड्बल (पाराशरी), पंचवर्गीय बल (ताजिक), या ग्रहबल (जैमिनी) अपने आप में विशिष्ट अर्थ रखती हैं, किंतु वे सब एक तथ्य भुला देती हैं। वह यह कि कोई भी ग्रह शून्य में क्रियाशील नहीं होता, शेष छः ग्रह भी आगे-पीछे, निरन्तर-क्रियारत होते हैं। इसलिए, कोई भी ग्रह उतना ही कार्य कर पाता है, जितना अन्य ग्रह उसके लिये संभव बनाते हैं। दूसरे ग्रह या तो उसके काम में सहयोग करते हैं या विरोध। संक्षेप में जातक हर समय सभी ग्रहों के सामूहिक फल भोगता है। आपसी बोलचाल में ज्योतिषी यही कहते हैं कि अमुक ग्रह कष्ट दे रहा है क्योंकि सातों ग्रहों का नाम एक ही सांस में लेना मुश्किल है। इसी कारण ऋषियों ने अष्टकवर्ग तकनीक का विकास किया। यह केवल अष्टकवर्ग में ही कहा जा सकता है कि यदि किसी राशि में बृहस्पति के पास 7 भिन्नाष्टक और 42 सर्वाष्टक बिंदुओं का बल है, तो इसका अर्थ है कि सभी ग्रहों ने मिलकर बृहस्पति में इतनी अधिक मात्रा में सार्थक बल का विनियोग किया है। ज्योतिष की किसी और विधि में ऐसी प्रजातांत्रिक दृष्टि नहीं मिलती।

इसी तरह यदि अष्टकवर्ग विधि जन्म कुण्डली में शास्त्रानुकूल और तर्कसंगत सिद्ध होती है तो अन्य कुंडलियों पर भी होनी चाहिए क्योंकि हर स्थान पर, घटनाओं के पीछे ग्रहों की परस्पर अन्तःप्रक्रियायें ही उत्तरदायी हैं। अनुसंधानकर्त्ताओं द्वारा पाए परिणामों से, सही अर्थों में ज्योतिषीगण तब ही प्रभावित होंगे जब अष्टकवर्ग की सहायता से की गई भविष्यवाणियां खरी उतरें। जब सांख्यिकी के आधार पर यथेष्ट प्रमाण उपलब्ध होगा, तब ही ज्योतिष शास्त्र के समकालीन विधानों में अष्टकवर्ग के नये सूत्रों को समाहित किया जा सकेगा। यूं भी, अष्टकवर्ग, उन पुरातनपंथी ज्योतिषियों के हाथ से निकलता जा रहा है, जो किसी भी ज्योतिष विचार को स्वीकार करने से पहले टोकते हैं, 'यह शास्त्रों में कहां लिखा है?'

वर्ग कुंडलियां

पहले भी कई जाने-माने ज्योतिषियों ने अष्टकवर्ग को वर्ग कुंडलियों पर, विशेषकर नवांश पर, लगाकर देखा है। उनका तरीका यह होता था कि नवांश चक्र में भी हर राशि में वही सर्वाष्टक बिंदु रखते जाओ जो राशिचक्र में प्राप्त हुए हैं। इस तरीके

के अपने लाभ हो सकते हैं किंतु हमारे विचार से यह अष्टकवर्ग विधि के मूलभूत विचार की अवहेलना होगी। अष्टकवर्ग की गणना का आधार ग्रहों की परस्पर स्थिति है। वर्ग कुंडलियों में ग्रहों की यह परस्पर स्थिति मूल रूप से परिवर्तित हो जाती है। इसलिये तर्क संगत यही है कि वर्ग कुंडलियों के लिए अष्टकवर्गीय गणनायें अलग से की जायें। यह भी संभव है कि फिर राशिचक्र और किसी वर्ग कुंडली की तुलना एक विशेष दृष्टिकोण से करके देखी जाये और वहां से कई नये तथ्य सामने आयें, वर्ग कुंडलियों में अष्टकवर्ग के उपयोग पर हमारी प्रारंभिक खोज का यह परिणाम सामने आया है कि यदि वर्ग कुंडलियों के लिये अलग से अष्टकवर्ग तैयार किया जाये तो उन घटनाओं की पुष्टि होती है जो अन्यथा जन्म कुंडली में छिपी रह जाती हैं।

अन्य कुंडलियों पर अष्टकवर्ग उन्हीं नियमों के अन्तर्गत प्रयुक्त होगा जो हमने जन्म कुंडली के लिये इस पुस्तक में बताये हैं। घटना विशेष के लिये, एक विशेष वर्ग कुंडली देखें, जैसे जीवन साथी के लिये नवांश और सन्तान के लिए सप्तमांश इत्यादि। संबंधित वर्ग कुंडली में कारक-ग्रह का बल और संदर्भित भाव का परीक्षण ध्यान से करना चाहिये जैसे शुक्र और सप्तम भाव नवांश कुंडली में और गुरु और पंचम, सप्तमांश में।

जब भी हम यहां अष्टकवर्गीय बल की बात करते हैं तो उसका अर्थ सर्वाष्टक और भिन्नाष्टक दोनों के बिंदुओं से होता है।

अष्टकवर्ग पद्धति कभी भी स्वयं में परिपूर्ण अथवा स्वतंत्र पद्धति के रूप में परिकल्पित नहीं की गई है। यहां राशिचक्र की महत्ता की पुनःचर्चा और भी आवश्यक है, क्योंकि हम अष्टकवर्ग को वर्ग और अन्य कुंडलियों पर प्रयुक्त करके, एक नई दिशा में बढ़ना चाह रहे हैं।

प्रश्न कुंडली

प्रश्न कुंडली ज्योतिष शास्त्र के सबसे लोकप्रिय अंगों में से एक है। इसलिए इस पर अष्टकवर्ग का प्रयोग काफी रोचक होगा। अनुसंधान के लिये यह क्षेत्र अनेक संभावनाओं से परिपूर्ण है।

त्वरित फलादेश देने के लिए सबसे सरल तरीका है लग्नेश और कार्येश के बिंदुओं पर एक दृष्टि डाली जाये। यदि वे अधिक बिंदुओं से युक्त हों तो यह प्रश्न के मनोवांछित रूप से फलीभूत होने का संकेत होगा। इसके बाद लग्न

भाव और कार्यभाव में बिंदुओं की स्थिति देखें। यदि कोई ग्रह इत्थसाल में हों तो उनके बिंदु भी देखें। चन्द्रमा चूंकि प्रश्न कुंडली में निर्णायक महत्व रखता है, उसका बिंदु-बल भी देखें। एक अन्य क्षेत्र जो देखना लाभदायी होगा, वह है कक्ष्या-विश्लेषण। विशेषकर कार्येश का फलीभूत होने का समय तब होगा जब कार्येश उस 'मददगार' ग्रह की कक्ष्या से गुज़रेगा, जिसमें उसने एक बिंदु दिया हो। इसी प्रकार, बिंदु युक्त कक्षाओं पर चन्द्रमा का विचरण लग्न में, लग्नेश स्थित भाव में कार्य-भाव और कार्येश-स्थित भाव में देखकर घटना का सूक्ष्मतर काल-निर्धारण किया जा सकता है। इन संकेतों को किसी भी अर्थ में प्रश्न विद्या के सामान्य सिद्धान्तों से श्रेष्ठतर नहीं समझा जाना चाहिये। अभिप्राय मात्र इतना है कि अष्टकवर्ग 'कथ्य' को समझने में अपनी तरह से अलग मदद करता है।

वर्षफल

प्रश्न-कुंडली की तरह यह कुंडली भी एक प्रकार की गोचर कुंडली ही होती है। वर्ष कुंडली के कुछ विशेष अंग होते हैं– मुंथा, उसका स्वामी और वर्षेश (उस वर्ष का स्वामी ग्रह) इत्यादि। इनके बल का आकलन न केवल पंचवर्गीय बल के आधार पर बल्कि अष्टकवर्ग विधि से भी किया जा सकता है। जिन भावों में मुंथा या वर्षेश स्थित हों उनका बिंदुबल, ज्योतिषियों के लिये महत्वपूर्ण हो सकता है। वे संभवतः ऐसे फलादेश दे सकने की स्थिति में आ सकेंगे कि मुंथा का दुःस्थानों (4, 6, 7, 8 और 12) में स्थित होना, सामान्य अपेक्षा से कम बुरा सिद्ध होगा यदि वे भाव औसत से अधिक बिंदुओं से युक्त हों। वर्षेश की वषफल में वही महत्ता है जो लग्न कुंडली में लग्नेश की। जन्म और वर्ष दोनों ही कुंडलियों में वर्षेश का बिंदुबल, उस साल में होने वाली घटनाओं का सुराग देगा।

जैमिनी ज्योतिष शास्त्र

जैमिनी ज्योतिष शास्त्र इस अर्थ में विशिष्ट है कि वहां ग्रह दशाओं के स्थान पर राशि-दशायें होती है। अष्टकवर्ग की विशेषता भी यही है कि यहां भी बिंदु राशियों के माने जाते हैं। कोई ग्रह उतने ही बिंदुओं से युक्त माना जाता है जितने बिंदुओं से युक्त वह राशि है जिसमें वह ग्रह स्थित है– जन्म-कुंडली में अथवा गोचर में। बिंदुओं से युक्त राशि की होती है, ग्रह तो केवल उनकी परावर्तित

आभा में जगमगाते हैं। इसलिए दशा पद्धतियों में अष्टकवर्ग के प्रयोग की दृष्टि से जैमिनी ज्योतिष शास्त्र पूरी तरह उपयुक्त है। इससे यह सूत्र निकलता है कि उस राशि की दशा शुभफलदायी रहेगी जिसमें बिन्दुओं की अच्छी संख्या हो। यदि दशा और अन्तर्दशा दोनों ही अच्छे बिंदुओं से युक्त हों तो अन्तर्दशा भी अच्छी जानी चाहिए।

यदि दशा राशि से एकादश में, दशम की अपेक्षा अधिक बिंदु हों तो उस दशा में अपेक्षाकृत कम प्रयासों से अधिक लाभ प्राप्त होगा।

जुलाई 25, 1998 **विनय आदित्य**

आमुख

हम सभी के जीवन में कुछ मौलिक प्रश्न होते हैं। जैसे कि हमने यह जीवन क्यों पाया? हमें सुख-दुख क्यों होता है? प्रारब्ध के कौन से कर्म सुख देंगें अथवा दुःख देंगें तथा यह सुख-दुःख का चक्र कब तक चलता रहेगा, इत्यादि।

रामचरितमानस में तुलसीदास जी कहते हैं कि-

सुभ अरु असुभ करम अनुहारी। ईसु देइ फलु हृदयँ बिचारी।
करइ जो करम पाव फल सोई। निगम नीति असि कह सबु कोई॥

भावार्थः शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर हृदय में विचारकर फल देता है, जो कर्म करता है, वही फल पाता है। ऐसी वेद की नीति है, यह सब कोई कहते हैं।

अतः हर कोई अपने शुभ-अशुभ फलों को और उनके अनुपात फलों को जानने का इच्छुक रहता है। इस अतीव गहन विषय की चर्चा हमें ज्योतिष शास्त्र में भी प्राप्त होती है।

ऋषि मैत्रेय ने ऋषि पराशर से एक बार प्रश्न पूछाः

सुखदुःखपरिज्ञानमायुषो निर्णयं तथा।
बहूनामृषिवर्याणां सम्मतां फलपद्धतिम्॥

अर्थात् कृपा करके अनेक ऋषियों द्वारा समर्थित फलादेश की कोई ऐसी पद्धति बतलाएं जिसके द्वारा मनुष्यों के कर्मों से उत्पन्न सुख-दुःख एवं आयु का निर्णय किया जा सके।

यह प्रश्न सुनकर ऋषि पराशर ने अष्टकवर्ग पद्धति का ज्ञान ऋषि मैत्रेय जी को दिया। अतः होराशास्त्र के प्राचीन ऋषियों ने सभी प्रकार के कर्मों से उत्पन्न होने वाले शुभ अथवा अशुभ फलों को जानने के लिए जिस पद्धति का विकास किया, उसे 'अष्टकवर्ग' कहा जाता है। उदाहारण के रूप में यदि कोई ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त व दृष्ट होकर शुभराशि, उच्चराशि अथवा मित्रराशि में स्थित हो तो अपने भाव से सम्बन्धित फलों की वृद्धि करेगा किन्तु यह एक सामान्य सिद्धांत है, इससे यह नहीं जाना जा सकता कि वह वृद्धि कितने अनुपात में होगी? शुभ अथवा अशुभ फल का अनुपात क्या होगा। इस परिणाम को जानने में अष्टकवर्ग पद्धति ही निर्णायक मानी गई है।

डॉ. रमन जी द्वारा स्थापित 'भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद्' नामक संस्था में यह आरम्भ से ही प्रयास किया गया है कि ज्योतिष के विभिन्न आयामों के ज्ञान को लिपिबद्ध तरीके से सभी छात्रों को दिया जा सके। ऋषि पराशर ने ज्योतिष के होराशास्त्र को दो भागों में बांटा है– सामान्य एवं निश्चयात्मक। यह संस्था आरम्भ से ही दोनों भागों को विस्तार से सिखा रही है। अष्टकवर्ग निश्चयात्मक भाग में आता है क्योंकि यहां जातक को अपने कर्मों द्वारा मिलने वाले फल के उचित अनुपात का ज्ञान होता है।

पिछले कुछ वर्षों से संस्था का अध्यक्ष होते हुए मेरा प्रयास था कि सभी ज्योतिष जिज्ञासुओं के लिए सभी विषय पर ऐसी पुस्तकें आ सकें जो न केवल उस विषय को समझने का सरल माध्यम बनें अपितु फलादेश को सीखने में विशेष पुस्तक बनें। संस्था ने कई विषयों पर ऐसी ही पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ कर दिया था। किन्तु अष्टकवर्ग के प्रति मुझे विशेष आकर्षण रहा है और इस पर संस्था से कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मेरे विशेष आग्रह पर श्री विनय आदित्य ने अष्टकवर्ग पर अपने ज्ञान को लिपिबद्ध करके पुस्तक के रूप में हमें प्रदान किया है। उनके इस विशेष योगदान की जितनी सराहना की जाए, उतनी ही कम है।

जब इनकी अष्टकवर्ग की पुस्तक 'अष्टकवर्ग– भाग्य बिंदु' की हस्तलिखित प्रति मेरे हाथ में आई तब पुस्तक का नाम पढ़कर तुरंत यह स्पष्ट हो गया कि अवश्य ही यह पुस्तक ज्योतिषियों को जातकों के भाग्य को सुदृढ़ करने में मील का पत्थर साबित होगी। विनय आदित्य ने पुस्तक में विषय से सम्बन्धित सभी पहलुओं को विस्तार से एवं उदाहरणों द्वारा स्पष्ट रूप से समझाया है। प्राचीन ऋषियों ने जिन अष्टकवर्ग सूत्रों की रचना की है, उन्हें विनय आदित्य ने बहुत ही सरल और सहज रूप से प्रस्तुत किया है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि श्री विनय आदित्य ने अपने कार्यों द्वारा न केवल संस्था को एवं ज्योतिषियों को लाभ पहुंचाया अपितु डॉ. रमन जी को भी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की है। श्री विनय आदित्य के वर्षों के अध्ययन पर आधारित यह पुस्तक संस्था को समर्पित करने से अध्यक्ष के रूप में मेरा कर्तव्य भी आज पूर्ण हुआ है।

महाशिवरात्रि
18 फरवरी 2023

प्रोफेसर आर्य भूषण शुक्ल
अध्यक्ष
भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (ICAS)

परीक्षा-नियंत्रक की कलम से

डॉ. बी. वी. रमन ने 1984 में आईकास की स्थापना उस समय की जब देश के बहुत कम परिवारों में ज्योतिष प्रचलित थी। उनका उद्देश्य था ज्योतिष में अंतर्निहित आध्यात्मिकता को वैज्ञानिक आधार देना तथा आधुनिक युग में ज्योतिष की महिमा को पुनर्स्थापित करना।

डॉ. रमन के सम्मुख यह पूर्णतः स्पष्ट था कि आईकास तभी अपने कर्तव्यों का भली-भांति निर्वाह कर सकेगी जब इसमें ज्योतिष को गंभीरतापूर्वक पढ़ाया जाएगा और छात्रों को परीक्षाएं दिलवाई जाएंगी और उन्हें तदुपरान्त उपयुक्त उपाधियां प्रदान की जाएंगी। उनका उद्देश्य था कि विद्यार्थी कठोर श्रम और ईमानदारी से ज्योतिष सीख कर उपाधि अर्जित करें। इसी उद्देश्य से परीक्षाएं लेने का एक अलग विभाग आरंभ किया गया। स्व. जस्टिस एस. एन. कपूर उसके प्रथम परीक्षा-नियंत्रक बनाए गए। उनके पश्चात प्रोफेसर ए. बी. शुक्ल ने व उनके पश्चात श्री एम. आन्जनेयुलु ने इस कार्यभार को संभाला।

हमारा प्रयास इन सब वर्षों में यही रहा है कि आईकास के प्रारम्भ के वर्षों में जो स्तर रखा गया था, उसी स्तर को हम बनाए रखें। आरंभ में यह निर्णय भी लिया गया था कि जून और दिसम्बर के महीनों में परीक्षा आयोजित की जाएंगी। इसका श्रेय परीक्षा-नियंत्रकों को जाता है कि हम परीक्षाओं की तिथियों को कभी न भूलें। कोविड की महामारी ने हमें पूरी तरह से डिजिटल होने के लिए बाध्य किया और हमने ऑनलाइन परीक्षाएं आरम्भ कीं। हमारी पूरी टीम ने, इस चुनौती का सराहनीय रूप से सामना किया। आईकास डिजिटल इंडिया मिशन में योगदान करते हुए परीक्षा और परिणाम ऑनलाइन कर रहा है।

परीक्षा-नियंत्रक वैदिक ज्योतिष और उससे जुड़े विषयों पर पुस्तकें भी प्रकाशित कर रहे हैं। प्रश्न बैंक और आदर्श उत्तरों के अतिरिक्त, परीक्षा-नियंत्रक ने अपने दिग्गजों के द्वारा लिखित वर्क-बुक्स और शोध-कार्य भी प्रकाशित किए हैं। वर्क-बुक्स अध्यापक वर्ग और विद्यार्थियों के लिए एक संक्षिप्त

हस्त-पुस्तिका बन गयी है क्यूंकि इसमें प्रसिद्ध व्यक्तियों के जन्म और कार्य का वर्णन दिया गया है। उन्हें उनके व्यवसाय और कार्य क्षेत्र के आधार पर बहुत सुंदर ढंग से वर्गीकृत किया गया है। उदाहरण के रूप में 'The Splendour of Vargas' पुस्तक शोध छात्रों के लिए एक आदर्श पुस्तक है।

अभी हाल ही में परीक्षा-नियंत्रक ने यह निर्णय लिया है कि आईकास द्वारा संचालित विभिन पाठ्यक्रमों के लिए उत्कृष्ट स्तर की पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित की जाएंगी। अब तक वास्तु चिंतामणि, गणित ज्योतिष, हस्तरेखा, नाड़ी आदि विषयों पर कोर्स पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं।

इसी श्रृंखला में श्री विनय आदित्य ने अष्टकवर्ग विषय पर अपनी अंग्रेजी की पुस्तक का हिन्दी रूपांतर 'भाग्य बिन्दु' प्रस्तुत किया है। विनय जी की डाट्स ऑफ़ डेस्टिनी 'Dots of Destiny' अष्टकवर्ग की एक बहुचर्चित पुस्तक है और यह उसी की सुन्दर प्रस्तुति है। परीक्षा नियंत्रक (CoE, ICAS) को पुस्तक प्रकाशन के सर्वाधिकार हस्तांतरित करने के लिए हम श्री विनय आदित्य का हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

इस महत्वाकांक्षी योजना को पूरा करने में परीक्षा-नियंत्रक की पूरी टीम के सभी सदस्यों ने सहयोग दिया है। इस कार्य की प्रशंसा करने के लिए मेरे पास शब्द कम पड़ रहे हैं।

28 फरवरी 2023

नवनीत कौशिक
परीक्षा-नियंत्रक, आईकास

1

अष्टकवर्ग

भारतीय ज्योतिष की एक विशिष्ट विधि

न सांवत्सरपाठी च नरकेषूपपद्यते।
ब्रह्मलोकप्रतिष्ठां च लभते दैवचिन्तकः॥

बृहत्संहिता सांवत्सरसूत्राध्याय 28

ज्योतिष का अध्येता नरकगामी नहीं होता है, भाग्य के शुभाशुभ का विचारक वह ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठा पाता है।

विषय प्रवेश

बृहत्पाराशर होराशास्त्र के पूर्वखण्ड में महर्षि पराशर ने ग्रहों के समग्र प्रभाव की व्याख्या की है जो ग्रहों की विभिन्न भावों में स्थिति के कारण उत्पन्न होता है। साथ ही ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृत सिद्धांतों की विवेचना भी की है जो इस व्याख्या का आधार है।

उत्तरखण्ड में अष्टकवर्ग पर अध्याय है, जिसके प्रारंभ में पराशर के सबसे प्रतिभावान शिष्य मैत्रेय और स्वयं गुरुश्रेष्ठ पराशर के मध्य हुआ संवाद दिया गया है:

कलौ पापरतानां च मन्दा बुद्धिर्यतोनृणाम् ।
अतोऽल्पबुद्धिगम्यं यत्शास्त्रमेतद्वदस्व मे ॥ 3 ॥
तत्तत्कालाग्रहस्थित्या मानवानां परिस्फुटम् ।
सुख दुःखपरिज्ञानमायुषोनिर्णयं तथा ॥ 4 ॥

बृहत्पाराशर होराशास्त्रम्, अध्याय 68

मैत्रेय अपने गुरु पराशर से निवेदन करते है— कलियुग में पाप कर्म निरत मनुष्यों की बुद्धि चूंकि मन्द हो जाती है अतः अल्प बुद्धि से भी सुबोध जो शास्त्रानुशासन हो कृपया वह मुझे बताएं, जिससे मनुष्यों को उस समय की ग्रह स्थिति से सुस्पष्ट रूप में सुख-दुःख का पूर्ण ज्ञान तथा आयु का निर्णय हो सके।

प्रत्युत्तर में महर्षि पराशर इस जिज्ञासा को समीचीन मानते हुए अष्टकवर्ग विधि की व्याख्या इस टिप्पणी के साथ करते हैं कि यह उन सिद्धांतों से भिन्न नहीं है जिनकी व्याख्या वे पूर्वखण्ड में कर चुके हैं।

किन्तु व्यवहार में, यह विधि एकदम भिन्न है। वास्तव में यह तकनीक किसी भी पारंगत ज्योतिषी के लिए ऐसी अचूक विधि है जो बृहत्पाराशर होराशास्त्र के किसी पूर्व अध्याय में नहीं दी गई है।

अष्टकवर्ग विधि का तर्काधार समझाते हुए महर्षि पराशर कहते हैं:

> **"जिस तरह विभिन्न भावों में ग्रहों की स्थिति के प्रभाव का आकलन जन्म-लग्न और चन्द्रमा से किया जाता है, उसी तरह दूसरे ग्रहों को भी लग्न की तरह मानकर और उनसे भावों को गिनते हुए भी फलों का आकलन करना चाहिए। इस तरह सात ग्रहों (राहु और केतु को छोड़कर) और लग्न से प्राप्त प्रभावों से ही पूरा चित्र स्पष्ट होता है। जब सातों ग्रहों और लग्न के समग्र प्रभावों को एक साथ आंका जाये तो वह अष्टकवर्ग विश्लेषण कहलाता है"।**

लग्न और चन्द्रमा दोनों से ग्रहों के प्रभावों का तालमेल करके कुल अनुमान लगाना ही अपने आप में कठिन कार्य है। प्रश्न यह उठता है कि इतने जटिल पारस्परिक संबंधों से उत्पन्न ग्रहों के कुल प्रभाव का आकलन कैसे संभव होगा? पीढ़ी दर पीढ़ी ज्योतिषी भविष्य में भी उन महान ऋषियों के प्रति कृतज्ञता अनुभव करेंगे जिन्होंने इस जटिल कार्य को प्रशंसनीय सुगमता और सुंदरता के साथ कर दिखाया और इसे अष्टकवर्ग का नाम दिया।

भारत के कुछ भागों में विशेषकर आंध्र प्रदेश में संस्कृत (कटपयादि) के ज्ञाता ज्योतिषियों ने इस विधि को इतना साध लिया है कि वे क्षण भर में अष्टकवर्ग की गणनायें कर डालते हैं और चकित कर देने वाली त्वरित भविष्यवाणी कर दिखाते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह विधि इतनी मौलिक है कि इसके जैसी विधि विश्व भर की किसी ज्योतिष-प्रणाली में कहीं नहीं है।

अष्टकवर्ग विधि का उद्‌गमकाल

कोई नहीं जानता कि अष्टकवर्ग विधि का उद्‌गम कब हुआ। किन्तु बृहत्पाराशर होराशास्त्र इस विधि के सिद्धांतों को समुचित विस्तार से देता है। महर्षि पराशर ने लिखा है।

मयैतत् सकलं प्रोक्तं पूर्वाचार्यानुवर्तिना।
आयुश्च लोकयात्रां च शास्त्रस्यास्य प्रयोजनम् । (10)

निश्चेतुं तन्न शक्नोति वसिष्ठो वा बृहस्पतिः।
किं पुनर्मनुजास्तत्रविशेषात्तु कलौ युगे। (11)

सामान्यांशो विशेषांशो ज्योतिःशास्त्रं द्विधोदितम्।
प्रोक्तःसामान्यभागस्तु निश्चयांशस्तु कथ्यते। (12)

बृहत्पाराशर होराशास्त्र

"पूर्व आचार्यों का अनुवर्तन करते हुए मैंने आयु लोकयात्रा-लौकिक जीवन तथा इस शास्त्र का प्रयोजन पूर्ण रूप में कहा है (श्लोक संख्या 10)। इन विषयों का निश्चय तो वसिष्ठ अथवा बृहस्पति भी नहीं कर सकते हैं फिर मनुष्यों की तो बिसात ही क्या? और वह भी कलियुग में (श्लोक संख्या 11)। ज्योतिष शास्त्र सामान्यांश तथा विशेषांश, इन दो रूपों में आचार्यों ने कहा है। मैंने भी सामान्य भाग तो कह दिया है अब विशेषांश कहने जा रहा हूं। (श्लोक संख्या 12)"

आचार्य वराहमिहिर (500 ई॰) अपने बृहज्जातक में अष्टकवर्ग की चर्चा बहुत साधारण रूप से करते हैं, मानो उनके समय में यह बहुसुलभ शास्त्र बन चुका हो और ज्योतिष-शिक्षा का इतना अभिन्न अंग भी कि उन्होंने बहुत विस्तार में इसकी चर्चा करने की आवश्यकता नहीं समझी।

अत: अष्टकवर्ग विधि का उद्गमकाल पराशर व वराहमिहिर से बहुत पहले का है। यह सुदूर ईसा-पूर्व भी हो सकता है। कुछ विद्वानों का विचार है कि अष्टकवर्ग की चर्चा विष्णुपुराण और ब्रह्मयामल जैसे शास्त्रों में भी हुई है जो बहुत प्राचीन ही हैं।

जन्म राशि पर अतिशय निर्भरता

अति प्राचीन काल में भी कुछ विद्वान केवल जन्मराशि पर अतिशय निर्भरता के प्रति संवेदनशील थे। मात्र चन्द्र राशि के संदर्भ में गोचर प्रभावों के विश्लेषण को वे सतही मानते थे। अत: यह प्रतीत होता है कि यह व्याधि नई नहीं है।

गुणक अपने होरा मकरंद में (लगभग 1500 ई॰) लिखते हैं: चन्द्रमा जन्म के समय जिस राशि में हो, उसे ही जन्म राशि माना जाता है, परंतु कोई भी राशि जिसमें कोई न कोई ग्रह हो, उसका अपना विशेष प्रभाव होगा और लग्न का भी। इस तरह जातक आठ आकाशीय तत्वों के फलादेश के अनुसार जीवन निर्वाह करता है।

अष्टकवर्ग विधि का प्रयोग

अष्टकवर्ग को प्रयुक्त करने की विधि का अध्ययन तीन खंडों में किया जा सकता है।

(क) **स्थिर विश्लेषणः** यह वे परिणाम देता है तो जातक के पूरे जीवन पर लागू होते हैं। ये परिणाम उन घटनाओं के स्वरूप पर प्रकाश डालते हैं जो जीवन में बारबार घटती हैं। इसके अन्तर्गत प्रायः विभिन्न भावों में पड़े बिंदुओं की संख्या का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

(ख) **दशा विश्लेषणः** स्थिर विश्लेषण जन्मकुंडली में निहित विधि के विधान को पढ़ता है, जबकि दशा से उन विधानों के फलीभूत होने के समय का पता चलता है। अष्टकवर्ग एक विशेष विधि से दशा पर प्रकाश डालता है और इसे दशा विश्लेषण की प्रमुख विधियों में स्थान मिलना चाहिए। इस विधि को ध्यान में न रखने से कई महत्वपूर्ण सुराग हाथ से निकल जाते हैं।

(ग) **गोचर-विश्लेषणः** पारंपरिक रूप से अष्टकवर्ग का उपयोग गोचर विश्लेषण के लिये विशेष रूप से किया जाता है।

अष्टकवर्ग के प्रयोग के विभिन्न क्षेत्र

1. **ग्रहों और राशियों (या भावों) के सामान्य बल का आकलनः** अष्टकवर्ग का प्रयोग जन्मकुंडली में उपलब्ध योगों के वास्तविक बल को जानने में प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है, यह विधि ग्रहों के बल को जानने की षड्बल अथवा पंचवर्गीय बल से काफी अलग है। जैमिनी का ग्रहबल भी ग्रहों का बल जानने की एक और विधि है। अष्टकवर्ग इन सबसे भिन्न है।

2. **जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का पूर्वानुमानः** जैसे विवाह, संतान-जन्म, समृद्धि का समय, बीमारी, कष्ट, मृत्यु काल, इत्यादि। अष्टकवर्ग में उस नक्षत्र की गणना करने की विशेष विधि है जिस पर कारक ग्रह का गोचर संबंधित घटना के फलित होने का समय होता है।

3. **दशाफल का पूर्वानुमानः** इसे तत्कालीन दशा से जोड़कर देखें तो परिणामों को परिमाण और गुण दोनों ही तरह से समझने का एक नया दृष्टिकोण मिलता है।

4. **सामान्य गोचर प्रभावों का पूर्वानुमानः** कहा जाता है कि गोचर विचार करते समय अष्टकवर्ग को ध्यान में न रखा जाये तो गोचर विश्लेषण काफी भ्रामक

सिद्ध हो सकता है। दूसरे शब्दों में गोचर सिद्धांत और अष्टकवर्ग दोनों को मिलाकर विश्लेषण करने से ज्यादा सही फलित कहा जा सकता है। कुछ विद्वान तो अष्टकवर्ग के बिना जन्मकुंडली का विश्लेषण, विशेषकर गोचर विश्लेषण करना आपराधिक भूल मानते हैं। साढ़े-साती का फल जानने के लिए अष्टकवर्ग सटीक एवं उपयुक्त विधि है।

5. **जातक कितने वर्ष जियेगा :** इसके लिए आयु-विचार की अनेक विधियां अष्टकवर्ग में हैं। कुछ ज्योतिषियों में ये विधियां अत्यंत लोकप्रिय हैं।
6. **मुहूर्त्त निश्चित करना :** अर्थात् किसी शुभ कार्य को, जैसे विवाह संस्कार आदि का शुभ समय क्या हो ? पराशर अन्य गोचर विधियों की अपेक्षा अष्टकवर्ग को प्राथमिकता देते हैं।
7. **अनुसंधान :** एक अनुसंधानपरक वैदिक ज्योतिषी के लिए अष्टकवर्ग पारंपरिक प्रयोगों से हटकर आगे बढ़ने के नए मार्ग खोलता है। आधुनिक संदर्भ के अनुकूल इस पर कई तरह के नवीन प्रयोग करके देखे जा सकते हैं।

आगे के पृष्ठों में, शास्त्रीय ज्योतिष के अष्टकवर्ग नियमों को ज्यों का त्यों रख देने का प्रयास किया गया है। जहां आवश्यकता अनुभव हुई वहां टिप्पणियां जोड़ी गई हैं। यह आवश्यक नहीं कि हर नियम हर कुंडली पर सटीक बैठेगा क्योंकि अष्टकवर्ग कुंडली के बारे में एक 'विशिष्ट' जानकारी देता है न कि 'सम्पूर्ण'। इस कारण अष्टकवर्ग विधि को पूर्णतः स्वतंत्र विधा नहीं माना जाता।

2

अष्टकवर्ग गणित

गणितेषु प्रवीणो यः शब्दशास्त्रे कृतश्रमः।
न्यायविद् बुद्धिमान् देशदिक्कालज्ञो जितेन्द्रियः ॥
ऊहापोह–पटुर्होरा–स्कन्धश्रवण–सम्मतः।
मैत्रेय! सत्यतां याति तस्य वाक्यं न संशयः ॥

बृहत्पराशर होराशास्त्र 39-40

जो गणित के सामान्य स्वरूप, ज्योतिर्गणित तथा इसके प्रयोग में दक्ष है, शब्द शास्त्र-व्याकरण में निपुण है, न्याय के सिद्धान्तों का ज्ञाता है, बुद्धि सम्पन्न है, देश, दिशा तथा काल का जिसको अच्छा बोध है, मन सहित एकादश इन्द्रियों पर नियंत्रण है, ऊहापोह-ग्रहण और त्याग के निर्णय में पटु है, त्रिस्कन्ध ज्योतिष के होरा अंग में पारंगत है, ऐसे व्यक्ति की वाणी सत्य होती है, इसमें कोई संदेह नहीं।

अष्टकवर्ग विधि का आधारभूत विचार यह है कि हर ग्रह जन्म लग्न में अपनी स्थिति के अनुसार तो शुभ प्रभाव देता ही है अपितु दूसरे ग्रहों की स्थिति के सापेक्ष भी शुभ प्रभाव प्रदान करता है! उदाहरण के लिये बृहस्पति जन्म कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार कई भावों/राशियों/ग्रहों पर अपना शुभ प्रभाव देता है लेकिन वह दूसरे ग्रहों से अपनी स्थिति के सापेक्ष भी शुभ प्रभाव देगा। ये सभी प्रभाव अंकों में जोड़े जाते हैंऔर इस तरह एक संयुक्त अंक उभरता है जो जन्म और गोचर ग्रहों को शुभ (अथवा अशुभ) फल देने की क्षमता प्रदान करता है।

दृष्टांत द्वारा स्पष्टीकरण

प्रभावों का यह परस्पर आदान-प्रदान कैसे काम करता है, यह समझने के लिए एक आधुनिक उद्योगपति के क्रियाकलापों पर नज़र डालने का उदाहरण संभवतः उपयुक्त रहेगा।

मान लीजिये एक उद्योगपति दिल्ली में अपना कार्यालय स्थापित करता है और अपने व्यापार में उसका लेन-देन बारह अलग-अलग कंपनियों से होता है। ज़ाहिर है

उनमें से कुछ के साथ उसके संबंध ज्यादा अच्छे होंगे और कुछ के साथ इतने अच्छे नही होंगे।

अब कल्पना कीजिये कि वह सात दूसरे शहरों में भी अपने उद्योग की शाखाएं खोलता है और वहां अपने मित्रों को या विशेष योग्यता वाले व्यक्तियों को अपना भागीदार नियुक्त करता है। मुख्य कार्यालय से प्राप्त पूंजी, तकनीकी-ज्ञान और प्रशासनिक सहायता के आधार पर ये सभी शाखाएं अपने-अपने उत्पाद लेकर बाज़ार में आती हैं और उन्हीं बारह कम्पनियों से सीधे व्यापार करती हैं। अब इन सात शाखाओं के भी इन बारह कम्पनियों से अपने-अपने सीधे संबंध विकसित होते हैं- ज़ाहिर है कुछ के साथ ज्यादा अच्छे, औरों के साथ ज़रा कम अच्छे।

इस तरह यह उद्योगपति अपने मुख्य कार्यालय और सात शाखाओं के साथ मिलकर अपने प्रभाव-क्षेत्र के आठ केन्द्र विकसित कर लेता है, जिसे उसका औद्योगिक साम्राज्य कहा जा सकता है और अपने उद्योग की स्थिति का आकलन करने के लिये उसे अपने आठों केन्द्रों के लेन-देन का गुणा-भाग लगाना पड़ता है।

जब कोई शाखा प्रबंधक इन बारह कम्पनियों में से किसी एक में व्यापार के लिये जाता है तो हमारा उद्योगपति यह अनुमान लगाता है कि परिणाम कैसा होगा। इस अनुमान के दो आधार होते हैं– पहला तो समूचे उद्योग की कुल स्थिति देख कर, दूसरे संबंधित शाखा प्रबंधक के उस कंपनी के साथ संबंधों की स्थिति देख कर। इसलिये इस उद्योगपति ने यह नियम बना रखा है कि हर शाखा प्रबंधक एक निश्चित समय के अन्तराल पर, इन कंपनियों में जाता रहेगा ताकि ग्राहकों की मांग का आकलन होता रहे।

होता यह है कि अलग-अलग समय पर अलग-अलग शाखा के उत्पादों की मांग बढ़ती है। इस बढ़ी हुई मांग को पूरा किया जा सकेगा अगर इस शाखा को मुख्य कार्यालय से और दूसरी शाखाओं से सहायता मिल जाये। हालांकि इस शाखा के उत्पादों की अपनी गुणवत्ता और कार्यकुशलता के बिना दूसरे केन्द्रों से आयी सहायता प्रभावकारी नहीं हो सकेगी, यह बात ध्यान में रखना ज़रूरी है।

यह एक सरलीकृत उदाहरण है यह समझने का कि गोचर और दशा-अन्तर्दशाओं में ग्रह कैसे अपना असर दिखाते हैं, और अष्टकवर्ग विधि इन प्रभावों का आकलन किस आधार पर करती है। कहना न होगा कि इस उदाहरण में उद्योगपति का अभिप्राय लग्न से है, उसके सात भागीदार सात ग्रह हैं और बारह कंपनियां बारह राशियां या भाव है। शाखा प्रबंधकों/भागीदारों का इन कंपनियों में जाना गोचर में उनकी स्थिति है और व्यापार में उठान का समय महादशा-अन्तर्दशा की तरह है।

शुभ प्रभाव–बिन्दु और रेखा

हर ग्रह हर राशि पर अपना प्रभाव डालता है। यदि यह प्रभाव शुभ है तो इसे बिन्दु[1] कहा जाता है और अगर अशुभ तो रेखा। जितने ज्यादा या कम बिन्दु एक ग्रह के पास होंगे, उतने ही शुभ या अशुभ प्रभाव डालने की क्षमता उसके पास होगी। बिन्दुओं और रेखाओं का आकलन अलग-अलग आधार पर होता है। उन्हें धन (+) या ॠण (-) की तरह जोड़ा-घटाया नही जा सकता लेकिन सभी धन (+) बिन्दु माने जाते हैं और अष्टकवर्ग विधि उन्हीं को आधार बनाकर चलती है। बेशक सभी ॠण (-) रेखायें मानी जाती है और उनकी गणना की विधि भी बिन्दुओं की गणना की तरह ही है लेकिन उनकी व्याख्या के सिद्धांत अलग होते हैं।

> **अतः जब हम कहते हैं– बृहस्पति का अष्टकवर्ग तो हमारा अभिप्रायः उस सामूहिक शुभ प्रभाव से होता है जो बृहस्पति अपनी स्थिति के आधार पर तथा अन्य छः ग्रहों एवं लग्न की स्थिति के आधार पर जातक की कुंडली की विभिन्न राशियों पर डालता है।**

अष्टकवर्ग गणित क्रम

अष्टकवर्ग पद्धति में गणना का क्रम निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जाता है:

1. मूल जन्म लग्न कुंडली[2]
2. हर ग्रह के बिन्दुओं का प्रस्तार वर्ग (प्रस्तारक)
3. हर ग्रह का भिन्नाष्टक वर्ग
4. सभी ग्रहों का मिलाकर सर्वाष्टक वर्ग
5. हर भिन्नाष्टक का त्रिकोण शोधन
6. हर भिन्नाष्टक का एकाधिपत्य शोधन
7. हर ग्रह का ग्रह गुणक
8. हर राशि का राशि गुणक
9. शोध्य पिंड

प्रस्तार चक्र

पहले मूल जन्म लग्न कुंडली से हर ग्रह का प्रस्तार वर्ग बनाया जाता है। फिर प्रस्तार में से सभी बिन्दुओं का योग लेकर भिन्नाष्टक तैयार किया जाता है।

---

[1] उत्तर भारत में प्रथा इसके ठीक उलट है। यानि शुभ प्रभाव को रेखा एवं अशुभ प्रभाव को बिन्दु कहते हैं।

[2] यदि जन्म समय एकदम पक्का न भी मालूम हो तो अष्टकवर्ग गणनाएं वही रहेंगी, यदि लग्न न बदलता हो तो। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस पद्धति में लग्न स्फुट का कोई विशेष प्रयोजन नहीं है।

सूर्य के अपनी स्थिति[3] से शुभ स्थान होते हैं: प्रथम (1), द्वितीय (2), तृतीय (3), सप्तम (7), अष्टम (8), नवम (9), दशम (10) और एकादश (11)

चन्द्र की स्थिति से सूर्य के शुभ स्थान होते हैं तृतीय (3), षष्ठ (6), दशम (10) और एकादश (11)

इसी तरह शेष ग्रहों की स्थिति से (राहु/केतु को छोड़कर) और लग्न से, सूर्य को शुभ स्थान प्रदान किये गये हैं। तालिका 2-I हर ग्रह के शुभ स्थानों की ऐसी सूची दिखाती है। इसी तालिका का प्रयोग हर ग्रह का प्रस्तारक बनाने के लिये किया जाता है।

उदाहरण कुंडली

आइए, भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी की कुंडली को उदाहरण बनाकर अष्टकवर्ग गणना करते हैं। उनका जन्म 29 मई, 1917 को सायं 3 बजकर 15 मिनट 28 सेकंड (स्थानीय समय) पर संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ था। उनकी निरयण जन्म कुंडली निम्नांकित है:

इस कुंडली के प्रस्तार चक्र तालिका 2-II से तालिका 2-VIII[4] में दिखाए गए हैं। अगर हम हर राशि के लिये मिले बिन्दुओं का जोड़ करें तो संबंधित ग्रह का भिन्नाष्टक वर्ग मिल जायेगा और भिन्नाष्टक वर्ग में, हर ग्रह को भिन्न राशियों से मिले बिन्दुओं का योग करने पर (एक बिन्दु के लिये एक अंक) सर्वाष्टक वर्ग मिल जाएगा।

	मंगल 25°43' बुध 27°53'	सूर्य 15°03' शुक्र 24°02' गुरु 00°20'	केतु 18°32'
	2-अ जे. एफ. कैनेडी 29 मई, 1917 15:15:28 71W08, 42N20		शनि 04°27'
			चन्द्र 24°30'
राहु 18°32'			लग्न 27°37'

[3]सूर्य से प्रथम स्थान अर्थात् कुंडली में जहां सूर्य बैठा है। द्वितीय स्थान अर्थात् अगली राशि।

[4](✓) मार्क से शुभ बिन्दु दर्शाएं गए हैं। जो खाली हैं वे अशुभ स्थान हैं, यानि रेखा हैं।

तालिका 2-I: ग्रहों से शुभ भाव

	सूर्य (48)	मंगल (39)	बृहस्पति (56)	शनि (39)
सूर्य	1 2 4 7 8 9 10 11	3 5 6 10 11	1 2 3 4 7 8 9 10 11	1 2 4 7 8 10 11
चन्द्र	3 6 10 11	3 6 11	2 5 7 9 11	3 6 11
मंगल	1 2 4 7 8 9 10 11	1 2 4 7 8 10 11	1 2 4 7 8 10 11	3 5 6 10 11 12
बुध	3 5 6 9 10 11 12	3 5 6 11	1 2 4 5 6 9 10 11	6 8 9 10 11 12
बृहस्पति	5 6 9 11	6 10 11 12	1 2 3 4 7 8 10 11	5 6 11 12
शुक्र	6 7 12	6 8 11 12	2 5 6 9 10 11	6 11 12
शनि	1 2 4 7 8 9 10 11	1 4 7 8 9 10 11	3 5 6 12	3 5 6 11
लग्न	3 4 6 10 11 12	1 3 6 10 11	1 2 4 5 6 7 9 10 11	1 3 4 6 10 11

	चन्द्र (49)	बुध (54)	शुक्र (52)
सूर्य	3 6 7 8 10 11	5 6 9 11 12	8 11 12
चन्द्र	1 3 6 7 10 11	2 4 6 8 10 11	1 2 3 4 5 8 9 11 12
मंगल	2 3 5 6 9 10 11	1 2 4 7 8 9 10 11	3 5 6 9 11 12
बुध	1 3 4 5 7 8 10 11	1 3 5 6 9 10 11 12	3 5 6 9 11
बृहस्पति	1 4 7 8 10 11 12	6 8 11 12	5 8 9 10 11
शुक्र	3 4 5 7 9 10 11	1 2 3 4 5 8 9 11	1 2 3 4 5 8 9 10 11
शनि	3 5 6 11	1 2 4 7 8 9 10 11	3 4 5 8 9 10 11
लग्न	3 6 10 11	1 2 4 6 8 10 11	1 2 3 4 5 8 9 11

1. तालिका में दी गई संख्याएं उन भावों को दर्शाती हैं जो प्रत्येक ग्रह से दी गई संख्या तक गिने जाएं।
2. हमने यहां 337 - बिन्दुओं की अष्टकवर्ग पद्धति ली है जो सर्वाधिक प्रचलित है।
3. प्रत्येक ग्रह के कुल शुभ बिन्दुओं की संख्या उसी के साथ वृत्त में दर्शाई गई है।
4. ऐसा देखा जा सकता है कि चन्द्रमा से हर ग्रह के शुभ भाव वही हैं जो सामान्य गोचर में प्रयुक्त होते हैं।

तालिका 2-II: सूर्य का प्रस्तारक

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य		✓	✓		✓			✓	✓	✓	✓	✓	8
चन्द्र		✓	✓				✓			✓			4
मंगल	✓	✓		✓			✓	✓	✓	✓	✓		8
बुध			✓		✓	✓			✓	✓	✓	✓	7
गुरु						✓	✓			✓		✓	4
शुक्र	✓						✓	✓					3
शनि	✓	✓		✓	✓		✓			✓	✓	✓	8
लग्न			✓	✓	✓			✓	✓		✓		6
सूर्य का भिन्नाष्टक	3	4	4	3	4	2	5	4	4	6	5	4	(48)

तालिका 2-III: चन्द्रमा का प्रस्तारक

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य				✓			✓	✓	✓		✓	✓	6
चन्द्र		✓	✓		✓		✓			✓	✓		6
मंगल		✓	✓		✓	✓			✓	✓	✓		7
बुध	✓		✓	✓	✓		✓	✓		✓	✓		8
गुरु	✓	✓			✓			✓	✓		✓	✓	7
शुक्र				✓	✓	✓		✓		✓	✓	✓	7
शनि		✓				✓		✓	✓				4
लग्न			✓	✓				✓			✓		4
चन्द्रमा का भिन्नाष्टक	2	4	4	4	5	3	3	6	4	4	7	3	(49)

तालिका 2-IV: मंगल का प्रस्तारक

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य				✓		✓	✓				✓	✓	5
चन्द्र			✓				✓			✓			3
मंगल	✓	✓		✓			✓	✓		✓	✓		7
बुध			✓		✓	✓					✓		4
गुरु	✓						✓				✓	✓	4
शुक्र	✓						✓		✓			✓	4
शनि	✓	✓		✓			✓			✓	✓	✓	7
लग्न			✓	✓		✓		✓			✓		5
मंगल का भिन्नाष्टक	4	2	3	4	1	3	6	2	1	3	6	4	(39)

तालिका 2-V: बुध का प्रस्तारक

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य	✓					✓	✓			✓		✓	5
चन्द्र		✓	✓			✓		✓		✓		✓	6
मंगल	✓	✓		✓			✓	✓	✓	✓	✓		8
बुध	✓		✓		✓	✓			✓	✓	✓	✓	8
गुरु	✓						✓		✓			✓	4
शुक्र		✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓		✓	8
शनि	✓	✓		✓	✓		✓			✓	✓	✓	8
लग्न	✓		✓	✓		✓	✓		✓		✓		7
बुध का भिन्नाष्टक	6	4	4	4	3	5	5	2	5	6	4	6	(54)

तालिका 2-VI: बृहस्पति का प्रस्तारक

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य		✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓	✓	✓	9
चन्द्र	✓		✓			✓			✓		✓		5
मंगल	✓	✓		✓			✓	✓		✓	✓		7
बुध	✓	✓		✓	✓	✓			✓	✓	✓		8
गुरु		✓	✓	✓	✓			✓	✓		✓	✓	8
शुक्र			✓			✓	✓			✓	✓	✓	6
शनि			✓			✓		✓	✓				4
लग्न		✓	✓	✓		✓	✓		✓	✓	✓	✓	9
गुरु का भिन्नाष्टक	3	5	6	5	3	5	3	4	6	5	7	4	(56)

तालिका 2-VII: शुक्र का प्रस्तारक

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य	✓								✓			✓	3
चन्द्र	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	9
मंगल			✓		✓	✓			✓		✓	✓	6
बुध			✓		✓	✓			✓		✓		5
गुरु						✓			✓	✓	✓	✓	5
शुक्र		✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓	✓	9
शनि	✓	✓				✓	✓	✓			✓	✓	7
लग्न	✓	✓		✓		✓	✓	✓	✓	✓			8
शुक्र का भिन्नाष्टक	4	3	4	3	4	7	3	3	7	3	5	6	(52)

तालिका 2-VIII: शनि का प्रस्तारक

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य		✓	✓		✓			✓	✓		✓	✓	7
चन्द्र			✓				✓			✓			3
मंगल			✓		✓	✓				✓	✓	✓	6
बुध						✓		✓	✓	✓	✓	✓	6
गुरु	✓					✓	✓					✓	4
शुक्र	✓						✓					✓	3
शनि		✓				✓		✓	✓				4
लग्न			✓	✓		✓		✓	✓		✓		6
शनि का भिन्नाष्टक	2	2	4	1	2	5	3	4	4	3	4	5	(39)

तालिका 2-IX: सर्वाष्टकवर्ग

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल*
सूर्य	3	4	4	3	4	2	5	4	4	6	5	4	48
चन्द्र	2	4	4	4	5	3	3	6	4	4	7	3	49
मंगल	4	2	3	4	1	3	6	2	1	3	6	4	39
बुध	6	4	4	4	3	5	5	2	5	6	4	6	54
गुरु	3	5	6	5	3	5	3	4	6	5	7	4	56
शुक्र	4	3	4	3	4	7	3	3	7	3	5	6	52
शनि	2	2	4	1	2	5	3	4	4	3	4	5	39
सर्वाष्टकवर्ग	24	24	29	24	22	30	28	25	31	30	38	32	(337)

*इस कॉलम की संख्याएं हर कुंडली के लिए वही रहती हैं। इनका योग हमेशा 337 ही होता है।

32	मंगल बुध 24	सूर्य शुक्र गुरु 24	केतु 29
38	2–ब जे. एफ. कैनेडी सर्वाष्टकवर्ग		शनि 29
राहु 29			चन्द्र 29
31	25	28	30

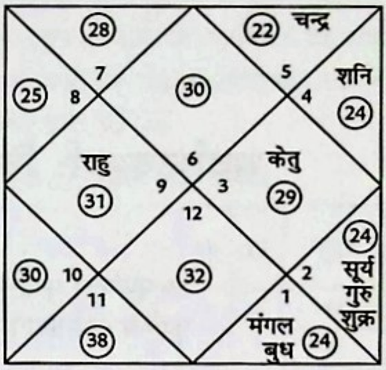

तालिका 2-IX के योग को कुंडली में किस तरह बैठाया जाता है, यह कुंडली-2ब में दिखाया गया है।

भिन्नाष्टक वर्ग का अर्थ है हर ग्रह का अलग-अलग राशि-वार बिन्दुओं का योग। सर्वाष्टक वर्ग सभी ग्रहों के भिन्नाष्टक में प्राप्त बिन्दुओं का कुल योग। प्रस्तार का अभिप्राय है अष्टकवर्ग का विस्तार से आकलन। इससे यह मालूम पड़ता है कि किस ग्रह ने किस भाव या राशि में बिन्दु दिये हैं अथवा नहीं। भविष्यवाणी के लिये प्रस्तार, भिन्नाष्टक और सर्वाष्टक, इन सबका अपना अलग-अलग महत्व है।

नोट: *इस सब गणना का आधार राशि कुंडली बने या भाव कुंडली, तथा लग्न और राहु/केतु की अष्टकवर्ग में भूमिका क्या है, आदि विवादास्पद विषयों पर चर्चा अन्तिम अध्याय में की गई है।*

3

सर्वाष्टकवर्गः नियति के संचित बिन्दु

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

वृहदारण्यक उपनिषत् V-1/1

वह कारण ब्रह्म पूर्ण है। यह कार्य ब्रह्म पूर्ण है। पूर्ण से पूर्ण जन्म लेता है। पूर्ण से पूर्ण लेकर भी पूर्ण ही शेष रहता है।

यदि हमारी रुचि मात्र सर्वाष्टक बिंदुओं में हो तो अलग-अलग ग्रहों के प्रस्तार चक्र बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हालांकि ग्रहों के प्रस्तार चक्रों के कई उपयोग हैं लेकिन त्वरित भविष्यवाणियां करने के लिए सर्वाष्टक बिंदुओं का आधार ही पर्याप्त रहता है, विशेषकर जन्म कुंडली के सामान्य विश्लेषण के लिये और जातक के जीवन का सर्वांगीण स्वरूप जानने के लिए।

सर्वाष्टक गणना की सरल विधि

सर्वाष्टक गणना के लिये एक ही तालिका से सर्वाष्टक बिंदु जानने की विधि विकसित की गई है। यदि आप तालिका 2-I को ध्यान से देखें तो पायेंगे कि एक भाव को एक ही ग्रह एक से अधिक बिंदु देता है, लेकिन अलग-अलग शीर्षों के अन्तर्गत (यथा 'सूर्य', 'चन्द्रमा', 'मंगल' आदि के भिन्नाष्टक)।

उदाहरण के लिए सूर्य अपने से प्रथम स्थान पर अपने अष्टकवर्ग में एक बिंदु देता है और साथ ही गुरु और शनि के अष्टकवर्ग में भी एक-एक बिन्दु देता है। अतः अपने से प्रथम स्थान पर वह सर्वाष्टक के लिहाज से कुल मिलाकर तीन बिंदु प्रदान करता है। इस तरह यदि ये सभी बिंदु हर ग्रह और भाव के लिए जोड़े जायें तो एक नयी तालिका तैयार हो जाती है (देखें तालिका 3-I)।

तालिका 3-I की प्रयोग विधि

तालिका 2-IX के प्रारूप के अनुसार एक खाली तालिका तैयार कर लें। अब सूर्य से प्रथम स्थान पर तीन बिंदु भरें और तीन बिंदु सूर्य से दूसरे स्थान पर। इसी तरह

तालिका 3-I में दी गई संख्याओं के अनुसार बढ़ते चलें। चन्द्रमा से दूसरे ग्रहों की स्थिति के हिसाब से भी इसी तरह तालिका भरें। अब हर खाने की संख्याओं का जोड़ ऊपर से नीचे तक लगायें। ये जोड़ हर भाव के सर्वाष्टक बिंदु हैं। तालिका 3-II में हमने उदाहरण कुंडली के लिए ऐसी ही तालिका तैयार की है।

तालिका 3-I: भिन्नाष्टक के बिना सर्वाष्टक की गणना

स्थान ▶ ▼ ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य	3	3	3	3	2	3	4	5	3	5	7	2	43
चन्द्र	2	3	5	2	2	5	2	2	2	3	7	1	36
मंगल	4	5	3	4	3	3	4	4	4	6	7	2	49
बुध	3	1	5	2	6	6	1	2	5	5	7	3	46
गुरु	2	1	1	2	3	4	2	4	2	4	7	4	36
शुक्र	2	3	3	3	4	4	2	3	4	3	6	3	40
शनि	3	2	4	4	4	3	3	4	4	4	6	1	42
लग्न	5	3	5	5	2	6	1	2	2	6	7	1	45
													337

तालिका 3-II

राशि ▶ ▼ ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य	2	3*	3	3	3	2	3	4	5	3	5	7	43
चन्द्र	2	3	7	1	2*	3	5	2	2	5	2	2	36
मंगल	4*	5	3	4	3	3	4	4	4	6	7	2	49
बुध	3*	1	5	2	6	6	1	2	5	5	7	3	46
गुरु	4	2*	1	1	2	3	4	2	4	2	4	7	36
शुक्र	3	2*	3	3	3	4	4	2	3	4	3	6	40
शनि	4	6	1	3*	2	4	4	4	3	3	4	4	42
लग्न	2	2	6	7	1	5*	3	5	5	2	6	1	45
सर्वाष्टक	24	24	29	24	22	30	28	25	31	30	38	32	337

सावधानः तालिका 3-II की संख्याएं भिन्नाष्टकवर्ग की संख्याएं नहीं हैं, हालांकि उनका योग सही सर्वाष्टक संख्याएं देता है।

*कुंडली में ग्रह की राशि-स्थिति दर्शाता है।

तालिका 2-IX सर्वाष्टकवर्ग के साथ-साथ हर ग्रह के अष्टकवर्ग की सही तस्वीर प्रस्तुत करती है जबकि तालिका 3-I मूलतः सर्वाष्टकवर्ग के लिये ही उपयोगी है। तालिका 3-II की आंतरिक संख्याओं का भविष्यवाणी के उद्देश्य से क्या उपयोग है, इस विषय में शास्त्र मौन है। लेकिन इन्हें नज़र-अंदाज़ करना ठीक नहीं होगा। एक राशि पर अलग-अलग ग्रहों के गोचर के प्रभाव का विश्लेषण करने में इनका सदुपयोग हो सकता है।[1]

तालिका 3-I का सूक्ष्म परीक्षण करने पर और भी रोचक परिणाम मिलता है, जिस पर यह लोकप्रिय सिद्धांत आधारित है कि कोई भी ग्रह अपना सबसे अधिक शुभ प्रभाव तव-तव देता है, जब-जब वह जन्म कुण्डली में अपनी स्थिति से ग्यारहवें स्थान पर गोचरवश होता है। तालिका 3-I में देखिये-सभी ग्रह एवं लग्न अपने से ग्यारहवें स्थान पर सात अथवा छः बिंदु लिए बैठे हैं।

इससे यह सिद्धांत भी निकलता है कि अष्टकवर्ग के आधार पर वह राशि, जिसके स्वयं से तीसरे स्थान पर एकाधिक ग्रह हों अत्यंत शक्तिशाली राशि बन जाती है।

सर्वाष्टकवर्ग का उपयोग

कुल 337 सर्वाष्टक बिंदुओं को 12 से भाग देने पर औसत लगभग 28 आता है। अतः 28 वह औसत अंक है जिससे तुलना करने पर किसी भाव में बिंदुओं का कम या अधिक होना माना जा सकता है।

सामान्य सिद्धांत

1. कोई भी राशि या भाव, जहां 28 से अधिक बिंदु हों, शुभ फल देगा। जितने अधिक बिंदु होंगे उतना ही अच्छा फल होगा। इसके विपरीत उन भाव या राशियों में जिनमें 28 से कम बिंदु होंगे, अशुभ फल मिलेंगे। व्यवहार में 25 से 30 के बीच बिंदुओं को सामान्य फलदायी ही माना जाता है। दूसरे शब्दों में यही कहा जायेगा कि यदि बिंदु 30 से ऊपर हों तभी कोई भाव/राशि विशेष शुभ फल देगी।

2. वह ग्रह प्रभावहीन हो जाता है जो ऐसे भाव/राशि में स्थित है जहां बिंदु कम हैं, चाहे वह स्थान उसका उच्च, स्वक्षेत्री, केन्द्र या त्रिकोण ही क्यों न हो, और चाहे वह लग्न से उपचय (3, 6, 10, 11) स्थानों में ही क्यों न स्थित हो। तात्पर्य यह है कि इस ग्रह को अन्य ग्रहों से समर्थन नहीं मिल रहा।

---

[1]टिप्पणी: कुछ लेखक तालिका 3-II को समुदाय अष्टकवर्ग का नाम देकर विद्यार्थियों को भरमा रहे हैं। समुदायाष्टक, सकलाष्टक, महाष्टक आदि सर्वाष्टक के ही पर्यायवाची हैं। अतः समुदायाष्टक या सर्वाष्टक, ये दो अलग तत्व नहीं हैं।

3. इसके विपरीत वे ग्रह भी शुभ फल देंगे जो अपने नीच स्थानों में अथवा दुःस्थानों, जैसे 6, 8 या 12 में हों,[2] किंतु वहां बिंदु अधिक हों। कुछ विद्वानों का मत इससे भिन्न है।

4. यदि नवें, दसवें, ग्यारहवें, और लग्न – इन सभी में 30 से अधिक बिंदु हों तो जातक का जीवन समृद्धिपूर्ण होगा। इसके विपरीत यदि इन भावों में 25 से कम बिंदु हों तो जातक को रोग और बेबसी की ज़िन्दगी भोगनी पड़ेगी।

5. यदि ग्यारहवें घर में दसवें घर से ज़्यादा बिंदु हों और ग्यारहवें में बारहवें घर से ज़्यादा, साथ ही लग्न में बारहवें घर से ज़्यादा बिंदु हों तो जातक सुख-समृद्धि का जीवन भोगेगा।

6. जातक भिखारी का जीवन जियेगा यदि उसके लग्न, नवम, दशम और एकादश स्थानों में मात्र 21 या 22 या और कम बिंदु हों और त्रिकोण स्थानों में अशुभ ग्रह बैठे हों।

7. यदि चन्द्रमा सूर्य से निकट होने के कारण पक्षबल रहित हो, चन्द्र राशि के स्वामी के पास कम बिंदु हों (जैसे 22) और उसे शनि देखता हो तो जातक पर दुष्टात्माओं का प्रभाव रहेगा। यदि राहु भी चन्द्रमा पर प्रभाव डाल रहा हो तो इस परिणाम में कोई संशय नहीं रहेगा।

8. जब-जब कोई अशुभ ग्रह ऐसे भाव पर गोचर-वश विचरण करेगा जिसमें 21 से कम बिंदु हों तो उस भाव से संबंधित फलों की हानि होगी।

9. इसके विपरीत, जब कोई ग्रह किसी ऐसे घर में विचरण करता है जहां 30 से अधिक बिंदु हों तो उस भाव से संबंधित शुभ फल मिलेंगे जो उस ग्रह के कारकत्व और संबंधित कुंडली में उसे प्राप्त भाव विशेष के स्वामित्व के अनुरूप होंगे।

10. इसी तरह ग्रह जिन राशियों के स्वामी होते हैं और जिन राशियों/भावों में वे स्थित होते हैं, उन स्थानों से संबंधित अच्छे फल वे अपनी दशा-अन्तर्दशा में देंगे। सूक्ष्मतर विश्लेषण के लिये दशा-स्वामी के भिन्नाष्टक वर्ग का अध्ययन करना चाहिये।

उदाहरण के लिये तालिका 2-IX में जे. एफ. कैनेडी के सर्वाष्टक बिंदुओं पर दृष्टि डालें। उनके लग्न (30), चतुर्थ भाव (31), पंचम (30), षष्ठ (38), सप्तम (32) तथा दशम (29) सुदृढ़ भाव हैं। सभी केन्द्र और त्रिकोण (नवम को छोड़कर) सुदृढ़ हैं और साथ ही षष्ठ भाव भी जो सबसे अधिक मजबूत है। उच्च पदों पर आसीन होने के लिए, एक, राजनैतिक व्यक्ति के लिए षष्ठ भाव का मज़बूत होना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि यह प्रतिस्पर्धा और शत्रुओं पर विजय का स्थान है। यह अर्थ त्रिकोण (2, 6, 10) का भी अंग है। कैनेडी एक अत्यंत संपन्न परिवार से थे और

उनका अपना व्यक्तित्व भी करिश्माई था। उनका लग्न और लग्नेश दोनों मज़बूत हैं। (लग्नेश बुध जहां स्थित है वहां 6 बिंदु हैं और स्वयं कन्या लग्न में 5 और दशम मिथुन में 4 बिंदु हैं।) सुदृढ़ चतुर्थ भाव ने ही उन्हें व्हाइट हाऊस में जेक्लिन बोवियर जैसी सुन्दर पत्नी (सुदृढ़ सप्तम) के साथ पहुंचाया। 24 बिन्दुओं के साथ नवम भाव यद्यपि मज़बूत नहीं है, किंतु वहां बृहस्पति और शुक्र जैसे दो बड़े शुभ ग्रहों की उपस्थिति ने इस कमी की भरपाई काफी मात्रा में कर दी है। सौर-सम्राट सूर्य स्वयं भी वहीं विराजमान हैं जिन्होंने कैनेडी को अपनी उत्प्रेरक ऊर्जा से न केवल अपने देश की बल्कि संभवत: पूरे विश्व की सबसे शक्ति-संपन्न सत्तापीठ पर आसीन कर दिया। नवम स्थान में गुरु (5), सूर्य (4) और शुक्र (3) का अष्टकवर्गीय योगदान भी बुरा नहीं कहा जा सकता।

(इस कुंडली का विवेचन सर्वाष्टक बिंदुओं के अतिरिक्त दूसरी दृष्टियों से इसी पुस्तक में अन्य स्थान पर किया गया है।)

सावधानी: मात्र सर्वाष्टक बिंदु देखकर ही किसी कुंडली का फल नहीं कहना चाहिये। कुंडली में मौजूद राजयोग, धनयोग और दूसरे योग होने भी ज़रूरी हैं। अष्टकवर्ग उन्हीं को सुदृढ़ करेगा जो योग कुंडली में उपस्थित हैं। अष्टकवर्ग द्वारा ऐसे योगों की वास्तविक शक्ति का मूल्यांकन भी किया जाता है।

जीवन खंड

11. जन्मकुंडली के तीन विभाग कीजिये:

    (क) मीन से मिथुन तक: बाल्यावस्था का द्योतक

    (ख) कर्क से तुला तक: युवावस्था का द्योतक

    (ग) वृश्चिक से कुम्भ तक: वृद्धावस्था का द्योतक

तीनों विभागों के बिंदुओं को अलग-अलग जोड़ें। जीवन की वह अवस्था सबसे अच्छी गुज़रेगी, जिसमें बिंदुओं का योग सबसे अधिक होगा।

कुछ विद्वान जीवन की अवस्थाओं की गणना लग्न से शुरू करना बताते हैं।

12. जीवन की वह अवस्था सुखी रहेगी जहां शुभ ग्रह स्थित हों। यदि बिन्दु कम हों तो उनकी कमी शुभ ग्रह पूरी करेंगे। इसके विपरीत यदि बिंदु भी कम हों और वहां स्थित ग्रह भी अशुभ हों तो वह जीवन-अवस्था अत्यंत दु:खपूर्ण होगी।

13. लग्न से लेकर जहां शनि बैठा हो, (दोनों राशि मिलाकर) उस राशि तक के बिंदुओं का जोड़ करें, इस जोड़ को 7 से गुणा करें और इस गुणनफल को 27 से

भाग दें। भागफल में प्राप्त संख्या वह आयु होगी जिसमें जातक को दुःख, रोग और विवाद घेरे रखेंगे।

14. नियम 13 में जो परिणाम आया है वही परिणाम तब भी आयेगा जब अंकों का जोड़ शनि स्थित राशि से लग्न तक (दोनों राशि मिलाकर) किया जाये और शेष क्रिया दोहरायी जाये।

15. नियम 13 और 14 में बताई प्रक्रियाओं को अन्य क्रूर ग्रह जैसे मंगल और राहु के लिये भी प्रयुक्त किया जा सकता है और इस प्रकार उन सभी वर्षों की सूची बनाई जा सकती है जो जातक के लिये अशुभकारी होने की संभावना रखते हैं।

16. नियम 13 और 14 की प्रक्रिया के अन्तर्गत अंकों का जोड़ करें और 27 से भाग दें, लेकिन इस बार शेषफल को लें। अश्विनी को प्रथम नक्षत्र मानकर शेषफल तक गिनें। इस तरह जो नक्षत्र प्राप्त होगा उस पर जब भी क्रूर ग्रह विचरण करेंगे तो अशुभ फल देंगे।

17. उपर्युक्त प्रकार की गणनाएं शुभ ग्रहों, जैसे गुरु और शुक्र की स्थिति से करके जीवन के शुभफलदायी वर्षों का निर्णय किया जा सकता है, जब सफलता, समृद्धि, विवाह, बच्चों का जन्म और विभिन्न सुख जातक को मिलने की संभावना होगी।

उदाहरण: नियम 13 से 17 की गणनायें हम अपनी उदाहरण-कुंडली के लिये नीचे दिखा रहे है:

क. लग्न से शनि तक के सर्वाष्टक बिंदु

$30 + 28 + 25 + 31 + 30 + 38 + 32 + 24 + 24 + 29 + 24 = 315$

इस जोड़ को 7 से गुणा करके और 27 से भाग देने पर भागफल 81 आता है और शेषफल 18, जो अश्विनी से गिनने पर ज्येष्ठा नक्षत्र का अंक है।

ख. शनि से लग्न के सर्वाष्टक बिंदु

$24 + 22 + 30 = 76$

यहां भागफल 19 है और शेषफल भी 19 है जो मूल नक्षत्र का द्योतक है।

ग. लग्न से मंगल के सर्वाष्टक बिंदु

$30 + 28 + 25 + 31 + 30 + 38 + 32 + 24 = 238$

भागफल 61 और शेषफल 19, जो अंक है मूल नक्षत्र का।

घ. मंगल से लग्न के सर्वाष्टक बिंदु

24 + 24 + 29 + 24 + 22 + 30 = 153

भागफल 39 और शेषफल 18 जो ज्येष्ठा नक्षत्र का अंक है।

ङ. लग्न से राहु के सर्वाष्टक बिंदु

30 + 28 + 25 + 31 = 114

भागफल 29 और शेषफल 15, जो स्वाति नक्षत्र का अंक है।

च. राहु से लग्न के सर्वाष्टक बिंदु

31 + 30 + 38 + 32 + 24 + 24 + 29 + 24 + 22 + 30 = 284

भागफल 73 और शेषफल 17 है जो अनुराधा नक्षत्र का अंक है।

छ. लग्न से बृहस्पति के सर्वाष्टक बिंदु

30 + 28 + 25 + 31 + 30 + 38 + 32 + 24 + 24 = 262

भागफल 67 और शेषफल 25 जो पूर्वाभाद्रपद का अंक है।

ज. बृहस्पति से लग्न के सर्वाष्टक बिंदु

24 + 29 + 24 + 22 + 30 = 129

भागफल 33 और शेषफल 12 है जो उत्तराफाल्गुनी का अंक है।

झ. शुक्र से लग्न और लग्न से शुक्र के सर्वाष्टक बिंदु वही हैं जो बृहस्पति से प्राप्त हुए हैं क्योंकि बृहस्पति और शुक्र एक ही भाव में स्थित हैं।

इस तरह अशुभफलदायी वर्ष निम्नांकित हुए:

शनि से : 81वां और 19वां

मंगल से : 61वां और 39वां

राहु से : 29वां और 73वां, और वे सभी वर्ष जब शनि, मंगल और राहु ज्येष्ठा, मूल, स्वाती या अनुराधा से गुज़रें। ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र विशेष रूप से दुष्ट हैं क्योंकि वे शनि और मंगल दोनों के द्वारा इंगित हैं। राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या 22 नवंबर 1963 को हुई जब मंगल ज्येष्ठा नक्षत्र पर विचरण कररहा था। मंगल का यह गोचर और भी विशेष अर्थ रखता है क्योंकि मृत्यु का कारण हिंसा था जो मंगल के कारकत्व का हिस्सा है। कैनेडी की हत्या एक षड्यंत्र के तहत हुई। मंगल अष्टमेश होकर लग्नेश बुध के साथ अष्टम भाव में स्थित है।

शुभफलदायी वर्ष, गुरु और शुक्र दोनों ही ओर से समान हैं। यानी 33वां और 67वां वर्ष। और जब गुरु या शुक्र पूर्वाभाद्रपद अथवा उत्तराफाल्गुनी से गुजरे।

साढ़े साती

18. 'साढ़े साती' साढ़े सात साल की उस अवधि को कहते हैं जब शनि, जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति से बारहवें, प्रथम व द्वितीय स्थानों पर गोचर करता है। ज्योतिषियों ने सामान्य जन के मन में साढ़े साती का आतंक सा पैदा कर रखा है, जिस कारण अधिकतर लोग इस अवधि से घबराते हैं। सर्वाष्टकवर्ग एक आसान विधि से यह बता सकता है कि किसी जातक की साढ़े साती कैसी जायेगी, अच्छी या बुरी, किस सीमा तक, और कब।

चन्द्रमा से बारहवें, प्रथम और दूसरे स्थानों में सर्वाष्टक बिंदुओं को देखें। अगर तीनों स्थानों पर 30 से अधिक बिंदु हों तो जातक की साढ़े साती बहुत शुभफलदायी होगी। यदि ये बिंदु कम हुए जैसे 21, 22, 23 तो यह समय खराब जायेगा। लेकिन अगर इन तीनों में एक जैसे अंक न हुए यानी किसी स्थान में ज्यादा और दूसरों में कम तो साढ़े सात साल का यह समय एक-सा नहीं होगा। अधिक अंक वाले स्थान का समय अच्छा और कम अंकों के कारण कमज़ोर हुए स्थान का समय खराब जायेगा। साढ़े साती का सूक्ष्मतर विश्लेषण आगे कक्ष्या के अध्याय में दिया गया है।

दिशायें

19. विभिन्न राशियों और भावों द्वारा इंगित दिशायें निम्न हैं:

राशियां	दिशा	भाव
मेष, सिंह, और धनु	पूर्व	प्रथम, द्वादश, एकादश
वृष, कन्या और मकर	दक्षिण	दशम, नवम, अष्टम
मिथुन, तुला और कुंभ	पश्चिम	सप्तम, षष्ठ, पंचम
कर्क, वृश्चिक और मीन	उत्तर	चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय

एक ही दिशा के अन्तर्गत आई राशियों अथवा भावों के अंकों को जोड़िये। जहां अधिकतम जोड़ आये उसी दिशा में समृद्धि मिलेगी। यदि इस दिशा में शुभ ग्रह भी हों तो समृद्धि विशेष होगी, लग्नेश की दिशा में जीविका[2] संबंधी कार्यक्षेत्र होगा। अष्टमेश की दिशा विनाश का कारण बनेगी।

---

[2] दशमेश द्वारा इंगित दिशा भी जीविका के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है। दशमांश का लग्न एवं लग्नेश भी इस विषय में महत्वपूर्ण दखल रख सकते हैं।

20. ***तीव्र फलोदय का सिद्धान्तः*** विभिन्न भावों में सर्वाष्टक बिंदुओं की तुलना करें। यदि एक घर में न्यूनतम बिंदु हैं और उससे अगले घर में अधिकतम, तो जातक जीवन में अचानक ऊपर उठेगा। यदि दोनों अंकों में अन्तर काफी ज्यादा हुआ तो जातक उतनी ही अधिक तीव्र उन्नति का अनुभव करेगा। इसके विपरीत यदि एक घर से दूसरे घर में अधिकतम बिंदुओं से न्यूनतम बिंदुओं की गिरावट हो तो जातक जीवन के किसी या कुछ क्षेत्रों में हानि का सामना करेगा। जहां इन घरों में न्यूनतम और अधिकतम बिंदुओं का अन्तर मामूली होगा वहां जातक करीब करीब एक-सी और धीमी प्रगति का अनुभव करेगा। यदि इस तरह के तीव्र अन्तर कई भावों के बीच होंगे तो जातक का सारा जीवन उतार-चढ़ाव से भरा रहेगा—यानि कभी राजा तो कभी रंक।

21. त्वरित भविष्यवाणियों के लिए सर्वाष्टकवर्ग विधि का एक सिद्धांत अत्यंत लोकप्रिय है:

(क) यदि एकादश भाव में दशम भाव से अधिक बिंदु हों तो जातक अपेक्षाकृत कम प्रयासों से अधिक लाभ पाएगा[3]। मुख्यतः लग्न से एकादश भाव के संदर्भ में यह नियम लागू किया जाता है, लेकिन अन्य भावों से एकादश भाव के संदर्भ में भी इस नियम का उपयोग किया जा सकता है। 'एकादश कहां से?' पुस्तक में आगे के एक अध्याय में इसकी चर्चा की गई है।[4]

(ख) अगर इस स्थिति के विपरीत जातक का बारहवां भाव दूसरे भाव से अधिक प्रबल हो तो इसका अभिप्राय आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में यही होगा कि वह अपने पारिवारिक व्यवसाय में न लग कर, विदेश में अपना भाग्य आज़मायेगा और वहां उस पर लक्ष्मी की कृपा होगी। कौन सा परिणाम कहां लागू होगा, यह देखने के लिये जन्म कुंडली में दूसरे योगों को भी देखना होगा।

(ग) यदि बारहवें भाव में ग्यारहवें से अधिक अंक हों तो इसका अभिप्राय निम्नलिखित में से कोई एक हो सकता है:

(i) आय से अधिक व्यय, जिसका परिणाम होगा कर्ज में डूबना

(ii) विदेशी स्रोतों से आय, यह स्थिति उन लोगों की जन्म कुंडलियों में देखी जाती है जिनके सितारे मातृभूमि से बाहर किसी देश में चमकते

---

[3] राजीव गांधी की कुंडली इस नियम का उज्ज्वल उदाहरण है। उनके एकादश में 50 बिन्दु हैं और 31 हैं दशम में। एक साधारण विमान चालक से अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रधानमंत्री बनने की छलांग निश्चय ही नियम 19 और 21 की सत्यता दर्शाते हैं।

[4] राजीव गांधी की कुंडली में एकादश तीन तरह से बलशाली है — लग्न से, चन्द्रमा से और सूर्य से। यही तीन सुदर्शन चक्र के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण संदर्भ बिन्दु हैं।

हैं। ऐसे में चतुर्थ भाव और उसके स्वामी का किंचित पीड़ित होना लगभग अनिवार्य होता है।

(घ) यदि दूसरे भाव में बारहवें भाव से अधिक बिंदु हों तो जातक में आमोद-प्रमोद पर व्यय करने के बजाय धन को जोड़ने की प्रवृत्ति अधिक होगी। ऐसे लोग कभी जल्दबाज़ी में खरीदारी नहीं करते बल्कि बारीकी से मोलभाव करते हैं। दो स्थानों के बिंदुओं में अन्तर जितना ज़्यादा होगा यह प्रवृत्ति उतनी ही उत्कट रूप से सामने आयेगी।

22. जिस भाव में 30 से अधिक बिंदु हों और एक साथ कई ग्रह उसमें गोचरवश विचरण कर रहे हों, तो उस अवधि में वे उस भाव के शुभ फलों को कई गुणा कर देंगे। फलों का स्वरूप इस बात पर निर्भर करेगा कि संबंधित भाव कौन सा है और गोचर के ग्रहों का मूल लग्न में स्थान कहां हैं और उनके कारकत्व क्या हैं।

23. जब (किसी विशेष दिन) उस राशि का उदय हो रहा हो जिसमें न्यूनतम बिंदु हैं और उस दिन चिकित्सकों से सलाह करके रोग का उपचार प्रारम्भ किया जाये तो जल्दी स्वास्थ्य-लाभ मिलने की संभावना होती है। इसी तरह उस समय में यदि ऋण लिया जाये तो उसे चुकाने की क्षमता भी जल्दी ही अर्जित हो जाती है।

मेलापक

24. किसी विवाह के सुखी और सफल होने के लिए वर और वधू की चन्द्र राशियों के बिंदु एक दूसरे की जन्म कुंडलियों में 30 से अधिक होने चाहियें।

25. जन्म लग्न एवं उससे दूसरे, चौथे, नवें, दसवें और ग्यारहवें भाव के बिंदुओं का योग करें। यदि यह योग 164 से अधिक है तो जातक समृद्ध होगा। संख्या 164 को 'वित्ताय' कहते है जो वित्तीय समृद्धि की द्योतक है।

26. इसी तरह छठे, आठवें और बारहवें घर के बिंदुओं का योग करें। यदि यह योग 76 से कम आये तो आय व्यय से अधिक होगी। संख्या 76 को 'तीर्थ' का नाम दिया गया है।

नोटः आधुनिक युग के संदर्भ में यह नियम संभवतः ठीक न बैठे क्योंकि आज के युग में सफल राजनीतिज्ञ होने के लिए छठे भाव में अधिक बिंदु (76/3=25 कम से कम) होने ज़रूरी होंगे और आठवें भाव में अधिक बिंदु हो तो अनार्जित धन मिल सकेगा जैसे सट्टा बाज़ार और पैतृक सम्पत्ति द्वारा। और यदि विदेश में जाकर धनश्री-भाग्यश्री प्राप्त करनी हो तो बारहवें भाव में अधिक बिंदु होने चाहिए।

27. प्रथम, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम एवं दशम भाव के बिंदुओं का योग करें। ये भाव जातक में अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह योग यदि शेष छः भावों (बहिर्मुखी प्रवृत्तियों के द्योतक) के बिंदु-योग से अधिक है तो जातक सन्तोषी जीव होगा और ज्ञान-ध्यान, सत्कर्म और दान-पुण्य से आंतरिक शांति पायेगा। विपरीत स्थिति में जातक हमेशा अपने से बाहर सुख ढूंढेगा जिसके कारण उसका मन लालच, छल-कपट, झूठे दिखावे और अहंकार से ग्रस्त रहेगा।

28. कुंडली के बारह भावों को निम्न चार वर्गों में बांटा जा सकता है:

बन्धु : प्रथम, पंचम एवं नवम भाव

सेवक : द्वितीय, षष्ठ एवं दशम भाव

पोषक : तृतीय, सप्तम एवं एकादश भाव

घटक : चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश भाव

हर वर्ग के अन्तर्गत बिंदुओं का योग करें। यदि बन्धु वर्ग का योग सेवक वर्ग से अधिक है तो जातक आजीविका स्वतन्त्र रूप से अर्जित करेगा और उसके औरों से संबंध भी अच्छे होंगे। विपरीत स्थिति में जातक दूसरों पर निर्भर रहेगा। इस सिद्धांत का उपयोग यह जानने में सहायक हो सकता है कि जातक अपना व्यवसाय करेगा या नौकरी करेगा।

इसी तरह यदि पोषक वर्ग के बिंदु घटकवर्ग से अधिक हैं तो जातक धनाढ्य होगा।

नोट: एक अन्य संदर्भ में इसी वर्गीकरण को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के क्रम में भी रखा जाता है। हमारा अपना अनुभव यह रहा है कि यदि सेवक (वैकल्पिक रूप में अर्थ) वर्ग के बिंदु यथेष्ट हैं तो व्यक्ति धनाढ्य होगा अथवा धनोन्मुखी तो अवश्य ही होगा। किंतु फिर भी हमारा मंतव्य बंधु (अर्थात् धर्म) वर्ग की प्राथमिक शक्ति से इन्कार करना नहीं है, आखिरकार बन्धु वर्ग, त्रिकोण अर्थात् लक्ष्मी-स्थान है।

इसी तरह शास्त्र सुख-वैभव प्रदान करने में चतुर्थ भाव की खूब प्रशंसा करते हैं, जबकि यहां इस भाव को घटक वर्ग में लिया गया है जो दरिद्रता का प्रतिनिधित्व करता है, फिर चतुर्थ भाव तो विष्णु स्थान है और विष्णु वे देवता हैं जो जगत के पोषक कहलाते हैं। अगले नियम में इस विषमता के बारे में कुछ और ही कहा गया है।

29. यदि जन्म लग्न का स्वामी चौथे भाव के स्वामी के साथ अपने स्थानों का परस्पर विनिमय कर ले और उन दोनों स्थानों में 33 से अधिक बिंदु हों तो जातक राजा की तरह धनवान् होगा और अपने समाज पर शासन करेगा।

नोट: चौथे घर में या उसके स्वामी के साथ शुभ ग्रहों की उपस्थिति या दृष्टि चतुर्थ भाव को शक्ति देती है। अर्थात् यदि बिंदुओं में कमी हो तो वे उसकी भरपाई करते हैं। विपरीत स्थिति में चतुर्थ भाव की शक्ति कम हो जाती है।

30. सर्वाष्टकवर्ग को कई अन्य नाम भी दिये गये है। यद्यपि उन सभी का अर्थ लगभग एक जैसा है:

(क) **समुदाय अष्टकवर्ग**
(ख) **व्यूहाष्टकवर्ग**
(ग) **अखिलाष्टकवर्ग**
(घ) **पिण्डाष्टकवर्ग**
(ङ) **सकलाष्टकवर्ग**
(च) **महाष्टकवर्ग**

31. 'प्रश्न मार्ग' में हर भाव में सर्वाष्टक बिंदुओं की एक निश्चित संख्या तय कर दी गई है जिसके ऊपर संबंधित भाव शक्ति-संपन्न कहलाता है। निम्नांकित संख्याएं वे न्यूनतम बिंदु हैं जिनके नीचे होने पर संबंधित भाव कमज़ोर माना जाता है।

भाव	बिंदु	भाव	बिंदु
लग्न	25	सप्तम	19
द्वितीय	22	अष्टम	24
तृतीय	29	नवम	29
चतुर्थ	24	दशम	36
पंचम	25	एकादश	54
षष्ठ	34	द्वादश	16

अष्टकवर्ग में मध्य बिन्दु 28 हैं। यह तालिका उस सिद्धांत से हटकर संख्याएं दिखाती है। यदि हम सभी ग्रहों को लग्न में स्थित कर दें, जैसा कि कहा जाता है कि महाप्रलय के समय में होता है, तो लग्न से शुरु करके भावों में बिंदुओं की संख्या का क्रम होगा- 24, 22, 29, 26, 25, 34, 19, 26, 26, 36, 54 और 16. ये संख्यायें प्रश्नमार्ग में निर्धारित संख्याओं से कितना मिलती जुलती हैं।[5]

फिर भी, इन संख्याओं से एक संदेश ज़रूर मिलता दिखाई देता है कि यदि व्यक्ति अपनी जिह्वा (द्वितीय घर) और कामेन्द्रियों (सप्तम व द्वादश) पर नियन्त्रण कर ले तो एक दीर्घ और समृद्ध जीवन जी सकता है। (इन इन्द्रियों से संबंधित भावों को न्यूनतम बिंदु क्रमशः 22, 19, और 16 संभवतः इसीलिये दिये गये हैं। द्वितीय और

[5] इन बिन्दुओं में संगति कैसे बैठाई जाए इसका आधार सांख्य दर्शन में है। इसकी व्याख्या 'अष्टकवर्ग' नामक पटेल एवं अय्यर द्वारा लिखित पुस्तक में बड़ी सुन्दरता से की गई है।

सप्तम यूं भी मारक घर हैं और द्वादश भी, क्योंकि वह शरीर के व्यय का घर होता है। इन अधोमुख क्रियाओं से बची हुई ऊर्जा (यानी बिंदु) का रचनात्मक क्रियाओं में सदुपयोग किया जा सकता है, अर्थात् तब शेष भाव अधिक बिंदु पा सकेंगे – आखिरकार बिंदुओं का कुल योग तो 337 ही रहना है।

नोट: बिंदुओं की लगभग ऐसी स्थिति किसी जन्म कुंडली में मुश्किल से ही मिलेगी। राजीव गांधी जिनकी कुंडली में एकादश भाव में बिंदु विलक्षण रूप से अधिक हैं, वहां भी उनकी संख्या 50 ही है यानि यथेष्ट से 4 कम।

4

लुढ़कते ताज, डोलते सिंहासन

अधिष्ठानं तथा कर्त्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पंचमम् ॥

भगवद्गीता XVIII-14

प्रत्येक कार्य की निष्पत्ति में ये पांच आधार सर्वत्र होते हैं। वे हैं, एक कार्य की आधारभूमि, दो कर्त्ता, तीन विभिन्न सहायक उपकरण, चार विविध सतत प्रयास तथा पांचवा दैव अर्थात् भाग्य।

पूर्व परिचय

समय एक निरंतर प्रवाह है और जीवन परिवर्तनशील। कभी लक्षित तो कभी अलक्षित रह जाने वाले परिवर्तन, किंतु कभी अत्यंत तीव्र और अचानक आने वाले मोड़ भी इस जीवन-प्रवाह में आते हैं। एक साधारण व्यक्ति के जीवन में इन परिवर्तनों को भुला दिया जाता है किंतु जब प्रभावशाली एवं विशिष्ट व्यक्ति का जीवन-चित्र नियति की तूलिका से परिवर्तित हो तो उसे ऐतिहासिक घटना माना जाता है। इतिहास हमेशा ही प्रसिद्ध व्यक्तियों के सुकृत्यों, दुष्कृत्यों, उपलब्धियों, असफलताओं व नाटकीय उत्थान और पतन की घटनाओं का आलेख रहा है और हमेशा रहेगा। सम्राटों की जन्मकुंडलियों में इसकी प्रामाणिकता खोजी जा सकती है क्योंकि उनका जीवन-वृत्त इतिहास में सुरक्षित है।

अब चूंकि हम राजाओं की चर्चा करने जा रहे हैं, इसलिए कुछ सुस्थापित शास्त्रीय सिद्धान्तों का वर्णन पहले कर दें:

1. चतुर्थ भाव और उसका स्वामी राजसिंहासन का द्योतक होता है।
2. जन्म कुण्डली अथवा नवांश में, या दोनों में, बृहस्पति जब सूर्य और चन्द्रमा को देखता है या उनसे युति करता है तो व्यक्ति को राजपुरुषोचित गरिमा प्रदान करता है।
3. दशम भाव राजा के यश, विजय या पराजय को दर्शाता है।

4. दशाओं का क्रम राजा के राजतिलक, विवाह, युद्ध, प्रतिस्पर्द्धाओं और इतिहास के मंच से बहिर्गमन के दृश्य रोचक एवं स्पष्टता से दिखलाता है।

5. शनि और बृहस्पति के गोचर इस ऐतिहासिक परिदृश्य को सूक्ष्मता से पकड़ने में विशेष भूमिका निभाते हैं।

6. ग्रहों के ऐसे गोचर प्रभावों की जांच जब अष्टकवर्ग विधि से की जाती है तो ज्ञात ऐतिहासिक विवरणों की पुष्टि अधिक स्पष्टता से की जा सकती है। यह अनुभव विद्वान ज्योतिषियों के इस मत का समर्थन करता है कि ज्योतिष विज्ञान राजाओं या उनके समकक्ष महत्त्वपूर्ण लोगों के लिये ही उपयोगी माना जाता था।

7. 'साढ़ेसाती' - वह अवधि जब शनि जन्मराशि में स्थित चन्द्रमा से द्वादश से द्वितीय भावों की यात्रा करता है - उस कालावधि का अष्टकवर्ग से अध्ययन सबसे प्रभावशाली और उपयोगी रहता है।

उदाहरण: पहले हम जन्म कुंडलियां नवांश चक्र के साथ दे रहे हैं। जन्म संबंधी विवरण डॉ. बी. वी. रमन की पुस्तक 'नोटेबल होरोस्कोप्स' के तीसरे संस्करण से लिये गये हैं और लाहिरी अयनांशों के आधार पर जन्म कुंडली बनाई गई है। इस अध्ययन के लिये हम केवल सर्वाष्टकवर्ग को ही आधार बना रहे हैं। जिन उदाहरणों की हम चर्चा करेंगे वे हैं:

1. बादशाह फारूख (मिस्र)
2. हैदराबाद के निज़ाम (भारत)
3. ड्यूक ऑफ विंडसर (इंग्लैंड)
4. बादशाह जॉर्ज VI (इंग्लैंड)
5. महारानी एलिज़ाबेथ II (इंग्लैंड)
6. महारानी विक्टोरिया (इंग्लैंड)

मिस्र का बादशाह फारुख

आइए, सबसे पहले इन मूल मान्यताओं को बादशाह फारुख की जन्मकुंडली पर लागू करके देखें:

(क) नवमेश, शुभग्रह शुक्र है जो चतुर्थ भाव में स्थित होकर, दशम को देख रहा है। चतुर्थेश बृहस्पति लाभ के ग्यारहवें घर में उच्चस्थ है। वक्री होने के कारण बृहस्पति अपने ही घर, अर्थात् चतुर्थ भाव को भी प्रभावित कर रहा है।

	केतु 27-18		
बुध 03-43	मिस्त्र का बादशाह फारुख 11 फरवरी, 1920 22:18 30°02'उ. 3°12'पू.		गुरु (व) 19-16
सूर्य 29-05			शनि (व) 16-49
शुक्र 23-27		चन्द्र28-49 मंगल10-56 राहु 27-18	लग्न 29-03

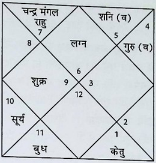

			चन्द्र राहु
	नवांश		
मंगल			
गुरु केतु	बुध शुक्र		सूर्य शनि

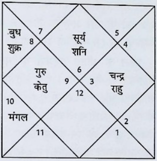

22	28	27	33
27	सर्वाष्टकवर्ग		32
22			29
32	35	31	19

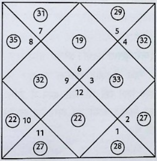

(ख) बृहस्पति सूर्य को तो देख ही रहा है साथ ही अपनी वक्र स्थिति से चन्द्रमा को भी प्रभावित कर रहा है। यहां तक कि नवांश में भी बृहस्पति चतुर्थेश होकर और चतुर्थ भाव में बैठ कर चन्द्रमा को देख रहा है। लग्न वर्गोत्तम है, अतः लग्न में स्थित बिंदुओं की कमी का कुछ परिहार हो रहा है।

(ग) दशमेश बुध, विरोध और संघर्ष के प्रतीक षष्ठ में स्थित है जिसे षष्ठेश शनि स्वयं वक्री होकर दृष्टिगत किये है।

आइये, अब बादशाह के जीवन में घटी घटनाओं पर दृष्टि डालें। वे भाई-बहनों में सबसे बड़े थे। बृहस्पति का एकादश भाव में होना इस तथ्य की पुष्टि करता है। पंचमेश शनि ने द्वादशेश सूर्य से स्थान-विनिमय किया है। शिक्षा के लिये विदेश में इंग्लैंड की रॉयल मिलिटरी अकेडमी में जाना इस योग के कारण ही हुआ है। उनकी शनि की महादशा 17 जुलाई 1925 से प्रारंभ हुई, और देखने की बात यह है कि वे शनि-सूर्य दशा में ही पढ़ने के लिए इंग्लैंड गये।

किंतु अचानक ही अप्रैल 1936 में उनके पिता बादशाह फाऊद गुज़र गये। उस समय शनि-सूर्य-शुक्र की दशा चल रही थी। कृपया नोट करें कि प्रत्यंतर दशा नवमेश शुक्र की थी और अन्तर्दशा पिता के कारक सूर्य की और महादशा का स्वामी शनि पिता के घर (नवम) को देख रहा है।

महल के भीतरी षड्यंत्रों के चलते अंग्रेज़ किसी सत्तर साल के बूढ़े को सिंहासन पर बैठाने वाले थे। किंतु ऐसा कैसे हो सकता था? आखिर, भावी राजा शनि-सूर्य-शुक्र की दशा से गुज़र रहा था। प्रत्यंतर दशा का स्वामी स्वयं भाग्येश शुक्र था और अन्तर्दशा का स्वामी सूर्य राजसी प्रताप के घर पंचम में ही स्थित था और स्वयं पंचमेश शनि, जो उस राजसी प्रताप का स्वामी है, महादशा का भी स्वामी था। मानो यह पर्याप्त नहीं था, इसलिये उन्हें सिंहासन पर आसीन करने के लिये राजसिंहासन का कारक चतुर्थेश ठीक उसी समय चतुर्थ भाव पर ही गोचर कर रहा था जहां 32 शुभ सर्वाष्टक बिंदु उसे पर्याप्त समर्थन दे रहे थे।

फारुख की मां एक चतुर महिला थीं। पति की मृत्यु होते ही उसने पुत्र को तार देकर बुलवा लिया। प्रबल भाग्य चक्र ने उनका राजतिलक करवा दिया।

जब बादशाह फारुख ने वर्ष 1937-38 में विवाह किया तब शनि-चन्द्र की दशा चल रही थी और दशा में शनि और गुरु गोचर में अपने संयुक्त उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए लग्न या लग्नेश को और सप्तम भाव या सप्तमेश को देख रहे थे।

किंतु उनका पूरा शासनकाल संघर्षों की गाथा है। दशम भाव के स्वामी बुध को आखिर छठे घर का स्वामी, बारहवें घर में बैठकर देख रहा है। शुरू में उनका संघर्ष नेशनलिस्ट पार्टी से हुआ और बाद में ब्रिटिश साम्राज्य से।

1948 में बुध-शुक्र की दशा आयी और उसके बाद जब बुध-सूर्य की दशा आयी तो अपने शुभचिंतकों की सलाह के विरुद्ध उन्होंने फिलिस्तीनियों के हित में संघर्ष

किया। वे इजरायल से युद्ध हार गये और यदि वे बुध-शुक्र दशा से न गुजर रहे होते तो उस पराजय के बाद ही अपदस्थ कर दिये गये होते। बुध-सूर्य की दशा में अंततः अपमानित होना पड़ा। (सूर्य द्वादशेश है और महादशा के स्वामी बुध से द्विर्द्वादश की स्थिति में बैठा है)।

उन्होंने अपमानित होकर भी अनेक सेनानायकों के असन्तोष को हवा दी, विशेषकर नासिर के। 22 जुलाई, 1952 को उनसे कहा गया कि वे जहाज़ पर सवार होकर अपने मुल्क से दूर चले जायें। उस समय बुध-चन्द्र की दशा चल रही थी और चन्द्रमा एकादशेश था। आम तौर पर कोई भी व्यक्ति लाभ के स्वामी एकादशेश की दशामें हारता नहीं है (विशेषकर तब जब वह दूसरे घर में स्थित हो)। किंतु फारूख के एकादशेश को राहु ने बुरी तरह क्षतिग्रस्त किया हुआ है। साथ में मंगल भी शामिल है, फिर छठे घर का स्वामी शनि भी उस पर पूरी दृष्टि डाले है। उनकी देश-निकाले की सजा और अधिक त्रासद हो सकती थी यदि चन्द्रमा को 31 बिन्दुओं का समर्थन प्राप्त न होता।

अष्टमेश मंगल ने सेना में षड्यन्त्र रचवाया और अंत में उन्हें अपदस्थ कराके ही छोड़ा। यह लगातार गिरती हुई अन्तर्दशाओं की अवधि थी। शुक्र की अन्तर्दशा में जब वे पराजय के बावजूद ताज बचा पाए थे, ये लगातार रसातल को जाती हुई अन्तर्दशाएं थीं- पहले सूर्य, फिर चन्द्रमा, मंगल और राहु। उनको कहीं शान्ति नहीं मिली अन्ततः केतु की महादशा में वर्ष 1965 में 45 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। केतु स्वयं भी अष्टम में बैठा है। और अष्टमेश से दृष्ट भी है।

1952 में तो वे अपनी सारी लड़ने की ताकत खो चुके थे। तब शनि कन्या से गुज़र रहा था जो सर्वाष्टकवर्ग में मात्र 19 बिंदुओं से युक्त होकर सबसे कमज़ोर राशि है। यह तीव्र उत्थान-पतन का एक ज्वलंत उदाहरण है। सिंह (29) से कन्या (19), ऊपर से उनकी साढ़ेसाती तभी शुरु हुई थी। कन्या उनकी जन्मराशि से द्वादश भाव है।

हैदराबाद के निज़ाम

बादशाह फारुख और हैदराबाद के निज़ाम अपने समय के सबसे अमीर लोगों में से थे। निज़ाम के सोने के भंडार का मुकाबला दुनिया में कोई नहीं कर सकता था। आइये, इन सिद्धान्तों को उनकी राशि और नवांश कुंडली पर लागू करके देखें। चौथे घर को बृहस्पति देख रहा है और चतुर्थेश शनि स्वयं बड़ी शान से भाग्य स्थान नवम में है। सर्वाष्टक में चौथे घर में सबसे अधिक 35 बिंदु हैं और नवम में चतुर्थेश 30 बिंदुओं का स्वामी है।

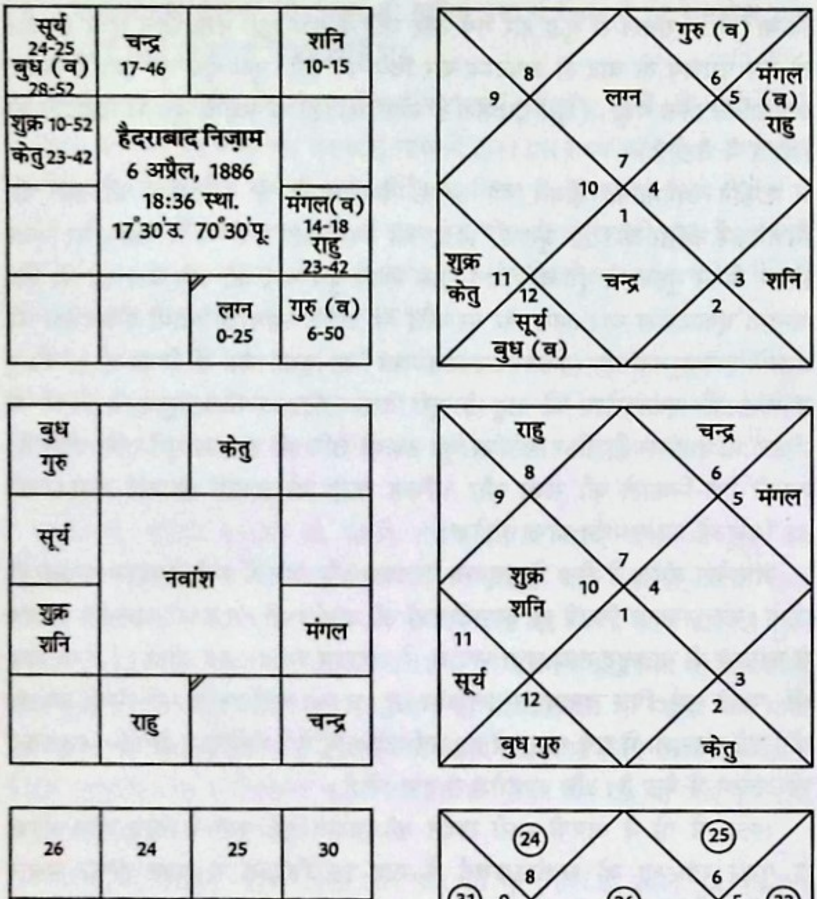

इस कुंडली में अष्टकवर्ग के उस नियम की पुष्टि होती है, जिसमें कहा गया है कि यदि सर्वाष्टकवर्ग में नवम, दशम एवं एकादश भाव में बिन्दु अच्छे हों तो जातक धनाढ्य व्यक्ति होता है। इसके अतिरिक्त सूर्य से दसवें और ग्यारहवें 31 और 35 बिन्दु हैं, जबकि शनि से दसवें और ग्यारहवें 28 और 26 बिन्दु हैं। यदि निज़ाम लोकतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा चुने हुए होते तो इसके विपरीत होता।

बृहस्पति सूर्य को देख रहा है। बृहस्पति नवांश में भी सूर्य और चन्द्रमा को देख रहा है– यह एक अतिरिक्त ऊर्जास्रोत है। अनेक राजयोगों और धनयोगों की उपस्थिति के कारण निज़ाम वह हस्ती बने जो वे राहु और मंगल की दशा में थे क्योंकि दोनों ही लाभ के घर एकादश भाव में बैठे हैं। यह भी नोट करें कि मंगल द्वितीयेश होकर संग्रहीत धन का भी स्वामी है जिसे शुक्र की शुभदृष्टि प्राप्त है– शुक्र जो स्वयं अष्टमेश होने के कारण गुप्त खज़ाने का भी स्वामी है, और शनि, जो योगकारक है, वह भी इस पर अपनी कृपा-दृष्टि रखे है।

किंतु हम यहां 1946 के बाद के घटनाक्रम पर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे जो अपने भंवर में उन्हें फंसाता चला गया। उस समय द्वादशेश से स्थान विनिमय करने वाले षष्ठेश बृहस्पति की महादशा में द्वादशेश बुध का अन्तर चलना शुरू हुआ था। यही वह समय था जब उन्हें आने वाले पतन और संघर्ष के लिये तैयारी करनी थी।

तब तक भारत स्वतंत्र राष्ट्र बनाये जाने का आश्वासन पा चुका था। अंग्रेज़ अपनी साम्राज्यवादी कूटनीतियों के तहत देसी रियासतों को यह अधिकार दे चुके थे कि वे भारत या पाकिस्तान में से किसी एक के साथ विलय कर लें। निज़ाम चूंकि कट्टर मुसलमान थे उन्होंने पाकिस्तान से जुड़ना चाहा। किंतु हैदराबाद की रियासत का पाकिस्तान की भूमि से कोई सीधा रास्ता नहीं था, इसलिये निज़ाम ने अपनी असीम दौलत के बल पर गोवा को खरीदना चाहा ताकि समुद्र के रास्ते पाकिस्तान से सीधा संबंध रख सकें।

अब उन तत्त्वों को देखें जो निज़ाम के दिमाग में ऐसी गुप्त योजनाओं को जन्म दे रहे थे। भारत और पाकिस्तान को अगस्त 1947 में आज़ादी मिली। निज़ाम की बृहस्पति-शुक्र की दशा जून 1948 में आरंभ हुई। गुप्त दांव-पेचों के घर अष्टम का स्वामी शुक्र है जो मानसिकता के घर पंचम में स्थित है और उसे वक्री मंगल अपने साथ बैठे राहु के साथ देख रहा है। इन दोनों को चौथे और पांचवे घर का स्वामी शनि देख रहा है। इस षड्यन्त्र काल में बृहस्पति उन सारे कमजोर घरों पर विचरण कर रहा था जिनके सर्वाष्टक बिंदु 25, 26, 29 थे– क्रमशः कन्या, तुला और वृश्चिक। जब बृहस्पति लग्न पर या चन्द्रमा से सप्तम पर विचरण करे तो वह काल विशेष परिवर्तन का होता है– यह फलदीपिका में लिखा प्रसिद्ध गोचर सिद्धांत है।

भारत के तत्कालीन गृह मंत्री, 'लौहपुरुष' सरदार वल्लभभाई पटेल ने सैनिक कार्रवाई का निर्णय लेते हुए, सेना को भेजा। उसी दिन पाकिस्तान के राष्ट्र-निर्माता जिन्ना की मृत्यु हो गई और पाकिस्तान एकदम उलझन में फंस गया। किंतु निज़ाम का शनि 31 बिंदुओं से युक्त कर्क राशि पर विचरण कर रहा था। भारत सरकार ने

उन्हें राज्य प्रमुख के पद पर सम्मान के साथ बने रहने दिया। उनके पास सत्ता (शनि) रही, किन्तु गौरव (बृहस्पति) समाप्त हो गया। जन्म कुंडली और गोचर में बलवान शनि ने उनकी सत्ता बचाये रखी।

निज़ाम के हाथों से राज्य सत्ता तब निकली जब 1952 में गोचर का शनि मात्र 25 सर्वाष्टक बिंदुओं वाले द्वादश भाव में पहुंचा और वहां से जन्मगत बृहस्पति, सूर्य और शनि तथा नवमेश बुध पर ग्रहण लगा बैठा। तब बुध, बृहस्पति-चन्द्र की दशा चल रही थी। इसी के साथ महादशा स्वामी बृहस्पति भी तीव्र पतन से गुजरा, अर्थात् चौथे घर में 35 बिंदुओं से होकर पांचवे घर में मात्र 28 और उससे कम छठे में आया जिसमें मात्र 26 बिंदु हैं। इस कारण निज़ाम का राजपाट सिमट गया। देखिये उस समय बृहस्पति और शनि षडष्टक में थे। राहु इस सारे खेल के दौरान सबसे कमज़ोर भावों से गुज़र रहा था, जिनमें मात्र 24, 26, और 28 बिंदु थे जो राशियां क्रमशः मेष, मीन और कुम्भ थीं और उन स्थानों से शनि को छोड़कर कुंडली में शेष सभी को पीड़ित कर रहा था। भाग्य की विडम्बना देखिये कि यह वही राहु था जिसने अपनी महादशा में निज़ाम को सारी दुनिया का खज़ाना दिला दिया था।

ड्यूक ऑफ विन्ड्सर

दो मुस्लिम राजाओं की चर्चा के बाद, अब अंग्रेज़ राजपरिवार का एक उदाहरण लें। इस चर्चा के दौरान हम एकादश और/या तृतीय घर में स्थित ग्रहों पर ध्यान केंद्रित करेंगे और पिछली दो कुण्डलियों को भी पुनः इस दृष्टि से देखेंगे।

(क) बादशाह फारूख अपने भाई-बहनों में सबसे बड़े थे और बृहस्पति उनके ग्यारहवें भाव में था। ग्यारहवें घर में बृहस्पति जातक को परिवार में सबसे बड़ी या सबसे छोटी संतान बनाता है। एकादशेश चन्द्रमा के बुरी तरह पीड़ित होने के कारण इसी बात की पुष्टि होती है।

(ख) निज़ाम हैदराबाद भी सबसे बड़ी संतान थे और उनके ग्यारहवें घर में मंगल और राहु दोनों थे जो जातक को सबसे बड़ी या सबसे छोटी संतान बनाते हैं। इनका एकादशेश सूर्य भी नीच बुध एवं षष्ठेश बृहस्पति से पीड़ित होने के कारण वही कहानी दोहरा रहा है।

(ग) ड्यूक ऑफ विंडसर भी सबसे बड़ी संतान थे और उनकी कुण्डली में भी मंगल और राहु, दोनों साथ थे। किंतु यदि तीसरे घर में क्रूर ग्रह (विशेषकर मंगल) हो तो जातक सबसे बड़ी या सबसे छोटी संतान होता है। एकादशेश का तीसरे

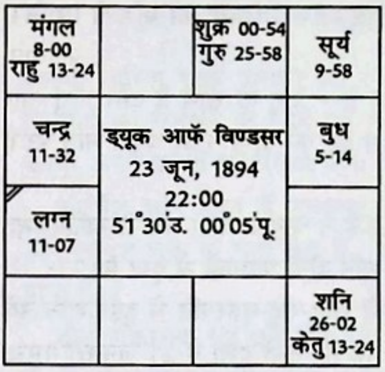

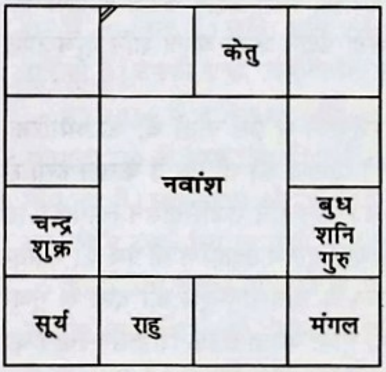

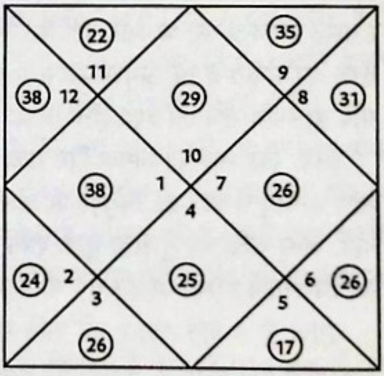

भाव में होना भी यही इंगित करता है। जब लग्न राशि-संधि में होने के कारण अनिश्चित-सा हो, तब ये नियम लग्न को निश्चित करने में अप्रत्यक्ष रूप से सहायक हो सकते हैं — ये अनुभव-आधारित नियम ही हैं और लगभग 80 प्रतिशत कुंडलियों में सत्य सिद्ध होते देखे गए हैं।

आइये, अब अपने मानक आधारों को ड्यूक ऑफ विंडसर की कुंडली पर कस कर देखें:

चतुर्थेश मंगल ही गंभीरतम रूप से पीड़ित है– राहु के साथ है और केतु और शनि की कुदृष्टि भी उस पर है। किसी भी शुभ ग्रह की दृष्टि न तो चतुर्थ भाव पर है न ही उसके स्वामी पर।

जन्मांग में बृहस्पति न तो सूर्य को देख रहा है न चन्द्रमा को। सब से खराब बात यह है कि सूर्य छठे घर में बैठा है और मंगल-शनि दोनों पापग्रहों से दृष्ट है।

उनके पिता की मृत्यु 8 जनवरी, 1936 को शनि-राहु-बृहस्पति में हुई। शनि नवें घर में है, राहु और बृहस्पति नवें घर को देख रहे हैं। उसी दशा में 21 जनवरी 1936 को उनका राज्याभिषेक हुआ। बृहस्पति, जो राजसी गौरव प्रदान करता है, वृश्चिक में 31 बिंदुओं से युक्त है। किंतु उस समय सत्ता प्रदान करने वाला शनि कुंभ राशि पर मात्र 22 बिंदुओं से गुज़र रहा था।

ड्यूक एक सामान्य वर्ग की स्त्री, वेलिस सिंपसन से प्रेम करते थे, जो अमेरिका में जन्मी थीं और बाल्टीमोर में रहती थीं। उन्होंने घोषणा की थी कि वे केवल उसी से विवाह करेंगे। पुरातनपंथी ब्रिटिश संसद के दबाव में उन्होंने राजसिंहासन त्यागकर 10 दिसम्बर, 1936 को इतिहास की रचना की। यह एक दुर्लभ उदाहरण था प्रेम की खातिर किसीराजा द्वारा सिंहासन त्यागने का। उस समय वे शनि-राहु-बुध की दशा से गुज़र रहे थे।सप्तम भाव में बुध का होना इस तथ्य की पुष्टि करता है कि सिंहासन-त्याग का कारण प्रेम ही था। वे अपनी प्रेयसी को धोखा नहीं दे सके क्योंकि बृहस्पति नवम भाव (धर्म) को देख रहा था और वहीं बैठे महादशा स्वामी शनि को भी। शनि-राहु दशा इस तथ्य का संकेत है कि प्रेयसी सामान्य वर्ग की थी। इसके स्थान पर विवाह के समय यदि बृहस्पति-सूर्य की दशा होती तो प्रेयसी ज़रूर किसी शाही खानदान से होती।

उनके छोटे भाई को अगले दिन राजा बना दिया गया। ड्यूक की महादशा का स्वामी शनि जन्मांग में मात्र 26 बिंदुओं से और गोचर में केवल 22 बिंदुओं से युक्त था। यही नहीं, जन्म राशि पर गुज़रता हुआ शनि साढ़ेसाती के कठिनतम दौर में था। साढ़ेसाती का विश्लेषण हमेशा अष्टकवर्ग के साथ करना चाहिये, उसके बिना कभी नहीं।

ड्यूक ने 3 जून 1937 को शनि-राहु-शुक्र की दशा में विवाह किया। राहु और शुक्र दोनों ही विवाह के कारक हैं। ड्यूक को अपना मनचाहा तब ही मिला जब शनि मीन में जन्म कुंडली में सबसे अधिक बिंदुओं से युक्त राशि में पहुंचा। इस कठिन दौर में बृहस्पति वृश्चिक, धनु व मकर पर क्रमशः 31, 35 और 29 बिंदुओं को लेकर विचरण कर रहा था। प्रेम के कारक ग्रह शुक्र के साथ बैठकर बृहस्पति ने प्रेम की गरिमा को सिंहासन की कुर्बानी देकर बचाया।

सम्राट जॉर्ज VI

आइए, ब्रिटिश शाही परिवार का एक और उदाहरण लें। वैदिक ज्योतिष के सूक्ष्म सिद्धांतों को समझने के लिये यह कुण्डली सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। आइये, एक-एक करके अपने प्रमेयों की परीक्षा करें:

चतुर्थेश शनि लग्न में उच्चस्थ है। वह गौरव कारक पंचम का भी स्वामी है और लग्नेश शुक्र के साथ बैठा है। चौथे घर को उच्च के गुरु (वक्री) की दृष्टि भी प्राप्त है।

दोनों प्रकाशक ग्रह सूर्य और चन्द्रमा को बृहस्पति की दृष्टि मिल रही है, जन्मांग में भी और नवांश में भी। लग्न से ग्यारहवें घर में 39 जबकि उसकी तुलना में दसवें घर में 29 बिन्दु हैं। चूंकि शनि लग्न में ही स्थित है, यह तुलना शनि से भी की जा सकती है। उनकी प्रजा, राजतिलक के बाद के संकटों के बीच भी उनके साथ रही।

सन 1936 में वे केतु-बृहस्पति की दशा से गुज़र रहे थे जब उनके बड़े भाई ने एक सामान्य स्त्री के लिए राज त्याग दिया। उस दिन बृहस्पति उनके तीसरे घर में था और केतु नवें में। स्वाभाविक तौर पर पिता की मृत्यु और उनका भाग्य एक साथ क्रियाशील हुए। किंतु उनके सिर पर आया ताज कांटो से सजा था।

आइये अब वैदिक ज्योतिष के सूक्ष्म तत्त्वों को देखें। कृपया नोट करें कि दशमेश चन्द्रमा मात्र $2^{\circ}27'$ का होकर वृश्चिक में है। वह अपने नीच के परम स्तर को पार करने वाला है। चन्द्रमा चूंकि दशमेश है इसलिये वह उनके कर्मस्थान में कभी न कभी विघ्न ज़रूर उत्पन्न करेगा। ये भी नोट करें कि उनका जन्म लग्न मात्र 20 बिंदुओं से युक्त है और उन के सूर्य लग्न और चन्द्र लग्न में मात्र 23 बिंदु ही हैं। यद्यपि चन्द्रमा ने कुछ बल नवांश में जाकर पा लिया जहां वह अपनी ही राशि, कर्क में है।

आइये, अब चतुर्थेश शनि की वास्तविक शक्ति की परीक्षा करें, जो उच्चस्थ होकर लग्न में $22^{\circ}21'$ का है। नवांश में यह अपनी नीच राशि मेष में चला गया है। इस तरह हम देखते है कि सिंहासन दृढ़ भी है और सिंहासन अस्थिर भी है। इसी तरह दशमेश की स्थिति बली भी है और बलहीन भी, क्योंकि नवांश की महत्ता को भुलाया नहीं जा सकता।

वे 1936 में राजगद्दी पर बैठे और 1938 से हिटलर ने बमबारी शुरु कर दी। जब द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ा तब वे केतु-बुध की दशा से गुज़र रहे थे। राजा के लिये यह निरंतर संघर्ष का समय था। पहले वे जर्मन आक्रमण से बचकर निकले जो हिंसक था, फिर महात्मा गांधी की चुनौती से, जो अहिंसक थी। जनवरी 1940 में उनकी अष्टमेश शुक्र की महादशा शुरु हो चुकी थी। 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के समय वे

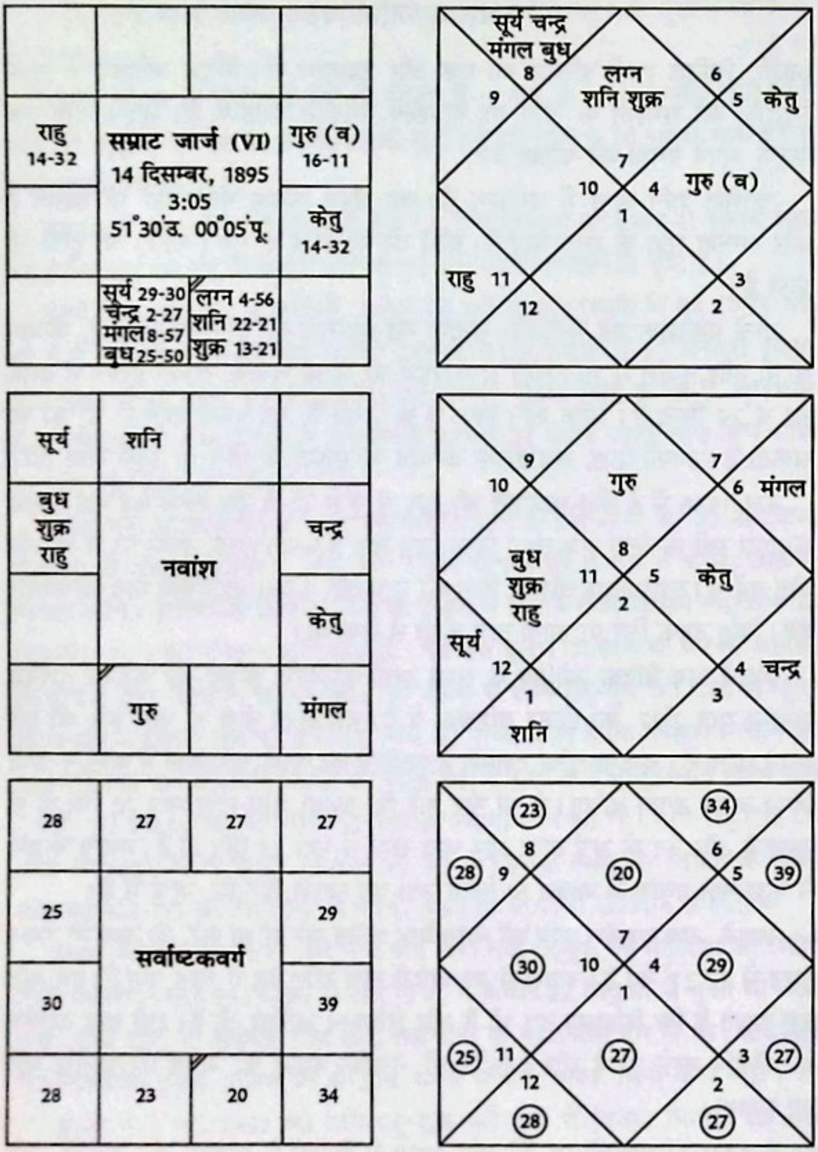

शुक्र-बुध की दशा से गुज़र रहे थे। शेष कहानी नवांश में नीचस्थ हो गये चतुर्थेश और जन्मांग में नीचस्थ दशमेश सुना ही रहे हैं।

इस इतिहास में हमारी रुचि इसलिये है कि भारतीय होने के नाते हम इस इतिहास के हिस्से रहे हैं। यह इतिहास है उस ब्रिटिश साम्राज्य के पतन के प्रारम्भ का है जिसके लिए कहा जाता था कि उसके राज्य में सूरज कभी नहीं डूबता।

अब कहानी का दूसरा पक्ष देखें। दसवें घर में बैठकर बृहस्पति सुरक्षा प्रदान करता ही है, लग्न चाहे कोई भी हो। यहां तो बृहस्पति उच्चस्थ होकर अपनी श्रेष्ठावस्था में है। इसलिए संकटपूर्ण वर्षों में, बेशक राजा हार का सामना करता रहा, लेकिन वह पूरी तरह हारा नहीं।

शुक्र-शुक्र दशा में भारत में स्वतंत्रता-आंदोलन अपने शिखर पर था। उसके बाद आई शुक्र-सूर्य, शुक्र-चन्द्र, शुक्र-मंगल और शुक्र-राहु की दशाएं जो मार्च, 1947 में शुरु हुईं। शुक्र के बारे में एक सूक्ष्म तथ्य यह है कि वह न केवल अष्टमेश है, वह लग्नेश भी है और शनि के साथ बैठा है जो चौथे घर का स्वामी तो है ही, गौरव के संरक्षक पंचम का भी स्वामी है। लेकिन पंचम ही पदभ्रंश (पदहानि) का भाव भी है क्योंकि वह दशम से अष्टम पड़ता है। अन्तर्दशा नाथ राहु भी पंचम में ही स्थित है। शुक्र-राहु की इसी दशा में ब्रिटिश साम्राज्य टूट रहा था और भारत को आज़ादी मिली। नीचस्थ दशमेश और नवांश में नीचस्थ चतुर्थेश को सिर उठाना ही था किंतु, दशम भाव में स्थित बृहस्पति को रक्षा करनी थी तो वह बादशाह फारूख की तरह न तो निष्कासित किये गये और न ही उन्हें निज़ाम हैदराबाद की तरह इतिहास के मंच से बाहर जाना पड़ा। वे राजा बने रहे लेकिन उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य का पतन देखना पड़ा।

जब ऐसा हुआ तब बृहस्पति तुला (लग्न) में मात्र 20 बिन्दुओं के साथ विचरण कर रहा था और शनि कर्क में 29 बिंदुओं के साथ। लग्न से बृहस्पति का गुज़रना परिवर्तनकारी तो होना ही था। किंतु यह परिवर्तन शोचनीय था क्योंकि बृहस्पति मात्र 20 बिंदुओं से युक्त था। सो राजा का गौरव बिखर गया। भारत, जो उसके मुकुट का सबसे कीमती रत्न था, हाथ से निकल गया।

महारानी एलिज़ाबेथ II

ऊपर जिन सम्राटों की चर्चा हम ने की, उन सब में दो बातें समान थीं। पहली, वे सब पुरुष थे और दूसरी यह है कि वे सब डोलते हुए सिंहासनों पर बैठे थे। किंतु अब इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ II की कुंडली की चर्चा करते हैं, जिन्होंने मृत्यु से पूर्व 2022 तक 70 वर्षों का स्थिर शासन पूरा कर लिया था। वे महारानी बनने के लिये नहीं जन्मी थीं, क्योंकि वे सम्राट जॉर्ज पंचम के दूसरे बेटे की ज्येष्ठ पुत्री थीं। यदि उनकी कुंडली पर नज़र डालेंगे तो ऐसे दो विशेष तथ्य मिलेंगे, जो अन्य सम्राटों की कुंडली में नहीं पाए गए।

यह धनु लग्न की कुंडली है और ध्वजवाहक केतु भी लग्न के अंश के अत्यन्त समीप है; दोनों वर्गोत्तम हैं लग्न सूर्य के नक्षत्र उत्तराषाढ़ा में है और वह नवमेश

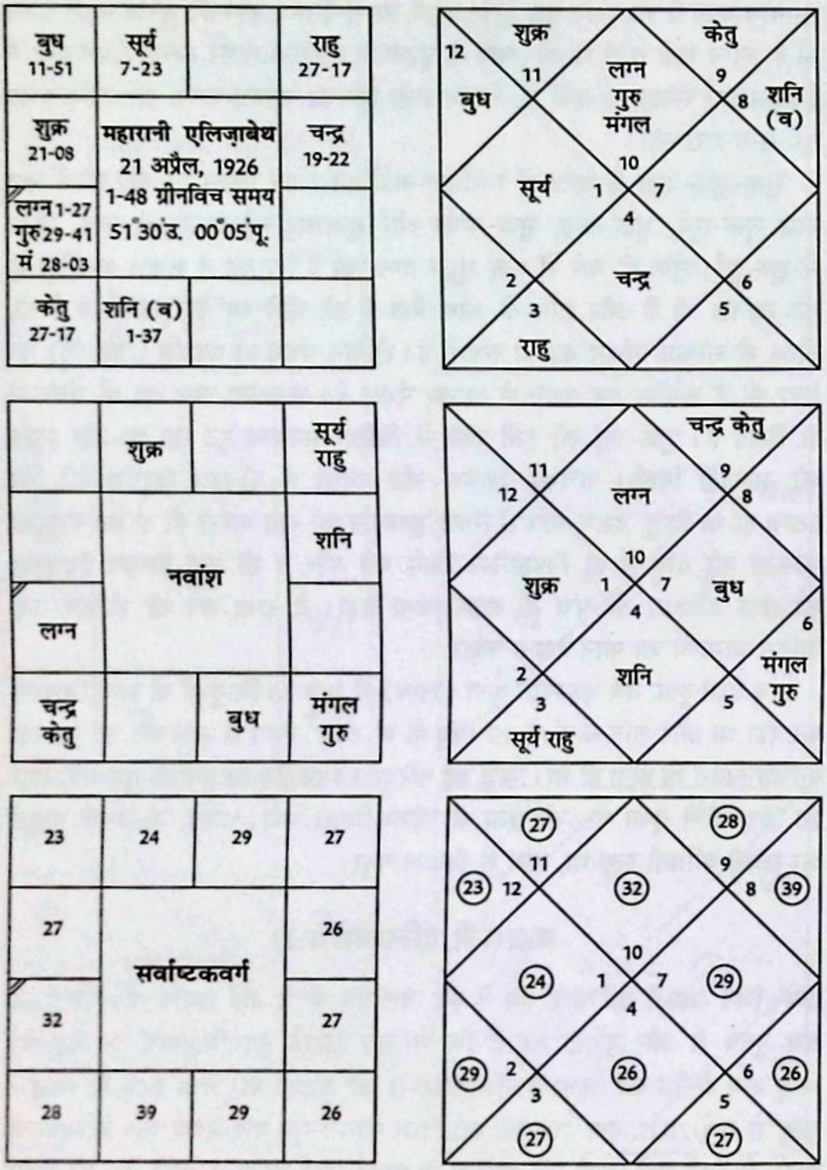

होकर पंचम में स्थित है और उच्चाभिलाषी है (7°27')। पंचमेश मंगल अपने परमोच्च अंश (28°) पर लग्नेश के अत्यन्त निक स्थित है। हालांकि लग्नेश बृहस्पति नीच राशि में है परन्तु वह गुरु-मंगल एवं गजकेसरी योग बना रहा है। इसके अतिरिक्त बृहस्पति को चार प्रकार से नीचभंग राजयोग भी प्राप्त है। पहला है अपने

नीचाधिपति शनि से दृष्टि; दूसरा है मंगल के साथ युति जो इस राशि में उच्च का होता है; तीसरा है चन्द्रमा से परस्पर दृष्टि-संबंध जो बृहस्पति का उच्चनाथ है; चौथा है उच्चनाथ और नीचनाथ का परस्पर दृष्टि-संबंध जिसमें लग्नेश स्वयं सम्मिलित है और चन्द्रमा से केन्द्र में भी है।

दशमेश बुध भी नीच का है और उसे भी नीचभंग प्राप्त है क्योंकि उसका नीचाधिपति बृहस्पति चन्द्रमा से केन्द्र में है। देखा जा सकता है कि दशम भाव को लग्नेश और दशमेश दोनों नीच के होकर देख रहे हैं। यहां, उनकी मृत्यु के बाद यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ब्रिटेन के लिए महारानी का वास्तविक योगदान क्या रहा, इसके सिवाय कि उन्होंने अगले महाराज को जन्म दिया। थोड़ा कठोर होकर देखें तो लगता है कि देश-विदेश के गणमान्य व्यक्तियों से हाथ मिलाना, जनता का हाथ हिलाकर अभिनन्दन करना और विशेष अवसरों पर अन्य लोगों का लिखा हुआ संक्षिप्त भाषण पढ़ देने के अतिरिक्त उन्होंने खास कुछ नहीं किया। क्या यह लग्नेश और दशमेश के नीच होकर दशम भाव को देखने का परिणाम तो नहीं था? महारानी के जीवन पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो ज्योतिषियों को सोचना पड़ेगा कि नीच के ग्रह किस प्रकार का फल देते हैं, चाहे उन्हें नीचभंगत्व प्राप्त हो। क्या इन ग्रहों के 'वास्तविक' (Real) फल मिलते हैं या केवल 'आभासीय' (Virtual)। क्या महारानी ने सोने के पिंजरे में बन्द, कोहिनूर-जड़ित मुकुट धारण करने वाली चिड़िया से अधिक कुछ किया? उनकी अपनी दिलचस्पी घोड़ों में थी– लग्न से नवमेश और चन्द्रमा (मन) से दशम में सूर्य अश्विनी नक्षत्र में स्थित है जिसका घोड़ों से संबंध सर्वविदित है।

चन्द्र लग्न से 12 बिन्दुओं का तीव्र उन्मेष देखें। दशम में 21 बिन्दु हैं तो एकादश में 33। सूर्य के परमोच्च के समीप होने के बावजूद केवल 21 बिन्दु हैं– यह भी एक प्रकार की सूर्य (राज-काज) की निर्बलता है– अष्टकवर्ग में अच्छी सेहत के लिए ग्रह के उच्चादि होने का महत्व कम होता है, असली सैन्यबल बिन्दुओं के द्वारा मिला माना जाता है।

जब महारानी के पिता की ताजपोशी हुई तभी से स्पष्ट था कि एलिजाबेथ अगली महारानी बनेंगी। वे उस समय बुध-बृहस्पति की दशा से गुजर रही थीं, जो दोनों उनके दशम भाव को देख रहे हैं। बृहस्पति के अपने भिन्नाष्टक में 7 और सर्वाष्टक में 30 बिन्दु हैं। अष्टकवर्ग-विचार से संभवत: इसे नीचभंग-तुल्य माना जा सकता है।

जैमिनी ज्योतिष के अनुसार कई राजयोग और धनयोग बन रहे हैं। आत्मकारक बृहस्पति एवं अमात्यकारक मंगल की युति को दाराकारक शनि

जैमिनी दृष्टि से देख रहा है। महारानी की गिनती दुनिया के कतिपय धनाढ्य अरबपतियों में की जाती थी।

जब एलिजाबेथ के पिता की 6 फरवरी 1952 को आकस्मिक मृत्यु हुई तब वह अफ्रीकी सफारी पर केन्या में थीं। उन्हें महारानी घोषित कर दिया गया। शुक्र-चन्द्रमा-शनि की दशा चल रही थी। यह उनकी एकादशेश शुक्र और अष्टमेश चन्द्रमा की दशा थी। अष्टम का संबंध प्राय: अपनी अथवा स्वजन की मृत्यु एवं शोक से होता है। वैसे चन्द्रमा स्वगृही भी है और दशमेश बुध के नक्षत्र अश्लेषा में है। एक साल बाद 2 जून 1953 को महारानी का राज्याभिषेक हुआ; उस समय उनकी शुक्र-मंगल-शनि की दशा चल रही थी। अन्तर्दशानाथ मंगल पंचमेश होकर लग्नेश के साथ युति कर रहा है और उच्च का है। प्रत्यन्तर का स्वामी शनि मंगल के साथ राशि-परिवर्तन योग बना रहा है। मंगल और बृहस्पति के अंश इतने नजदीक हैं कि वे नवांश में भी एक साथ दशम भाव में — पंचमेश मंगल के ही नक्षत्र धनिष्ठा में हैं।

शनि तुला पर गोचर करने ही वाला था जहां उसके 30 बिन्दु हैं। तदनन्तर शनि वृश्चिक में गया जहां उसके 33 बिन्दु हैं- शनि ने इस प्रकार एलिजाबेथ को गद्दी पर स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। महारानी का दशा-अनुक्रम भी असाधारण था। 1946 (जन्म 1926) से शुक्र की दशा आरम्भ हुई। शुक्र लग्न एवं चन्द्रमा दोनों से एकादशेश है। शुक्र के बाद आई उच्च के सूर्य की 6 वर्ष की दशा, उसके बाद स्वगृही चन्द्रमा की दस वर्ष की और उसके बाद उच्च के मंगल की 7 वर्ष की। पिता से उत्तराधिकार में एक बर्बाद साम्राज्य मिला था किन्तु महारानी ने अपने गौरवपूर्ण व्यक्तित्व से उसे संभाले रखा। इस काम में दशा-अनुक्रम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

किन्तु राहु की महादशा में महारानी की छवि कुछ धूमिल हुई जब राजकुमारी डायना की आकस्मिक कार दुर्घटना में मृत्यु हुई। उस समय जनता को वे एक कठोर-हृदय सासू मां नजर आईं। राहु उनके सप्तम भाव (लोकप्रियता) में केवल 22 बिन्दु लेकर बैठा है। राहु ने नवांश में सूर्य के साथ बैठकर कुछ नुकसान तो करना ही था। महारानी की दशा उस समय (31 अगस्त 1977) राहु-शनि-बृहस्पति की चल रही थी। राशि कुण्डली में राहु-शनि 6/8 और नवांश में 2/12 की स्थिति में हैं। शनि राशि में 12वें भाव और नवांश में अष्टम भाव में त्रिकस्थ है। पुष्कर नवांश में होने के कारण शनि ने राज्याभिषेक इत्यादि के समय शुभ फल अवश्य दिया, किन्तु पाप ग्रह की दशा में सर्प द्रेक्काण में होने के कारण प्रतिष्ठा को स्थायी दंश भी दिया।

ज्योतिष के दृष्टिकोण से यह आश्चर्य का विषय नहीं होना चाहिए कि महारानी की चार में से तीन सन्तानों के प्रथम विवाह असंतोषजनक रहे। ज्येष्ठ पुत्र चार्ल्स का डायना के साथ विवाह-विच्छेद, एवं डायना की असमय कार दुर्घटना में मृत्यु, विशेष चर्चा के विषय रहे। संतान के विवाह-संबंध के लिए पंचम से सप्तम अर्थात् एकादश भाव देखना चाहिए। एकादशेश शुक्र नवांश में मंगल और शनि दोनों से पीड़ित है। शुक्र का नक्षत्रेश बृहस्पति राशि में शुक्र से द्विर्द्वाश है और नवांश में षडाष्टक है और दोनों ही स्थानों पर मंगल और शनि से पीड़ित है। विवाह एवं पारिवारिक सुख के लिए, नवांश कुण्डली को वरीयता देनी चाहिए।

महारानी की अपनी मृत्यु 8 सितम्बर 2022 को हुई जब बृहस्पति-राहु-बुध की दशा चल रही थी। तीनों ग्रहों में मारक तत्व है। बृहस्पति द्वितीय भाव में अष्टमेश से दृष्ट है, राहु सप्तम भाव में है और बुध सप्तमेश है। उनमें से दो यानि बृहस्पति और बुध नीच के हैं। गोचर में शनि(व) लग्नेश के ठीक ऊपर से और बृहस्पति सप्तमेश बुध के ऊपर से गुजर रहे थे।

महारानी की मृत्यु 96 वर्ष की परिपक्व आयु में हुई, हालांकि लग्नेश नीच का है और चन्द्रमा अष्टम में होकर बालारिष्ट का कारण बन रहा है। फिर भी अष्टमेश का अष्टमस्थ होना एवं बृहस्पति से दृष्ट होना अरिष्टभंग का सूचक है। छठे या आठवें में बैठकर चन्द्रमा शुक्ल पक्ष के जन्म वालों को बालारिष्ट से सुरक्षा प्रदान करता है। यह भी देखा जा सकता है कि नवांश में शनि अष्टम में है, एवं भाव सूचक नवांश में भी वह अष्टम में ही है। अष्टम का शनि दीर्घायु देता है। अच्छी आयु के लिए अष्टम भाव में बिन्दु खराब नहीं होने चाहिएं, यहां 27 हैं जो औसत के करीब हैं और खराब नहीं कहे जा सकते।

महारानी विक्टोरिया

इंग्लैंड की पूर्व महारानी का प्रकरण भी असाधारण है और वैदिक ज्योतिष के सूक्ष्म नियमों की उपादेयता का श्रेष्ठ उदाहरण है। हमने सम्राट जॉर्ज VI के प्रकरण में देखा कि चतुर्थेश का नवांश में नीचस्थ होना उनके शासन काल में निरंतर संकट लाता रहा। महारानी विक्टोरिया की कुण्डली में हम पाते हैं कि चतुर्थेश सूर्य लग्न में एक उच्च ग्रह (चन्द्रमा) के साथ बैठा है। सूर्य के अंश देखें- 10°47', अतः नवांश में वह उच्च का हो गया है। महारानी का 64 वर्ष का दीर्घ शासनकाल विश्व इतिहास के पिछले 500 वर्षों का सबसे गौरवपूर्ण अध्याय रहा। इससे नवांश की महत्ता सिद्ध होती है।

न केवल चतुर्थेश सूर्य नवांश में उच्चस्थ है— वह जन्मांग और नवांश-दोनों में बृहस्पति की शुभ दृष्टि में भी है। दूसरे चन्द्रमा भी लग्न और नवांश में बृहस्पति का ओज प्राप्त कर रहा है। यही नहीं, चन्द्रमा नवांश में चतुर्थेश हो गया है जबकि जन्म लग्न में उच्चस्थ भी है।

महारानी के असाधारण एकादश भाव को देखें। 35 सर्वाष्टक बिंदुओं से युक्त तीन महाक्रूर ग्रह वहां स्थित हैं। यही नहीं, नवमेश और एकादशेश परस्पर स्थान-विनिमय भी कर रहे हैं। महारानी इस शास्त्रोक्ति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं कि एकादश में क्रूर ग्रहों की उपस्थिति दीर्घायु-कारक होती है। महारानी 1901 में 82 वर्ष की पकी वृद्धावस्था में परलोक सिधारीं। राहु-बृहस्पति की दशा में वे महारानी बनीं, तब वे मात्र 18 वर्ष की थीं। महादशा स्वामी वर्गोत्तम राहु एकादश भाव में है और अन्तर्दशा स्वामी बृहस्पति एकादशेश होकर चतुर्थेश सूर्य को देख रहा है। गोचर में शनि पर्याप्त 29 बिंदु लेकर अपनी उच्चराशि तुला पर विचरण कर रहा था।

तो महारानी की नौका बिना डगमगाए चलती रही, सिवाय एक झटके के जब अमेरिका ने स्वतंत्रता की मांग की और प्राप्त भी कर ली। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य डूबा नहीं क्योंकि भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसे विशाल भूखंड उसके अंग थे।

एकादश भाव में स्थित ग्रहों के अनुसार लाभ के स्रोतों का स्वरूप निश्चित होता है। वर्गोत्तम राहु ने दो क्रूर ग्रहों के साथ मिलकर ब्रिटेन को इतनी शक्ति दी कि वे भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों का निष्कंटक दोहन कर सके। दुर्दान्त क्रूरता के साथ उन्होंने वहां शासन किया। इन क्रूर ग्रहों का सौम्य ग्रह बृहस्पति की राशि मीन में होने से केवल इतना हुआ कि इस क्रूर शासन पर उदारवादी मुखौटा लगा रहा। ध्यान रखें कि एकादशेश बृहस्पति क्रूर ग्रह शनि की राशि मकर में नीचस्थ है।

फिर बृहस्पति-बुध की दशा आई जब 1857 में उन्हें भारतीय सेना के विद्रोह का सामना करना पड़ा। अष्टमेश बृहस्पति नवम भाव में जाकर नीचस्थ हो गया है। अत: उनके भाग्य पर एक काला साया था ही। फिर अन्तर्दशा स्वामी बुध अपना जोरदार योगदान देकर इस साये को और भी काला कर रहा था। बुध आखिरकार बारहवें घर में शुक्र के साथ बैठा है जो षष्ठेश होकर युद्ध और संघर्ष का कारक हो गया है। महादशा स्वामी बृहस्पति मात्र 18 बिंदुओं से युक्त क्षीणतम राशि मेष पर विचरण कर रहा था। सौभाग्यवश शनि 29 बिंदुओं से युक्त होकर उसी समय मिथुन राशि पर विचरण कर रहा था। अत: ब्रिटिश साम्राज्य इस विद्रोह को कठोरता से कुचलने में सफल रहा।

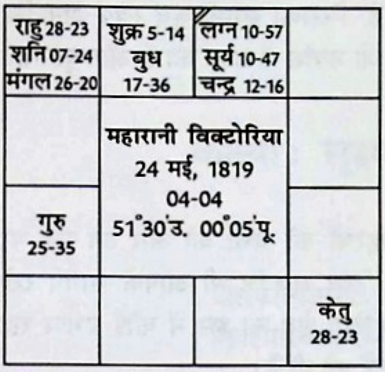

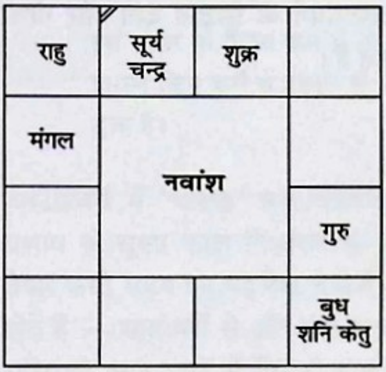

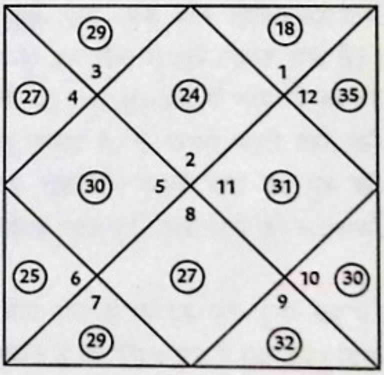

महारानी की शक्तिशाली कुंडली देखें। भविष्य में और भी सफलताएं और सम्मान उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। 1876 में शनि-शुक्र की दशा में उन्हें विधिवत भारत की महारानी घोषित कर दिया गया। (इससे पूर्व ब्रिटिश राजशाही ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से ही राज कर रही थी)। महादशा स्वामी दशमेश होकर,

एकादश भाव में है और लग्न को देख रहा है, जिसका स्वामी बुध स्वयं अन्तर्दशा स्वामी भी था। लग्न में वह सूर्य भी स्थित है जो नवांश में उच्च का है और बृहस्पति की दृष्टि पाये हुए है।

हमने यहां अस्थिर राजतन्त्र के चार उदाहरणों की चर्चा की और उन सब पर पुरुष सम्राटों का अधिकार था, जबकि दो स्थिर राजतंत्र भी आपके सामने रखे जिनकी शासक महिलाएं थीं। सोचिये, क्या लिंग भेद का इस में कोई प्रभाव रहा अथवा इसका श्रेय केवल उनकी जन्मकुंडलियों को ही है।

ये अध्ययन स्पष्टता से दिखाते हैं कि अष्टकवर्ग के सिद्धांत दशा और गोचर ग्रहों पर बड़ी सहजता से प्रयुक्त किये जा सकते हैं।

5

कक्ष्या : सूक्ष्म काल निर्धारण

असंकल्पितमेवेह यदकस्मात् प्रवर्तते।
निवर्त्यारब्धमारम्भैर्नन्‌नु दैवस्य कर्म तत् ॥

वाल्मीकि रामायण 22.24

इस संसार के नियत क्रम में जो कुछ कभी अकस्मात् योजनाबद्ध रूप से प्रारम्भ किए कर्म से हटकर हो जाया करता है वह दैव (भाग्य) का किया हुआ है।

अष्टकवर्ग में 'कक्ष्या' एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है, विशेषकर गोचर ग्रहों के प्रभाव के सूक्ष्म काल निर्धारण के लिए। प्रस्तारचक्र (तालिका 2-II से 2-III) तैयार करते समय हम यह देख चुके हैं कि हर राशि को आठ स्रोतों से शुभ बिंदु प्राप्त होते हैं — सात ग्रहों से और एक लग्न से। इसी तथ्य को आधार मानकर हम एक राशि को आठ भागों में विभाजित करते हैं। हर कक्ष्या का अपना स्वामी होता है जिनका क्रम है— शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र और लग्न (यह क्रम ग्रहों की गति के अनुसार, सबसे धीमी गति के ग्रह शनि से शुरु किया गया है)। हर कक्ष्या की एक कालावधि है जो एक राशि के, 30°÷8=3¾ वें भाग के बराबर होती है। जब कोई ग्रह किसी राशि में प्रवेश करता है, तो सबसे पहले शनि की कक्ष्या से गुज़रता है जो 0°00' से 3°45' तक होती है। उसके बाद वह गुरु की कक्ष्या से गुज़रता है जो 3°45' से 7°30' तक होती है, और इसी तरह आगे की कक्ष्याओं से गुज़रता है।

भिन्नाष्टक वर्ग उन एक-एक बिंदुओं का योग होता है जो ग्रह एक-दूसरे ग्रह को प्रदान करते हैं। प्रस्तारचक्र में यह देखा जा सकता है कि किस ग्रह ने एक बिंदु दिया है और किसने नहीं।

एक धीमी गति वाला ग्रह, जैसे शनि एक राशि से गुज़रने में 2½ साल लगाता है। यदि शनि उस राशि में बिंदुओं की यथेष्ट संख्या नहीं पाता तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि 2½ साल की यह पूरी अवधि बुरी गुज़रेगी ? जी नहीं !

वास्तव में शनि उन ग्रहों की कक्ष्या से गुज़रते हुए शुभ फल देगा जिन्होंने शनि के भिन्नाष्टक में एक बिंदु दिया है। ये ग्रह कक्ष्या-स्वामी कहलाते हैं। यदि किसी राशि में शनि के आठ भिन्नाष्टक बिंदु हैं तो इसका अभिप्राय यह है कि सभी कक्ष्या-स्वामियों ने उसे एक-एक बिंदु उसके भिन्नाष्टक में उस राशि में दिया है।

कक्ष्या स्वामियों की सीमाएं

कक्ष्या	स्वामी		सीमाएं		
प्रथम	शनि	:	0°00'	से	3°45' तक
द्वितीय	गुरु	:	3°45'	से	7°30' तक
तृतीय	मंगल	:	7°30'	से	11°15' तक
चतुर्थ	सूर्य	:	11°15'	से	15°00' तक
पंचम	शुक्र	:	15°00'	से	18°45' तक
षष्ठ	बुध	:	18°45'	से	22°30' तक
सप्तम	चन्द्र	:	22°30'	से	26°15' तक
अष्टम	लग्न	:	26°15'	से	30°00' तक

कक्ष्या पर लागू होने वाले सिद्धांत

1. जब कोई ग्रह किसी ऐसी राशि से गुज़रता है जहां उसके अपने अष्टकवर्ग में अधिक बिंदु होते हैं तो समझिये कि यह उस राशि से संबंधित भाव के परिणामों के फलित होने का समय है।

उदाहरण: मान लीजिये, गुरु धनु से गुज़र रहा है और गुरु के अपने अष्टकवर्ग में धनु राशि में छः बिंदु हैं और जातक की जन्मकुंडली में धनु चौथा भाव है तो इस भाव से संबंधित श्रेष्ठ फल जातक को इसी काल में मिलेंगे।

यही सिद्धान्त हमारी उदाहरण कुंडली पर भी लागू होता है। जे. एफ. कैनेडी जब राष्ट्रपति चुने गये और व्हाइट हाउस के निवासी बने (5 नवम्बर 1960) तब गुरु धनु से गुज़र रहा था और धनु उनकी कुंडली के चौथे भाव में है (गुरु के अपने अष्टकवर्ग में धनु में 6 बिंदु हैं)।

2. जन्मकुंडली में उपस्थित किसी सुयोग के फलित होने का समय और भी सूक्ष्मता से निकालने के लिये यह देखना चाहिये कि कोई ग्रह किस कक्ष्या से गुज़र रहा है। यदि कक्ष्या-स्वामी-ग्रह ने गोचर ग्रह के अष्टकवर्ग में एक बिंदु दिया है तो उस समय उस राशि से संबंधित अच्छे परिणाम फलित होंगे।

उदाहरण: 5 नवम्बर, 1960 को जब जे. एफ. कैनेडी राष्ट्रपति बने, तब शनि धनु राशि में 20°30' पर यानि बुध के स्वामित्व वाली छठी कक्ष्या से गुज़र रहा था। शनि के अपने अष्टकवर्ग में धनु में कुल चार बिंदु हैं (तालिका 2-VIII देखें) जिनमें से एक बिंदु तत्कालीन कक्ष्या स्वामी बुध ने भी प्रदान किया है।[1]

3. यदि किसी कक्ष्या से एक से अधिक ऐसे ग्रह गुज़र रहे हैं जिनके अपने-अपने भिन्नाष्टकवर्ग में उस कक्ष्या स्वामी ने बिंदु दिये हैं तो अधिकाधिक शुभ फल उस काल में मिलने की संभावना होगी।

इसके विपरीत यदि विभिन्न कक्ष्याओं से गुज़रते विभिन्न ग्रहों में संबंधित कक्ष्या-स्वामियों ने बिंदु न प्रदान किये हों तो वह समय काफी खराब हो सकता है, विशेषकर तब जब दशा-महादशा भी खराब चल रही हो।

4. किसी राशि से गुज़रते हुए कोई ग्रह निम्नांकित कारणों से फल देता है:

(क) अपने कारकत्व के अनुसार। जैसे सूर्य पिता, आध्यात्मिक क्षेत्र, व्यक्तिगत प्रभाव या राजकीय अनुशंसा का कारक कहलाता है।

(ख) जन्म लग्न से गोचर ग्रह की स्थिति के अनुसार। जे.एफ. कैनेडी की कुंडली में जब गुरु धनु राशि पर है, वह चौथे घर को दर्शाता है।

(ग) ग्रह जिस कक्ष्या से गुज़र रहा हो, उस कक्ष्या स्वामी की जन्म कुंडली में स्थिति के अनुसार। जैसे उदाहरण कुंडली में जब धनु राशि में बुध की कक्ष्या से शनि गुज़रेगा तो देखिये कि जन्म कुंडली में बुध कहां स्थित है, चूंकि बुध मेष राशि में नवें घर में है, अत: शनि नवें घर यानी भाग्य से संबंधित फल देगा।

5. जब गोचर ग्रह और कक्ष्या स्वामी मित्र हों जैसे शनि और बुध, तब शुभ परिणाम मिलेंगे।

6. गोचर ग्रह, जब स्वराशि में, अपने मित्र, मूलत्रिकोण अथवा उच्च राशि से गुज़रेगा तो अधिकाधिक शुभफल देगा। यह गोचर से संबंधित मूलभूत नियम है, और कक्ष्या और अष्टकवर्ग के अतिरिक्त भी उपयोगी सिद्ध होता है।

7. यद्यपि कक्ष्या-संबंधी नियम सभी ग्रहों पर समान रूप से लागू होते हैं तथापि व्यावहार में धीमी गति वाले ग्रहों पर अधिक लागू किये जाते हैं, जैसे गुरु और शनि पर (राहु को भी ले सकते हैं)।

---

[1]यह भी देखिए कि यह सुयोग कैनेडी की जन्मकुंडली में उपस्थित है। शनि उनके पांचवें घर का स्वामी है और लाभ के ग्यारहवें भाव से पांचवें घर को देख रहा है। पांचवां घर पद एवं सत्ता का प्रतीक है।

विभिन्न ग्रहों के एक कक्ष्या से गुज़रने के औसत समय

सूर्य	:	3.8 दिन
चन्द्र	:	6.8 घंटे
मंगल	:	5 दिन
बुध	:	2.5 दिन
गुरु	:	45 दिन
शुक्र	:	3 दिन
शनि	:	112 दिन
राहु (केतु)	:	70.8 दिन

साढ़ेसाती

8. साढ़ेसाती के परिणाम जानने के लिये कक्ष्या सिद्धांत विशेष रूप से उपयोगी हैं – साढ़े सात साल की उस अवधि के लिये जब शनि जन्मकुंडली में स्थित चन्द्रमा से बारहवें, प्रथम और द्वितीय स्थान पर विचरण करता है। इन तीनों भावों में जब भी शनि उस कक्ष्या से गुज़रेगा जिसके स्वामी ने शनि के अष्टकवर्ग में उस राशि में एक बिंदु दिया है तो फल अच्छा होगा अन्यथा नहीं। दूसरे शब्दों में यदि संबंधित घरों में 6, 7 या 8 बिंदु हैं तो साढ़ेसाती खराब गुज़रने की बजाय बहुत अच्छी गुज़रेगी, विशेषकर तब, जब उन घरों में सर्वाष्टक बिंदु भी 33, 36 या 40 जैसी संख्या में हों। परिणामों का स्वरूप नियम संख्या 4(ग), 5 और 6 के अनुसार प्रभावित होगा।

दशा

9. कक्ष्याओं पर लगने वाले गोचर के नियमों को दशा और अन्तर्दशा के स्वामियों पर भी प्रभावशाली ढंग से लागू किया जा सकता है। यह देखना चाहिये कि जन्म के समय संबंधित दशानाथ किस कक्ष्या में स्थित है। यदि कक्ष्या-स्वामी ने संबंधित दशानाथ के अष्टकवर्ग में उसी राशि में बिंदु दिया है जिसमें वह दशानाथ जन्म के समय स्थित है, तो दशानाथ अपनी दशा में अच्छे फल देने को तत्पर रहेगा।

दशा स्वामी गोचर में

10. घटनाओं के समय को और नज़दीक से निकालने के लिये यह देखें कि दशानाथ गोचर में किन कक्ष्याओं से गुजर रहा है और यह भी कि कक्ष्या-स्वामी ने उस राशि में कोई बिंदु प्रदान किया है या नहीं।

जब दशानाथ की जन्मांग और गोचर दोनों में श्रेष्ठ स्थिति हो तब दशा अच्छा फल देगी। इस सिद्धांत को प्रत्यंतर और सूक्ष्म दशाओं पर लागू करके घटनाओं का सूक्ष्मतम कालनिर्धारण किया जा सकता है।

11. जातक का जीवन सहज भाव से बिना विशेष उतार-चढ़ाव के चलेगा यदि उसकी कुंडली में अधिकतर ग्रह उन कक्ष्याओं में हों जिनके स्वामियों ने उन ग्रहों के भिन्नाष्टकवर्गों में बिंदु दिया हो।

यह पिछले नियम का ही उपनियम है और जन्म कुंडली को जांचने के अन्य सभी दृष्टिकोणों से भिन्न है।

फिर भी, सहज-सीधे जीवन का अर्थ यह नहीं समझना चाहिये कि जीवन ऊंचे स्तर पर ही चलेगा।

प्राय: उच्च पदस्थ जातकों का जीवन अनेक उतार-चढ़ाव लिये होता है और कई बार वे निजी जीवन में त्रासद स्थितियां भी झेलते हैं। उच्चस्तरीय जीवन के लिए उचित भावों में समुचित बिंदुओं का होना आवश्यक है।

6

ग्रहों के भिन्नाष्टकवर्गः सामान्य प्रवृत्तियां

सुखदुःखे भयक्रोधौ लाभालाभौ भवाभवौ।
यस्य किंचित् तथा भूतं ननु दैवस्य कर्म तत् ।।

वाल्मीकि रामायण 22.22

जिस किसी व्यक्ति को सुख-दुःख, भय, क्रोध, लाभ-हानि, जन्म-मृत्यु-बन्धन मोक्ष आदि जो कुछ होता है, वह दैव का कर्म है।

इससे पहले कि हम हर ग्रह के भिन्नाष्टकवर्ग की विशिष्टता को गहराई से देखें यह अच्छा होगा कि हम उन सामान्य सिद्धांतों पर विचार करें जो उन सब पर एक जैसे लागू होते हैं:

1. अष्टकवर्ग में प्राथमिक महत्ता उस राशि या भाव की होती है जिसमें ग्रह स्थित है, उसके स्वामी की महत्ता गौण या दूसरे दर्जे की होती है। कोई ग्रह उस भाव को उतना ही प्रभावित करता है जितने बिन्दु उसके अपने भिन्नाष्टक में उस भाव में होते हैं।

2. ग्रह दो तरह के परिणाम देते हैं - स्थिर और परिवर्तनशील। सर्वाष्टक बिंदु एक तरह से स्थिर परिणाम देते हैं, और ग्रहों के भिन्नाष्टकवर्ग अधिक सूक्ष्म विश्लेषण में सहायक होते हैं।

परिवर्तनशील परिणाम दशानाथ और गोचर ग्रहों द्वारा दिये जाते हैं। अष्टकवर्ग विधि ग्रह फल जानने में जन्मकुंडली की भीतरी शक्ति को गोचर फल से जोड़ने में विशेष रूप से काम आती है।

3. अपने संख्या रूपी फलक द्वारा अष्टकवर्ग जन्मकुंडली को अधिक स्पष्ट रूप में दर्शाता है, किंतु निम्नांकित तथ्य फिर भी नहीं भुलाये जाने चाहियें:

- **प्राथमिक महत्ता** जन्म कुंडली में मौजूद योगायोगों की हैं। (अष्टकवर्ग उनका बलाबल जानने में सहायता कर सकता है)।
- **दूसरी महत्ता** दशाओं की है क्योंकि दशायें भी वही फल देती हैं जिनका वायदा जन्मकुंडली में दिखाई देता है।

- **तीसरी महत्ता गोचर ग्रहों की है। अष्टकवर्ग सबसे प्रभावी ढंग से यहीं उपयोगी सिद्ध होता है। गोचर-प्रभाव दशा-प्रभाव के अन्तर्गत ही काम करते हैं। गोचर ग्रह वह फल नहीं दे सकते जिनकी अनुमति दशा न दे।**

यहां दोहराना अनुचित न होगा कि बिना अष्टकवर्ग देखे गोचर का आकलन अत्यंत सतही होता है।

4. एक राशि में एक ग्रह अधिकतम 8 और न्यूनतम 0 बिंदु रख सकता है। इस तरह औसत संख्या हुई 4 जिससे मिश्रित फल मिलते हैं, कुछ अच्छे, कुछ बुरे, पर मुख्यतः, यथास्थिति बनाये रखने वाले। आठ बिंदु सर्वश्रेष्ठ और शून्य हरेक ग्रह के लिए खराब होते हैं।

जब कोई ग्रह किसी राशि से अपने भिन्नाष्टकवर्ग में निम्नांकित बिंदु रखते हुए गोचर करता है तो परिणाम सामान्यतः निम्नलिखित होते हैं:

8 बिंदु : चतुर्दिक संपन्नता और राजसी ठाट-बाट

7 बिंदु : अत्यंत उच्च भाग्य, सम्मान और पुरस्कार

6 बिंदु : धन, वाहन, यश

5 बिंदु : सन्तान जन्म, सुन्दर वस्त्र, सुसंगति

4 बिंदु : कुछ अच्छी घटनायें, कुछ बुरी, कुल मिलाकर यथास्थिति

3 बिंदु : मानसिक और शारीरिक परेशानी

2 बिंदु : धननाश, राज्य, भय, निष्फल यात्राएं अथवा भटकन

1 बिंदु : रोग, दुःख, कष्ट, गरीबी

0 बिंदु : दुर्घटना, अपमान, रोग या मृत्यु

ग्रहों के स्थिर कारकत्व और दूसरे सभी योग जो जन्मकुंडली में क्रियाशील होते हैं, उनसे उपर्युक्त परिणामों का स्वरूप बदल जाता है।

5. ग्रहों के संक्षिप्त स्थिर कारकत्व निम्नांकित हैं:

सूर्य : पिता, व्यक्तिगत प्रभाव, राजकीय कृपा

चन्द्र : माता, मस्तिष्क, भावनाएं, बुद्धि

मंगल : छोटे भाई-बहन, ज़मीन-ज़ायदाद, शौर्य और कार्य-क्षमता, दुर्घटनायें

बुध : रिश्तेदार, वाक्-शक्ति, विवेक, गुण-दोष की परख, शिक्षा, वाणिज्य

गुरु : सन्तान, सम्मान, धार्मिक कृत्य, ज्ञान, भाग्य, प्रतिष्ठा, समृद्धि

शुक्र : पति/पत्नी, विवाह, इन्द्रिय-सुख, वाहन, आभूषण, समृद्धि

शनि : नौकर, आजीविका, आयु, दु:ख और विपत्ति, मानसिक क्लेश

6. विभिन्न भावों के महत्त्वपूर्ण कारकत्व*

प्रथम भाव : निजी व्यक्तित्व, शरीर, चरित्र, मान-सम्मान (या उसका अभाव), निवास स्थान

द्वितीय भाव : वाक्-शक्ति, मुख, धन संग्रह, निजी प्रयास, परिवार, भोजन, सत्यवादिता

तृतीय भाव : भाई-बहन, पास-पड़ोस, संवाद-संचार, साहस, अभिरुचियां, शारीरिक सौष्ठव, साहसिक कार्य

चतुर्थ भाव : मां, ननिहाल, ज़मीन और मकान, निवास, संसद, वाहन, गृह-शान्ति, खेती-बाड़ी, उद्योग-धन्धा

पंचम भाव : संतान, शिक्षा, मानसिक क्षमता, गर्भाधान, सट्टा, लेखन, आकर्षण (विशेषकर विपरीत लिंग के प्रति), रूमानियत

षष्ठ भाव : रिश्तेदार, सहायक, शत्रु, रोग, विवाद/मुकदमा, ऋण, विरोध, प्रतिस्पर्धा, दुर्घटना

सप्तम भाव : पति अथवा पत्नी, साझेदार/साथी, विवाह, काम वासना, गुप्त प्रेम संबंध, यात्राएं, लोकप्रियता, आजीविका

अष्टम भाव : आयु, रुकावटें, अचानक लाभ/हानि, विरासत, मृत्युदंड, आध्यात्मिक प्रवृत्तियां, महिलाओं की वैवाहिक स्थिति, पति अथवा पत्नी की धनसंपदा, पैतृक सम्पत्ति

नवम भाव : भाग्य, पिता, गुरु, शुभता, आध्यात्मिक दीक्षा, लंबी यात्राएं, तीर्थयात्राएं, संतान

दशम भाव : व्यवसाय, आजीविका के साधन, व्यापारिक स्थिति, राजनैतिक शक्ति, पिता की धन-सम्पत्ति

एकादश भाव: आय, हर प्रकार के लाभ, इच्छा पूर्ति, मान्यता, बड़ा भाई

द्वादश भाव : व्यय, शैया-सुख, धन/पद की हानि, कारागार, दूर दराज़ की यात्राएं, विदेश, मोक्ष

---

* यहां केवल प्रमुख कारकत्वों का समावेश है। हर भाव के कारकत्व अत्यन्त विशद हैं। उनकी जानकारी के लिए डॉ. के. एस. चरक की ऐलीमेन्ट्स ऑफ वैदिक ऐस्ट्रोलॉजी, अध्याय VII का अवलोकन करें। अन्य अनेक प्राचीन पुस्तकों में भी इन कारकत्वों का विस्तृत विवरण मिलता है।

7. जब कोई ग्रह उस राशि में विचरण करता है जिसमें उसके अपने अष्टकवर्ग में कोई बिंदु न हो तो वह गोचर की उस पूरी अवधि में अशुभ फल ही देगा। इसके विपरीत यदि 8 बिंदु हों तो पूरे समय शुभफल देगा। यदि केवल 1 बिंदु हो तो उस कक्ष्या से गुज़रते वक्त अच्छा फल देगा जिस एकमात्र स्वामी ने वह बिंदु प्रदान किया होगा। इस नियम को उसी तरह प्रयुक्त करें जैसा कक्ष्या संबंधी अध्याय में दिया गया है कि बिंदुओं की संख्या 2, 3, 4, 5, 6 और 7 होने पर फल कैसे प्रभावित होंगे।

8. जब कोई ग्रह किसी राशि में उस कक्ष्या पर विचरण करता है जहां बिंदु है, तो वह निम्नांकित के अनुसार फल प्रदान करता है:

(क) ग्रह का स्थिर कारकत्व

(ख) जन्म कुंडली में ग्रह किस भाव में है

(ग) जन्मकुंडली में उस कक्ष्या स्वामी का घर जिसने बिंदु प्रदान किया है और उसका गोचर ग्रह के साथ परस्पर संबंध

(घ) ग्रह किस पदार्थ का द्योतक है: धातु, मूल या जीव। प्रश्नमार्ग में धातु का अर्थ भौतिक तत्व बताया गया है, जैसे खनिज पदार्थ, ठोस पदार्थ और अन्य निर्जीव पदार्थ। चन्द्रमा, मंगल, शनि और राहु धातु के प्रतीक हैं।

मूल पदार्थ होते हैं पेड़-पौधे, अनाज, बीज, और जड़ें। सूर्य और शुक्र मूल के प्रतीक हैं।

जीव यानी जीवनधारी, जैसे मनुष्य पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि, गुरु और बुध उनके प्रतीक हैं। इसी कारण कई संस्कृत ग्रन्थों में गुरु का दूसरा नाम जीव भी है। यहां एक और शब्द उल्लेखनीय है– जीवसुख अर्थात् किसी विशेष जीव से मिलने वाली खुशी, जैसे – संतान, पत्नी, भाई, पिता। जीव-हानि का अर्थ हुआ इन संबंधों से मिलने वाला दु:ख।

9. जन्मकुंडली को अष्टकवर्ग के नियमों से जांचते समय ज्योतिष के सामान्य नियमों को नहीं भूलना चाहिये। अष्टकवर्ग, कुंडली को पढ़ने में विशेष सहायक है, किंतु केवल स्वयं के आधार पर यह विधि पूर्ण नहीं है। इसका आधार जन्म कुंडली ही है, बिन्दुओं को जन्म कुंडली में उपस्थित सामान्य योग-इत्यादि से वरीयता प्राप्त नहीं है। अष्टकवर्ग को 'अतिरिक्त सूचना' की तरह मानना चाहिए।

7

सूर्य का अष्टकवर्ग

अनेन रक्षिता लोका जनिता पालिता ध्रुवम्।
अस्यैव सदृशो नास्ति सर्वेषां परिरक्षणात् ॥

पद्मपुराण I:29/11

सूर्य लोकों का रक्षण, जनन और पालन सुनिश्चित करता है। सभी की सब प्रकार से रक्षा करने में इसके तुल्य कोई नहीं है।

राशि विशेष में स्थित होने पर अथवा उसमें गोचर करने पर, सूर्य आठ से शून्य बिंदुओं के अनुसार निम्नांकित फल देता है:

8 बिंदु : राजसी वैभव, उच्च सामाजिक अथवा राजनैतिक प्रतिष्ठा, राज्य द्वारा धन-प्राप्ति, सम्मान, आत्म-परितोष

7 बिंदु : उच्च पद, शौर्य, सामाजिक अथवा राजनैतिक सम्मान

6 बिंदु : शारीरिक सौष्ठव, धन, वाहन की प्राप्ति, प्रभावशाली व्यक्तित्व

5 बिंदु : सुहृदय एवं प्रभावशाली जनों की संगति, शैक्षणिक उपलब्धियां, ज्ञान-प्राप्ति

4 बिंदु : मिश्रित फल, धन-लाभ, किंतु व्यय भी

3 बिंदु : निष्फल यात्रा के कारण थकान, शारीरिक परेशानी, मानसिक उलझनें

2 बिंदु : निराशा, राजकीय कोप, पाप कर्म, धन-हानि, चोरी

1 बिंदु : रोग, दु:ख, चिन्ता और कष्ट

0 बिंदु : मृत्यु अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट।

प्राय: यह समझा जाता है कि सूर्य के अष्टकवर्ग में विभिन्न बिंदुओं के फल तब प्राप्त होते हैं जब सूर्य विभिन्न राशियों पर विचरण करता है। लेकिन जन्मकुंडली में सूर्य की स्थिति पर भी इन परिणामों को लागू करके, जातक के पूरे जीवन में सूर्य से संबंधित फलों का स्वरूप जाना जा सकता है। आखिरकार जन्मकुंडली और कुछ नहीं अपितु जन्म के समय आकाश में विचरण (गोचर) कर रहे ग्रहों की स्थिति ही

होती है। वास्तव में ज्योतिष विज्ञान में किसी भी घटना के घटित (जन्म) होने के समय का अपना विशेष महत्व है और इस तथ्य पर ही ज्योतिष विज्ञान की सभी मुख्य शाखाएं आधारित हैं, जैसे :

(क) ***वर्ष प्रवेश अथवा वर्षफल कुंडली:*** जातक का पूरा वर्ष कैसा रहेगा यह जानने के लिये उस समय की कुंडली बनायी जाती है जब सूर्य उसी रेखांश पर पहुंचता है जिस रेखांश पर सूर्य जातक के जन्म के समय था।

(ख) ***हिंदू नववर्ष कुंडली:*** इस कुंडली का निर्माण वर्ष विशेष में घटने वाली वैश्विक घटनाओं का अनुमान लगाने के लिये किया जाता है। इसके लिये उस समय की कुंडली बनायी जाती है जब चैत्र शुक्ल प्रतिपदा प्रारम्भ होती है। यही नवसंवत्सर दिवस कहलाता है जो हिन्दू नववर्ष का प्रथम दिन होता है।

(ग) ***आर्द्रा प्रवेश:*** मौसम संबंधी पूर्वानुमान लगाने के लिये उस समय की कुंडली बनायी जाती है जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है।

(घ) ***प्रश्न कुंडली:*** प्रश्न-ज्योतिष का पूरा शास्त्र उस समय पर आधारित है जब ज्योतिषी के सम्मुख प्रश्न किया जाता है। उस समय को उस प्रश्न के जन्म का समय माना जाता है और एक कुंडली बनायी जाती है। उस कुंडली की नियति ही उस प्रश्न की नियति होती है। यद्यपि प्रश्न-कुंडली की व्याख्या के नियम कुछ हद तक भिन्न होते हैं।

निष्कर्ष यह है कि बिंदुओं के परिणामों को जन्म कुंडली पर भी लागू किया जा सकता है। बल्कि यदि उन्हें सिर्फ ग्रहों की गोचर स्थिति पर लागू किया जाये तो एक ही घटना की संभावना बार-बार उस समय बनेगी जब-जब वह ग्रह उस गोचर स्थिति में आयेगा। उदाहरणार्थ, यदि वृषभ लग्न के किसी जातक की कुंडली में सूर्य के अष्टकवर्ग में सिंह राशि में 6 बिंदु हैं तो मानना चाहिये कि जातक हर वर्ष तब एक नया घर या वाहन खरीदेगा जब सूर्य सिंह में गोचर करेगा क्योंकि सिंह राशि चतुर्थ भाव में पड़ेगी। किंतु यथार्थ जीवन में ऐसा नहीं होता, अत: इसे एक सामान्य प्रवृत्ति के रूप में समझना चाहिये। हर वर्ष उस समय चौथे घर से सम्बन्धित शुभ फलों की संभावना होगी ऐसा समझना चाहिए।

यह नियम सभी ग्रहों के लिये मानना चाहिये। हमारी उदाहरण कुंडली में जे.एफ. कैनेडी 5 नवम्बर 1960 को जब राष्ट्रपति बने तब सूर्य तुला से गुज़र रहा था जहां अपने अष्टकवर्ग में सूर्य के पास 5 बिंदु हैं। जन्मकुंडली में सूर्य वृषभ राशि में है जहां उसके पास 4 बिंदु है और वहां गुरु और शुक्र जैसे शुभग्रहों की उपस्थिति ने उसकी शक्ति कई गुना बढ़ा दी है।

नियम :

1. जिस मास सूर्य उस राशि में विचरण करे जिसमें सूर्य के अष्टकवर्ग में 5 या अधिक विंदु हों तो वह मास निम्नांकित दृष्टियों से शुभ होगा:

(अ) विवाह अथवा अन्य शुभ कार्यों के लिए;

(ब) दूरस्थ स्थानों की यात्रा या तीर्थयात्रा के लिए;

(स) धार्मिक, कल्याणकारी, पुण्य-कार्यों के लिए;

(ढ) किसी भी नए शुभ कार्य के आरम्भ के लिए।

इसके विपरीत यदि बिंदु 3 या उससे कम हों तो उस मास में उपर्युक्त कार्य नहीं करने चाहिएं।

2. यदि लग्नेश होकर सूर्य किसी मित्र राशि में 5 या 6 बिंदुओं के साथ हो तो जातक को राजनैतिक लाभ और प्रसिद्धि मिलेगी।

3. यदि लग्न में सूर्य स्थित हो, वहां मात्र 2 या 3 बिंदु हों और वह उसकी नीच राशि हो तो जातक का शरीर अस्वस्थ होगा। यदि कोई अशुभ ग्रह की दृष्टि भी उस पर हो तो स्थिति और भी खराब हो सकती है।

4. यदि सूर्य 5, 6, 7 या 8 बिंदुओं के साथ किसी केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक या उसके पिता की मृत्यु जातक के 22वें, 35वें, 30वें या 36वें साल में होगी।[1]

यद्यपि यह विचित्र है, लेकिन यह नियम कभी-कभी सत्य सिद्ध होता है। यह सामान्य सिद्धांतों के भी विपरीत दिखाई पड़ता है।[2]

5. सूर्य से नवम स्थान को लें। इसे पिता का लग्न माना जा सकता है। पिता से संबंधित सभी विचार यहीं से करें। जैसे सूर्य से दशम स्थान को पिता की संपत्ति के लिये, एकादश को पिता के छोटे भाई-बहनों के लिये, सूर्य से द्वादश घर को पिता का घर और सूर्य से प्रथम स्थान को पिता की संतान, अर्थात्, स्वयं जातक का घर माना जाता है।

6. सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में जिस राशि के अधिकतम बिंदु हों उस राशि द्वारा इंगित दिशा में, आध्यात्मिक प्रगति के लिये, शिव की मूर्ति, स्थापित की जानी चाहिये।

---

[1] पिता की मृत्यु के विषय में शास्त्रों में अनेक नियम दिए गए हैं। उन्हें यहां प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है क्योंकि हमारी प्राथमिकता शुभ फलों के विचार पर है।

[2] सामान्यत: पाप ग्रहों का केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठना अच्छा नहीं माना जाता।

8

चन्द्रमा का अष्टकवर्ग

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते॥

भगवत् गीता VIII-25

धूम, रात्रि, कृष्णपक्ष, दक्षिणायन के छः मास, पितृयान के द्वार हैं, इनमें गति करने वाला योगी चन्द्रज्योति को प्राप्त कर पुनः संसार मार्ग में लौट आता है।

आठ से लेकर शून्य बिंदुओं से युक्त होने पर चन्द्रमा निम्नांकित फल देता है:

8 बिंदु : अत्यधिक सौभाग्य, महान् वैभव और लावण्य, उच्च नैतिक साहस, प्रसिद्धि।

7 बिंदु : उत्सव, सुचारु भोजन, उत्तम वस्त्र, मन्त्र-शास्त्र में प्रवीणता।

6 बिंदु : गुणी सज्जनों से संपर्क, उच्च आदर्श, एकाग्रचित्तता।

5 बिंदु : सन्तोष और खुशहाली, नैतिक साहस।

4 बिंदु : न सुखी, न दु:खी।

3 बिंदु : दोस्तों और रिश्तेदारों से मनमुटाव।

2 बिंदु : दोस्तों और रिश्तेदारों से अलगाव, पत्नी अथवा संपत्ति के कारण झगड़े, मां को पीड़ा।

1 बिंदु : रेंगने वाले जंतुओं से खतरा, अपरिहार्य कष्ट।

0 बिंदु : कष्ट, चिंता, मृत्यु अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट।

चन्द्रमा के अष्टकवर्ग के विशिष्ट संकेत

1. विवाह एवं मुंडन संस्कार जैसे अनुष्ठान तब करने चाहिएं जब चन्द्रमा उस राशि से गुज़र रहा हो जहां उसके अपने अष्टकवर्ग में अधिकतम बिंदु हों। किसी शुभ कार्य का मुहूर्त निश्चित करने में यह नियम सहायक होता है।

2. उन राशियों को नोट करें जिनमें चन्द्रमा के अधिकतम बिंदु हों, जैसे 6, 7 या 8; जिन लोगों का जन्म लग्न अथवा चन्द्र लग्न इन राशियों में हो, वे लोग जातक के लिए सहायक सिद्ध होंगे, चाहे वे मित्र हों या उच्चपदाधिकारी, अधीनस्थ कर्मचारी, अध्यापक, छात्र, राजा अथवा पत्नी हो।

यह नियम उन लोगों के लिये अधिक सार्थक और काम का हो सकता है जो 'लिन्डा गुडमैन' सरीखी लेखिकाओं की पुस्तकों में सूर्य राशि (सायन) के आधार पर या 'कीरो' की अंक विद्या के आधार पर जीवन साथी की तलाश करते हैं।

3. ***प्रथम दर्शन:*** नियम 2 के अन्तर्गत आने वाले व्यक्तियों का प्रभात काल में प्रथम दर्शन जातक के लिये शुभ होगा। ऐसे व्यक्ति को जातक वस्त्रों का उपहार दे – यह जातक के लिये समृद्धिकारक होगा।

4. नियम 1, 2, और 3 के विपरीत सिद्धांत आसानी से बनाये जा सकते हैं:

(क) जब चन्द्रमा बिन्दुओं से च्युत राशियों में हो तो शुभ कार्य नहीं करने चाहिएं।

(ख) उन लोगों से संबंध न जोड़ें जिनकी चन्द्र राशि आपकी कुंडली में न्यूनतम बिंदु रखती हो अर्थात् आपकी कुंडली में जो राशि कमज़ोर हो उस राशि में जन्मे व्यक्ति से दूर रहें।

5. चन्द्रमा जिस भाव में स्थित है, यदि वहां बिंदु कम हों (0, 1 या 2), तो उस भाव का नाश समझना चाहिये।

नोट: ऐसा अवश्यम्भावी होगा यदि साथ में:

(क) चन्द्रमा केन्द्र, त्रिकोण अथवा 11वें भाव में न हो।

(ख) चन्द्रमा पक्षबल से रहित हो।

(ग) चन्द्रमा दूषित हो अर्थात् चन्द्रमा यदि क्रूर ग्रह की राशि में हो या उससे दृष्टिगत हो।

6. वह भाव जहां चन्द्रमा 4 या अधिक बिंदुओं से युक्त हो, उस भाव की उन्नति होगी, यदि:

(क) चन्द्रमा शुक्ल पक्ष का हो;

(ख) चन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोण में हो;

(ग) चन्द्रमा उच्च, स्वक्षेत्री अथवा मित्र राशि में हो।

7. चन्द्रमा जोड़े मिलाने में सहायक होता है। वर की कुंडली में जिस राशि में चन्द्रमा का अष्टकवर्ग अधिकतम बिंदु रखता हो, उस राशि में जन्म लेने वाली वधू विवाह के पश्चात् जातक के लिये समृद्धिकारक सिद्ध होती है।

उदाहरण : यदि वर की कुंडली में चन्द्रमा के भिन्नाष्टक में कुम्भ राशि में 7, सिंह में 5 और वृश्चिक में 6 बिन्दु हों और शेष राशियों में 4 या कम, तो इस वर के लिये वह कन्या सर्वश्रेष्ठ होगी जिसकी जन्मराशि कुंभ हो; वृश्चिक राशि की कन्या को दूसरे स्थान पर और सिंह राशि की कन्या का चयन तीसरे स्थान पर समझना चाहिये।

नोट: भारत में कई जातियों में यह प्रथा है कि विवाह के समय, किसी न किसी कारणवश, वधू का नाम परिवर्तित कर दिया जाता है। उपर्युक्त नियम को शुभ नाम का प्रथम अक्षर जानने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। जैसे कि उपर्युक्त उदाहरण में कुम्भ राशि के अन्तर्गत आने वाले नामाक्षर लिये जा सकते हैं, जैसे 'गु', 'गे', 'गो', 'सा', 'सी', 'सो', 'से', 'सा', 'ढा' और वधू का नया नाम इन अक्षरों में से किसी एक पर रखा जा सकता है।

8. जो लोग प्रस्तावित वर और वधू, दोनों की कुंडलियों का सूक्ष्म परीक्षण करना चाहें, उन्हें और आगे जाकर कक्ष्याओं की स्थिति देखनी चाहिये। कन्या की जन्मराशि वह होनी चाहिए जिसमें वर की कुंडली में चन्द्रमा के भाव में कक्ष्या-स्वामी द्वारा प्रदत्त एक बिन्दु हो।

उदाहरण: मान लीजिए, वर की कुंडली में चन्द्रमा शनि की कक्ष्या में स्थित है। चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में शनि 12 में से 4 राशियों में एक-एक बिंदु देगा (देखें तालिका 2-III) अत: प्रस्तावित वधू की कुंडली में चन्द्रमा इन चार में से किसी एक राशि में स्थित होना चाहिये।

नोट : ऐसी स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है जब वह राशि जहां चन्द्रमा के भिन्नाष्टक में अधिकतम बिंदु हैं, वहां चन्द्रमा के कक्ष्या-स्वामी ने कोई बिंदु प्रदान न किया हो। ऐसी स्थिति में हमें उससे कम उत्तम पायी गई उस राशि को आधार बनाना चाहिये जिसे चन्द्रमा के कक्ष्या-स्वामी ने बिंदु प्रदान किया हो।

9. चूंकि चन्द्रमा माता का कारक है, मां के भाई-बहनों की संख्या, जातक की कुंडली में चन्द्रमा से चौथे[1] स्थान पर स्थित बिंदुओं से ज्ञात की जा सकती है। पुरुष ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिंदुओं से माता के भाईयों की, शेष से बहनों की संख्या का संकेत मिलता है।

---

[1]यह नियम देवकेरलम नामक प्रसिद्ध पुस्तक से है। साधारण नियमों के अनुसार माता के छोटे भाई-बहनों का पता चन्द्रमा से छठे (चतुर्थ से तृतीय) भाव से करना चाहिए।

10. यदि पानी की टंकियां, कुंए या स्नान-गृह आदि उस राशि की दिशा में हों जिसमें चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में अधिकतम बिंदु हों तो बहुत शुभकारी होता है। यह नियम स्वास्थ्य-लाभ करने वाले रोगियों के लिये बहुत उपयोगी है। वास्तु में दिलचस्पी रखने वाले भी अष्टकवर्ग द्वारा निर्देशित इस नियम का उपयोग कर सकते हैं।

11. दुर्गा की प्रतिमा उस दिशा में स्थापित की जानी चाहिये जिसका संकेत वह राशि दे जिसमें चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में अधिकतम बिंदु हों।

12. चन्द्रमा छठे अथवा ग्यारहवें स्थान में 6 से अधिक बिंदुओं से युक्त हो और बृहस्पति उस चन्द्रमा को दृष्टि दे रहा हो तो जातक धनवान एवं दानवान बनता है।[2] इसका कारण संभवतः यह है कि छठा घर अर्थत्रिकोण का एक अंग है और ग्यारहवां घर तो लाभ का घर है ही।

13. यह देखें कि चन्द्रमा से आठवें घर का स्वामी किस नक्षत्र में है। जब जब चन्द्रमा उस नक्षत्र (या उसके त्रिकोण स्थान) से गुज़रेगा, जातक बिना कुछ पाये इधर-उधर भाग दौड़ करेगा और रोग-ग्रस्त भी हो सकता है।

नोटः 1. चन्द्रमा ऐसे नक्षत्र से या उसके त्रिकोण से महीने में तीन बार गुज़रता है।अधिकतर लोग इतनी जल्दी-जल्दी बीमार नहीं पड़ते। इसलिये इसनियम का सावधानी से प्रयोग करना चाहिये। गंभीर दुर्घटना तभी घटने कीसंभावना होगी जब कई अन्य कारण भी साथ-साथ सक्रिय हों और चन्द्रमा विंदु-हीन या क्षीण बिंदुओं की कक्ष्या से गुज़र रहा हो एवं दशा-अंतर्दशा अत्यंत खराब हो।

2. 'चन्द्राष्टम' नाम से गोचर का प्रसिद्ध सिद्धांत इससे मिलता जुलता है, सिवाय इसके कि इसमें अष्टमेश की भूमिका नहीं होती।

हमारी उदाहरण कुंडली में चन्द्र से आंठवें घर में गुरु वृष राशि में $0^\circ 20'$ पर है जो तीसरे नक्षत्र कृत्तिका में आता है और उसके त्रिकोण उत्तराफाल्गुनी (12) और उत्तराषाढ़ा (21) नक्षत्र हैं।

[2]इस नियम को डॉ. बी. वी. रमन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अष्टकवर्ग सिस्टम ऑफ प्रिडिक्शन' में यह कहकर लिखा है कि यह उनके निजी अनुभव पर आधारित है।

9

मंगल का अष्टकवर्ग

कृत्वा चांगारको वक्रं ज्येष्ठायां मधुसूदन।
अनुराधां प्रार्थयते मैत्रं संगमयन्निव ।।

महाभारत 143.9

(शान्ति दूत के रूप में निराश लौटते समय कृष्ण और कर्ण के वार्तालाप में कर्ण कृष्ण को कौरव विरोधी निमित्त गिनाने के क्रम में कहता है) हे मधुसूदन कृष्ण! ज्येष्ठा नक्षत्र से मंगल वक्री होकर अनुराधा नक्षत्र की ओर बढ़ रहा है (इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान राजा का नाश अवश्यंभावी है।)

बंदुओं से युक्त हो तो निम्नांकित फल देता है:

8 बिंदु : शत्रुओं पर विजय, जमीन-जायदाद की प्राप्ति, प्रसिद्धि, समृद्धि।

7 बिंदु : राजकीय प्रसाद, सरकार से लाभ।

6 बिंदु : राजा, स्वामी या उच्चाधिकारी की कृपा।

5 बिंदु : सुदर्शन नैन-नक्श, मधुर व्यवहार।

4 बिंदु : विभिन्न समयों पर सुख-दुःख बराबर।

3 बिंदु : भाईयों व पत्नी से अलगाव।

2 बिंदु : धन संबंधी विवाद, इच्छित वस्तुओं के लिये झगड़े, शत्रुओं से पराजय।

1 बिंदु : ज्वर, शल्य चिकित्सा, अग्नि, शस्त्रादि से घाव।

0 बिंदु : पेट की तकलीफें, आंखों के रोग, दुर्घटनायें, बेहोशी, यहां तक कि मृत्यु भी।

मंगल के अष्टकवर्ग से भाई-बहनों की संख्या, उनकी समृद्धि, खुशहाली और जातक के प्रति उनके रवैये का सूक्ष्मरूप से अनुमान लगाया जा सकता है। यह ज़मीन-जायदाद और अन्य संपत्तियों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण संकेत देता है।

मंगल के अष्टकवर्ग के महत्त्वपूर्ण संकेत

1. वह कक्ष्या, जिस में एक बिंदु हो, उस पर मंगल का विचरण धन और स्वास्थ्य, दोनों देता है।

2. बिंदुविहीन कक्ष्या से मंगल का विचरण जातक को बदहज़मी, सिरदर्द, रक्त एवं पित्त सम्बन्धी रोग देता है।

3. जब मंगल अधिकतम बिंदुओं से युक्त राशि से गुज़रे तब ज़मीन और सोने का क्रय-विक्रय समृद्धिकारक होता है।

4. मंगल से तीसरे स्थान पर उसके अष्टकवर्ग में (शोधन पूर्व) बिंदुओं की संख्या भाई बहनों की संख्या इंगित करेगी – पुरुष ग्रह भाईयों को और शेष बहनों को। भाईयों की आयु और समृद्धि उन ग्रहों के स्वभाव से इंगित होती है जिन्होंने उपर्युक्त स्थान में बिंदु प्रदान किये हों। उन ग्रहों के बिंदु छोड़ दें जो नीचस्थ, अस्त या अशुभ राशियों में हों।

5. यदि मंगल 8 बिंदुओं से युक्त हो और साथ ही उच्च या स्वक्षेत्री हो और नवम, चतुर्थ, प्रथम अथवा दशम भाव में स्थित हो तो जातक करोड़पति होगा।

6. यदि मंगल लग्न में हो और चार या अधिक बिंदुओं से युक्त हो और लग्न मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु अथवा मकर हो तो जातक राजा के समकक्ष होगा।

7. यदि दूसरे घर का स्वामी होकर मंगल 6 बिंदुओं से युक्त होकर छठे घर में स्थित हो तो जातक को अनेक शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा। किंतु ऐसे जातक का जीवन बचपन से ही उच्चकोटि का होगा।

8. यदि लग्न मेष हो, मंगल 1 से 3 बिंदुओं से युक्त होकर लग्न में अथवा चन्द्र लग्न, नवम या दशम भाव में स्थित हो तो जातक किसी को गोद जायेगा। ऐसा मंगल नीच प्रकार के ग्रहों से संबद्ध होगा।

9. यदि मंगल या शनि लग्न से तीसरे स्थान पर 1 से 3 बिंदुओं से युक्त हो तो भाइयों से विद्रोह होगा। इन दोनों की अन्यत्र युति भी ऐसी ही त्रासदी ला सकती है।

10. यदि शनि-मंगल षडष्टक होकर मंगल के अष्टकवर्ग में 1 से 3 बिंदुओं से युक्त हों तो भाई नहीं रहेंगे। यदि लग्न से तीसरे स्थान पर कोई क्रूर ग्रह स्थित हो तो ऐसी संभावना दृढ़ हो जायेगी।

राष्ट्रपति की *उदाहरण* कुंडली में नियम संख्या 9 और 10 सीधे लागू नहीं होते, लेकिन कैनेडी के भाई एक के बाद एक भीषण दुर्घटनाओं में मारे गये। तीसरा घर जो छोटे भाई-बहनों का होता है, वहां से बुध अष्टम का स्वामी होकर मंगल के साथ बैठा है,

जो कि न केवल क्रूर ग्रह है बल्कि तीसरे घर के हिसाब से लग्नेश भी है। स्वयं कैनेडी पर भी ठीक यही योग प्रयुक्त होता है- अर्थात् लग्नेश अष्टमेश के साथ है और दोनों में से एक मंगल है। और दोनों की यह युति, उस शनि से दृष्टिगत है जिसका अपने अष्टकवर्ग में मात्र 1 बिंदु है। शनि के अष्टकवर्ग में मंगल के मात्र 2 बिंदु हैं। सर्वाष्टक वर्ग से भी कोई मदद नहीं मिल रही है। यहां सम्मिलित सभी राशियों में 28 से कम बिंदु हैं। सहजायों की राशि वृश्चिक में 25 बिन्दु हैं; मेष, जहां लग्नेश और अष्टमेश की युति है वहां 24, और कर्क, जहां शनि स्थित है, मात्र 24 बिंदु ही हैं।

यहां तक कि शुभ ग्रह गुरु और शुक्र जो तीसरे घर को देख रहे हैं, उनके पास मंगल के अष्टकवर्ग में वृश्चिक में 2 और मेष में मात्र 2 बिंदु हैं, और वृषभ, जहां दोनों बैठे हैं, वहां भी केवल 24 बिंदु हैं। और फिर शुक्र तीसरे घर से द्वादशेश होकर दृष्टि दे रहा है। और वहां से सप्तमेश भी है। गुरु द्वितीयेश है। इस तरह दोनों शुभ ग्रह भी भाई-बहनों के लिये मारक बन गये।

और तो और लग्नेश मंगल के वृश्चिक राशि में मात्र 2 ही बिंदु हैं जो स्वयं मंगल और लग्न ने प्रदान किये हैं। मेष राशि में 4 बिंदु मंगल, शनि, गुरु और शुक्र ने दिये हैं। अशुभ तो अशुभ हैं ही, मृत्यु के सम्मुख शुभ ग्रह भी मदद के लिये आने को तैयार नहीं हैं। यह दीगर बात है कि शुभ ग्रहों ने भाइयों को धन-संचय एवं मान-सम्मान दिलाने में कोई कोताही नहीं बरती।

10

बुध का अष्टकवर्ग

न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।
यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्धया संविभजन्ति तम्॥

डण्डा हाथ में लेकर पशुओं की रक्षा करने वाले चरवाहे की भांति देवता किसी की रक्षा नहीं करते। वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं उसे (अच्छी) बुद्धि दे देते हैं।

आठ से लेकर शून्य बिंदुओं से युक्त होने पर बुध निम्नांकित परिणाम देता है:

8 बिंदु : राजकीय सम्मान, चतुर्दिक सौभाग्य।

7 बिंदु : धन, खुशहाली, ज्ञान, चिंतामुक्त, परोपकारी जीवन।

6 बिंदु : सभी उद्यमों में सफलता, गूढ़ विषयों को समझने की क्षमता।

5 बिंदु : महत्वपूर्ण लोगों से नवीन परिचय।

4 बिंदु : जीवन में उत्साह और दिशा की कमी।

3 बिंदु : मानसिक चिन्तायें।

2 बिंदु : परिवार में गलतफहमियां, वात-पित्त-कफ की बीमारियां।

1 बिंदु : जवरन कारावास, शत्रु-आतंक।

0 बिंदु : शत्रुओं के षड्यन्त्रों द्वारा ज़मीन-जायदाद की हानि, मृत्यु-भय।

बुध के अष्टकवर्ग के विशेष संकेत:

1. बुध जब उस कक्ष्या से गुज़रे जिसमें उसके अपने अष्टकवर्ग में बिंदु हो, तो खुशी मिलेगी, मिष्टान्न और उत्तम भोजन की प्राप्ति होगी, जातक परोपकार के कार्य करेगा।

2. बिंदुविहीन कक्ष्या से गुज़रने पर बुध विवाद, दुःस्वप्न, असमय भोजन अथवा मानसिक बेचैनी को जन्म देता है।

3. बुध से चौथे घर से पारिवारिक कल्याण, माता और ननिहाल से सम्बन्ध और मानसिक संतुलन का अनुमान लग सकता है। बुध से पांचवें घर से साहित्यिक और बौद्धिक प्रतिभा और दूसरे घर से वाक्-शक्ति देखनी चाहिये।

4. जब बुध से दूसरा घर प्रबल होगा तभी जातक में वाणी द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता होगी।

(क) यदि वहां एक भी बिंदु न हो तो जातक गूंगा पैदा हो सकता है। यह संभावना निश्चित हो जायेगी यदि बुध और लग्न से द्वितीय भाव में बहुत कम बिंदु हों और क्रूर ग्रह उन्हें कई तरह से पीड़ित कर रहे हों।

(ख) यदि वहां 1, 2 या 3 बिंदु ही हों, तो जातक की आत्माभिव्यक्ति अस्थिर और असंतुलित होगी।

(ग) यदि 4 बिंदु हुए तो जातक अच्छा बोल सकेगा, लेकिन तभी, जब पहल कोई और करे। उसके बाद 5 या 6 बिंदु हुए तो वह अवसर के अनुसार बोलेगा और प्रशंसनीय भाषण देगा। 7 बिंदु जातक को उच्च साहित्यिक योग्यता देंगे; उसमें आशु कवि बनने की प्रतिभा होगी।

5. बुध के अपने अष्टकवर्ग में लग्न से दूसरे स्थान पर 7 बिंदु हों तो जातक श्रेष्ठ वक्ता होगा।

6. यदि बुध से दूसरे स्थान पर क्रूर ग्रहों ने बिंदु दिये हों तो जातक छलपूर्ण, दंभपूर्ण बातें करेगा। इसके विपरीत सौम्य ग्रहों के बिंदु हों तो मधुर एवं सामंजस्यपूर्ण भाषा में बोलेगा।

बिन्दु किन ग्रहों ने दिए हैं उनके प्रभाव निम्नांकित होंगे:

सूर्य : विद्वत्ता-युक्त अधिकार-पूर्ण सम्भाषण।

शनि : भ्रांतियुक्त, अनुचित, असमय सम्भाषण।

मंगल : दंभपूर्ण वैमनस्य-जनक सम्भाषण।

बुध : मधुर, चातुर्यपूर्ण, उचित सम्भाषण।

गुरु : स्पष्ट, विद्वत्तापूर्ण, शास्त्रों के ज्ञान से परिपूर्ण संभाषण।

शुरु : मनोहारी आनन्ददायी सम्भाषण।

चन्द्र : बलहीन चन्द्रमा शंकास्पद और सुस्त भाषण देगा और बलयुक्त चन्द्र उसके ठीक विपरीत।

जे.एफ. कैनेडी की हमारी उदाहरण कुंडली में हम देख सकते हैं कि बुध जहां बैठा है वहां वह 6 बिंदुओं से युक्त है। बुध से दूसरे स्थान पर 4 बिंदु हैं जो बलवान चन्द्र,

बलवान मंगल, सुदृढ़ शुक्र और शनि ने दिये हैं (एक राजनेता के लिये यह अच्छा ही है कि शनि और मंगल के साथ शुक्र के भी बिंदु हों)। बुध से दूसरे स्थान पर बृहस्पति है जिस कारण उनकी वाणी दार्शनिक ज्ञान से पूर्ण होती थी, जबकि शुक्र ने उनकी भाषा को आकर्षक बनाया था और सूर्य ने उसे राजसी ओज प्रदान किया था। "यह न सोचो कि तुम्हारा देश तुम्हें क्या दे सकता है, यह सोचो कि तुम अपने देश को क्या दे सकते हो"- ये प्रेरणास्फूर्त देशभक्तिपूर्ण भाषा कैनेडी जैसे दृढ़ व्यक्ति के मुख से ही शोभा देती है। देखिये, लग्न से दूसरे स्थान पर तो 5 बिंदु हैं ही, चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान पर भी 5 बिंदु हैं।

नोट: कुछ व्याख्याकार उपर्युक्त नियम को जन्मलग्न से प्रयुक्त करते हैं न कि बुध स्थित राशि से क्योंकि जन्मलग्न से दूसरा स्थान वाक्शक्ति का स्थान होता है।[1]

7. यदि बुध ऐसी राशि/भाव में स्थित है जहां बिंदु कम हैं तो सामान्य बुद्धि और बुद्धिमत्ता का अभाव होगा।

8. बुध के बिंदुहीन राशि पर विचरण का परिणाम मानसिक शिथिलता होता है। ज्योतिषशास्त्र में प्रवीणता के लिये बुध (गुरु भी) की विशेष मान्यता है - क्योंकि वह वाक्पटुता, बुद्धि और शास्त्र-ज्ञान का कारक है।

9. यदि बुध 5 या अधिक बिंदुओं से युक्त होकर शनि से चौथे या छठे भाव में स्थित हो, साथ ही गुरु, बुध से दूसरे भाव में स्थित हो या दृष्टि रखता हो तो जातक प्रसिद्ध ज्योतिषविद् बनता है।

10. यदि केतु उस राशि में है जहां बुध के अष्टकवर्ग में 3 या अधिक बिंदु हों और वह स्थान पांचवां घर अथवा केतु पांचवें घर के स्वामी के साथ उस राशि में हो तो जातक ज्योतिषशास्त्र के सभी अंगों में प्रवीणता प्राप्त करता है। केतु उसी ओर बुद्धि को प्रेरित करता है जिस ओर उसकी सहज प्रवृत्ति होती है।

◆◆◆

उदाहरण : आईये, अपने समय के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् श्री के. एन. राव की कुंडली का अवलोकन करें, जो न केवल विभिन्न विधियों से भविष्यवाणियां करते हैं बल्कि उन्हें पढ़ाते भी हैं। वे स्वयं एक उत्कृष्ट वक्ता हैं और हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर बराबर का अधिकार रखते हैं।

उनकी कुंडली में बुध उच्चराशि में है, हालांकि उसके अपने अष्टकवर्ग में उस राशि में मात्र 2 बिंदु हैं। बुध की उच्चावस्था, बुधादित्य योग (बुध-सूर्य का

---

[1]हमारे अपने अनुभव में अनेक महान वक्ताओं की कुंडलियों में बुध से दूसरे स्थान की अपेक्षा बुध का अपना स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है।

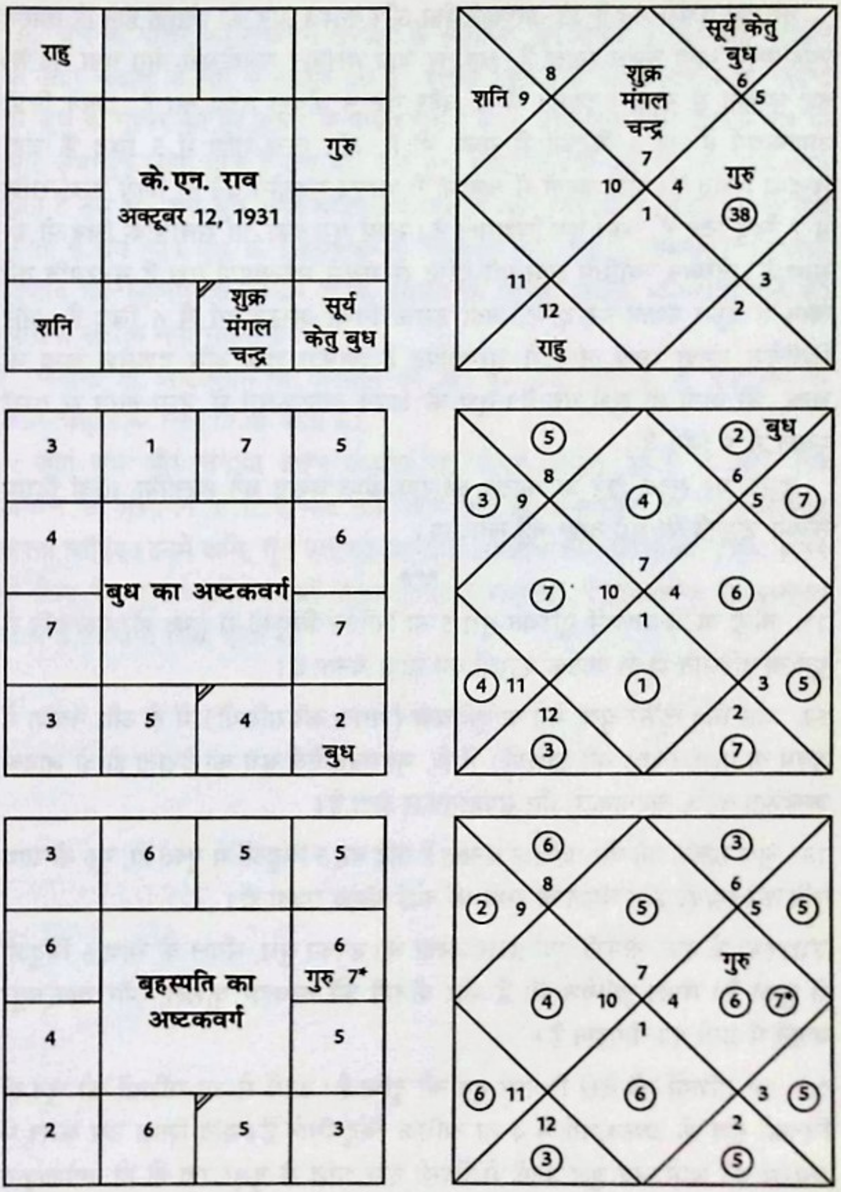

* चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में कर्क राशि को 7 विन्दु प्राप्त हैं।

योग) और उस योग में केतु का सम्मिलित होना, बिंदुओं की कमी की भरपाई कर रहा है। इस योग को पंचमेश होकर शनि देख रहा है। बुध से दूसरे स्थान पर चार बिंदु हैं।

गुरु वह दूसरा ग्रह है जो आध्यात्मिक और शास्त्र ज्ञान का द्योतक होने के कारण ज्योतिष से गहन संबंध रखता है। वह गुरु यहां बलवान गजकेसरी योग बना रहा है। वह चन्द्रमा से केन्द्र (दशम) में है, और गुरु न केवल उच्च का है, अपने निजी अष्टकवर्ग में वह 6 बिंदुओं से युक्त भी है, और तुला राशि में 5 बिंदु हैं जहां चन्द्रमा स्थित है। और बदले में चन्द्रमा ने भरपूर सहयोग देने के लिये कर्क राशि में 7 बिंदु दिए हैं, जहां गुरु विद्यमान है। स्वयं गुरु वहां 38 सर्वाष्टक बिंदुओं के साथ है। लेकिन ज्योतिष ज्ञान की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है बृहस्पति की लग्न से दूसरे स्थान पर दृष्टि, जहां उसके निजी अष्टकवर्ग में 6 बिंदु हैं, और द्वितीयेश मंगल स्वयं लग्न में सुस्थापित है लग्नेश शुक्र और दशमेश चन्द्र के साथ, जो दोनों ही शुभ ग्रह हैं। बुध के अपने अष्टकवर्ग में जन्म-लग्न से दूसरे स्थान में 5 बिंदु हैं।

दूसरा घर सुदृढ़ होने के कारण श्री राव श्रेष्ठ वक्ता बने हालांकि 10वां नियम उनकी कुंडली पर पूरी तरह नहीं लग रहा।

◆◆◆

11. केन्द्र या त्रिकोण में सुस्थित बुध 5 या अधिक बिंदुओं से युक्त हो, गुरु/शनि से युत या दृष्टिगत हो तो जातक शास्त्रों का ज्ञानी बनता है।

12. चार बिंदु लेकर बुध, मेष या वृश्चिक (मंगल की राशियों) में हो और नवांश में वृषभ या तुला, (शुक्र की राशियों) में हो, बृहस्पति ऐसे बुध को देखता हो तो जातक जन्मजात कवि, नाटककार और साहित्यकार होता है।

13. बुध जातक को घोर तार्किक बनाता है यदि वह 5 बिंदुओं से युक्त हो, गुरु के साथ युति कर रहा हो और मंगल के साथ भी कोई संबंध रखता हो।

उदाहरण: जे.एफ. कैनेडी एक प्रखर वक्ता थे। उनका बुध, मंगल के साथ 6 बिंदुओं से युक्त है। मंगल तृतीयेश भी है और कैनेडी को व्यवहार कुशल, और वाक्‌चतुर बनाने में उसी का योगदान है।

14. उन राशियों को देखें जिनपर गुरु की दृष्टि है। उनमें से उन राशियों को चुन लें जिनको बुध के अष्टकवर्ग में 4 या अधिक बिंदु मिले हैं। यदि शिक्षा उस काल में आरम्भ की जाये जब बुध उनमें से किसी एक राशि से गुज़र रहा हो तो अपेक्षाकृत मंदबुद्धि छात्र भी अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकेगा। विद्यारम्भ के लिए मुहूर्त्त निकालने का यह अच्छा सिद्धान्त है।

15. भगवान विष्णु का आशीर्वाद पाने के लिये पूजा उस समय करें जब उस राशि का उदय हो रहा जो बुध के अष्टकवर्ग में अधिकतम बिंदुओं से युक्त हो।

16. बुध के गोचर का सर्वोत्तम उपयोग वे ज्योतिषी कर सकते हैं जो स्टॉक मार्केट के उतार चढ़ाव के बारे में सलाह देते हैं। स्टॉक मार्केट के अल्प अवधि के रुझानों पर बुध के गोचर का हर प्रकार से प्रभाव पड़ता है – जब बुध वक्री होता है तब भी और जब बुध मार्गी होता है तब भी; जब बुध अस्त होता है तब भी और जब उदय होता है तब भी; जब बुध राशि बदलता है तब भी और जब अन्य किसी ग्रह से युति करता है तब भी। बुध के भिन्नाष्टक के बिन्दुओं का, उसकी गोचरवश कक्ष्याओं इत्यादि का ध्यानपूर्वक विचार करके बाजार के पंडित अपनी भविष्यवाणियों को अधिक सटीक बना सकते हैं।

चन्द्रमा के अष्टकवर्ग का उपयोग हर दिन के और दिन भर में कई बार के उतार-चढ़ाव के लिए किया जाता है।

जहां बुध और चन्द्रमा अल्प अवधि पर अधिक प्रभाव डालते हैं, वहीं दीर्घ अवधि के अध्ययन के लिए मन्द गति वाले ग्रहों के अष्टकवर्ग पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इनमें शनि, गुरु एवं राहु प्रमुख हैं। वार्षिक स्तर के मार्केट ट्रेंड्स जानने के लिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की कुण्डली का अष्टकवर्ग के दृष्टिकोण से अध्ययन अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है।

11

बृहस्पति का अष्टकवर्ग

अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जितधनस्य च।
सर्वदा नियमस्थस्य सदा सानुग्रहा ग्रहाः ॥

फलदीपिका 26.50

हिंसा-विमुख, मन के निग्रही, धर्म से धनार्जन करने वाले, सदैव नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान) परायण व्यक्ति पर ग्रह सदैव अनुग्रहपूर्ण रहते हैं।

आठ से लेकर शून्य बिंदुओं से युक्त होने पर बृहस्पति निम्नांकित फल देता है:

8 बिंदु : राजा के समकक्ष शक्ति और प्रसिद्धि, अपार धन और समृद्धि।

7 बिंदु : सौभाग्य और संतान से सुख-प्राप्ति।

6 बिंदु : मंहगे वस्त्र, शाही वाहन, चमकदार एवं कीमती आभूषण।

5 बिंदु : अच्छे मित्र, शत्रु का न होना अथवा नाश होना, अनेक उद्यमों में सफलता।

4 बिंदु : कभी सुख, कभी दुःख।

3 बिंदु : कष्ट, कान की तकलीफ।

2 बिंदु : राजकीय कोप, संतानहानि।

1 बिंदु : धनहानि, शत्रुओं द्वारा षड्यंत्र।

0 बिंदु : मानसिक शक्तियों का ह्रास, धन हानि, संतान की मृत्यु की संभावना।

बृहस्पति के अष्टकवर्ग के प्रमुख संकेतः

संतान के विषय में सामान्य जानकारी प्राप्त करने के लिये बृहस्पति का अष्टकवर्ग देखा जाता है। बृहस्पति से पंचम स्थान शिक्षा, ज्ञान, धर्म, धन, और संतान के लिये देखा जाता है।

1. बृहस्पति का उस कक्ष्या में विचरण समृद्धि, खुशी और वैवाहिक सुख लाता है, जिस कक्ष्या में बृहस्पति अपने अष्टकवर्ग में बिंदु से युक्त होता है।

2. बिंदु-विहीन कक्ष्या से बृहस्पति का गोचर दु:ख एवं धन-मान-स्वास्थ्य की हानि का कारण बनता है। जातक को यात्रा के दौरान रुकावटों का सामना करना पड़ता है। बिना सोचे समझे बोलने और करने की प्रवृत्ति बढ़ती है, जिसके दुष्परिणाम भी भोगने पड़ते हैं।

नोट: उपर्युक्त कक्ष्या-फल इंगित मात्र हैं, उन्हें शब्दश: नहीं मान लेना चाहिये। यदि बृहस्पति किसी ऐसी राशि से गुज़रे जहां सात बिंदु हैं, तो इसका अर्थ यह होगा कि वह काल सौभाग्य और सुख लायेगा। किंतु इस पूरे गोचर में एक कक्ष्या ऐसी होगी जहां बिंदु नहीं होगा। तो यह समझना कि उस बिंदु-विहीन कक्ष्या में बृहस्पति अचानक उपर्युक्त बुरे फल देने लगेगा, यथार्थ स्थिति से दूर होगा। उतने बुरे कक्ष्याफलों की संभावना तब ही होगी जब उसी समय अन्य ग्रह भी बिंदुविहीन कक्ष्याओं से गुज़र रहे हों और बृहस्पति जन्मकुंडली में बुरी स्थिति में हो और सर्वप्रथम, दशा-अंतर्दशा खराब हो।

3. बृहस्पति के अष्टकवर्ग में सूर्य स्थित राशि में बिंदुओं की संख्या देखें। यदि वहां न्यूनतम बिंदु हों तो जातक भाग्यहीन होगा। उसे हर कदम पर कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी और फिर भी प्राय: असफलता ही उसके हाथ लगेगी।

4. यदि गुरु स्थित राशि में 5 या अधिक बिंदु हों और वह घर छठा, आठवां या बारहवां हो तो जातक धनी, दीर्घायु और विजयी होगा। (19वें अध्याय में अमिताभ बच्चन की कुंडली देखें।)

5. यदि बृहस्पति 8 बिंदुओं से युक्त हो तो जातक राजा के समकक्ष होगा या अपनी ही योग्यताओं के बल पर बड़ा उद्योगपति बनेगा। लेकिन ऐसा तभी होगा जब गुरु दोष रहित हो (न अस्त हो, न नीचस्थ और न ही शत्रु-क्षेत्री) और केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो। उसकी शक्ति इस पर निर्भर होगी कि वह उच्चस्थ है, स्वक्षेत्री है और दूसरे वर्गों में भी उसकी स्थिति अच्छी है।

6. सुदृढ़ और सुस्थित बृहस्पति यदि 5, 6 या 7 बिंदुओं से युक्त हो और चन्द्रमा के साथ युति कर रहा हो तो धन, स्त्री व सन्तान सुख प्रचुर मात्रा में होगा।

7. बच्चों की संख्या का पता बृहस्पति के अष्टकवर्ग में बृहस्पति से पंचम स्थान पर स्थित बिंदुओं से लगाया जा सकता है, किंतु इन बिंदुओं में से निम्नांकित बिंदुओं को निकाल देना चाहिये:

   (क) जो बृहस्पति के शत्रुओं ने प्रदान किये हों

   (ख) जो अस्त ग्रह ने दिये हों

(ग) शत्रु-क्षेत्री ग्रह ने दिये हों

(घ) शनि ने दिये हों, जो बृहस्पति की नीच राशि मकर का स्वामी है

(ङ) बृहस्पति से पांचवें स्थान के स्वामी के शत्रु ने दिये हों

(च) बृहस्पति से पांचवें स्थान के स्वामी की नीच राशि के स्वामी ने दिये हों।

नोट: शास्त्रों में इस तरह के अनेक नियम दिये गये हैं। उपर्युक्त नियम केवल प्रतिनिधि स्वरूप है। आधुनिक समय में जब परिवार नियोजन के कृत्रिम तरीके प्रयोग में हैं, ये नियम प्राय: ठीक नहीं बैठते। इन्हें यहां केवल इस दृष्टि से दिया गया है ताकि पाठक शास्त्रों की एक झलक पा लें। शास्त्रकारों की सोच को समझने से हमारी अपनी समझ गहरी होती है और शास्त्रोक्त नियमों को देश-काल-पात्र के अनुसार प्रयोग करने की दृष्टि विकसित होती है।

8. यदि किसी जन्म कुंडली में निम्नांकित चार योग मिलें तो संतान की संभावना नगण्य हो जाती है:

   (क) केवल क्रूर ग्रह पांचवें घर पर दृष्टि डालते हों—शुभ ग्रहों की दृष्टि उन पर न हो

   (ख) पांचवें घर पर किसी सम राशि का स्वामित्व हो

   (ग) जन्मराशिगत चन्द्रमा किसी सम राशि में स्थित हो

   (घ) सर्वाष्टकवर्ग में पांचवें घर में 25 से कम बिंदु हों

बृहस्पति की शान्ति के लिये उपाय तब फायदेमंद होंगे जब इन में से 1, 2 या 3 दोष होंगे। यदि कुण्डली में उपर्युक्त चारों योग हों तो उपाय भी निष्फल हो जाते हैं।

नोट: इस नियम में न तो बृहस्पति के बल का ध्यान रखा गया है, न पंचमेश के, जो संतान का कारकत्व रखते हैं। अत: यह नियम एक-पक्षीय हो गया है। नि:संतान दंपतियों की जिन जन्मकुंडलियों पर हमने इसे परखा, वहां उपर्युक्त चार स्थितियां थी परंतु साथ ही अन्य कई अशुभ योग भी उपस्थित थे।

9. संतानोत्पत्ति उस समय हो सकती है जब बृहस्पति निम्नांकित राशियों पर विचरण करे, और साथ ही बृहस्पति के अष्टकवर्ग में उन राशियों में उच्च बिंदु हों:

   (क) लग्न से पंचमेश की जन्म अथवा नवांश राशि

   (ख) चन्द्रमा से पंचमेश की जन्म अथवा नवांश राशि

(ग) बृहस्पति से पंचमेश की जन्म अथवा नवांश राशि

(घ) गुलिक की जन्म अथवा नवांश राशि

चूंकि बृहस्पति की दृष्टि, पंचम, सप्तम, और नवम स्थानों पर होती है, इसलिये उन्हें भी उपर्युक्त नियम में शामिल किया जा सकता है।

◆◆◆

उदाहरण कुंडली: भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की कुंडली बृहस्पति के अष्टकवर्ग के संदर्भ में अत्यन्त दिलचस्प है। सामन्य जन की कुंडली में एक भी भाव को बृहस्पति के 8 बिन्दु नसीब नहीं होते, यहां तो 3 भावों में 8 बिन्दु हैं– दूसरे, पांचवें और ग्यारहवें में। बृहस्पति अपने दोनों भावों में अर्थात् धनु व मीन में 8-8 बिन्दु लेकर, धनु में ही सूर्य और बुध के साथ युति बना रहा है। अनेक लोग मानते हैं कि वाजपेयी की कुल राजनीतिक जमा पूंजी उनकी वक्तृत्व कला थी जिसने उन्हें अंततः प्रधानमंत्री के पद तक पहुंचा दिया। बुध और सूर्य के साथ बृहस्पति की युति वह भी सर्वश्रेष्ठ बिन्दुओं के साथ– है न मणि-कांचन संयोग!

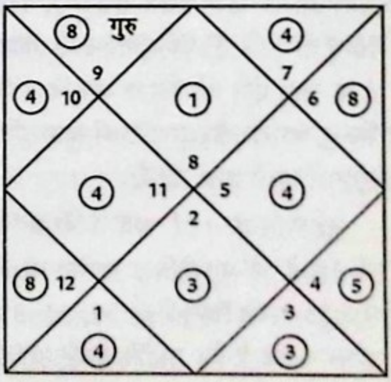

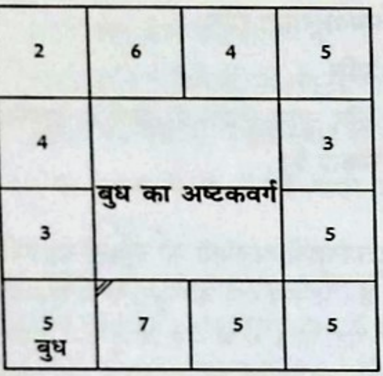

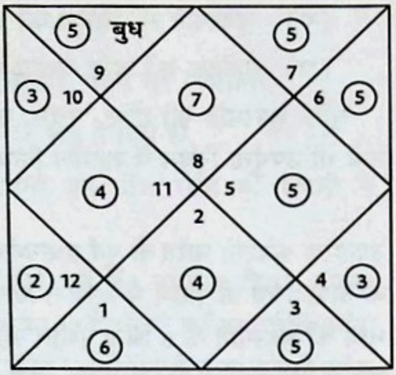

नियम नं. 3 के अनुसार सूर्य जिस राशि में स्थित हो उसमें बृहस्पति के भिन्नाष्टक में अच्छे बिन्दु हों तो सफलता स्वयमेव जातक के कदम चूमने लगती हैं, यहां तो पूरे 8 हैं। बुध के भिन्नाष्टक में लग्न में 7 और दूसरे भाव में 5 बिन्दु हैं। ये भी वक्तृत्व कला को निखारने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

इसी प्रकार देखें नियम नं. 5: इसके अनुसार यदि बृहस्पति 8 बिन्दुओं के साथ स्वगृही या उच्च का हो कर बैठा हो तो व्यक्ति बहुत बड़ा उद्यमी अथवा राजा होता है। वाजपेयी तीन बार प्रधानमंत्री बने किन्तु बृहस्पति के अस्त होने के कारण पहली दो बार पूर्णकालिक सरकार नहीं बना पाए।

नियम नं. 8: लग्न से पंचम स्थान पर पापग्रह मंगल अवस्थित है और कोई शुभ दृष्टि नहीं है। पंचम स्थान एवं चन्द्रमा दोनों ही युग्म राशि में हैं। सर्वाष्टक वर्ग में पंचम स्थान पर केवल 22 बिन्दु हैं। इस नियम के अनुसार वाजपेयी जी की कोई सन्तान नहीं होनी चाहिए थी— कानूनी तौर पर है भी नहीं। हालांकि उन्होंने कभी विवाह नहीं किया, किन्तु उनकी एक दत्तक पुत्री है जो अफवाहों के अनुसार उनकी अपनी बेटी है। बृहस्पति के पास पंचम स्थान पर सर्वाष्टक बिन्दु कम होने के बावजूद भिन्नाष्टक बिन्दु तो पूरे 8 हैं। निस्संतानता के मामले में इस तथ्य ने गुरु के अस्त होने और नियम 8 के लागू होने को निरस्त कर दिया। स्थानाभाव के कारण यहां दिखाया नहीं जा रहा किन्तु नवांश और सप्तांश में बृहस्पति और पंचम स्थान का पीड़ित होना भी संतान सुख में कमी दर्शा रहा है।

बृहस्पति के 11वें भाव में भी 8 बिन्दु हैं और सर्वाष्टक में सर्वाधिक 39 बिन्दु हैं जो किसी भी राजनैतिक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। वाजपेयी के उपचय स्थानों में बहुत अच्छे बिन्दु हैं— 29, 34, 31, 39 (कुल 133, औसत से 21 अधिक) यह इंगित करता है कि उन्होंने अपने व्यक्तित्व का निर्माण स्वयं अपनी साधना से किया

था (self-made man)। उन्हें पद्म विभूषण व भारत रत्न से नवाज़ा जा चुका है— पंचम और एकादश स्थान दोनों में बृहस्पति के 8 बिन्दु हैं। दोनों स्थान सम्मान और पुरस्कारों के लिए जाने जाते हैं।

मई 1996 में जब वह पहली बार प्रधानमंत्री बने तब बृहस्पति धनु में 8 बिन्दु लेकर गोचर कर रहा था। 1998-99 में जब वे दुबारा प्रधानमंत्री बने तब बृहस्पति मीन में 8 बिन्दु लेकर गोचर कर रहा था।

◆◆◆

10. प्रश्न-कुंडली में प्रवीण ज्योतिषी अष्टकवर्ग बिंदुओं का उपयोग प्रायः नहीं करते। उनके लिये यह एक विनम्र सुझाव है कि अष्टकवर्ग का उपयोग प्रश्न-कुंडलियों पर स्वतंत्र रूप से या जन्म-कुंडली के साथ भी करके देखें। यहां दो उपयोगी नियम दिये जा रहे हैं:

    (क) प्रश्न-कुंडली में गुलिक की स्थिति देखें। संतान जन्म के समय सूर्य, चन्द्र अथवा बृहस्पति में से जिसके भी बिंदु अपने निजी अष्टकवर्ग में अधिकतम होंगें, वह गुलिक पर या उससे त्रिकोण स्थानों पर गोचर करेगा।

    (ख) संतान जन्म तब होगा जब बृहस्पति प्रश्न लग्न से, अथवा उसकी नवांश राशि से अथवा उनके त्रिकोण स्थानों में से किसी उस स्थान पर गुज़रे जहां गुरु के भिन्नाष्टकवर्ग में जन्मकुंडली में अधिकतम बिंदु हों।

11. एक सुयोग्य पुत्र का जन्म होगा यदि गर्भधारण उस माह में हुआ हो जब सूर्य, गुरु के अष्टकवर्ग में अधिकतम बिंदुओं से युक्त राशि से गुज़र रहा हो।

12. यदि पंचमेश अष्टम में हो या अष्टमेश पंचम में तो जातक को अपने ही पुत्र-पौत्रों द्वारा अपमानित होना पड़ सकता है, यदि बृहस्पति न पंचमेश को न अष्टमेश को प्रभावित कर रहा हो।

13. यदि पंचमेश क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो, और बृहस्पति 3 या कम बिंदुओं से युक्त होकर दो क्रूर ग्रहों के बीच फंसा हुआ हो, तो एक दुर्बुद्धि पुत्र पैदा हो सकता है जो परिवार के लिये कलंक सिद्ध होगा।

14. यदि पंचमेश स्थित राशि का स्वामी गुरु से संबंध रखने के साथ गुरु के अष्टकवर्ग में चार या अधिक बिंदुओं से युक्त हो तो ऐसा सुयोग्य पुत्र जन्म लेता है जो परिवार के सम्मान को कई गुणा बढ़ा देता है।

15. यदि सम्भोग के समय उस राशि का उदय हो रहा हो जो गुरु के अष्टकवर्ग में अधिकतम बिंदुओं से युक्त हो, तो गर्भधारण की संभावना बढ़ जाती है। निस्संतान दंपति इस नियम का लाभ ले सकते हैं।

16. जब सूर्य उन राशियों पर विचरण करे, जो गुरु के अष्टकवर्ग में अधिक बिंदुओं से युक्त हैं, तब शुभ कार्य करने चाहियें। वे ज्योतिषी जो मुहूर्त्त आदि निकाल कर जीविकार्जन करते हैं, कृपया नोट करें। इसकी विपरीतावस्था में शुभकार्य का मुहूर्त्त न निकालें।

17. यदि बृहस्पति निम्नांकित तीन शर्तें पूरी करे तो जातक चक्रवर्ती सम्राट के समकक्ष होगा:

    (क) बृहस्पति चार या अधिक बिंदुओं से युक्त हो;

    (ख) बृहस्पति और शुक्र परस्पर संबंध या दृष्टि रखें;

    (ग) बृहस्पति लग्न से केन्द्र में हो।

उदाहरण: कैनेडी की कुंडली में:

(क) बृहस्पति अपने अष्टकवर्ग में पांच बिंदुओं से युक्त है;

(ख) नवें घर में बृहस्पति और शुक्र की युति है;

(ग) बृहस्पति यद्यपि लग्न से केन्द्र में नहीं है, पर चन्द्र लग्न से केंद्र में है। फिर वह लग्न से नवमस्थ है और चन्द्रमा से दशमस्थ है तो श्रेष्ठतम है ही। संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्राध्यक्ष वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चक्रवर्ती सम्राट से कम नहीं समझा जाता।

18. यदि गुरु स्थित राशि का स्वामी सुस्थित है (केन्द्र या त्रिकोण में है) और गुरु के अष्टकवर्ग में चार या अधिक बिंदुओं से संपन्न है तो जातक अत्यंत समृद्ध और असीम भाग्यशाली होगा।

उदाहरण: हमारी उदाहरण कुंडली में बृहस्पति की राशि का स्वामी शुक्र सबसे शक्तिशाली त्रिकोण में है और बृहस्पति के अष्टकवर्ग में उसके 5 बिंदु हैं।

19. अपार समृद्धि और शक्ति जातक को प्राप्त होगी यदि उसकी कुंडली में बृहस्पति का राशिस्वामी उच्चस्थ होने के साथ गुरु के अष्टकवर्ग में 5 या अधिक बिंदुओं से संपन्न हो।

उदाहरण: यह नियम भी लगभग इससे पूर्ववर्ती नियम जैसा ही है। हमारी उदाहरण कुंडली में बृहस्पति की राशि का स्वामी शुक्र उच्च का तो नहीं पर स्वगृही अवश्य है।

12

शुक्र का अष्टकवर्ग

संपन्न रमणी शीलसंपन्नरमणीं विना।
इत्यूढवान्नरमणी रमणीं रुक्मिणीं हरिः॥

मानवों में मणि तुल्य, कृष्ण ने शील संपन्न रमणी रुक्मिणी से विवाह किया। बिना शील सम्पन्नता के रमणी विवाह-योग्य नहीं होती।

8 से लेकर शून्य बिंदुओं से युक्त होकर शुक्र निम्नांकित फल देता है:

8 बिन्दु : जातक हर प्रकार के सुख भोगता है – उच्चकोटि के वस्त्र, सुंदर स्त्रियां, फूल, विभिन्न प्रकार का सुस्वादु भोजन और मादक पेय।

7 बिन्दु : कीमती आभूषणों और हीरे-जवाहरातों की प्राप्ति।

6 बिन्दु : सुप्रिया पत्नी या स्त्री से मिलन।

5 बिन्दु : मित्रों से संबंध, साहचर्य।

4 बिन्दु : मिश्रित फल - कभी अच्छे कभी बुरे।

3 बिन्दु : पड़ोसियों से या स्थानीय प्रशासन से दुश्मनी।

2 बिन्दु : पद-अवनति, पतन।

1 बिन्दु : कफ से सम्बन्धित रोग, जल अथवा विष से भय।

0 बिन्दु : हर प्रकार की विपत्तियां और दुःख।

शुक्र के अष्टकवर्ग के प्रमुख संकेत:

1. जब शुक्र उस कक्ष्या से गुज़रता है जिसमें उसके अपने अष्टकवर्ग में बिंदु हो तो जातक को समाज में उच्च स्थान मिलता है और सरकार से सम्मान मिलता है। वह शारीरिक सुख-विलास भोगता है और उसे धन, स्वास्थ्य और ज्ञान-लाभ होता है।

2. जब शुक्र बिंदु-विहीन कक्ष्या से गुज़रता है तो जातक को शत्रुओं से परेशानी होती है। उसे स्त्रियों या जीवनसाथी की ओर से चिन्ता, धनसंपत्ति की हानि, मन-मस्तिष्क के दु:ख, अनावश्यक व्यय और यात्रा में परेशानी होने की सम्भावना होती है।

3. जब शुक्र उस राशि पर विचरण कर रहा हो जिस में अधिकतम बिंदु हों तो जातक को शैय्या और शयन-कक्ष संबंधी वस्तुएं खरीदनी चाहिएं। ऐसा करना समृद्धिकारी और आनंदवर्द्धक होगा। इसी काल में विवाह, मैथुन, संगीत-शिक्षा आदि में रुचि लेनी चाहिये। रेशमी वस्त्र और वाहन खरीदने के लिये भी यही समय उपयुक्त होता है।

4. केन्द्रों या त्रिकोणों में यदि सुस्थित शुक्र 8 बिंदुओं से युक्त हो तो जातक जीवन भर कई वाहनों का सुख भोगेगा, बशर्ते, शुक्र न तो नीचस्थ हो और न ही अस्त। यदि बिंदु 5, 6 या 7 हों तो जातक सारे सुख भोगेगा और अपार धन का स्वामी होगा।

5. यदि शुक्र 5 बिंदुओं से युक्त होकर मेष या वृश्चिक में स्थित हो और शुभग्रहों से दृष्टिगत हो तो जातक धन, संपत्ति और वाहनों का स्वामी होगा। केन्द्र या त्रिकोण में ऐसा होना इस योग को और सुदृढ़ करेगा।

उदाहरण: भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव की कुंडली देखें:

उनका शुक्र 8 बिंदुओं से युक्त होकर मेष राशि में स्थित है। शुक्र का राशि स्वामी मंगल दसवें घर में स्थित है और शुक्र तथा मंगल के अष्टकवर्ग में 4 बिंदुओं से युक्त है।

शुक्र विशेष शक्ति-सम्पन्न है। इसकी दोनों राशियों, वृषभ में 7 और तुला में 5 बिंदु हैं। राज्य और केन्द्र दोनों में मंत्रीपद जीवन भर उनके पास रहा और उन्होंने अनेक वाहनों और अन्य सुविधाओं का सुख भोगा। भाग्य स्थान का स्वामी होने के साथ शुक्र के पास इतने बिन्दु होने के कारण ही वे राजनीति में लगभग अपराजेय रहे (कम से कम 1996 तक), शुक्र की अष्टम में स्थिति को अच्छा माना गया है और वह बृहस्पति से दृष्ट भी है। शुक्र का प्रतिस्थापक मंगल, सूर्य एवं लग्नेश बुध के साथ दशम भाव में स्थित है।

हर तरफ से उन्हें घेरते रहे दुष्चक्रों और घोटालों में से वे साफ बचकर निकल गए। दशमेश बुध के संग कर्मस्थान में अष्टमेश मंगल और द्वादशेश सूर्य के कारण वे घोटालों के घेरे में फंसे किंतु आठवें और बारहवें भावों में शुभ ग्रहों का होना, नवमेश शुक्र की असाधारण अष्टकवर्ग शक्ति और लग्नेश बुध का दसवें घर में अपनी ही राशि मिथुन में 7 बिंदुओं से युक्त होना उन्हें सभी विवादों से निष्कलंक निकाल ले गया।

चन्द्र 30	केतु शुक्र 34	25	सूर्य मंगल 34 बुध
30	पी वी नरसिंह राव 28.6.1921 13:20 वारंगल, आन्ध्रप्रदेश		26
30			गुरु शनि 26
28	28	राहु 23	लग्न 23

3	शुक्र 8	7	4
4	शुक्र का अष्टकवर्ग		3
4			3
4	6	5	1

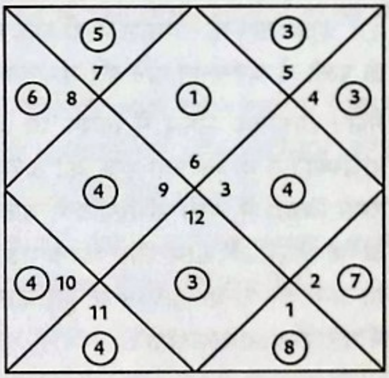

6. चार या अधिक बिंदुओं से युक्त शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हो और मंगल की दृष्टि उस पर न पड़ती हो, तो विवाह जल्दी हो जाता है।

7. यदि शुक्र राशि या नवमांश में नीच का हो, मंगल से दृष्टिगत हो और 5 बिंदुओं से युक्त हो, तो भी शीघ्र विवाह संभव है।

नोट: ऐसा संभवत: इसलिए होता है कि जब कामोत्साह कम हो (शुक्र की नीचावस्था के कारण) तो मंगल की आवश्यकता पड़ती है। मंगल कामोत्साह में वृद्धि करता है और यौवन की प्रारंभिक अवस्था में ही विवाह की इच्छा उत्पन्न करता है। किंतु यदि कामावेग का आधिक्य (नियम 7) हो तो शुक्र पर मंगल की दृष्टि शीघ्र विवाह के योग को सामान्य दुष्प्रभावों और कामुकता के कारण खराब कर देती है।

8. शुक्र का राशि स्वामी यदि शुक्र के अष्टकवर्ग में 5 या अधिक बिंदुओं से युक्त हो तो शुक्र के शुभफलों में वृद्धि होती है।

9. जब भी सप्तम भाव का स्वामी शनि या मंगल के नवमांश में हो तो सावधान यदि साथ में

(क) सातवें घर को दोनों में से कोई देख रहा हो,

(ख) सप्तमेश शनि या मंगल की राशि में स्थित हो

ये परिस्थितियां जातक के सुख को नष्ट कर सकती हैं क्योंकि उसकी पत्नी एक व्यभिचारिणी हो सकती है, किंतु ऐसा कहने से पूर्व उन शुभ प्रभावों की उपस्थिति भी ज़रूर देखें जो उपर्युक्त दुष्प्रभावों का परिहार कर रहे हों।

10. यदि सप्तम या द्वादश में स्थित चन्द्रमा किसी क्रूर ग्रह के नवांश में हो तो जातक को किसी स्त्री के साथ दुष्कर्म करने का दुष्फल भोगना होगा।

11. शुक्र शनि के नवमांश में हो और मंगल मकर या कुंभ (शनि की राशियों) में हो तो पत्नी के बदचलन होने की संभावना है।

नोट: आधुनिक समय में नियम 10 और 11 के सही सिद्ध होने के लिये उपर्युक्त परिस्थितियों के अलावा शुक्र को 3 या कम बिंदुओं से युक्त होना चाहिये। नहीं तो हमारे विचार में, ऐसी परिस्थिति में जातक का व्यवसाय ऐसा हो सकता है जिसमें उसे अनेक स्त्रियों के साथ काम करना पड़े, जैसे, अस्पताल, सिनेमा, टी.वी. नृत्य-नाटक या अन्य जन संचार माध्यम से जुड़े काम। गुरु की दृष्टि होने या न होने से पूरी स्थिति में परिवर्तन आ सकता है।

12. यदि शुक्र 4 या अधिक बिंदुओं से युक्त होकर, नवमांश में उच्चस्थ हो और मंगल शुक्र को देखता हो, तो जातक अपनी कामुक कल्पनाओं को अमली जामा पहनाने से नहीं चूकता।

13. यदि शुक्र पांच या अधिक बिंदुओं से युक्त होकर मंगल के नवमांश में हो और मंगल अपनी ही राशि में हो तो जातक परस्त्री में दिलचस्पी रखता है।

नोट: यूं तो हर ग्रह का नवमांश देखे जाने की परंपरा है किंतु शुक्र का (और सप्तमेश का) नवमांश देखना आवश्यक है क्योंकि नवमांश कुंडली विशेषकर विवाह, जीवन साथी और काम संबंधों के लिये होती है।

14. सौभाग्य, सुयोग्य संतान और सुख को सुनिश्चित करना हो तो वधू उस दिशासे लायें जिसका संकेत वह राशि दे जो शुक्र के अष्टकवर्ग में अधिकतम बिंदुओं को धारण किये हो।

15. यदि शुक्र से सप्तम भाव में उस ग्रह ने बिंदु दिया हो, जो जन्म-नक्षत्र का स्वामी हो तो पति-पत्नी के बीच अत्यन्त प्रेमपूर्ण संबंध होगा।

16. शुक्र से सप्तम भाव में उन ग्रहों को देखें जिन्होंने उसमें बिंदु दिया है। पत्नी का जन्म नक्षत्र भी देखें (जिस नक्षत्र में पत्नी की कुंडली में चन्द्रमा स्थित हो) और उनका मिलान इस प्रकार करें –

(क) यदि बिंदु सूर्य ने दिया हो और पत्नी का जन्मनक्षत्र कृत्तिका (अथवा उत्तराफाल्गुनी या उत्तराषाढ़, जिन तीनों का स्वामी सूर्य है) हो तो पत्नी पति को उसकी अपनी आत्मा के समान प्रिय होगी।

(ख) यदि बिंदु चन्द्रमा द्वारा प्रदत्त हो और पत्नी का जन्म नक्षत्र रोहिणी (अथवा हस्त या श्रवण) हो तो पति-पत्नी की मानसिकता समरूप होगी।

(ग) यदि बिंदु मंगल द्वारा प्रदत्त हो और पत्नी का जन्म नक्षत्र मृगशिरा (अथवा चित्रा या धनिष्ठा) हो तो पत्नी पति के साथ जीवन संघर्ष में बराबर की लड़ाई लड़ेगी।

(घ) यदि बिंदु बुध ने दिया हो और पत्नी का जन्म नक्षत्र अश्लेषा (अथवा ज्येष्ठा या रेवती) हो तो पत्नी आज्ञाकारिणी और समझदार होगी। आधुनिक समय में इसे बौद्धिक समरसता कह सकते हैं।

(ङ) यदि बिंदु गुरु द्वारा प्रदत्त हो और पत्नी का जन्म नक्षत्र पुनर्वसु (अथवा विशाखा या पूर्वाभाद्रपद) हो तो वह गुणी संतान को जन्म देगी।

(च) यदि शुक्र ने बिंदु दिया हो और पत्नी का जन्म नक्षत्र भरणी (अथवा पूर्वाफाल्गुनी या पूर्वाषाढ़) हो तो दोनों की कामेच्छा में समानता होगी।

नोट: चूंकि शुक्र अपने से सप्तम में कोई बिंदु देता ही नहीं, अतः इस नियम में थोड़ी स्वतंत्रता लेनी होगी और लग्न से सप्तम भाव को देखना होगा।

(छ) यदि बिंदु शनि ने प्रदान किया हो और पत्नी का जन्म नक्षत्र पुष्य (अथवा अनुराधा या उत्तराभाद्रपद) हो तो पत्नी दासी की तरह अपने पति की सेवा करेगी।

नोट: कुछ विद्वान उपर्युक्त प्रकार के परिणामों को राहु के संदर्भ में आर्द्रा व इसके त्रिकोण नक्षत्रों के लिये करते हैं। किंतु राहु तो बिंदु-वितरण की योजना में सम्मिलित ही नहीं किया जाता। केतु के बारे में भी यही लागू होता है।

नियम 16 (क) से (छ) को लग्न से सप्तम भाव पर भी लागू मानना चाहिये क्योंकि सप्तम भाव विवाह के संदर्भ में शुक्र के समान ही फलदायी है।

17. जातक के कल्याण के लिये उस वधू को चुनना चाहिये जिस की जन्म कुंडली में निम्नलिखित स्थितियां हों-

(क) कन्या की कुंडली में चन्द्रमा उस राशि में होना चाहिये जिसमें वर की कुंडली में शुक्र से सप्तम भाव के स्वामी ने अष्टकवर्ग में बिंदु प्रदान किया हो (संभवत: यौन-समानता के लिये)।

(ख) कन्या का चन्द्रमा उस राशि में हो जिसमें वर की कुंडली में अधिकतम अष्टकवर्ग बिंदु हों

(i) चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में (मानसिक समरसता के लिये) या

(ii) सर्वाष्टकवर्ग में (मनोनुकूलता के लिये)।

नोट: कन्या के लिये वर का चयन करते समय कन्या की कुंडली का भी इसी दृष्टि से निरीक्षण करना चाहिये।

उदाहरण: हमारी उदाहरण कुंडली में यदि जातक की पत्नी की कुंडली में चन्द्रमा कुंभ में होता तो यह जातक के लिए सबसे शुभ होता। क्योंकि नियम ख(i) के अनुसार चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में कुंभ राशि में अधिकतम बिंदु (7) हैं (देखें तालिका 2-iii) और नियम ख(ii) के अनुसार कुंभ में ही अधिकतम सर्वाष्टक बिंदु हैं (देखें तालिका (2-ix)। नियम 17(क) के अनुसार भी जातक की पत्नी का चन्द्रमा कुंभ में ही होना शुभ होता क्योंकि उसमें मंगल द्वारा प्रदत्त बिंदु है और मंगल वृश्चिक राशि का स्वामी है जो शुक्र से सप्तम भाव में हैं। कुंभ में शुक्र द्वारा प्रदत्त बिंदु भी है और शुक्र के अष्टकवर्ग में उसमें 5 बिंदु हैं (देखें तालिका 2-vii)।

18. पत्नी का रंग, रूप एवं बाह्य व्यक्तित्व निम्नांकित के अनुरूप होंगे:

(क) शुक्र के नवांश स्वामी या

(ख) चन्द्र के नवांश स्वामी के अनुरूप उसके सद्गुण सप्तमेश के अनुरूप होंगे।

उदाहरण: हमारी उदाहरण कुंडली में शुक्र का नवांश स्वामी सूर्य है, चन्द्रमा का नवांश स्वामी मंगल है और सप्तमेश बृहस्पति है। ये तीनों ही ग्रह राजसी आभा के प्रतीक हैं। इसी के साथ शुक्र के अपने ही घर में शुक्र की सप्तमेश गुरु के साथ युति देखें और आपके सम्मुख उस मनमोहिनी सूरत की छवि बन जायेगी जिसे जैकलिन कैनेडी के नाम से जाना जाता था।

19. वैवाहिक आनंद और समृद्ध पारिवारिक जीवन का सुख निश्चित रूप से प्राप्त होगा यदि शुक्र 5 या अधिक बिंदुओं से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो।

20. जातक की पत्नी उसे छोड़ देगी यदि सप्तमेश और पंचमेश एक दूसरे से त्रिकोण में हों और मंगल लग्न से सप्तम भाव में हो।

21. पत्नी का चरित्र संदिग्ध होगा यदि मंगल या शनि सातवें घर में हों और पति की कुंडली में सप्तमेश शनि या मंगल के नवांश में हो।

22. यदि शुक्र राशि या नवांश में नीचस्थ हो और उसे मंगल देखता हो, तो पत्नी के बारे में अपमानजनक चर्चा फैलने की संभावना होती है।

23. शनि की राशि में या नवांश में शुक्र 1 से 3 बिंदुओं से युक्त हो और मंगल उसे देखता हो तो पत्नी बहुपुरुषगामी हो सकती है।

24. यदि पत्नी उस दिशा से आयी हो जिसकी स्वामिनी वह राशि हो जिसमें पति के लग्नाष्टकवर्ग[1] में अधिकतम बिंदु हों तो विवाह में असीम सुख, दीर्घायु और योग्य संतान का सुयोग होगा।

25. आकर्षक और मनमोहक व्यक्तित्व के लिये शुक्र का शक्तिशाली होना अत्यंत आवश्यक समझा जाता है। जादुई व्यक्तित्व के जातकों की जन्मकुंडली में देखा गया है[2] कि शुक्र के अष्टकवर्ग में लग्न उच्च बिंदुओं से युक्त होता है।

उदाहरण: कैनेडी की कुंडली में शुक्र का अष्टकवर्ग देखें। लग्न में 7 बिंदु हैं (तालिका 2-VII)। इसके अतिरिक्त शुक्र नवम स्थान में सुस्थापित है जिसकी शुभग्रह गुरु से युति है। इस सुयोग में सूर्य का द्वादशेश होकर सम्मिलित हो जाना और चन्द्रमा का क्रूर ग्रह के नवांश में होना, वे तत्व हैं जिन्होंने उन्हें गोपियों का कृष्ण होने की प्रसिद्धि दिलाई। मैरिलिन मुनरो (जिसने बाद में आत्महत्या की) से कैनेडी के संबंध उन्हें राष्ट्रपति पद से ही च्युत करा देते यदि वे अगले चुनाव तक जीवित रहते। (नियम सं.10 देखें)।

भारत भाग्यशाली रहा है जहां लगभग सभी प्रधानमंत्री[3] चुंबकीय व्यक्तित्व के स्वामी रहे—जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी से लेकर राजीव गांधी और नेहरू परिवार से इतर प्रधानमंत्री भी—जैसे विश्वनाथ प्रताप सिंह, मोरारजी देसाई, लालबहादुर शास्त्री, चरण सिंह—सभी के व्यक्तित्व आकर्षक थे।

---

[1]लग्नाष्टकवर्ग के लिए 'विवादास्पद विषय' का अध्याय देखें।

[2]शुक्र के अष्टकवर्ग में लग्न का उच्च बिन्दुओं से युक्त होकर जातक को आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करने का नियम बड़ी संख्या में जन्मपत्रियों पर लागू करके देखा गया है और सही पाया गया है। देखा गया कि साधारण स्थिति के जातक भी इस योग से युक्त होकर सुन्दर व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं।

[3]इस संदर्भ में पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहराव की कुंडली उल्लेखनीय है। यद्यपि उनका शुक्र असाधारण रूप से शक्तिशाली है, जैसा कि पहले बताया गया है, किन्तु शुक्र के भिन्नाष्टक में लग्न में मात्र एक बिन्दु है। और नीम चढ़े करेले वाली बात यूं हुई कि शुक्र लग्न या लग्नेश से या चन्द्र लग्न, सूर्य लग्न या उनके स्वामियों से भी किसी तरह का संबंध नहीं बना रहा।

इनके शुक्र के अष्टकवर्ग में लग्न में बिन्दु हैं :

(क) जवाहर लाल नेहरू की कुंडली में 5 बिन्दु। उनका शुक्र तुला में कर्क लग्न से केंद्र में है। लग्नस्वामी चन्द्रमा लग्न में है।

(ख) लालबहादुर शास्त्री की कुंडली में 5 बिन्दु। उनका शुक्र तुला में है और लग्न स्वामी बृहस्पति को देख रहा है।

(ग) इंदिरा गांधी की कुंडली में 4 बिन्दु। उनका शुक्र छठे घर में है और नवमेश बृहस्पति के साथ उसका राशि-परिवर्तन है। किंतु लग्नेश चन्द्रमा लग्न को देख रहा है।

(घ) राजीव गांधी की कुंडली में 5 बिन्दु। उनका तो शुक्र लग्न में ही है और साथ ही लग्नेश सूर्य और शुभग्रह जैसे गुरु, चन्द्र और बुध भी लग्न में हैं।

(ङ) इंद्र कुमार गुजराल की कुंडली में 5 बिन्दु। स्वक्षेत्री शुक्र चौथे घर में है और लग्नेश चन्द्रमा को देख रहा है।

(च) अटल बिहारी वाजपेयी की कुंडली में 4 बिन्दु। उनका शुक्र लग्न में ही स्थित है।

13

शनि का अष्टकवर्ग

अयन्तु देवो विख्यातः कालरूपी महाग्रहः।
जटिलो वज्ररोमा च दानवानां भयंकर ॥

पद्मपुराण II:41/3

जटाधारी, वज्र तुल्य रोमवाला, दानवों के लिए भयंकर, शनिदेव कालरूपी महाग्रह के रूप में विख्यात है।

आठ से लेकर शून्य बिंदुओं से युक्त होने पर शनि निम्नांकित फल देता है:

8 बिंदु : नगर का सर्वोच्चाधिकारी, राजनीति में प्रभाव।

7 बिंदु : सेविकाओं का सुख, बोझ ढोने वाले जानवरों की प्राप्ति।

6 बिंदु : जनजाति या, अपराधी गुटों का नेतृत्व।

5 बिंदु : बहुल कृषि उत्पादन, धन-लाभ से सुख।

4 बिंदु : सुख और दु:ख का मिश्रण।

3 बिंदु : धन, स्त्री और अधीनस्थ कर्मचारियों के कारण कष्ट।

2 बिंदु : कारावास, चिंता, रोग और गरीबी।

1 बिंदु : अधार्मिक कृत्य, रोग।

0 बिंदु : समस्त सम्पत्तियों की हानि, मृत्यु की संभावना अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट।

नोट: शनि जहां स्थित हो वहां आठ बिंदुओं से युक्त नहीं हो सकता क्योंकि शनि अपने अष्टकवर्ग में अपने से प्रथम स्थान में बिंदु प्रदान नहीं करता। (तालिका 2-I देखें) अतः आठ को सात और सात को छः समझें। यूं गोचर के संदर्भ में उपर्युक्त परिणाम प्रयुक्त हो सकते है क्योंकि अन्य किसी राशि में आठ बिंदुओं का होना संभव है।

शनि के अष्टकवर्ग के विशेष संकेत

1. जिस कक्ष्या में शनि अपने अष्टकवर्ग में बिंदु युक्त हो, उस कक्ष्या में शनि का विचरण पैतृक संपत्ति, राजकीय कृपा, प्रभावशाली लोगों से संपर्क, धन-संपत्ति, धार्मिक अनुष्ठान, दान-पुण्य व उद्योग में वृद्धि देता है।
2. बिंदुहीन कक्ष्या में शनि का विचरण दु:ख, राजकीय-कोप, संबंधियों से अनबन, शस्त्रों से घाव, धन-हानि, मानसिक अस्थिरता, भूमि की हानि, यात्रा के दौरान चोरी का कारण बन सकता है।
3. जिस समय उस राशि का उदय हो जिसमें शनि के अष्टकवर्ग में न्यूनतम बिंदु हों, हर दिन उस समय जातक को किसी न किसी कारण, चिड़चिड़ाहट और बेचैनी होगी। उस राशि पर जिस माह सूर्य गोचरवश गुजरेगा मृत्यु या स्वास्थ्य-हानि का भय हो सकता है।
4. शनि के अपने अष्टकवर्ग में जिस राशि में कोई बिंदु न हों, उस भाव से संबंधित निकृष्ट फल शनि के उस राशि में गोचर के दौरान मिलेंगे।
5. यदि चन्द्र और सूर्य, शनि के साथ, किसी बिंदु विहीन राशि से गुज़रें और मारक दशा भी चल रही हो, तब मृत्यु की संभावना है।

नोट: शनि करीब 2½ वर्ष एक राशि में रहता है। सटीक फलादेश करने के दृष्टिकोण से यह एक लंबा समय है। सूर्य और चन्द्रमा इस अवधि के भीतर घटना के संभावित समय को पकड़ने में सहायक होते हैं– सूर्य का गोचर एक राशि में एक माह और चन्द्रमा का लगभग 2¼ दिन रहता है।

कुछ विचित्रताएं

6. यदि उच्चस्थ शनि 1, 2, 3 या 4 बिंदुओं से युक्त हो और केंद्र में स्थित हो तो जातक की आयु कम होगी। यहां यह याद रखना आवश्यक है कि शनि स्वयं आयुकारक होता है और पापग्रहों का केन्द्र में बैठना अच्छा नहीं माना जाता।
7. शक्तिशाली शनि यदि 5 या 6 बिंदुओं से युक्त होकर लग्न में स्थित हो तो दु:ख-पूर्ण जीवन होगा और बाल्यकाल से ही धन-हानि होगी।

   किंतु यदि शनि नीचस्थ हो या शत्रुक्षेत्री हो और 5 या अधिक बिंदुओं से युक्त हो, तो जातक दीर्घायु होगा, और धन और वाहन का स्वामी होगा। चन्द्रमा शुभवर्ग में होना चाहिये।

8. जब शनि अस्त हो या शत्रुक्षेत्री होकर पंचम भाव या लग्न में स्थित हो, किंतु 4 या 5 बिंदुओं से युक्त हो तो जातक धन-धान्य, सेविकाओं और ऊंट-घोड़ों (आधुनिक काल में मोटर गाड़ियों) से सम्पन्न होगा।

   यदि ऐसा शनि 7 बिंदुओं से युक्त हो तो जातक कई नगरों का नेतृत्व करेगा — वह मंत्री, सांसद अथवा ऐसा जिला न्यायाधीश बनेगा जो अच्छा राजनयिक और प्रशासक होगा। यदि 6 बिंदु हों तो वह व्यापार या उद्योग से अच्छा धन कमायेगा।

9. शनि 3 बिंदुओं से युक्त होकर नवें अथवा दसवें भाव का स्वामी हो और तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो राजा के समकक्ष धन-सत्ता से संपन्न होगा।

नोट: ऐसा केवल वृषभ लग्न की कुंडली में संभव है, जहां शनि योगकारक होता है। यदि ऐसा योगकारक त्रिषडाय भावों में स्थित हो तो असीम धन और सत्तादायक होता है। पाठकों का ध्यान हम इस विचित्र नियम की ओर दिलाना चाहेंगे क्योंकि यहां तीसरा घर कर्क राशि का है यानी शत्रुक्षेत्री, जबकि छठा घर तुला का होगा जहां शनि उच्चस्थ होगा और ग्यारहवें में यदि शनि हुआ तो मीन में होगा, जो उसकी सम राशि है। पापग्रहों का त्रिषडाय भावों में स्थित होना अच्छा माना जाता है।

10. यदि शनि 4 बिंदुओं से युक्त होकर दूसरे या बारहवें घर में हो, जो उसका अपना घर भी हो और अन्य क्रूर ग्रहों ने अपने लिये केन्द्र या त्रिकोण स्थान हथिया लिये हों, तो जातक भिखारी का जीवन जियेगा।

नोट: नियम संख्या 6, 7, 8, 9 और 10 एक विचित्र स्थिति बना रहे हैं। पहले बताया गया हमारा सामान्य नियम यह है कि जब कोई ग्रह उच्चस्थ हो अथवा स्वक्षेत्री आदि हो तो वह शक्तिशाली होता है। इसके साथ-साथ यदि वह उच्च बिंदुओं से भी युक्त हो तो वह दुगना शक्तिशाली हो जाता है, और यदि कम बिंदुओं से युक्त हो तो उसकी शक्ति कम हो जाती है और वह शुभफल देने में असमर्थ हो जाता है।

उपर्युक्त नियमों (6, 7 और 8) में इस सामान्य नियम को भुलाया जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि शास्त्रकारों ने बिंदुक्षमता को उच्चादि प्रकार के बल से ऊंचा माना है। इन दो प्रकार के बलों का एक साथ उपस्थित होना भी शुभ फलों की दृष्टि से वे अच्छा नहीं मान रहे। शनि का अध्ययन हर स्थिति में सावधानी से ही करना चाहिये क्योंकि यह ग्रह पापग्रह होने के बावजूद कुछ शुभ स्थितियों में अत्यन्त समृद्धिदायक ग्रह भी है।

11. जब शनि या लग्न से आठवें घर का स्वामी अस्त हो या शत्रु राशि में शुभ दृष्टि से वंचित हो तो जातक को जीवनयापन के लिए भिक्षावृत्ति अपनानी पड़ सकती है। बिन्दुओं की कमी इस स्थिति को पुष्ट कर देगी।

12. यदि शनि या लग्न से आठवें घर का स्वामी 5 या अधिक बिंदुओं से युक्त हो, शक्तिसम्पन्नावस्था में हो और साथ ही आठवें घर में कोई सौम्य ग्रह स्थित हो तो जातक सुखी जीवन बितायेगा।

नोट: शनि या लग्न से आठवां घर आयु का घर कहलाता है। उस घर की शक्ति या दुर्बलता जातक को जीवन भर प्रभावित करती है। अत: शनि के अष्टकवर्ग से किसी की मृत्यु के संबन्ध में ज़्यादा जानकारी मिल सकती है।

13. यदि शनि 1 से 3 बिंदुओं से युक्त हो तो जातक की मृत्यु विदेश में होती है।

14. यदि शनि 2 या 3 बिंदुओं हो युक्त होकर दशम भाव में स्थित हो एवं दशमेश से संबंधित हो तो जातक को विदेश में रहना पड़ता है, यानी स्वेच्छा से नहीं अनिच्छा से।

15. यदि लग्न के अतिरिक्त किसी अन्य केन्द्र में शनि और चन्द्रमा, दोनों एक साथ हों और दोनों ही 4 या अधिक बिंदुओं से युक्त हों तो यह युति असीम धन का कारण बनती है। किंतु यदि यही युति लग्न में हो तो अतीव निर्धनता का कारण बनती है।

16. यदि अष्टमेश क्षीण हो, शनि और मंगल क्रमश: मेष और मकर में स्थित हों और शनि के अष्टकवर्ग में 4 बिंदुओं से युक्त हो तो जातक गरीब होगा और गठिया या सन्धिवात से पीड़ित होगा।

17. यदि शनि मंगल के भिन्नाष्टक में बिन्दु-विहीन राशि से गोचर करे या इसके विपरीत मंगल शनि के भिन्नाष्टक में बिन्दु-विहीन राशि से गोचर करे तो यह समय घोर आपदा का सिद्ध हो सकता है। ऐसे गोचर के समय अशुभ दशाओं पर विशेष नजर रखनी चाहिए। (यह नियम शास्त्रोक्त नहीं किन्तु अनुभवजन्य है। सामान्यत: गोचर-फल निकालने के लिए ग्रह के अपने भिन्नाष्टकवर्ग को ही वरीयता दी जाती है। किन्तु यहां बात अलग है। यह भी शनि की 'विचित्रताओं' में एक है।)

18. मंगल और शनि दोनों के अधिकतम सर्वाष्टक बिंदु 39 ही हैं, जबकि शुक्र और गुरु जैसे सौम्य ग्रहों के क्रमश: 52 और 56; अत: मंगल और शनि के अष्टकवर्ग में 3 बिंदु बहुत कम नहीं समझे जाने चाहियें, (39 ÷ 12 = लगभग 3)।

14

विशिष्ट व्यक्तियों के उदाहरण

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।।

भगवद्गीता VIII-14

हे अर्जुन, जो अनन्यचित्त हो मुझे अनवरत याद करता है उस नित्य-युक्त योगी को मैं (कृष्ण) सदा सुलभ हूं।

उदाहरण 1

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव एक लंबे समय तक केंद्रीय मंत्री के पद पर आसीन रहे, किंतु 1991 में वे अपनी समस्त राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं से निरत हो, अवकाश ग्रहण करने जा रहे थे। उन्होंने लोकसभा चुनाव के लिये नामांकन पत्र भी नहीं भरा था। किंतु सितारों ने उनके लिये कुछ और ही नियत किया हुआ था। राजीव गांधी के अकस्मात् निधन के कारण और अपनी जन्मकुंडली में शक्तिशाली अष्टकवर्गीय बिंदुओं के कारण वे भारत के प्रधानमंत्री बन गये और अधिकतर राजनैतिक विश्लेषक (और ज्योतिषी भी) अवाक् रह गये।

1991 के मध्य में बृहस्पति कर्क राशि पर, अर्थात् अपनी उच्च राशि में गोचर कर रहा था, (कुंडली सं. 14-I क देखें)। श्री राव की कुंडली में वह सप्तम (लोकप्रियता व सार्वजनिक सम्मान) व चतुर्थ (संसद भवन) भावों का स्वामी होकर, एकादश (लाभ) भाव से गुजर रहा था। अपने निजी अष्टकवर्ग में बृहस्पति (कुंडली सं. 14-I ख) कर्क राशि में 6 बिंदुओं से युक्त है। उच्च का बृहस्पति 6 बिंदुओं से युक्त होकर और अधिक बली हो गया है।

शीघ्र ही वह सिंह में प्रवेश कर गया जहां उसके मात्र 3 बिंदु हैं। उनके शासन के प्रारंभिक काल में अस्थिरता का कारण मात्र 3 बिंदु (तनिक कम) का होना ही था और लोग भी ये अनुमान लगा रहे थे कि वे एक-दो साल से अधिक सत्ता में न रह सकेंगे। अगले वर्ष बृहस्पति कन्या (उनके लग्न) में प्रवेश कर गया, जहां वह

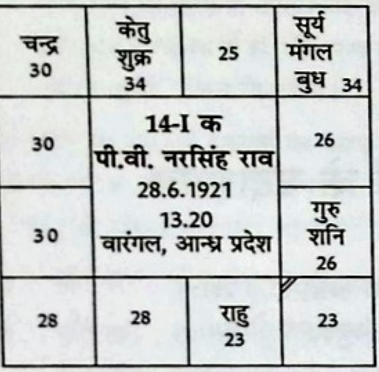

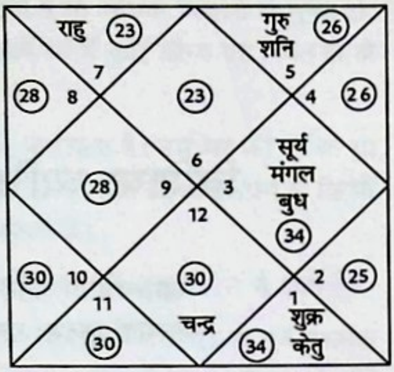

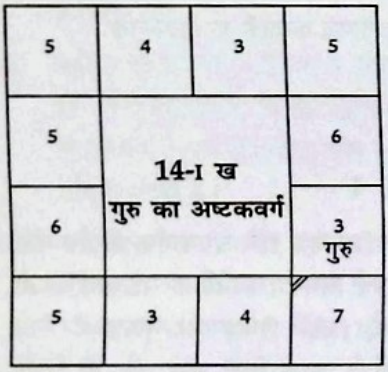

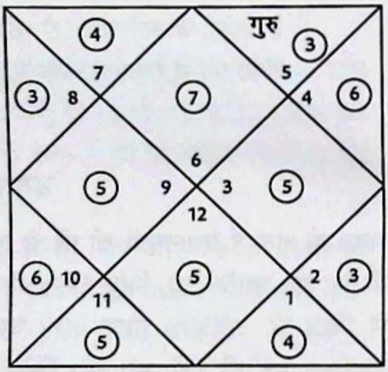

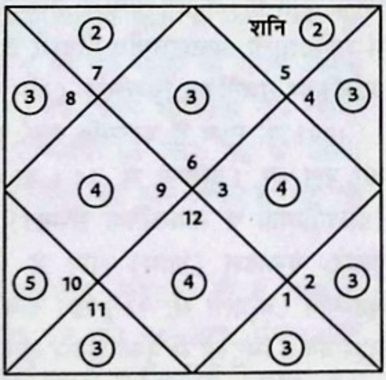

7 बिंदुओं से युक्त था, और उसके बाद श्री राव ने पलटकर नही देखा। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी स्थिति मज़बूत कर ली। सिंह (3) से कन्या (7) का तीव्र उन्मेष देखें। उन्हें कोई चुनौती न दे सका, बाबरी मस्जिद के ढहाने को भी वे आराम से झेल गये।

हर्षद मेहता का शेयर घोटाला, चीनी घोटाला, दूर संचार घोटाला, वे सभी घोटालों को आराम से देखते गए। ऐसे घोटाले उनके पूर्ववर्तियों ने इस पैमाने पर कभी नहीं देखे थे।

अब शनि-गुरु के संयुक्त गोचर का सिद्धांत लीजिये। इन सभी वर्षों में शनि, अपनी ही राशि मकर पर था जहां शनि के अपने अष्टकवर्ग में 5 बिंदु हैं (कुंडली सं. 14-I ग)।

गुरु कन्या से पंचम भाव मकर को देख रहा था जहां उसके अपने अष्टकवर्ग में 6 बिंदु हैं। शनि (5) गुरु (6) का श्रेष्ठ संयोग नरसिंह राव के पंचम घर में बन रहा था, जिसके कारण उन्हें पूरा सम्मान (गुरु द्वारा) और सत्ता (शनि द्वारा) प्राप्त हुई।

उदाहरण 2

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की जन्मकुंडली अत्यंत दिलचस्प है, विशेषकर सर्वाष्टकवर्ग की दृष्टि से (देखिये कुंडली सं 14-II क)। उनका सर्वाष्टकवर्ग, इस विधि का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। दशम भाव में 31 बिंदु हैं जो अत्यन्त शुभ हैं किन्तु एकादश भाव में 50 बिन्दु हैं, जो असाधारण हैं।

श्रीमती इंदिरा गांधी, भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री, अपने छोटे पुत्र संजय गांधी को ही प्रधानमंत्री बनाना चाहती थीं, और वे बड़ी मेहनत से इसके लिये संजय को तैयार कर रही थीं। एक समय में वह स्वयं ही सत्ता का एक गैर संवैधानिक केन्द्र बन गया था। यदि वह अगला प्रधानमंत्री बन गया होता तो किसी को आश्चर्य न होता। किंतु एक विमान दुर्घटना में उसका निधन हो गया जबकि विमान वह स्वयं शौकिया उड़ा रहा था।

राजीव गांधी को राजनीति में कोई रुचि न थी, और वे एक प्रशिक्षित व्यावसायिक विमान चालक थे। किंतु छोटे भाई की मृत्यु के बाद, उनकी मां इंदिरा गांधी ने अनिच्छुक राजीव को राजनीति में आने के लिये मना लिया और वे उत्तर प्रदेश के एक छोटे शहर से सांसद बन गये। 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या हो गई और राष्ट्रपति ने बिना देर किये उन्हें प्रधानमंत्री घोषित कर दिया। यह विधि की विडम्बना है कि सात साल बाद राजीव गांधी की भी एक मानव-बम द्वारा हत्या कर दी गई।

(क) तीव्र फलोदय के सिद्धांत की यहां पुष्टि होती है कि कैसे एक साधारण विमानचालक, देश के सर्वोच्च पद पर, चमत्कारपूर्ण ढंग से जा पहुंचा। इस प्रकरण में दशम और एकादश भावों में शुभ बिंदुओं का तुलनात्मक अध्ययन असाधारण है। इन घरों को सामान्यत: जन्म लग्न, चन्द्रमा और सूर्य से देखकर

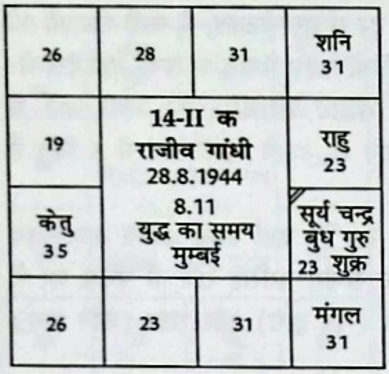

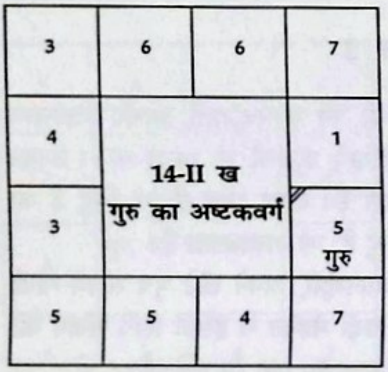

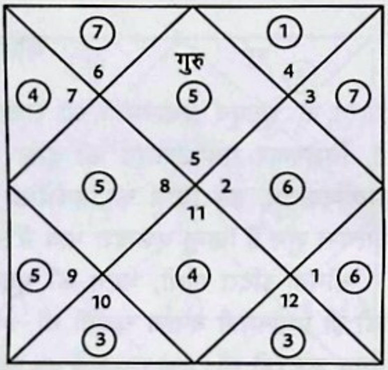

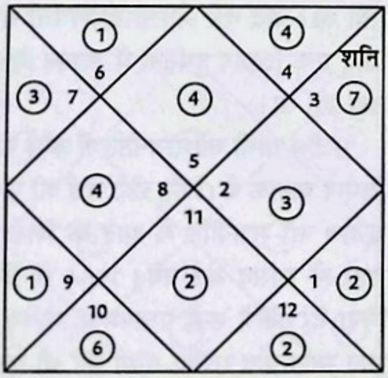

परिणाम निकाला जाता है। राजीव गांधी की कुंडली में तीनों का संगम लग्न में ही हो रहा है, अत: तीव्र उदय का सिद्धांत कई गुणा प्रभावी हो उठा है।

(ख) उनके सप्तम भाव में मात्र 19 बिंदु हैं (निस्संदेह कम हैं) जो एक अल्प वैवाहिक जीवन का संकेत देते हैं। विवाह अपने आप में उत्तम रहा क्योंकि पांच ग्रह - लग्नेश

सूर्य, द्वादशेश चन्द्रमा, द्वितीयेश बुध और शुभ ग्रह शुक्र और बृहस्पति, सप्तम भाव को देख रहे हैं। जैसे कि यह पर्याप्त नहीं हो, सप्तमेश शनि सर्वाधिक बिंदुओं (50) से और अधिकतम अष्टकवर्ग बिंदुओं (7) से युक्त है। सोनिया गांधी की राजनैतिक सफलता के पीछे यही 50 बिन्दुओं वाला शनि है जो नेहरू परिवार की विरासत का प्रतीक है। विवाह कारक शुक्र अपने निजी अष्टकवर्ग में 5 बिंदुओं से युक्त है। (उदाहरण 3 में इंदिरा गांधी की कुंडली से तुलना करें)।

(ग) राजीव गांधी की मृत्यु के समय बृहस्पति कर्क में था और अपने भिन्नाष्टकवर्ग में मात्र 1 बिंदु से युक्त था, (कुंडली 14-II ख), जहां वह मिथुन राशि से आया था और वहां बृहस्पति 7 बिंदुओं से युक्त था। स्पष्टतः यह अष्टमेश के तीव्र पतन की स्थिति थी – (अष्टम भाव आयु का स्थान होता है)। गोचर में शनि घोर मारकेश होकर उसे मकर राशि से देख रहा था (सप्तम भाव मृत्यु का होता है और उसका स्वामी मारक होता है) यह इस तत्व का उद्घाटन करता है कि बृहस्पति जन्मकुंडली में श्रेष्ठ स्थिति में होकर, और गोचर में उच्च अवस्थित होकर भी, सिर्फ इसलिये क्षीण हो गया क्योंकि वह कर्क राशि में मात्र 1 बिंदु से युक्त था।

उदाहरण 3

अष्टकवर्ग की एक दिलचस्प प्रयुक्ति अन्य राष्ट्राध्यक्षों की कुंडलियों पर भी की जा सकती है। यहां हम श्रीमती इंदिरा गांधी और भारत की कुंडली पर उसे प्रयुक्त कर रहे हैं - यदि राष्ट्र और उसके अध्यक्ष की कुंडलियों में तालमेल हो तो महान् उपलब्धियां सम्भव होती हैं।

1. (क) वृषभ में इंदिरा के 32 बिंदु हैं और भारत के 44 (कुंडली 14-III क व 14-IV क क्रमशः)। भारत ने 1971 के भारत-पाक युद्ध में महान् विजय प्राप्त की और इंदिरा गांधी को दुर्गा कहा गया, जो हिंदु मिथकों के अनुसार शक्ति की देवी है। शनि उस समय वृषभ पर स्थित होकर भारत को अपराजेय बना रहा था। इंदिरा को इस विजय के लिये बड़ी वाहवाही मिली। शनि के भिन्नाष्टकवर्ग में इंदिरा के पास 5 बिंदु थे। (कुंडली सं 14-III ख)।

(ख) विजय और उससे मिली प्रशंसा इंदिरा के सिर पर चढ़कर बोलने लगी और जून, 1975 में अपने विरुद्ध विरोध की हर आवाज़ को दबाते हुए उसने आपत्काल की घोषणा कर डाली। इंदिरा ने ये दुष्चक्र मिथुन में

33	33	गुरु (व) 32	केतु 24
25	**14-III क इन्दिरा गांधी सर्वाष्टकवर्ग**		शनि 24
चन्द्र 22			मंगल 27
शुक्र राहु 23	सूर्य बुध 28	30	36

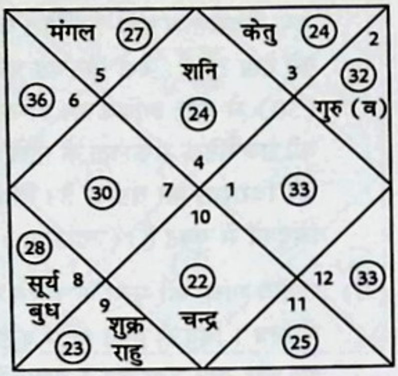

35	30	44	19
29	**14-IV क स्वतन्त्र भारत की कुंडली सर्वाष्टकवर्ग**		27
20			27
28	23	25	30

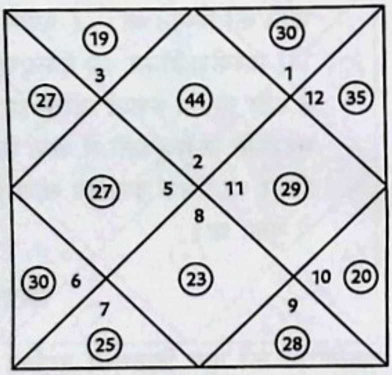

2	3	5	4
1	**14-III ख इंदिरा गांधी शनि का अष्टकवर्ग**		3 शनि
1			2
4	4	5	5

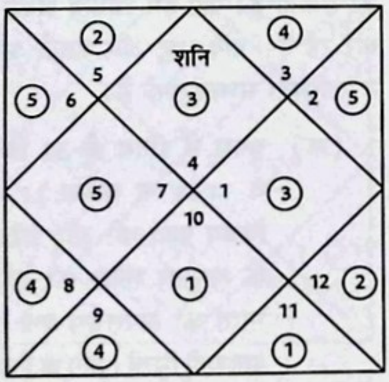

शनि के प्रवेश (1973) के साथ ही शुरु कर दिए थे जहां इंदिरा के पास 24 बिंदु थे और भारत के पास 19 हैं। पूरे देश के लिये यह एक कष्टपूर्ण समय था। बाद में, आपत्काल ही इंदिरा के अपने पतन का कारण बना।

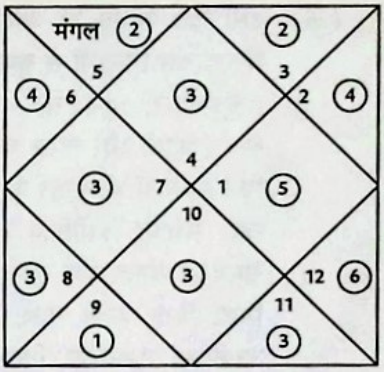

2. इंदिरा के सातवें घर में केवल 22 बिंदु थे। उनका वैवाहिक जीवन अल्पकालिक था, यद्यपि इस विवाह के फलस्वरूप ही उसे दो ऐसे पुत्र प्राप्त हुए जिन्होंने आगे चलकर इतिहास रचा। मकर में शनि के पास मात्र 1 बिंदु है जो उसकी अपनी राशि है। राजीव गांधी की तरह उसे अन्य शुभ ग्रहों का आशीर्वाद भी नहीं मिला है। चन्द्रमा से सप्तम भाव में शनि मात्र 24 बिंदुओं से युक्त है। शुक्र से सप्तम मिथुन में भी मात्र 24 ही हैं जो राहु-केतु से पीड़ित भी है। (कुंडली सं. 14-III क)।

3. (क) इंदिरा की हत्या के दिन, 31 अक्तूबर, 1984 को मंगल, (दूसरे घर में स्थित होने के कारण उनका मारकेश) जो मृत्यु के हिंसक होने का द्योतक है, धनु राशि पर अपने अष्टकवर्ग में मात्र एक बिंदु से गुजर रहा था (कुंडली सं 14-III ग)। यह मंगल छठे घर से अष्टमेश शनि, जो वैसे भी आयुकारक है, एवं लग्न को, एक साथ देख रहा था।

(ख) उसी दिन अर्थात् 31 अक्तूबर 1984 को राजीव गांधी की कुंडली में मंगल, चार बिन्दुओं से युक्त था और वृश्चिक में शून्य से होकर आया था (कुंडली सं. 14-II घ) - यह उनके योगकारक ग्रह मंगल का तीव्रोदय था। (चतुर्थ और नवम घर क्रमशः संसद और भाग्य के घर होते हैं) फिर मकर में भी मंगल के 7 बिंदु थे - अर्थात् तीव्रोदय का समय चलता रहा। संभवतः इसीलिये राजीव गांधी पहले प्रधानमंत्री थे जिन्हें एक समय तो जनता और संसद का ऐसा सर्वाधिक और दीर्घकालीन समर्थन मिला जैसा उनके नाना, प्रधानमंत्री नेहरू तक को नहीं मिला था। उनकी मां प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को तो बल्कि सत्ता में बने रहने के लिये लगातार कूटनीतिक चालबाजियां करनी पड़ी थीं। उनके अष्टकवर्ग में राजीव जैसे चमत्कारपूर्ण तीव्रोदय नहीं हैं।

उदाहरण 4

अमेरिकी राष्ट्रपति जे.एफ. कैनेडी की कुंडली हम उदाहरण स्वरूप लेकर चल ही रहे हैं (देखें कुंडली सं 2 क एवं 14-V क ख, ग, घ)

1. कैनेडी, 5 नवंबर, 1960 को राष्ट्रपति बने। अष्टकवर्ग बिंदुओं के साथ गोचर स्थिति नीचे तालिका में दी गई है।

	धनु पर शनि का गोचर	धनु पर गुरु का गोचर
• सर्वाष्टक बिंदु	31	31
• भिन्नाष्टक बिंदु	4	6
• खुद अपने भिन्नाष्टक में बिन्दु दिया है?	हां	हां

(क) जन्म कुंडली में प्रतिस्पर्धा के षष्ठ भाव कुंभ में, शनि 38 सर्वाष्टक बिंदुओं से (कुंडली सं-14-V क) और भिन्नाष्टक में (कुंडली सं 14-V ग) 4 बिंदुओं से युक्त है। धनु पर गुज़रता शनि भी सर्वाष्टक में 31 और भिन्नाष्टक में 4 बिंदु लेकर बलशाली है, जिसमें शनि ने अपनी ओर से भी बिंदु का योगदान किया है। देखें तालिका नं 2-VIII।

(ख) इसी प्रकार बृहस्पति अपनी राशि धनु में 31 सर्वाष्टक एवं 6 भिन्नाष्टक बिंदुओं से युक्त होकर काफी बली है (कुंडली सं 14-V ख) जो संयोग से वहां उसी

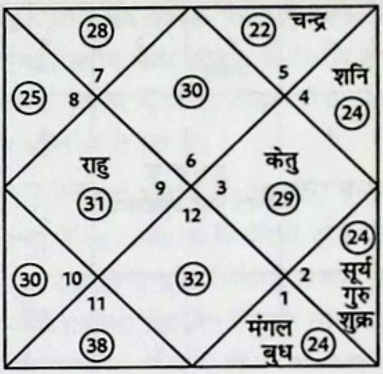

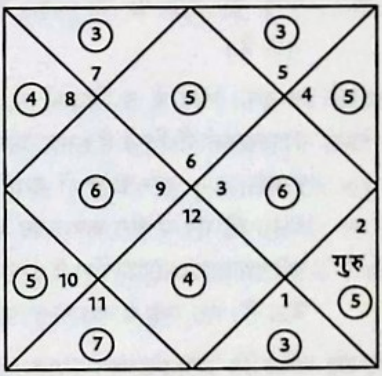

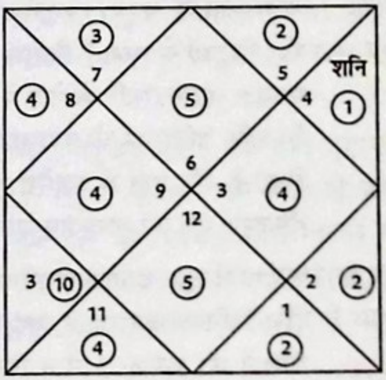

समय विचरण कर रहा था जब वे राष्ट्रपति बने। जहां भी सत्ता एवं सम्मान की स्थिति हो वहां शनि और गुरु के संयुक्त गोचर का हाथ अवश्य होता है।

(ग) राष्ट्रपति राहु-चन्द्र की विंशोत्तरी दशा से गुज़र रहे थे। राहु, संसद के द्योतक चतुर्थ भाव में, धनु राशि में स्थित है। राहु अपने प्रतिस्थापक ग्रह के

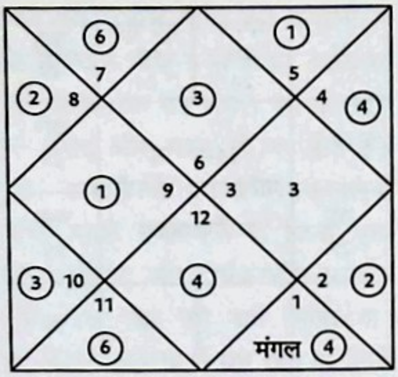

फल ही देता है जो यहां बृहस्पति है, जिसकी भूमिका हम देख ही चुके हैं।

(घ) चन्द्रमा, सिंह में 5 बिंदुओं से युक्त है, जिसमें से एक चन्द्रमा ने ही अपने अष्टकवर्ग में दिया है। नोट करें कि राहु और चन्द्रमा दोनों ही शाही राशियों, क्रमशः धनु और सिंह में स्थापित हैं। चन्द्रमा दशानाथ राहु से नवम स्थान, भाग्य के घर में बैठ कर उच्च भाग्योदय को जन्म दे रहा है, बृहस्पति राहु का प्रतिस्थापक एवं चतुर्थेश है और नवम भाव में एक अन्य शुभ ग्रह शुक्र के साथ बैठा है। यह एक प्रभावशाली राजयोग था।

(ङ) राष्ट्रपति सिद्धा-उल्का (शुक्र-शनि) योगिनी दशा से भी गुज़र रहे थे। शुक्र नवम भाव में चतुर्थेश-सप्तमेश बृहस्पति के साथ है। शुक्र अपने अष्टकवर्ग में 3 बिंदुओं से युक्त है जिसमें से एक बिंदु उसने स्वयं प्रदान किया है। किंतु मुख्यतः वह बृहस्पति के तेज से ही चमक रहा है, जैसा कि पहले दिखाया गया है। शनि, प्रतिस्पर्धा के षष्ठ भाव का स्वामी होकर, लाभ के एकादश भाव में स्थित है और वहां से दशमेश बुध को देख रहा है। उनके जीवन में शनि के गौरवपूर्ण युग की गाथा हम पहले ही सुना चुके हैं।

(च) चन्द्रमा से शुक्र दशमेश होकर, दशमस्थ है और शनि चतुर्थेश-नवमेश मंगल से दृष्टि विनिमय कर रहा है, वह मंगल जो अपने अष्टकवर्ग में अपनी इन दोनों राशियों को क्रमशः 2 से 4 बिंदु दे रहा है जिसमें एक-एक बिंदु उसने स्वयं दिया है। 4 बिंदु मंगल के अष्टकवर्ग में कम नहीं माने जाते क्योंकि उसके कुल सर्वाष्टक बिंदु 39 ही होते हैं।

इस उदाहरण में हम देखते हैं कि उच्च बिंदुओं से युक्त ग्रह यदि परस्पर संबंध बनाते हैं तो सही दशा में उच्च पदों पर आसीन करवाते हैं।

2. कैनेडी की मृत्यु 22 नवंबर 1963 को हुई। उस समय हिंसक मंगल वृश्चिक पर मात्र 2 बिंदु लेकर तृतीय भाव से गुजर रहा था। तृतीय भाव अष्टम से अष्टम होने के कारण आयु स्थान का पर्याय है। आयुस्थान अष्टम में मंगल स्थित होकर एवं तृतीय को दृष्टि देकर हिंसक मृत्यु का संकेत पहले ही दे रहा है।

(क) ये वही शनि और बृहस्पति थे, जिन्होंने 3 वर्ष पूर्व कैनेडी को राष्ट्रपति बनाया था। और अब इन्हीं का हाथ उनकी हत्या में था। अब जो विंशोत्तरी दशा चल रही थी वह विशेषकर दुर्भाग्यपूर्ण थी। अष्टकवर्ग से कोई विशेष सहायता नहीं मिल रही थी। बृहस्पति सप्तमेश (मारकेश) होकर द्वितीयेश (दूसरा मारकेश) शुक्र और द्वादशेश सूर्य के साथ बैठा है। बृहस्पति मीन में गोचर कर रहा था जहां उसके पास अपने अष्टकवर्ग में 4 बिंदु हैं। ये बिंदु उसे, सूर्य, बृहस्पति, शुक्र और लग्न ने ही दिये थे।

(ख) दुर्घटनाओं का कारक षष्ठेश शनि, अष्टमेश मंगल से दृष्टि विनिमय कर रहा है और साथ ही लग्नेश बुध पर भी दृष्टि डाले है। शनि उस समय मकर में गोचर कर रहा था जहां वह 3 बिंदुओं से युक्त था, और वहां से दोनों कारक स्थानों, सप्तम और द्वितीय तथा मृत्यु के कारक शनि को दृष्टि दे रहा था। ये 3 बिन्दु बुध, मंगल और चन्द्रमा ने दिए थे। बुध और मंगल अष्टम में हैं और चन्द्रमा द्वादश में; इन सबका संबंध शरीर नाश से है।

(ग) षष्ठेश और अष्टमेश का यूं इस कृत्य में सम्मिलित होना और वह भी शनि और मंगल जैसे विकट ग्रहों का रूप धरकर, गुप्त योजनाओं के घर अष्टम को प्रभावित करते हुए – इस बात का संकेत था कि राष्ट्रपति की हत्या एक षड्यंत्र के तहत हुई।

(घ) उस समय योगिनी दशा संकटा-धान्या (राहु-बृहस्पति) की थी। बृहस्पति क्योंकि राहु का प्रतिस्थापक था, अतः राहु ने बृहस्पति की भांति ही काम करना था। फिर बृहस्पति द्वितीयेश शुक्र और द्वादशेश सूर्य जैसे मारकों की संगत में था। ऊपर से राहु और बृहस्पति षडष्टक (6-8 संबंध में) थे जो शुभ परिणामों के अनुकूल नहीं होता। राहु-गुरु दशा इस प्रकार चारों ओर से मारक दशा सिद्ध हुई।

3. पंचमेश होकर, शनि अपनी शत्रुराशि कर्क में मात्र 1 बिंदु से युक्त है। मंगल से वह दृष्टि विनिमय कर रहा है। अष्टमेश होकर अष्टम भाव में ही स्थित मंगल पंचमेश शनि और लग्नेश बुध दोनों को ही पीड़ित कर रहा है। शनि को कोई शुभ प्रभाव प्राप्त नहीं है।

(क) चिकित्सा ज्योतिष में, पंचम भाव पीठ का द्योतक माना जाता है। जे.एफ.के. ऑपरेशन कराने के बाद भी, निरन्तर पीठ-दर्द से पीड़ित रहते थे। षष्ठेश होकर शनि की लग्न और लग्नेश दोनों पर दृष्टि है और मंगल के साथ शनि के दृष्टि विनिमय के कारण उसका क्रूर प्रभाव और भी बढ़ गया है।

(ख) उपर्युक्त ग्रहस्थितियों के चलते कैनेडी संतानहीन ही रह गये होते, यदि संतानकारक बृहस्पति की स्थिति अष्टकवर्ग में बलशाली न होती, बृहस्पति पंचम भाव से पंचम में, अपने ही अष्टकवर्ग में 5 बिंदुओं से युक्त होकर बैठा है। बृहस्पति पंचम घर को देख भी रहा है जिसमें 5 बिंदु हैं। बृहस्पति से पंचम में भी 5 बिंदु हैं। चन्द्रमा से पंचम धनु है जिसमें 6 बिंदु हैं।

इस सबके बावजूद, क्योंकि पंचमेश की अपनी स्थिति अष्टकवर्ग में सुदृढ़ नहीं है, उनकी पत्नी को गर्भपात हुआ। हालांकि दूसरी बार गर्भवती होने पर उन्होंने कन्या को जन्म दिया (सप्तमेश-बृहस्पति), और तीसरी बार के गर्भ से अठ-मासा पुत्र (नवम भाव में द्वादशेश सूर्य की उपस्थितिवश) का जन्म हुआ। जे.एफ.के. के बच्चों ने सार्वजनिक जीवन में कोई विशेष उल्लेखनीय कार्य नहीं किया, यद्यपि उन्होंने निजी स्तर पर एक समृद्ध जीवन जिया। वर्ष 2001 में उनके पुत्र की मृत्यु एक हवाई दुर्घटना में हुई, चालक वे स्वयं थे। नवम भाव को पुत्र का लग्न मानें तो षष्ठेश शुक्र और अष्टमेश बृहस्पति दोनों लग्न में हैं।

उदाहरण 5

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा की कुंडली भी अष्टकवर्ग की प्रयुक्ति को और सुस्पष्ट करती है।

1. 1991 के मध्य में जब वे राष्ट्रपति बने (कुंडली सं. 14-VI क से ङ) तो 26 बिंदुओं से युक्त बृहस्पति, सिंह राशि में था जहां उसके 7 शुभ बिंदु थे। यह तीव्रोदय की स्थिति थी - कर्क (2) से सिंह (7)। किंतु शनि मकर में, जहां राहु विचरण कर रहा था, मात्र 2 बिंदुओं से युक्त था, यद्यपि मकर राशि 31 सर्वाष्टक बिंदुओं से युक्त होकर बली है।

(क) देखने योग्य अन्तर यह है कि सम्मानदायी बृहस्पति तो श्रेष्ठ स्थिति में है परन्तु सत्तादायी शनि की स्थिति सामान्य ही है। यह सर्वविदित है कि अमेरिकी राष्ट्रपति की तरह भारतीय राष्ट्राध्यक्ष सर्वोच्च सम्मान का अधिकारी तो होता है पर भारतीय राष्ट्रपति के पास कार्यकारी सत्ता नहीं होती (कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर)।

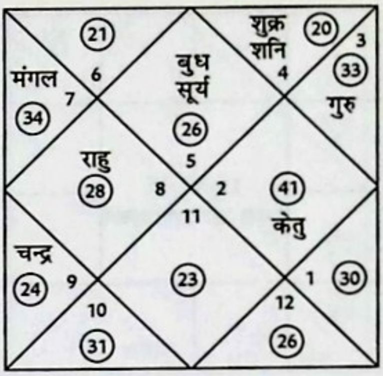

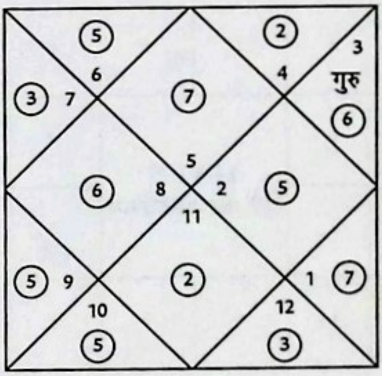

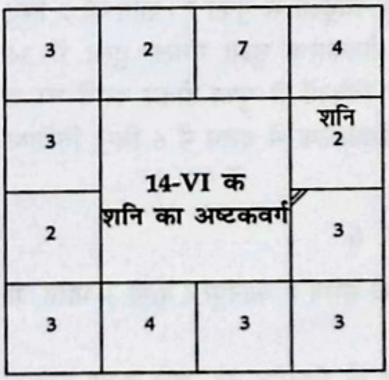

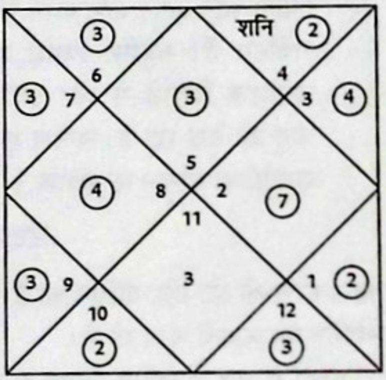

(ख) डॉ. शर्मा उस समय शनि-केतु विंशोत्तरी दशा से गुज़र रहे थे। कौन कल्पना कर सकता था कि दो क्रूर ग्रह उन्हें देश के सर्वोच्च राजनैतिक पद पर बैठा देंगे। किंतु उन ग्रहों में विशेष अष्टकवर्ग बल था। केतु, सम्मान के दशम भाव में है जो चमत्कारिक 41 बिंदुओं के साथ वृषभ राशि में स्थित है जहां महादशा

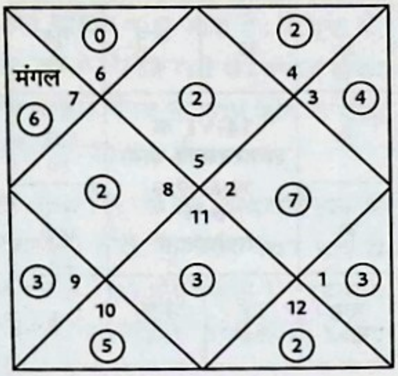

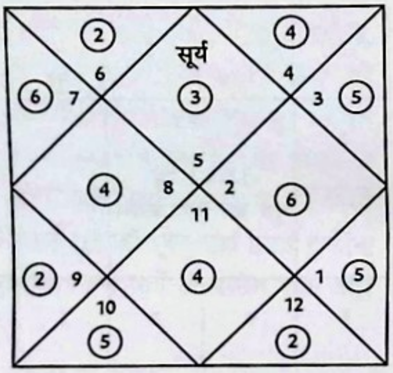

स्वामी शनि अपने अष्टकवर्ग में 7 शुभ बिंदुओं से युक्त है। शनि के 7 बिंदु सर्वोत्तम हैं। चतुर्थेश-नवमेश होकर योगकारक हुआ मंगल, तुला में 34 सर्वाष्टक बिंदुओं से और वृषभ में 7 बिंदुओं से युक्त होकर दसवें घर व केतु को देख रहा है। लग्नेश सूर्य के भिन्नाष्टक में दशम में 6 बिन्दु विशिष्ट राजनैतिक सम्मान के द्योतक हैं

उदाहरण 6

यह प्रकरण श्री डी. एन. दीक्षित का है, जो एक समय में कानपुर (यू.पी.) भारत, में ज्योतिष की कक्षायें चला रहे थे।

1980 में जब वे ब्रिटिश इंडिया कॉरपोरेशन के चेयरमैन बने, शनि कन्या (36), (कुंडली सं. 14-VII अ) पर था। भारतीय प्रशासनिक सेवा के कई उच्चाधिकारियों में इस आकर्षक पद पर पहुंचने की प्रतिस्पर्धा थी। किंतु दीक्षित जी का छठा भाव कन्या, सर्वाधिक बली भाव था। बुध भी अपने अष्टकवर्ग में 7 बिंदुओं से युक्त होकर इस भाव को बल दे रहा है, गुरु और शनि भी अपने भिन्नाष्टक में 5-5, कन्या को दे

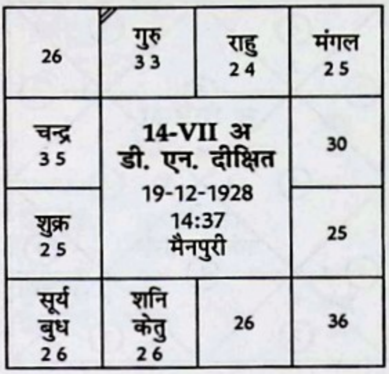

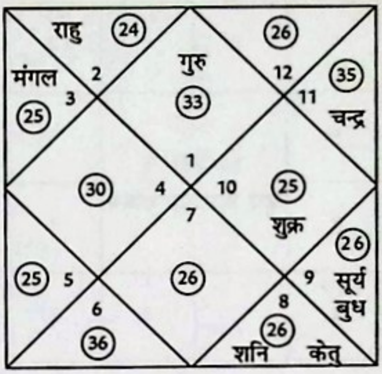

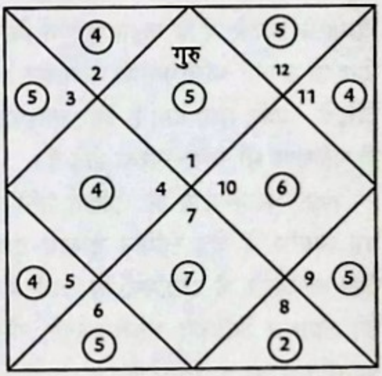

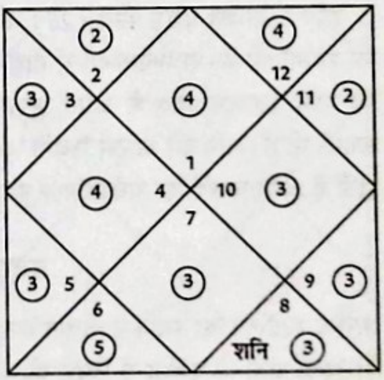

रहे हैं और दोनों संयुक्त रूप से कन्या पर ही गोचर भी कर रहे थे। (कुंडली सं. 14-VI ब, स, द) क्या उन्हें इस से बली परिस्थितियों की आवश्यकता थी?

सामान्यतः चन्द्रमा से अष्टम शनि, चन्द्रमा से 64वें नवांश को पीड़ित करता है, जिस की व्याख्या असमय मृत्यु के लिये की जाती है। जिन ज्योतिषियों ने ऐसा फलादेश

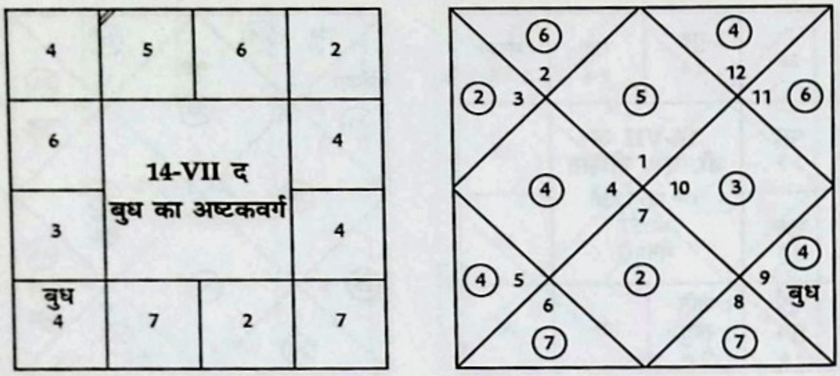

किया वे अपनी जगह गलत नहीं थे किंतु यदि उन्होंने सर्वाष्टकवर्ग को ध्यान से देखा होता तो उनकी भविष्यवाणी पलटकर असाधारण उन्नति के लिये होती। एक बार फिर देखिये - शनि सत्ता देता है और बृहस्पति सम्मान। ये दो दूरस्थ ग्रह जब मिल जाते हैं तो परिणाम भी चमत्कारिक होते हैं।

1980 के मध्य में श्री दीक्षित शनि-केतु विंशोत्तरी दशा से गुज़र रहे थे। दोनों क्रूर ग्रह अष्टम में थे। लेकिन देखिये दशा पर अष्टकवर्ग का क्या प्रभाव होता है। दशा-अन्तर्दशा के स्वामियों से 11वें में सर्वाधिक बिन्दु हैं (36) आसन्न बुरे काल की लगभग निश्चित भविष्यवाणी, गोचर अष्टकवर्ग से बल पाकर, चमत्कारपूर्ण पदोन्नति में बदल सकती है।

शनि न केवल दशम भाव (25) को देख रहा है, वह स्वयं एकादश भाव (35) का स्वामी भी है। सर्वाष्टकवर्ग में तीव्रफलोदय का सिद्धांत लागू हो रहा है। नोट करें कि शनि एकादश भाव में अपनी मूल त्रिकोण राशि में स्थित है। शनि ही महादशा स्वामी भी है। शनि की अष्टम स्थिति 'अचानक लाभ' या 'अचानक हानि' की द्योतक होती है। अष्टकवर्ग का यथेष्ट बल पाकर 'अचानक लाभ' के पक्ष में निर्णय हुआ।

उदाहरण 7

जोसेफ स्टालिन का स्थान न केवल रूस के वरन् पूरी दुनिया के इतिहास में महत्वपूर्ण है। 20वीं सदी के पूर्वाद्ध में विश्व के राजनैतिक पटल पर उनका वर्चस्व रहा। उनकी कुंडली भी उतनी ही विशिष्ट है जितनी उनकी जीवनी।

सर्वप्रथम जो बात सबसे अधिक प्रभावित करती है वह है उनके लग्नेश मंगल का लग्न में होना और वह भी 6/33 बिन्दुओं के साथ। 6 बिन्दु मंगल के अपने भिन्नाष्टक में हैं और 33 बिन्दु सर्वाष्टक में हैं। यह मंगल षष्ठेश भी है। छठे भाव में केवल 3/21

शनि 19	27	27	24
27	**14-VIII अ** **जोसेफ स्टालिन**		केतु 29
गुरु राहु 25	18-12-1878 05:51 प्रात: गोरी, ज्योर्जिया		32
बुध (व) शुक्र सूर्य 26	लग्न मंगल 33	34	चन्द्र 34

लग्न	13°33'	अनुराधा	मंगल	03°30'	अनुराधा	शुक्र	06°54'	मूल
सूर्य	03°56'	मूल	बुध (व)	19°40'	पू. आषाढ़ा	शनि	04°16'	उ. भाद्र
चन्द्र	16°59'	हस्त	गुरु	15°20'	श्रवण	राहु	12°32'	श्रवण

1	3	4	3
4	**14-VIII ब** **मंगल का अष्टकवर्ग**		2
2			2
3	मंगल 6	5	4

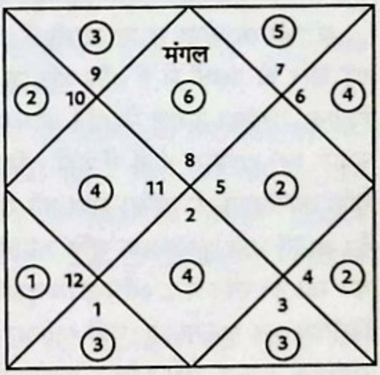

2	6	3	5
5	**14-VIII स** **बुध का अष्टकवर्ग**		3
2			6
बुध 7	6	5	4

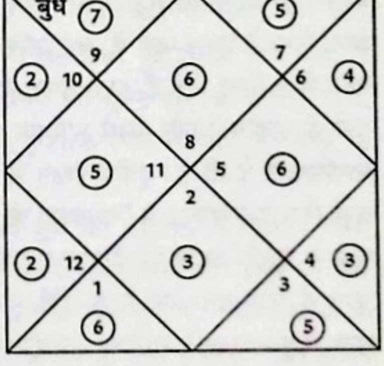

बिन्दु हैं। अर्थात् लग्न छठे भाव से अधिक शक्तिशाली है और इस कारण स्टालिन ताउम्र अपने विरोधियों को ठिकाने लगाने में समर्थ रहे। स्टालिन की कुण्डली 'रुचक

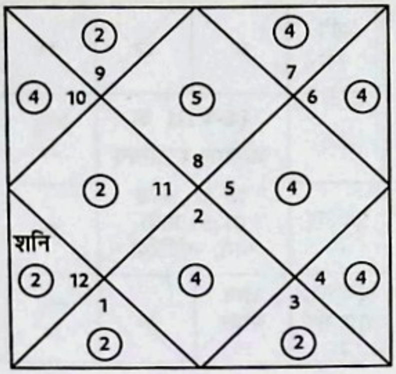

योग' का दिलचस्प किन्तु सबसे भयावह उदाहरण है। स्टालिन को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से 3 करोड़ लोगों की मौत का जिम्मेदार माना जाता है।

कुंडली के केन्द्र स्थान खाली हैं और त्रिकोण स्थानों में पाप ग्रह हैं। तीनों पाप ग्रह शनि के नक्षत्रों में हैं और शनि के पास केवल 2/19 बिन्दु हैं अर्थात् शुभता का नितान्त अभाव। नवांश में शनि और मंगल दोनों एक साथ दशम भाव में स्थित हैं। नवांश एवं दशमांश दोनों में वही वृश्चिक लग्न है जो राशि कुंडली में है। वृश्चिक राशि कालपुरुष के आठवें भाव की राशि है जो मृत्यु, षड्यंत्र एवं संहार की द्योतक है। आठवें भाव का कारक शनि अनियंत्रित विध्वंस के वाहक मंगल के साथ ताण्डव कर रहा है। शनि यदि अधिक बिन्दुओं वाला होता तो संभवतः मंगल की क्रूरता को नियंत्रित कर सकता था। यही कुत्सित शनि पूरी कुंडली पर छाया है, चाहे वह दृष्टि संबंध के कारण, चाहे राशि परिवर्तन के कारण या नक्षत्र-संबंध के कारण। एक तरफ मंगल का आधिपत्य है तो दूसरी तरफ शनि का साम्राज्य है। मंगल ने जहां केवल 1 बिन्दु दिया है पंचम भाव में, जहां शनि बैठकर बुद्धि को भ्रष्ट कर रहा है, वहीं शनि ने लग्न में 5 बिन्दु दिये हैं, जहां मंगल बैठा है। इसका अर्थ यह हुआ कि लग्न दो पाप ग्रहों के अधीन है और तीसरे पाप ग्रह केतु की दृष्टि ने इसे नरसंहार के लिए निरंकुश मानसिकता दे दी है। तृतीय स्थान में बृहस्पति का नीच होकर राहु के साथ जोड़ी बना लेना एक प्रकार से 'पराक्रम' के लिए प्रेरक का काम करना है। सूर्य बुध और शुक्र ने मारक स्थान पर बैठकर क्रमशः 6, 7 व 5 बिन्दु लग्न में दिये हैं। वृश्चिक लग्न के लिए इन तीनों मे से कोई भी शुभ ग्रह नहीं है। नवमेश चन्द्रमा के 2 बिन्दु लग्न में शुभता लाने के लिए अपर्याप्त हैं।

स्टालिन की 5 वर्ष की आयु में ही मंगल की दशा प्रारंभ हो गई थी। अर्थात् प्रारंभिक 'चरित्र' निर्माण के समय पहले मंगल और उसके बाद राहु का आधिपत्य

रहा। राहु वैसे भी शनिवत माना जाता है, यहां तो वह शनि की राशि में ही स्थित है। जैसे लग्न से पंचम शनि से पीड़ित है उसी प्रकार चन्द्र से पंचम राहु द्वारा पीड़ित है। स्टालिन की मानसिकता (पंचम) पर शनि का निर्द्वन्द्व प्रभाव पड़ा और वह भी युवावस्था से। शनि के भिन्नाष्टक में जो 2 बिन्दु हैं वे भी क्रूर पाप ग्रहों, सूर्य और मंगल ने ही दिए हैं।

सन् 1922 में जब लेनिन ने स्टालिन को जनरल सेक्रेटरी के पद के लिए चुना उस समय स्टालिन की कुण्डली में शनि 11वें भाव में 4/34 बिन्दु लेकर और बृहस्पति 12वें भाव में 5/34 बिन्दु लेकर गोचर कर रहे थे, और दोनों ही ग्रहों को उनके कक्ष्या-स्वामियों द्वारा एक-एक बिन्दु मिला हुआ था। दशा थी गुरु-राहु की। गुरु लग्न से पंचमेश है और चन्द्र से पंचम में है। पंचम स्थान पद-सम्मान देता है। तब लेनिन को पता नहीं था कि स्टालिन का 'गुरु चांडाल योग' (गुरु और राहु की युति) सक्रिय हो गया है। स्टालिन ने आते ही लेनिन की मृत्यु के बाद उसकी आर्थिक नीतियों को पलट दिया था। यह दीगर है कि स्टालिन के बाद खुश्चेव ने भी आते ही स्टालिन की आर्थिक नीतियों को बाहर का रास्ता दिखा दिया था।

उस समय शनि ठीक चन्द्रमा पर गोचर करते हुए प्रबल साढ़े साती बना रहा था। राहु भी 11वें स्थान पर शनि के साथ ही चन्द्रमा पर से गोचर कर रहा था। केतु पंचम स्थान पर था केवल 19 बिन्दु लेकर। यह वास्तव में भयानक अंधकार के युग का सूत्रपात था। चन्द्रमा एवं पंचम स्थान दोनों ही मानसिकता के द्योतक होते हैं।

बाद में बुध की दशा ने स्टालिन को कुछ हद तक कवि और लेखक बना दिया। उसने अपनी सुविधा के अनुसार सिद्धान्त गढ़ने शुरू किए और बुद्धिजीवियों की जमात में शामिल होने की कोशिश की। और ऐसा क्यों न होता! बुध जहां बैठा है वहां उसके 7/26 बिन्दु हैं और नवांश में वह उच्च का होकर 11वें भाव में बैठा है। राशि चक्र एवं दशमांश में बुध पर शनि की दृष्टि होने के कारण उसमें धूर्तता और कपट कूट-कूट कर भरा हुआ था। वृश्चिक लग्न के लिए बुध वैसे भी त्रिकेश है।

स्टालिन ने अपने जीवन के अंतिम 10 वर्ष बुध की महादशा में गुज़ारे। उससे पहले शनि की महादशा में उसने अपने सारे विरोधियों को ठिकाने लगा दिया था और अपनी निरकुंश सत्ता को मजबूत कर लिया था। जो ग्रह एक ही नक्षत्र-स्वामी के अधीन होते हैं मिलकर काम करते हैं। मंगल के सहयोग से शनि ने सैन्ट्रल और ईस्टर्न यूरोप को मिलाकर सोवियत ब्लॉक बना लिया था जिस पर उसका एक छत्र साम्राज्य स्थापित हो चुका था।

मार्च 5, 1953 को जब स्टालिन की मृत्यु हुई तब वक्री शनि चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर गोचर कर रहा था और अगली साढ़े साती चल रही थी। शनि मारकेश शुक्र को और केतु को दृष्टि-संबंध द्वारा पीड़ित कर रहा था। राहु एवं केतु जन्म समय के अपने मूल स्थानों पर गोचर कर रहे थे। यह स्थिति हमेशा ही जातक के जीवन में विशेष घटना क्रम उपस्थित करती है। दशा थी बुध-मंगल (षष्ठेश, लग्नेश-अष्टमेश) की और दोनों ही कुंडली के सबसे कम बिन्दुओं पर से यानि पंचम भाव से गोचर कर रहे थे, बुध 2/19 और मंगल 1/19 बिन्दु लेकर। बुध चन्द्रमा से 64वां नवांशेश भी है जो गोचर में मंगल से पीड़ित था। कुछ लोग मानते हैं कि स्टालिन की मृत्यु अनायास नहीं हुई थी, इसके पीछे कोई षड्यंत्र था। दशा और गोचर इस मान्यता के सही होने की ओर इंगित करते हैं।

15

शोधन एवं शोध्य पिंड

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।।

भगवद् गीता VII-10

हे पार्थ ! तुम मुझे सभी पदार्थों तथा प्राणियों का सनातन बीज समझो।
मैं बुद्धिमानों की बुद्धि तथा तेजस्वियों का तेज हूं।

कुंडली विश्लेषण का अधिकतर कार्य सर्वाष्टकवर्ग और भिन्नाष्टकवर्ग बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है। लेकिन घटनाओं के पूर्वानुमान के लिए अधिक गहन सूत्र जानने के उद्देश्य से इन संख्याओं में कुछ शोधन क्रियाएं बताई गई हैं। पहले हम शोधन विधि बताएंगे फिर उसके प्रयोग की विधि।

शोधन

दो प्रकार के शोधन होते हैं। पहले को त्रिकोण शोधन कहते हैं और दूसरे को एकाधिपत्य शोधन। शोधन का यह क्रम निश्चित है इसको बदला नहीं जा सकता।

त्रिकोण शोधन

भचक्र की बारह राशियों को तत्वों के आधार पर चार राशि-वर्गों में बांटा जा सकता है । ये राशियां परस्पर त्रिकोण होती हैं:

1. अग्नि : मेष, सिंह व धनु
2. पृथ्वी : वृषभ, कन्या व मकर
3. वायु : मिथुन, तुला व कुंभ
4. जल : कर्क, वृश्चिक व मीन

त्रिकोण शोधन निम्नांकित चार सिद्धांतों के अनुसार किया जाता है:

1. जब किसी राशि-वर्ग की तीनों राशियों में समान बिंदु न हों तो उनमें से सबसे कम बिन्दुओं की संख्या को तीनों में से घटाकर, शेष संख्याएं लें।

2. प्रथम सिद्धांत का उपसिद्धांत यह है कि जब किसी वर्ग की किसी एक राशि में शून्य बिन्दु हों तो शोधन की आवश्यकता नहीं है।

3. प्रथम सिद्धांत का ही दूसरा उपसिद्धांत यह है कि यदि एक वर्ग की तीनों राशियों में बिंदुओं की समान संख्या हो, तो तीनों को शून्य बना दें।

4. यदि उपर्युक्त राशि-त्रय में किन्हीं दो में शून्य संख्या हो तो तीसरी राशि की संख्या भी हटा दें।

नोट: कुछ विद्वान इसे स्वीकार नहीं करते पर यूं भी ऐसी स्थिति कभी ही आती है।

हमारी उदाहरण कुंडली के लिये (सं. 15-I (अ) व 15-I (ब) जिसे तालिका 2-II से लिया गया है), सूर्य का अष्टकवर्ग शोधन से पूर्व और शोधन के पश्चात् दिखाया गया है:

एकाधिपत्य शोधन

यह शोधन त्रिकोण शोधन के पश्चात् ही किया जा सकता है। कर्क और सिंह राशियों पर इस शोधन को प्रयुक्त नहीं किया जाता क्योंकि चन्द्र और सूर्य, जो क्रमश: इनके स्वामी हैं, वे किन्हीं दूसरी राशियों के स्वामी नहीं हैं। शेष राशियों के स्वामी एक से अधिक राशियों के स्वामी होते हैं, अत: उन्हें एकाधिपत्य शोधन से गुज़रना पड़ता है। यह शोधन तीन सिद्धांतों के आधार पर निम्नांकित क्रम से किया जाता है:

1. शोधन करने की आवश्यकता नहीं होती यदि :

(क) ग्रह स्वामी की दोनों राशियों में कोई न कोई ग्रह हो।

(ख) दोनों में से एक राशि में बिंदुओं की संख्या शून्य हो, चाहे वहां कोई ग्रह स्थित हो या नहीं।

2. यदि एक राशि में ग्रह हो और दूसरी राशि में न हो तो :

(क) यदि ग्रह-युक्त राशि में बिंदु संख्या अधिक हो तो, ग्रह-रहित राशि की बिंदु संख्या हटा दें।

(ख) यदि ग्रह-युक्त राशि में बिंदु कम हों तो ग्रह-रहित राशि की बिंदु संख्या उसी के बराबर कर दी जाए।

(ग) यदि दोनों राशियों में संख्या बराबर हो तो ग्रह-रहित राशि की संख्या हटा दें।

शोधन से पहले सूर्य का भिन्नाष्टकवर्ग

4	3	4	4
5	15-I अ		3
6			4
4	4	5	2

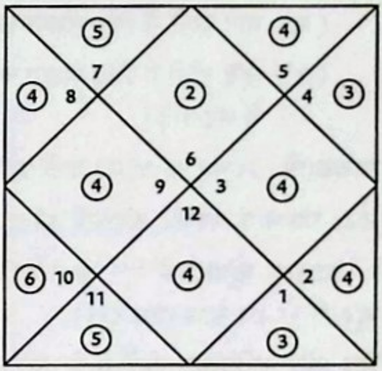

उत्तर भारतीय कुंडली में अष्टकवर्ग अंकों को वृत्त के अंदर लिखा गया है।

त्रिकोण शोधन के पश्चात् सूर्य का भिन्नाष्टकवर्ग

1	0	2	0
1	15-I ब		0
4			1
1	1	1	0

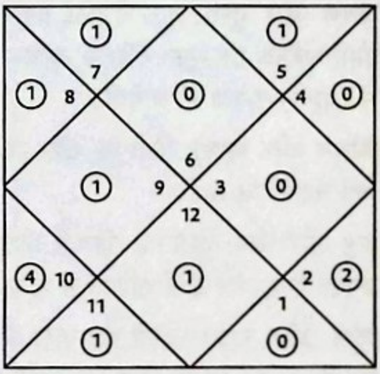

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् सूर्य का भिन्नाष्टकवर्ग

0	0	2	0
1	15-I स		0
1			1
0	1	0	0

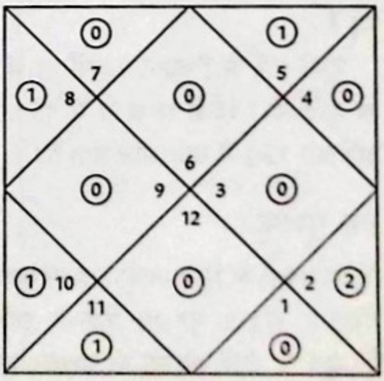

3. यदि दोनों ही राशियां ग्रह-रहित हों तो :

(अ) यदि दोनों में बिंदु संख्या बराबर हो तो दोनों की संख्या हटा दें।

(ब) यदि दोनों में बिंदु संख्या बराबर न हो तो अधिक संख्या को कम संख्या में बदल दें।

सावधानी : 2(ब) या 3(ब) तभी प्रयुक्त होंगे जब 1(ब) प्रयुक्त न होता हो।

नोट: शोधन के पश्चात् संख्यायें हमेशा कम होंगी, वे कभी बढेंगी नहीं।

उदाहरण कुंडली में सूर्य के एकाधिपत्य शोधन के लिये (तालिका 2(अ) एवं कुंडली 15-I ब साथ-साथ देखें।

मेष और वृश्चिक: दोनों में से एक राशि, मेष में, मंगल और बुध स्थित हैं। दूसरी राशि वृश्चिक रिक्त है। चूंकि दोनों में से एक राशि में संख्या शून्य है। सिद्धांत संख्या 1(ब) प्रयुक्त होगा, अर्थात् किसी शोधन की आवश्यकता नहीं है।

वृषभ और तुला: तुला में कोई ग्रह नहीं है। यहां पर सिद्धांत संख्या 2(अ) प्रयुक्त होगी क्योंकि ग्रह-युक्त राशि में अधिक बिंदु हैं। इस प्रकार वृषभ में (दो) और तुला में (शून्य) संख्या हो जायेगी।

मिथुन और कन्या: दोनों ग्रह-रहित राशियां हैं, दोनों में शून्य संख्या है। शून्य को और नहीं घटाया जा सकता।

धनु और मीन: दोनों ग्रह-रहित हैं और दोनों में बिंदु संख्या 1 है। यहां सिद्धांत 3(अ) प्रयुक्त होगा और दोनों राशियों में शून्य संख्या हो जायेगी।

कुंभ और मकर: दोनों ग्रह-रहित हैं और उनमें संख्यायें असमान हैं। अत: यहां सिद्धांत 3(ब) प्रयुक्त होगा और छोटी संख्या (1) दोनों में हो जायेगी।

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् सूर्य के अष्टकवर्ग की स्थिति 15-I स में दिखाई गई है।

दूसरे ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्गों पर भी दोनों प्रकार के शोधन दर्शाये गये हैं जो आगे के पृष्ठों में (15-II अ ब स से 15-VII अ ब स) दिये गये हैं। उनका समायोजन तालिका 15-I में एक साथ गया है।

ग्रह गुणक

विभिन्न ग्रहों के लिये अलग-अलग गुणक निश्चित किये गये हैं — सूर्य-5, चन्द्रमा-5, मंगल-8, बुध-5, गुरु-10, शुक्र-7, शनि-5। ये अंक सभी कुंडलियों के लिये समान हैं। सूर्य के दोनों शोधनों के पश्चात् अष्टकवर्ग जो तालिका 15-I (स) में उदाहरण

शोधन से पहले चन्द्रमा का भिन्नाष्टकवर्ग

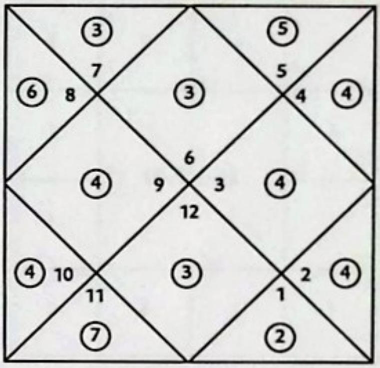

त्रिकोण शोधन के पश्चात् चन्द्रमा का भिन्नाष्टकवर्ग

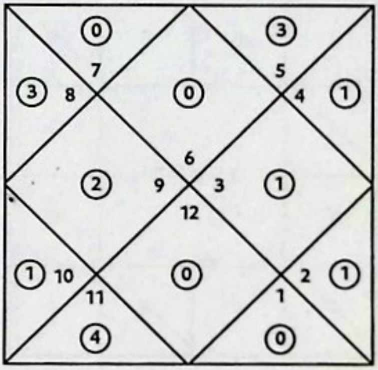

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् चन्द्रमा का भिन्नाष्टकवर्ग

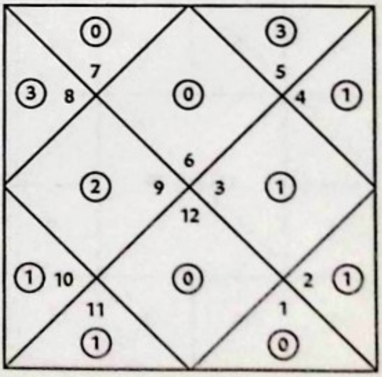

शोधन से पहले मंगल का भिन्नाष्टकवर्ग

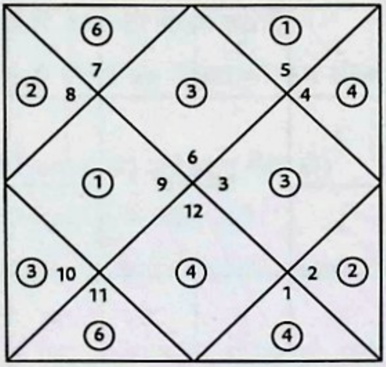

त्रिकोण शोधन के पश्चात् मंगल का भिन्नाष्टकवर्ग

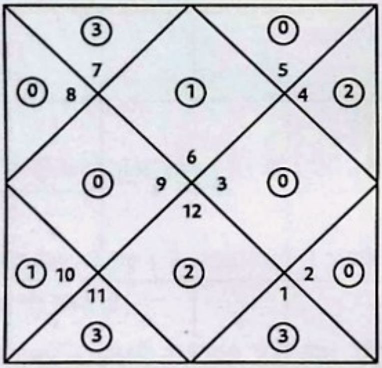

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् मंगल का भिन्नाष्टकवर्ग

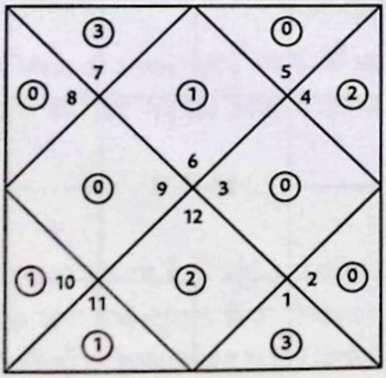

बुध का भिन्नाष्टकवर्ग

6	6	4	4
4	15-IV अ		4
6			3
5	2	5	5

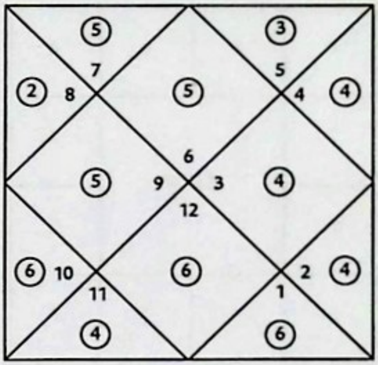

त्रिकोण शोधन के पश्चात् बुध का भिन्नाष्टकवर्ग

4	3	0	0
0	15-IV ब		2
2			0
2	0	1	1

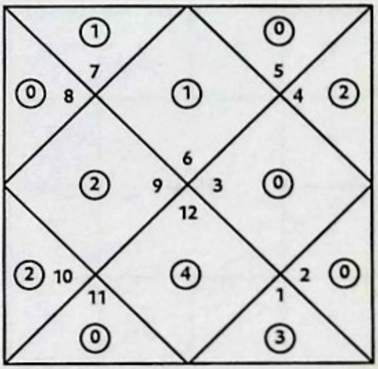

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् बुध का भिन्नाष्टकवर्ग

2	3	0	0
0	15-IV स		2
2			0
2	0	1	1

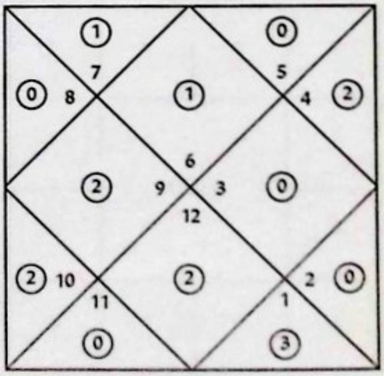

बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग

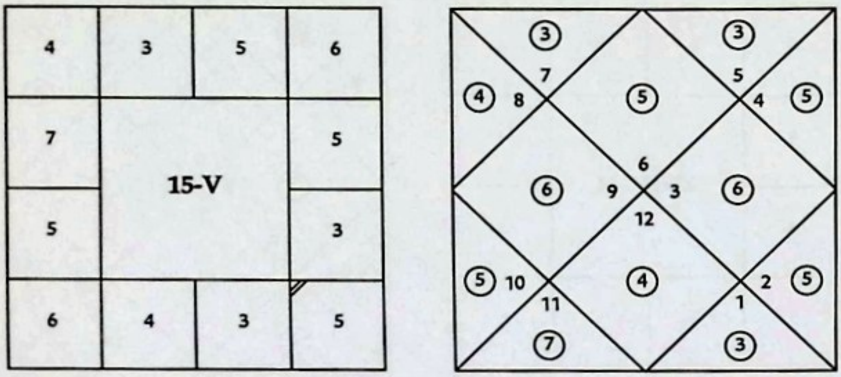

त्रिकोण शोधन के पश्चात् बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग

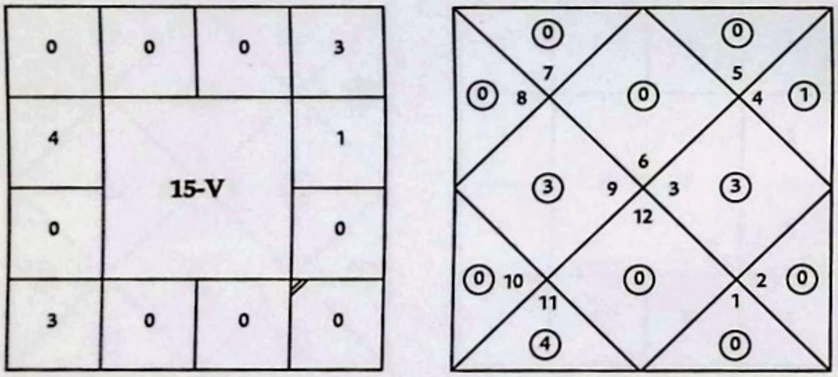

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग

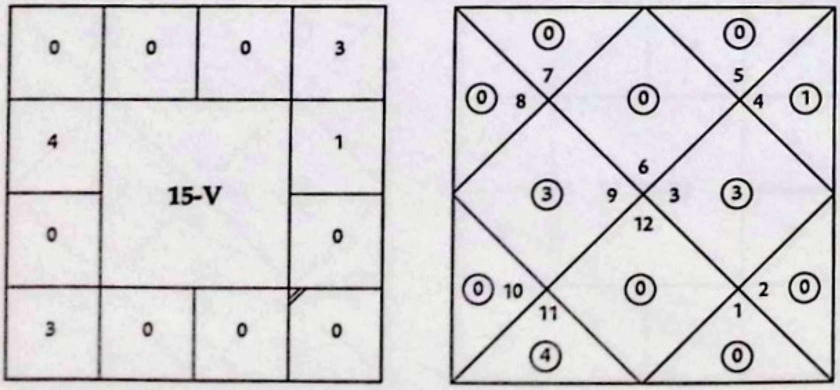

शुक्र का भिन्नाष्टकवर्ग

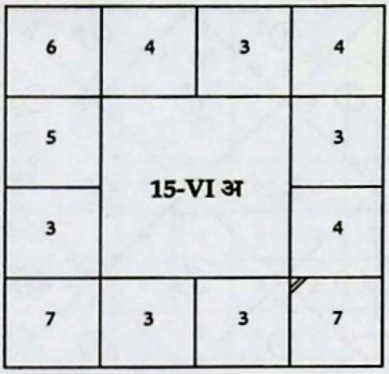

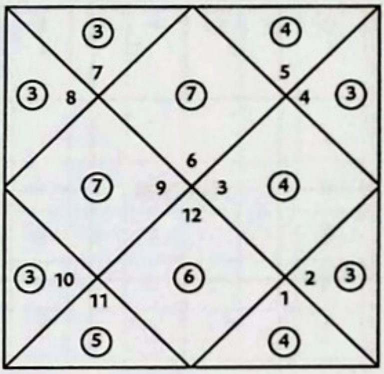

त्रिकोण शोधन के पश्चात् शुक्र का भिन्नाष्टकवर्ग

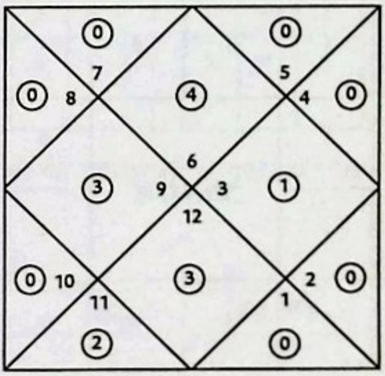

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् शुक्र का भिन्नाष्टकवर्ग

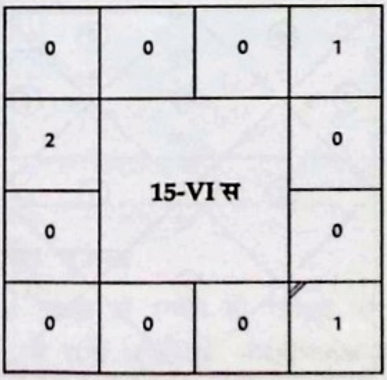

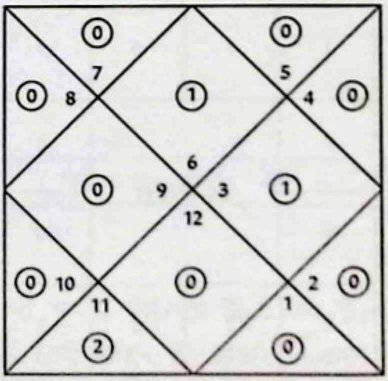

शोधन से पहले शनि का भिन्नाष्टकवर्ग

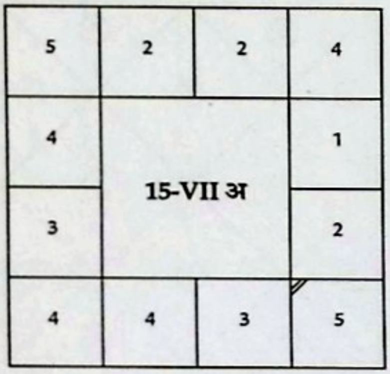

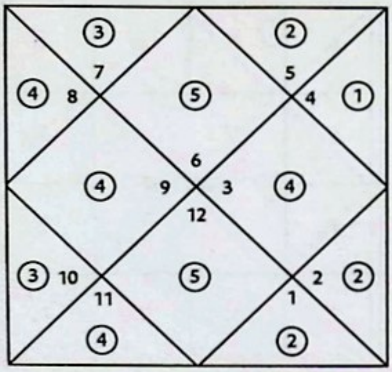

त्रिकोण शोधन के पश्चात् शनि का भिन्नाष्टकवर्ग

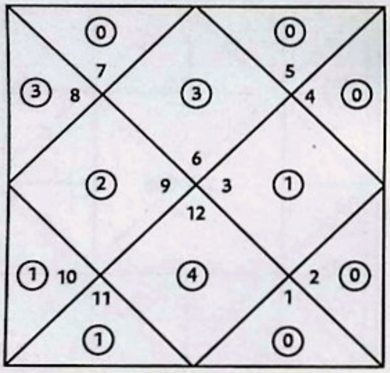

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् शनि का भिन्नाष्टकवर्ग

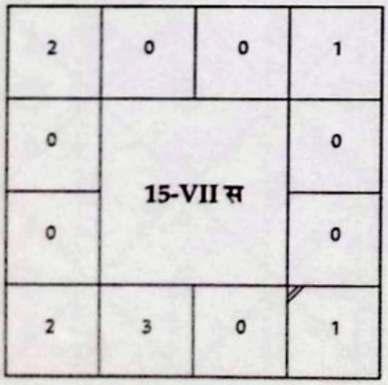

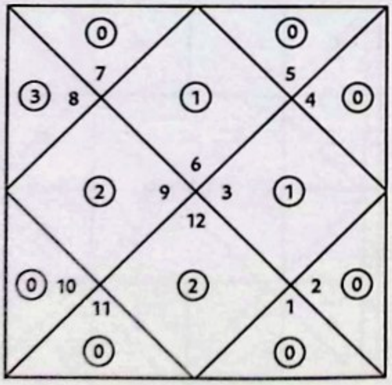

तालिका 15-I: शोधन के पश्चात् अष्टकवर्ग बिंदु

राशि ► / ▼ ग्रह	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र बृह.	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12
सूर्य	0	2	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0
चन्द्र	0	1	1	1	3	0	0	3	2	1	1	0
मंगल	3	0	0	2	0	1	3	0	0	1	1	2
बुध	3	0	0	2	0	1	1	0	2	2	0	2
गुरु	0	0	3	1	0	0	0	0	3	0	4	0
शुक्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	2	0
शनि	0	0	1	0	0	1	0	3	2	0	0	2
शोधन के पश्चात् सर्वाष्टक	6	3	6	6	4	4	4	7	9	5	9	6

कुंडली के लिये तैयार किया गया है, उसके अंकों को ग्रह-गुणकों से गुणा करें। यह तालिका 15-II में दिखाया गया है।

तालिका 15-II

ग्रह	राशि	ग्रह गुणक	बिंदु	ग्रह पिंड
सूर्य	वृष	5	2	10
चन्द्रमा	सिंह	5	1	5
मंगल	मेष	8	0	0
बुध	मेष	5	0	0
बृहस्पति	वृष	10	2	20
शुक्र	वृष	7	2	14
शनि	कर्क	5	0	0
			सूर्य का ग्रह पिंड =	49

राशि गुणक

ग्रह गुणक के समान ही राशियों के लिये भी गुणक निश्चित किये गये हैं। ये भी सभी कुंडलियों और भिन्नाष्टकवर्गों के लिये समान हैं। हमारी उदाहरण

कुंडली के सूर्य के अष्टकवर्ग के लिये तालिका 15-III में राशि गुणक लगाकर दिखाया गया है।

तालिका 15-III

राशि	राशि गुणक	बिंदु	राशि पिंड
मेष	7	0	0
वृष	10	2	20
मिथुन	8	0	0
कर्क	4	0	0
सिंह	10	1	10
कन्या	5	0	0
तुला	7	0	0
वृश्चिक	8	1	8
धनु	9	0	0
मकर	5	1	5
कुंभ	11	1	11
मीन	12	0	0
		सूर्य का राशि पिंड =	49

ग्रह गुणक और राशि गुणक हर ग्रह के भिन्नाष्टक (शोधनोपरान्त) पर प्रयुक्त किया जाता हैं। इसके लिये तालिका 15-IV व V में सभी ग्रहों के संयुक्त परिणाम दिये गये हैं।

ग्रह पिंडों और राशि पिंडों को जो उपर्युक्त तालिकाओं में दिये गये हैं, उन्हें ग्रहों के बल का द्योतक नहीं मानना चाहिये, चाहे वे शुभ ग्रह हों या अशुभ। इस अर्थ में वे षड्बल से भिन्न हैं। न ही ये भिन्नाष्टक या सर्वाष्टक संख्याओं की तरह भाव/राशियों की शक्ति इंगित करते हैं। ये संख्याएं उन नक्षत्रों/राशियों का निश्चय करने में सहायक होती हैं, जिन पर विभिन्न ग्रहों के विचरण की अवधि में ग्रह से संबंधित फल मिलने की संभावना होती है।

तालिका 15-IV
ग्रह पिंड

ग्रह	ग्रह अवस्थित राशि	ग्रह गुणांक	सूर्य		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
			बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल
सूर्य	वृष	5	2	10	1	5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
चन्द्र	सिंह	5	1	5	3	15	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मंगल	मेष	8	0	0	0	0	3	24	3	24	0	0	0	0	0	0
बुध	मेष	5	0	0	0	0	3	15	3	15	0	0	0	0	0	0
गुरु	वृष	10	2	20	1	10	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
शुक्र	वृष	7	2	14	1	7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
शनि	कर्क	5	0	0	1	5	2	10	2	10	1	5	0	0	0	0
ग्रह पिंड		=		49		42		49		49		5		0		0

तालिका 15-V
राशि पिंड

राशि	राशि गुणक	सूर्य		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
		बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल	बिन्दु	गुणनफल
मेष	7	0		0		3	21	3	21	0		0		0	
वृष	10	2	20	1	10	0		0		0		0		0	
मिथुन	8	0		1	8	0		0		3	24	1	8	1	8
कर्क	4	0		1	4	2	8	2	8	1	4	0		0	
सिंह	10	1	10	3	30	0		0		0		0		0	
कन्या	5	0		0		1	5	1	5	0		1	5	1	5
तुला	7	0		0		3	21	1	7	0		0		0	
वृश्चिक	8	1	8	3	24	0		0		0		0		3	24
धनु	9	0		2	18	0		2	18	3	27	0		2	18
मकर	5	1	5	1	5	1	5	2	10	0		0		0	
कुंभ	11	1	11	1	11	1	11	0		4	44	2	22	0	
मीन	12	0		0		2	24	2	24	0		0		2	24
राशि पिंड	=		54		110		95		93		99		35		79

शोध्य पिंड

किसी ग्रह के ग्रह पिंड और राशि पिंड, दोनों को जोड़ने पर प्राप्त संख्या शोध्य पिंड कहलाती है। उदाहरण कुंडली का शोध्य पिंड तालिका 15-VI में दिया गया है।

तालिका 15-VI

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
ग्रह पिंड	49	42	49	49	5	0	0
राशि पिंड	54	110	95	93	99	35	79
शोध्य पिंड	103	152	144	142	104	35	79

16

घटनाओं का समय निर्धारण

प्राजापत्यं हि नक्षत्रं ग्रहस्तीक्ष्णो महाद्युतिः।
शनैश्चरः पीडयति पीडयन् प्राणिनोऽधिकम् ।।

महाभारत 143-8

तीक्ष्ण तथा महाकान्ति सम्पन्न ग्रह शनि रोहिणी नक्षत्र को, जिसका देवता प्रजापति है, पीड़ित करता हुआ प्राणियों को अत्यधिक पीड़ादायक हो रहा है।

घटनाओं के समय निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में अनेक पद्धतियां हैं। उनमें से प्रमुख हैं दशा और गोचर। ऋषि पराशर ने अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। आजकल सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली दशा है विंशोत्तरी। अगले अध्याय में हमने विंशोत्तरी के कुछ विशेष प्रकार दिए हैं जिनमें दशा अनुक्रम और उनकी समयावधि पर कुछ अष्टकवर्ग-प्रेरित नवीन प्रयोग दर्शाए गए हैं। यहां हम सामान्य विंशोत्तरी पर लगने वाले अष्टकवर्ग के सामान्य नियमों का वर्णन कर रहे हैं। ध्यान रहे कि अष्टकवर्ग स्वयं में सम्पूर्ण प्रणाली नहीं है, केवल अनुपूरक विधि है।

1. जिस दशानाथ के सर्वाष्टक और भिन्नाष्टक में, जहां वह अवस्थित है, औसत से अधिक बिन्दु होते हैं, उस ग्रह की दशा, अन्तर्दशा में स्वयं के लिए अच्छे परिणाम मिलते हैं।

2. जिस भी दशानाथ से एक खास भाव में सर्वाधिक बिन्दु होते हैं उस दशा में उस भाव से संबंधित व्यक्ति अथवा कारकत्व को लाभ मिलता है।

गोचर

1. गोचर के नियम पहले भी दिए जा चुके हैं। सरलतम एवं सर्वप्रमुख नियम यह है कि गोचर ग्रह जब कभी ऐसी राशियों से गुजरते हैं जहां सर्वाष्टक और भिन्नाष्टक में बिन्दु अधिक हों तो अच्छा फल देते हैं, अन्यथा निकृष्ट फल देते हैं।

2. सर्वाष्टक एवं भिन्नाष्टक के अतिरिक्त यह भी देखना चाहिए कि ग्रह कौन सी

कक्ष्या से गुजर रहा है। यदि कक्ष्या स्वामी ने बिन्दु दिया हो तो अच्छे परिणाम मिलते हैं, अन्यथा नहीं। सम्पूर्ण विधि के लिए 'कक्ष्या' का अध्याय देखें।

3. शोध्य पिंड पर आधारित गोचर की अनेक विधियां हैं जिनसे माता-पिता की मृत्यु, विवाह का समय अथवा संतान-प्राप्ति इत्यादि का समय निर्धारण किया जाता है। आगे उसी का वर्णन किया जा रहा है।

◆◆◆

ज्योतिष की प्राचीन पुस्तकों में आधे से अधिक स्थानों उन सूत्रों को दिया गया है, जो विभिन्न ग्रहों के शोध्य पिंड पर आधारित हैं। सूक्ष्म अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि अधिकांश एक ही प्रकार की अभिरचनायें हैं। जिनमें विशेष घटनाओं के संबंध में कुछ विशिष्ट संशोधन किए जाते हैं। उन्हें यहां उदाहरणार्थ सूर्य के शोध्य पिंड और शनि के गोचर प्रभाव के लिए दर्शाया गया है।

शोध्य पिंड की मानक प्रयुक्ति

(क) सूर्य का शोध्य पिंड लें।

(ख) शोधन से पूर्व भिन्नाष्टक में सूर्य से नवम् स्थान के बिंदुओं से इसे गुणा करें।

(ग) गुणनफल को 27 से भाग दें।

(घ) शेषफल देखें।

(ङ) अश्विनी को 1 मान कर शेषफल की संख्या तक नक्षत्रों को गिनें।

(च) जब शनि इस नक्षत्र अथवा उसके त्रिकोण स्थानों पर गुज़रेगा तब;

(छ) जातक के पिता के लिये घातक समय होगा।

उपर्युक्त सूत्र अपने आप में पूर्ण है। दूसरी घटनाओं का अनुमान लगाने के लिये (क) से लेकर (छ) तक कुछ तत्वों को अलग-अलग या सामूहिक रूप से परिवर्तित करना होता है:

(क) (ख)* (छ) में निम्नांकित परिवर्तन किए जाते हैं:

1. सूर्य के स्थान पर, जो पिता का कारक ग्रह है और नवम स्थान जो पिता का कारक भाव है, आप निम्न कारकों को ले सकते हैं –

---

* (ख) में यदि संदर्भित घर में शून्य हो तो शोध्य पिंड को ही ले लें, शून्य से गुणा न करें। इसी तरह शेषफल यदि शून्य हो तो शेषफल 27 मान लें। जहां कहीं इस तरह की स्थिति गणनाओं में आये ये दो नियम सभी जगह मान्य हैं

- चद्रमा और चन्द्रमा से चतुर्थ - **मां के लिये**
- बृहस्पति और उससे पंचम - **संतान के लिये**
- शुक्र और उससे सप्तम - **जीवन साथी के लिये**
- मंगल और उससे तृतीय - **भाईयों के लिये**
- सूर्य और उससे अष्टम - **स्वयं जातक** के लिये
- शनि और उससे अष्टम - **स्वयं जातक** के लिये

2. प्रायः शोधन-पूर्व बिंदुओं को लिया जाता है किंतु कुछ विशेष सूत्र शोधन के बाद बचे बिंदुओं पर भी आधारित हैं।

(ग) में निम्नांकित परिवर्तन किये जाते हैं:

1. संबंधित ग्रह के नक्षत्र-गोचर का विचार करने के लिये सामान्यतः गुणनफल को 27 से विभाजित किया जाता है।
2. एक अन्य सिद्धान्त है कि गुणनफल को 12 से भाग दें और शेषफल तक मेष राशि से गिनें। इस तरह जिस राशि पर पहुंचें उस पर संबंधित ग्रह (विशेषकर सूर्य) के गोचर के प्रभाव का विचार करें।
3. इस प्रकार प्राप्त राशि का स्वामी यह संकेत करता है कि घटना किस दशा-अन्तर्दशा में घटित होगी।

(घ) में निम्नांकित परिवर्तन किए जाते हैं:

1. सर्वाधिक प्रयोग सामान्यतः शेषफल का होता है। किसी विशेष संदर्भ-स्थान से शेषफल तक गिनने पर संबंधित ग्रह का उस नक्षत्र या राशि पर विचरण से फलादेश का संकेत मिलता है।
2. कभी-कभी शेषफल के स्थान पर भागफल को लिया जाता है लेकिन यह गोचर-विचार जानने के लिये नहीं होता। भागफल सीधे ही वह वय बताता है जिसमें जातक उस घटनाक्रम से गुज़रेगा।

(ङ) में निम्नांकित परिवर्तन होंगे:

1. प्रायः अश्विनी को प्रथम नक्षत्र मानकर आगे गिनती की जाती है।[1]
2. कभी-कभी कृत्तिका को प्रथम नक्षत्र मानकर आगे गिनती की जाती है, विशेषकर पुराने शास्त्रों के अनुसार।

---

[1] ये सूत्र भारतीय विद्या भवन एवं ICAS की ज्योतिष कक्षाओं में अनेक वर्षों तक लगभग 600 छात्रों ने बड़े पैमाने पर परीक्षण की कसौटी पर कसे हैं। उनसे मिला अनुभव यह निष्कर्ष निकालने पर विवश करता है कि ये सूत्र निश्चित परिणाम नहीं देते।

3. कुछ विद्वान शुक्ल पक्ष में जन्मे जातकों के लिये अश्विनी से और कृष्ण पक्ष में जन्मे जातकों के लिये धनिष्ठा से गिनती करते हैं।
4. एक अन्य परिवर्तन यह है कि उस नक्षत्र से गिनना शुरू किया जाये जिसमें गोचर ग्रह, जन्म कुंडली में स्थित है।[2]

नोट:

(क) जहां तक जातक-विशेष का प्रश्न है जन्म कुंडली में ग्रह जिस नक्षत्र में है वहीं से जातक के जीवन में उसकी यात्रा प्रारम्भ मानी जायेगी। अत: यह विधि अधिक विवेकसंगत और जातक-विशेष पर केन्द्रित प्रतीत होती है।

(ख) उपर्युक्त विधि से मिले नक्षत्र ही नहीं अपितु उनसे त्रिकोण में पड़ने वाले नक्षत्रों को भी संबंधित ग्रहों के गोचर प्रभाव पर विचार करने के लिये ध्यान में रखें। स्वयं से दसवें और उन्नीसवें नक्षत्र, त्रिकोण स्थिति में माने जाते हैं और उनका स्वामी एक ही होता है; जैसे मघा और मूल दसवां और उन्नीसवां नक्षत्र हैं और वे अश्विनी से त्रिकोण स्थिति में हैं और इन तीनों का स्वामी केतु ही है।

(च) और (छ) में निम्नांकित परिवर्तन होंगे:

1. क्रूर ग्रहों का गोचर विपत्तियों का कारण होता है। अशुभ फलों का पूर्वानुमान लगाने के लिये प्राय: शनि के स्थान पर राहु और कभी-कभी मंगल और केतु भी लिये जा सकते हैं। सूर्य के गोचर परिणाम अन्य संदर्भों पर निर्भर करेंगे।
2. शुभ ग्रहों का गोचर शुभफल लायेगा, यह एक सामान्य नियम है। अन्यत्र दिये गये कुछ सूत्र इसके अपवाद हो सकते हैं।

मृत्यु-चिन्तन का अति आग्रह

अष्टकवर्ग के प्राचीन शास्त्रों में जितने सूत्र सगे संबंधियों (मां, बाप, स्वयं) की मृत्यु के पूर्वानुमान के लिये दिये गये हैं, उतने जीवन की किसी और घटना के संबंध में नहीं हैं। मृत्यु की आशंका का भूत संभवत: इसलिये सवार रहता होगा क्योंकि प्राचीन समय में मृत्यु बीमारी और दुर्घटनाओं से अधिक होती थी, और बिना किसी पूर्व संकेत के होती थी। दुर्घटनाओं के प्रति आधुनिक मनुष्य भी उतना ही आशंकित रहता है लेकिन बीमारियों से होने वाली मृत्यु के प्रति उसकी आशंकाएं,

---

[2] जन्म कुंडली में स्थित चन्द्रमा के नक्षत्र को पहला नक्षत्र मानकर गणना करना भी एक अभिनव तरीका हो सकता है। यह तरीका हर जातक के लिए एक ही नक्षत्र से गणना करने की विधि से बेहतर प्रतीत होता है, चाहे नक्षत्र अश्विनी लिया जाए अथवा कृत्तिका या धनिष्ठा। दशा आदि की गणना भी जन्म नक्षत्र से ही होती है।

बेहतर चिकित्सा-प्रणालियों और सुविधाओं के कारण ज़रूर कम हो गई हैं। हम इस पुस्तक में उन अनेकानेक सूत्रों को देने की आवश्यकता नहीं समझते, उनसे संबंधित कुछ विशेष विचारणीय तथ्य देने ही पर्याप्त होंगे।

जैसे, यदि शनि के गोचर से संबंधित सूत्र सदा ही मृत्युदायी सिद्ध होते तो कोई भी 30 वर्ष से अधिक आयु वाला जातक न तो स्वयं जीवित रहता और न ही उसके माता-पिता जीवित रहते (क्योंकि 30 वर्षों में तो शनि सभी नक्षत्रों पर विचरण पूरा कर ही लेगा)। चूंकि ऐसा नहीं होता, अत: यह देखना होगा कि अन्य कौन-सी स्थितियां साथ में घटित होनी चाहिएं कि मृत्यु अवश्यंभावी हो जाए।

उचित दशा के अतिरिक्त (उदाहरणार्थ पिता की मृत्यु के लिये) नक्षत्रों पर जिन ग्रहों का गोचर होना ज़रूरी होगा, वे एक मानक गणना के अनुसार निम्नलिखित होंगे:

1. शनि का गोचर: सूर्य से नवम स्थान पर अष्टकवर्ग बिंदुओं को सूर्य के शोध्य पिंड से गुणा करें।
2. गुरु का गोचर: गुरू से सप्तम स्थान पर सूर्य के अष्टकवर्ग बिंदुओं को सूर्य के शोध्य पिंड से गुणा करें।
3. सूर्य का गोचर: सूर्य से सप्तम स्थान पर सूर्य के अष्टकवर्ग बिंदुओं को सूर्य के शोध्य पिंड से गुणा करें।

निस्संदेह इन तीनों गुणनफलों को 27 से भाग देना होगा और सही नक्षत्र ज्ञात करने के लिये शेषफल की संख्या तक अश्विनी से गिनकर पहुंचना होगा। जातक के पिता की मृत्यु तभी होगी जब उपर्युक्त सभी गोचर एक साथ चल रहे हों। यदि वे सब एक साथ उपस्थित न हुए तो अकेला शनि किसी बुज़ुर्ग संबंधी के लिए कष्ट अथवा मृत्यु ला सकता है, अथवा स्वयं पिता के साथ जातक का झगड़ा इत्यादि हो सकता है।

इसी तरह शनि, गुरु और सूर्य के गोचर, चन्द्रमा के अष्टकवर्ग और चन्द्रमा के शोध्य पिंड पर लगाकर जातक की मां की मृत्यु के समय का अनुमान लगाया जा सकता है। अन्य संबंधियों की मृत्यु के समय का अनुमान लगाने के लिये उनके कारक ग्रहों और कारक भावों को उपर्युक्त सिद्धांत के अनुसार प्रयुक्त किया जा सकता है।

विभिन्न ग्रहों के गोचर के आधार पर घटनाएं लगभग निम्नांकित अवधि में घटित होने की संभावना होगी —

शनि गोचर	:	12 महीने
गुरु गोचर	:	5 महीने
सूर्य गोचर	:	1 महीने

शास्त्रों में विभिन्न ग्रहों के लिये शोध्य पिंड और शोधित अष्टकवर्ग के आधार पर अनेक सूत्र दिये गये हैं। उनमें से कुछ हम यहां दे रहे हैं जो मानक विधि के अन्तर्गत नहीं आते और भिन्न प्रकार के हैं।

सूर्य

1. सूर्य के शोध्य पिंड को सूर्य से अष्टम स्थान के बिंदुओं से गुणा करके 27 से भाग दें। शेषफल वह नक्षत्र देगा, जिस पर शनि का विचरण, स्वयं जातक के जीवन के लिये घातक हो सकता है।

उदाहरण: राष्ट्रपति कैनेडी की कुंडली में सूर्य का शोध्य पिंड 103 है (तालिका 15-VI), और सूर्य से अष्टम स्थान में 4 बिंदु हैं (सूर्य वृषभ में है और वृषभ सेअष्टम धनु है, तालिका 2-II)। उनका गुणनफल हुआ 103 x4 = 412; इसको 27 से भाग देने पर शेषफल आया 7; अश्विनी से गिनने पर सातवां नक्षत्र हुआ पुनर्वसु(पुनर्वसु से दसवां नक्षत्र विशाखा है और उन्नीसवां पूर्वभाद्रपद जो पुनर्वसु से त्रिकोण स्थानों पर हैं और इन तीनों का स्वामी है बृहस्पति)।

शनि का इन तीनों में से किसी पर भी विचरण, कैनेडी के लिये घातक होना था। वे 22 नवम्बर, 1963 को मारे गये। तब शनि $9^s23^\circ56'$ पर था और 23वें नक्षत्र धनिष्ठा से गुज़र रहा था। किंतु यह गणना, उस घटना से मेल नहीं खाती।

धनिष्ठा: चूंकि जातक का जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है, अतः धनिष्ठा से सप्तम भी गिना जा सकता है, जो भरणी हुआ। किंतु यथार्थ में उनकी मृत्यु शनि के भरणी अथवा उसके त्रिकोण नक्षत्रों पर विचरण काल में भी नहीं हुई।

जन्म कुंडली में स्थिति: जैसा कि कुछ विद्वानों ने सुझाया है, जन्म कुंडली में शनि की स्थिति से गिनें, जो कि $3^s4^\circ27'$ है (तालिका-2-I देखें) जो कि आठवें नक्षत्र पुष्य पर है। पुष्य से सप्तम चित्रा है। धनिष्ठा, चित्रा से त्रिकोण में है, और शनि वास्तव में धनिष्ठा पर गोचर कर रहा था। कृत्तिका को संदर्भ-बिंदु मानें तब यह नियम हमारी उदाहरण कुंडली पर लागू नहीं होता।

2. सूर्य के अष्टकवर्ग में शोधन के पश्चात् सभी बिंदु जोड़ें। इस जोड़ को सूर्य के नवम स्थान के (शोधन-पश्चात्) बिंदुओं से गुणा करें (यदि सूर्य से नवम में शून्य हो तो उस जोड़ को ही ले लें)। गुणनफल को 27 से भाग दें। शेषफल से नक्षत्र (और उसके त्रिकोण) निश्चित हो जाएंगे, जिन पर शनि का विचरण जातक के पिता या पिता के परिवार के किसी वयोवृद्ध संबंधी के लिये घातक हो सकता है। ध्यान दें कि यह नियम शोध्य पिंड का प्रयोग नहीं करता, शोधित अष्टकवर्ग के बिंदुओं का ही उपयोग करता है।

15-I: त्रिकोणीय नक्षत्र तालिका

पहला त्रिकोण	दूसरा त्रिकोण	तीसरा त्रिकोण	स्वामी
1. अश्विनी $0^{S}13°20'$	10. मघा $4^{S}13°20'$	19. मूल $8^{S}13°20'$	केतु
2. भरणी $0^{S}26°40'$	11. पूर्वाफाल्गुनी $4^{S}26°40'$	20. पूर्वाषाढ़ $8^{S}26°40'$	शुक्र
3. कृत्तिका $1^{S}10°00'$	12. उत्तराफाल्गुनी $5^{S}10°00'$	21. उत्तराषाढ़ $9^{S}10°00'$	सूर्य
4. रोहिणी $1^{S}23°20'$	13. हस्त $5^{S}23°20'$	22. श्रवण $9^{S}23°20'$	चन्द्रमा
5. मृगशिरा $2^{S}06°40'$	14. चित्रा $6^{S}06°40'$	23. धनिष्ठा $10^{S}06°40'$	मंगल
6. आर्द्रा $2^{S}20°00'$	15. स्वाती $6^{S}20°00'$	24. शतभिषा $10^{S}20°00'$	राहु
7. पुनर्वसु $3^{S}03°20'$	16. विशाखा $7^{S}03°20'$	25. पूर्वाभाद्रपद $11^{S}03°20'$	गुरु
8. पुष्य $3^{S}16°40'$	17. अनुराधा $7^{S}16°40'$	26. उत्तराभाद्रपद $11^{S}16°40'$	शनि
9. अश्लेषा $4^{S}00°00'$	18. ज्येष्ठा $8^{S}00°00'$	27. रेवती $12^{S}00°00'$	बुध

नोट: यहां नक्षत्रों की समाप्ति के अंश दर्शाए गए हैं।

पंचांगों में दिए गए रेखांशों से तुरन्त ही नक्षत्रों की स्थिति और उनके त्रिकोण में स्थित नक्षत्र जानने के लिये तालिका नं. 16-I जैसी तालिका तैयार रखना सुविधाजनक होगा।

चन्द्रमा

चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में शोधन के पश्चात् बिंदुओं को जोड़ें। योग को चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान के बिंदुओं से गुणा करें और गुणनफल को 27 से भाग दें। शेषफल तक अश्विनी से गिनकर उस नक्षत्र पर पहुंचेंगे, जिस पर (और उससे त्रिकोण स्थिति पर) शनि का विचरण मां की मृत्यु का समय हो सकता है।

मंगल

1. मंगल से तीसरे स्थान पर शोधन-पूर्व बिंदुओं को मंगल के शोध्य पिंड से गुणा करें और फल को 12 से भाग दें, शेषफल तक मेष से गिनें। जब बृहस्पति इस राशि से गुज़रेगा, भाई स्वयं समृद्धि पायेंगे अथवा जातक को उनसे लाभ होगा। कौन सा भाई समृद्ध होगा यह जानने की विधियां अन्य हैं।

2. मंगल से तीसरे स्थान के बिंदु लें और वहां से आठवें स्थान के बिंदुओं से गुणा करें। फल को 12 से भाग दें, शेषफल तक मेष से गिनें। जब भी सूर्य इस राशि से गुज़रेगा, तब जातक को भाइयों से अथवा स्वयं भाइयों को पीड़ा पहुंचेगी।

बुध

1. बुध से दसवें स्थान के बिंदु लें। इसे बुध के शोध्य पिंड से गुणा करें और फिर 27 से भाग दें। शेषफल की संख्या तक अश्विनी से गिनने पर प्राप्त नक्षत्र से जब भी शनि गुज़रेगा, व्यापार में अथवा नौकरी में हानि या परेशानी होगी। इन्हीं स्थानों पर बृहस्पति का विचरण लाभ/पदोन्नति लायेगा।

2. बुध से दसवें स्थान के बिंदु लें। उसे बुध के शोध्य पिंड से गुणा करें और फिर 12 से गुणनफल को भाग दें। शेषफल तक मेष से गिनें और प्राप्त राशि के स्वामी की दशा-अन्तर्दशा के समय और जब बृहस्पति इस राशि पर विचरण करे तो वह समय नये ज्ञान-विज्ञान सीखने के लिए श्रेष्ठ होगा। बुध से जुड़े व्यवसाय/कार्य हैं - लेखन, राजदूत, अध्यापन, पटकथा-लेखन - ये जातक को इस समय मिल सकते हैं।

3. बुध से चौथा स्थान, मानक सूत्र के अनुसार मित्रों/रिश्तेदारों से बिछोह अथवा पीड़ा का समय होगा।

बृहस्पति

1. गुरु के अष्टकवर्ग में सब शोधनोपरान्त बिन्दुओं को जोड़ लें। उसे गुरु से पंचम स्थान के शोधनोपरान्त बिन्दुओं से गुणा करें। गुणनफल को 12 से भाग दें।

और शेषफल तक मेष से गिनें। संतान का जन्म उस राशि में सूर्य के गोचर में हो सकता है।

2. गुरु से पंचम राशि के स्वामी के कक्ष्या स्वामी को देखें। जब बृहस्पति उस राशि से गुज़रेगा जिसमें वह कक्ष्या स्वामी स्थित है तब पुत्र जन्म होगा। यह एक बड़ा गोपनीय सूत्र बताया गया है यद्यपि हमें यह 'हेतु-हेतु वाद', ऐसा होगा तो वैसा होगा, प्रतीत होता है।

हमारी उदाहरण कुंडली में:

(i) बृहस्पति से पंचमेश बुध है।

(ii) बुध 0°27°53' पर स्थिति है। अत: यह अन्तिम कक्ष्या अर्थात् लग्न की कक्ष्या हुई। लग्न कन्या राशि में स्थित है।

(iii) संतान-जन्म तब अपेक्षित है जब बृहस्पति कन्या राशि पर विचरण करे।

कैनेडी की प्रथम संतान केरोलिन 1958 में तब जन्मी, जब बृहस्पति कन्या पर अपनी यात्रा पूरी कर चुका था। संतान के गर्भाधान अथवा जन्म के लिये बृहस्पति के गोचर हेतु कन्या राशि का चयन उचित ही है क्योंकि वहां से बृहस्पति पंचम भाव को और जन्म कुंडली में स्थित बुध को भी देख रहा था। यह गोचर के सामान्य सिद्धान्तों के अनुरूप है।

3. बृहस्पति के शोध्यपिंड को 7 से गुणा करके 27 से भाग दें। शेषफल तक अश्विनी से गिनें। जब बृहस्पति इस नक्षत्र पर विचरण करे तब संतान-जन्म हो सकता है। यदि बृहस्पति की नवांश राशि जन्म राशि से अधिक बली हो तो धनिष्ठा से गिनती करनी चाहिए। एक अन्य विकल्प में उस नक्षत्र से गिनें जिसमें जन्म समय बृहस्पति स्थित हो।

4. बृहस्पति के शोध्य पिंड को चार से गुणा कर बारह से विभाजित करें। शेषफल तक मेष से गिनने पर जो राशि आये, उसमें सूर्य जिस माह में गोचर करे, उस माह में संतान-जन्म हो सकता है।

5. बृहस्पति के शोध्य पिंड को नौ से गुणा कर बारह से विभाजित करें। शेषफल तक मेष से गिनें। प्राप्त राशि में भावी पुत्र का जन्म-लग्न स्थित होगा।

6. स्त्री की जन्मकुंडली में बृहस्पति के शोध्य पिंड को नवम् भाव में प्राप्त बिंदुओं से गुणा करें। पुत्रों की संख्या का अनुमान नवम भाव में मिले बिंदुओं से लगायें और उनके गुण-रूप-चरित्र का अनुमान उन ग्रहों से लगायें जिन्होंने वे बिंदु प्रदान किये हैं। स्त्री की कुंडली में पांचवां भाव पुत्रियों का होता है। पुरुष कुंडली में पांचवां पुत्रों का और नवां पुत्रियों के लिये देखा जाता है।

शुक्र

विवाह का समय:

1. शुक्र के शोध्य पिंड को शुक्र से सप्तम भाव में प्राप्त बिंदुओं से गुणा करें। फिर 27 से भाग दें और शेषफल तक अश्विनी से गिनें। बृहस्पति जब उस नक्षत्र या उसके त्रिकोणस्थ नक्षत्रों पर विचरण करे, तब विवाह की संभावना है।

उदाहरण: हमारी उदाहरण कुंडली में शुक्र का शोध्य पिंड 35 है और शुक्र से सप्तम स्थान पर 3 बिंदु हैं (तालिका सं. 15-VI देखें)।

$$\frac{35 \times 3}{27} = \frac{105}{27} = 3\frac{24}{27}$$

अश्विनी से गिनने पर 24वां नक्षत्र शतभिषा है। 12 सितंबर 1953 को जब कैनेडी का विवाह हुआ, बृहस्पति आर्द्रा में प्रवेश करने ही जा रहा था। आर्द्रा शतभिषा का त्रिकोण नक्षत्र है।

2. उपर्युक्त में गुणनफल को 27 से भाग न देकर 12 से भाग दें और शेषफल तक मेष से गिनें। विवाह की संभावना तब होगी जब बृहस्पति गोचर में इस राशि से गुज़रे। इस राशि के स्वामी की दशा या अन्तर्दशा का काल भी विवाह की संभावना को जन्म देता है।

3. शुक्र से सप्तम भाव में जिन ग्रहों ने बिन्दु दिए हों उनकी अन्तर्दशा में विवाह होने की संभावना रहती है।

पत्नियों की संख्या

एक पुरुष की कितनी पत्नियां होने की संभावना है यह जानने के लिये, निम्न में से एक में बिंदुओं की संख्या देखें :

(अ) शुक्र से सप्तमेश द्वारा गृहीत भाव में;

(ब) शुक्र से नवमेश द्वारा गृहीत भाव में;

(स) लग्न या चन्द्र से नवमेश द्वारा गृहीत भाव में;

(द) लग्न से सप्तमेश की उच्च राशि में;

(ध) लग्न से सप्तमेश की नीच राशि में।

जब लग्न से सप्तम का स्वामी शक्तिशाली हो, तो उपर्युक्त में अधिकतम बिंदु-संपन्न भाव के बिंदु लें। अन्यथा उस भाव के बिंदु लें जिसमें सबसे कम बिंदु हों। बिंदुओं की संख्या ही पत्नियों की संख्या होगी।

शनि

यदि शनि द्वारा गृहीत राशि और उससे सातवें भाव, दोनों में ही शोधन के बाद बिंदु न हों तो जातक की मृत्यु असमय, अप्राकृतिक और निर्जन स्थान में होगी।

यदि दोनों भावों में बिंदु हो और बिंदुदायी ग्रह सुस्थित हों या मित्र-क्षेत्री आदि हों, तो जातक संबंधियों और मित्रों के बीच अंतिम सांस लेगा।

जातक की अपनी मृत्यु

1. मानक सूत्र में शनि के गोचर के लिये शनि से अष्टम लेना चाहिये। सूर्य से अष्टम भी लिया जाता है।

2. शनि के शोध्य पिंड को गुणा करें –

   (अ) बृहस्पति स्थित भाव के शोधन-पूर्व बिंदुओं से। फिर 12 से भाग दें और शेषफल तक मेष से गिनें। प्राप्त राशि में सूर्य के प्रवेश माह में, गुरु-गोचर के समय जातक की मृत्यु संभव है।

   (ब) सूर्य स्थित भाव के शोधन-पूर्व बिंदुओं से गुणा करें फिर 12 से भाग दें। शेषफल तक मेष से गिनें। उस राशि में सूर्य के प्रवेश माह में जातक की मृत्यु संभव है।

3. शनि के शोध्य पिंड को गुणा करें:

   (अ) 7 से और 27 से भाग दें। शेषफल तक अश्विनी से गिनें।

   (ब) शनि-स्थित भाव के बिंदुओं से, फिर 27 से भाग करें। शेषफल तक अश्विनी से गिनें।

   (स) (अ) और (ब) में प्राप्त शेषफलों को जोड़ें और फिर अश्विनी से जोड़ तक गिनें।

शनि उपर्युक्त में से किसी भी नक्षत्र अथवा उसके त्रिकोण नक्षत्र से गुजरे तो उस समय जातक की मृत्यु संभावित है।

आज का दिन कैसा होगा?

यहां हम अष्टकवर्ग आधारित, एक आसान विधि दे रहे हैं जिससे हर व्यक्ति अपनी कुण्डली के आधार पर जान सकता है कि 'आज का दिन कैसा होगा'। इसके लिए ज्योतिप के विशद ज्ञान की आवश्यकता नहीं है, केवल अपनी कुण्डली में 12 भावों में सर्वाष्टक के कितने बिन्दु हैं, जानने की आवश्यकता होती है।

1. राहु और केतु को छोड़कर बाकी सातों ग्रहों को गोचर के अनुसार राशियों में रखें। जन्मांग में उनके जो सर्वाष्टक बिन्दु हों उन्हें जोड़ लें। इनका योग यदि 196 (28x7) हो तो दिन औसत रहेगा। यह योग 196 से जितना-जितना अधिक होगा, दिन उतना-उतना बेहतर होगा।
2. यह आसान तरीका है। यदि इससे अधिक परिष्कृत परिणाम चाहिएं तो हम बिन्दुओं को विशेष गुणकों से गुणा कर सकते हैं। ये गुणक ग्रहों की मित्रामित्र एवं उच्च-नीचादि राशियों के अनुसार तय किए गए हैं और निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं:

सर्वाष्टक बिन्दुओं के लिए गुणक

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
सूर्य	1.5	0.5	1.0	1.2	1.4	1.0	0.4	1.2	1.2	0.4	0.5	1.2
चन्द्र	1.0	1.5	1.2	1.4	1.2	1.2	1.0	0.8	1.0	1.0	0.8	1.0
मंगल	1.4	1.0	0.5	0.8	1.2	0.5	1.0	1.2	1.2	1.5	0.8	1.2
बुध	0.5	1.2	1.4	0.5	1.2	1.6	1.2	0.5	1.0	1.0	1.0	0.8
गुरु	1.2	0.5	0.8	1.5	1.2	0.8	0.5	1.2	1.4	0.4	0.8	1.4
शुक्र	1.0	1.2	1.0	0.5	0.5	0.8	1.4	1.0	1.0	1.2	1.2	1.5
शनि	0.4	1.2	1.2	0.5	0.5	1.2	1.5	0.5	1.0	1.2	1.4	1.0

ग्रहों की गुणकोपरान्त भारित (Weighted) स्थिति

1. गोचर ग्रह के सर्वाष्टक बिन्दुओं को तालिका में दिए गए गुणकों से गुणा करें।
2. सातों ग्रहों के गुणनफलों को जोड़ लें। 196 का योग औसत परिणाम को इंगित करता है।
3. यह तरीका थोड़ा श्रमसाध्य है पर अधिक परिष्कृत संकेतक है। कम्प्यूटर प्रोग्रामर्स इस विधि को प्रोग्राम का हिस्सा बना सकते हैं।

ब्रिटेन के साधारण नागरिकों के लिए महारानी की मृत्यु का दिन, 8 सितम्बर 2022, दुखद था किन्तु स्वयं 96वें वर्षीय रुग्ण महारानी के लिए यह दिन शरीर के बन्धन से मुक्त होने का था। उनकी मृत्यु पूर्णतः शान्तिपूर्वक हुई। दी गई तालिका के अनुसार उस दिन का अभारित (Unweighted) भिन्नाष्टकों का योग 33 था और सर्वाष्टकों का 200 इसके मुकाबले, भारित (Weighted) संख्याएं थीं क्रमशः 38.3 एवं 230.5। भारित-अभारित संख्याओं का महत्व एक या दो उदाहरणों से समझना संभव नहीं है,

इसके लिए अनेक उदाहरणों की आवश्यकता है जिन्हें इस छोटी सी पुस्तक में स्थान मिलना संभव नहीं है।

जैसा कि तालिका से देखा जा सकता है, कि बाह्य ग्रह, शनि, बृहस्पति और मंगल को उनकी कक्ष्याओं के स्वामियों का समर्थन प्राप्त नहीं था। महारानी की दशा उस समय बृहस्पति-राहु-बुध की चल रही थी। तीनों ग्रहों में मारक तत्वों का समावेश था।

महारानी एलिजाबेथ की मृत्यु के दिन का गोचर

गोचर ग्रह	कक्ष्या	भिन्नाष्टक	सर्वाष्टक	गुणक	भारित भिन्नाष्टक	भारित सर्वाष्टक
सूर्य सिंह में	1	4	27	1.4	5.6	37.8
चन्द्रमा मकर में	1	5	30	1.0	5	30
मंगल वृष में	0	4	33	1.0	4	33
बुध कन्या में	1	5	30	1.6	8	48
बृहस्पति मीन में	0	6	23	1.4	8.4	32.2
शुक्र सिंह में	0	5	27	0.5	2.5	13.5
शनि मकर में	0	4	30	1.2	4.8	36
	कुल योग →	33	200	कुल योग →	38.3	230.5
				औसत	28	196

महारानी के ज्येष्ठ पुत्र चार्ल्स की दशा उस समय बृहस्पति-शुक्र-शनि की चल रही थी। बृहस्पति नवमेश है, शुक्र चतुर्थेश है और महादशानाथ बृहस्पति से दशम में है। शनि राजसी नक्षत्र मघा में है। शनि ने, जो अब तक राजतिलक में देरी कराता आ रहा था, गद्दी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी ही थी। जन्मांग में शनि राज्य के कारक सूर्य को देख ही रहा था, किन्तु इस समय वह दशम दृष्टि से सूर्य को गोचर में भी देख रहा था।

सूर्य और उसका राशीश शुक्र दोनों नीच के हैं। सूर्य को शनि द्वारा नीच भंग प्राप्त है क्योंकि वह सूर्य की नीच राशि तुला में उच्च का होता है और वह सूर्य को देख रहा है। शुक्र का नीच भंग समझना अधिक आसान है क्योंकि शुक्र और बुध में राशि-परिवर्तन है और बुध चन्द्रमा से केन्द्र में है। नीच भंग होने के बावजूद शुक्र ने चार्ल्स को प्रथम पत्नी डायना से विवाह-विच्छेद के लिए प्रेरित किया और अन्त में उसकी कार-दुर्घटना में मृत्यु हो गई। सूर्य के नीचत्व और उस पर अष्टमेश शनि की दृष्टि ने चार्ल्स को राजगद्दी से बहुत वर्षों तक दूर रखा। ये देखना दिलचस्प होगा कि चार्ल्स कितने समय

तक अपनी गद्दी संभाले रख सकते हैं क्योंकि ब्रिटेन में अनेक वर्षों से राजशाही को समाप्त करने की आवाजें उठती रही हैं। महारानी ने तो इन आवाजों को अधिक मुखर नहीं होने दिया- पर ध्यान रहे कि उनका सूर्य उच्च का था और चार्ल्स का नीच का।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार दशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर दशा, तीनों के स्वामी गोचर में बिन्दु-विहीन कक्ष्याओं से गोचर कर रहे थे, किन्तु सूर्य का सिंह में गोचर महत्वपूर्ण था। सूर्य (बिन्दु-सहित कक्ष्या से) 1/6/33 बिन्दु लेकर गुजर रहा था। चन्द्रमा 1/5/20 बिन्दु लेकर चन्द्रमा से दशम स्थान से गुजर रहा था। (पहली संख्या कक्ष्या के, दूसरे संख्या भिन्नाष्टक के और तीसरी सर्वाष्टक के बिन्दु दर्शाती है)। जो घटनाएं कमजोर गोचर के समय घटती हैं वे प्रायः चिर-स्थायी नहीं होतीं।

महारानी एलिजाबेथ की मृत्यु के दिन का गोचर (प्रिंस चार्ल्स के लिए)

गोचर ग्रह	कक्ष्या	भिन्नाष्टक	सर्वाष्टक	गुणक	भारित भिन्नाष्टक	भारित सर्वाष्टक
सूर्य सिंह में	1	6	33	1.4	8.4	46.2
चन्द्रमा मकर में	1	5	20	1.0	5	20
मंगल वृष में	0	4	33	1.0	4	33
बुध कन्या में	1	6	30	1.6	9.6	48
बृहस्पति मीन में	0	3	23	1.4	4.2	32.2
शुक्र सिंह में	0	5	33	0.5	2.5	16.5
शनि मकर में	0	3	20	1.2	3.6	24
	कुल योग →	32	192	कुल योग →	37.3	219.9
				औसत	28	196

तालिका के अनुसार उस दिन अभारित (Unweighted) भिन्नाष्टकों का योग 32 और सर्वाष्टकों का 192 था। भारित (Weighted) संख्याएं थीं 37.3 और 219.9। प्रिंस चार्ल्स के किंग चार्ल्स बनने के दिन भारित संख्याएं अधिक उपयुक्त दिख रहीं हैं। माता की मृत्यु ही उन्हें यह बहुप्रतीक्षित दिन दिखा सकती थी।

'आज का दिन' गोचर चन्द्रमा के नक्षत्र से

1. यहां सर्वप्रथम हमें 'तारा विचार' पर ध्यान देना चाहिए। चन्द्रमा के जन्म नक्षत्र से आज के गोचरस्थ चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर जो परिणाम आता है, वह बहुत महत्व का होता है, जिसका नामकरण निम्न प्रकार से किया जाता है:

1. जन्म नक्षत्र (तटस्थ) 2. सम्पत (शुभ) 3. विपत (अशुभ) 4. क्षेम (शुभ) 5. प्रत्यरि (अशुभ) 6. दैवानुकूल (शुभ) 7. नैधान (अशुभ) 8. मित्र (शुभ) 9. अतिमित्र (अतिशुभ)	• तीसरा पांचवां व सातवां नक्षत्र उत्तरोत्तर अशुभ होते हैं। • दूसरा, चौथा, छठा, आठवां और नौवां उत्तरोत्तर शुभ होते हैं। • जन्म नक्षत्र का जो स्वामी होता है (नक्षत्रेश) वही जन्म नक्षत्र से 10वें और 19वें नक्षत्र का भी स्वामी होता है। यही क्रम सम्पत, विपत इत्यादि नक्षत्रों में भी रहता है।

2. 'आज' का दिन वैसा ही गुजरता है जैसा आज के चन्द्रमा का नक्षत्रेश होता है। बलवान, शुभ भाव स्थित और अधिक बिन्दु युक्त नक्षत्रेश शुभ फल देते हैं।
3. नक्षत्रेश ग्रह के नैसर्गिक गुणों के अनुसार 'आज' का दिन गुजरता है।
4. नक्षत्रेश जन्मांग में जिस भाव में स्थित होता है, 'आज' का परिणाम भी उसी के अनुसार होता है।
5. जो दिन 'तारा विचार' के अनुसार अशुभ हो, किन्तु बिन्दु-बल से युक्त हो, वह दिन विशेष कठिनाई उत्पन्न नहीं करता।
6. जिस दिन गोचर का चन्द्रमा जन्मांग के चन्द्रमा से अष्टमस्थ हो और साथ ही नैधान (सातवें) तारा में हो एवं क्षीण बिन्दु बल से युक्त हो, वह दिन अनेक कठिनाइयां उत्पन्न कर सकता है।
7. 'आज' के नक्षत्रेश की आज के गोचर में क्या स्थिति है इसका प्रभाव भी 'आज' के परिणामों पर पड़ सकता है।
8. चन्द्रमा दिन के किस समय नक्षत्र परिवर्तन कर रहा है इसके अनुसार दिन की योजना बनाई जा सकती है। हो सकता है कि अगला नक्षत्रेश बेहतर स्थिति में हो। इसका विचार शेयर बाजार अथवा खेल प्रतिस्पर्धाओं में रुचि रखने वाले व्यक्ति कर सकते हैं।
9. किसी भी दिन का नक्षत्रेश नौ ग्रहों में से कोई एक होगा। क्या इसका अर्थ यह लगाएं कि किस भी दिन का परिणाम केवल नौ में से एक प्रकार का हो सकता है। नहीं, इस बीच में दशा और गोचर के अन्य ग्रहों की स्थिति बदल जाती है। इसलिए हर नया दिन कुछ नया संदेश लेकर आता है। साथ ही नक्षत्रेश चाहे नौ हों किन्तु नक्षत्र तो 27 हैं! फिर हर नक्षत्र के चार चरण होते हैं जिनके स्वामी नवांश कुंडली के अनुसार फल को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। नक्षत्र केवल

अपने स्वामियों के अनुसार ही काम नहीं करते, वे अपने 'देवता', 'शक्ति' एवं अन्य गुणों के अनुसार भी काम करते हैं। इसमें ऊर्ध्वादि एवं क्रूरादि नक्षत्रों का भी विचार करना चाहिए।

महारानी एलिजाबेथ की मृत्यु के दिन चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र में था जो उनके जन्म नक्षत्र अश्लेषा से 14वां नक्षत्र है अर्थात् 5वां यानी प्रत्यरि (घोर शत्रु)। इसके अतिरिक्त उस दिन का नक्षत्रेश यानि श्रवण का स्वामी स्वयं चन्द्रमा है जो महारानी के अष्टम स्थान में अष्टमेश होकर स्थित है और वहां 27 बिन्दु हैं। (देखें अध्याय-4 में महारानी की कुण्डली और सर्वाष्टक बिन्दु)।

<table>
<tr><td></td><td>राहु 11-49
चन्द्र 7-18</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2" rowspan="2">प्रिंस चार्ल्स III
नवम्बर 14, 1948
21-15 G.M.T.</td><td>लग्न
12-29</td></tr>
<tr><td></td><td>शनि
12-07</td></tr>
<tr><td>गुरु
06-44</td><td>मंगल
27-48</td><td>केतु 11-49
बुध 13-49
सूर्य 29-17</td><td>शुक्र
23-14</td></tr>
</table>

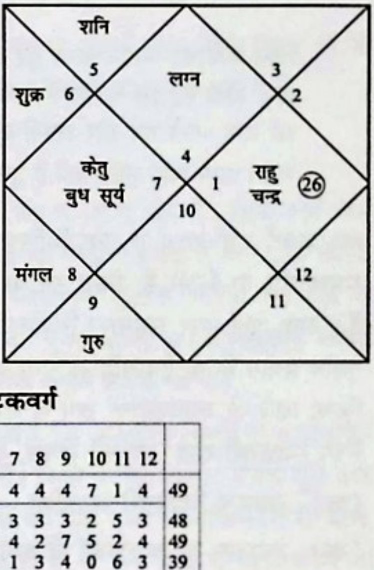

समुदाय अष्टकवर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
लग्न	4	5	3	2	5	6	4	4	4	7	1	4	49
सूर्य	4	5	6	3	6	5	3	3	3	2	5	3	48
चन्द्र	5	4	4	5	3	4	4	2	7	5	2	4	49
मंगल	3	4	3	3	5	4	1	3	4	0	6	3	39
बुध	3	6	4	6	5	6	4	5	4	2	6	3	54
गुरु	2	5	5	6	5	2	7	4	6	6	5	3	56
शुक्र	5	5	4	5	5	5	5	4	4	2	3	5	52
शनि	4	4	3	4	4	4	5	2	2	3	2	2	39
	26	33	29	32	33	30	29	23	30	20	29	23	337

महारानी की मृत्यु के दिन ही प्रिंस चार्ल्स को महाराज घोषित कर दिया गया था। उनका चन्द्रमा (श्रवण का स्वामी) दशम स्थान में विराजमान है और नवमेश बृहस्पति से एवं सूर्य से द्रष्ट है और उसके 26 बिन्दु हैं। चन्द्रमा योगकारक मंगल की मूलत्रिकोण राशि मेष में बैठा है। चन्द्रमा-राहु की युति राजयोग बना रही है। गोचर का चन्द्रमा मकर से गुज़र रहा था जो जन्म के चन्द्रमा से दशम में था। जन्म चन्द्रमा एवं गोचरस्थ चन्द्रमा दोनों के भिन्नाष्टक में 5 बिन्दु हैं।

17

विंशोत्तरी दशा एवं अष्टकवर्ग

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यत्यसंशयम् ॥

भगवद्गीता VIII-7

जिस भाव का स्मरण करते हुए प्राणी देहत्याग करता है वह उसी भाव को प्राप्त होता है। इस कारण हे पार्थ सभी कालखंडों में मेरा अनुस्मरण करते रहो तथा अपने मन और अपनी बुद्धि को पूर्णतया मुझे अर्पित करते हुए युद्ध करो। इसमें कोई संदेह नहीं है तुम मुझे ही प्राप्त करोगे।

अष्टकवर्ग दशा स्वयं में एक विशिष्ट दशा पद्धति है जो विभिन्न ग्रहों द्वारा दी गई समयावधि पर निर्भर है, किंतु उन पर आधारित गणनाएं प्राय: सही सिद्ध नहीं होती हैं।[1] अत: यहां हमने सर्वमान्य विंशोत्तरी दशा के साथ अष्टकवर्ग विधि को जोड़ने का नवीन प्रयोग किया है। यदि सामान्य बुद्धि से अष्टकवर्ग विधि के नियमों का प्रयोग किया जाये तो व्यावहारिक रूप से बड़े सार्थक परिणाम सामने आयेंगे। महादशा के लिये विंशोत्तरी दशा[2] प्रणाली लेकर, अन्तर्दशा तीन प्रकार से ली जा सकती है –

(क) सामान्य विंशोत्तरी अन्तर्दशा

(ख) महादशा को कक्ष्याओं के क्रम में आठ बराबर भागों में बांटा जाये- शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र और बुध, चन्द्र और लग्न; हर भाग को एक अन्तर्दशा के समकक्ष लिया जाये।

(ग) महादशा को 12 बराबर भागों में बांट कर प्रथम अन्तर्दशा को वहां से शुरू माना जाये जहां महादशा का स्वामी स्थित है।

नीचे जो सिद्धांत दिये जा रहे हैं वे उपर्युक्त तीनों प्रकार की अन्तर्दशाओं पर लागू होंगे।

---

[1]अष्टकवर्ग दशा पद्धति एवं आयुनिर्णय के लिए आप श्री सी.एस. पटेल एवं सी.ए.एस. अय्यर की पुस्तक 'आयुश एण्ड दशाज़ ऑफ अष्टकवर्ग' का पंद्रहवां अध्याय देख सकते हैं।

[2]इस पद्धति को केवल विंशोत्तरी ही नहीं अष्टोत्तरी अथवा योगिनी आदि दशाओं पर भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

महादशा

1. दशा वह फल ही दे सकती है जिसका विधान या वायदा जन्म-कुंडली में किया गया है, यह विधान ज्ञात करने के लिये ज्योतिष के सामान्य सिद्धांतों के अनुसार जन्मकुंडली की जांच करनी चाहिये, जैसे — ग्रह कहां स्थित हैं, उन पर किनकी दृष्टि है, किस के साथ उनके कैसे संबंध हैं, वे किन भावों के स्वामी हैं, दशा स्वामी किन योगों में सम्मिलित है, इत्यादि।
2. यदि दशा स्वामी के, जहां वह कुंडली में स्थित है सर्वाष्टकवर्ग में 28 से, और अपने भिन्नाष्टक में 4 से, अधिक बिन्दु हों तो दशावधि में शुभ फल प्राप्त होते हैं। यही नियम दशा स्वामी की गोचर में स्थिति पर भी लागू होता है।
3. यदि कुंडली में दशा-स्वामी को अपने कक्ष्या स्वामी द्वारा बिंदु मिला हो तो दशा-स्वामी ग्रह को शुभ फल देने की स्वतः शक्ति प्राप्त हो जाती है।

अन्तर्दशा

1. उपर्युक्त तीनों नियम अन्तर्दशा स्वामियों पर भी लागू होते हैं। किंतु यहां एक अतिरिक्त बात यह है कि महादशा स्वामी के भिन्नाष्टकवर्ग में अन्तर्दशा स्वामी ने कितने बिंदु प्राप्त किये हैं। यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि यह ग्रहों के अन्तर्संबंध को दर्शाता है और इस बात की पुष्टि करता है कि महादशा स्वामी अन्तर्दशा स्वामी के प्रति मित्रवत् दृष्टिकोण बनाये हुए है या नहीं।

नोट: थोड़ा आगे बढ़कर यह भी देखा जा सकता है कि अन्तर्दशा स्वामी के अष्टकवर्ग में महादशा स्वामी ने कितने बिंदु प्राप्त किये हैं। इससे उनका परस्पर संबंध पूरी तरह स्पष्ट हो जायेगा। दशा और अन्तर्दशा स्वामियों की एक दूसरे के दृष्टिकोण से जांच, दो भावेशों के परस्पर संबंध की जांच की तरह ही है — जैसे वे केन्द्र या त्रिकोण का परस्पर संबंध बनाते हैं तो शुभ फल देते हैं किंतु द्विर्द्वादश (2-12) या षडष्टक (6-8) होने पर विषम फल देते हैं।

यदि औसत से बिंदु अधिक हों तो शुभफलों की अपेक्षा करनी चाहिये अन्यथा नहीं।

2. घटनाओं का स्वरूप निम्न बातों पर आधारित होगा:
   (क) अन्तर्दशा स्वामी जिन भावों का स्वामी है उन भावों के कारकत्वों के अनुसार
   (ख) अन्तर्दशा स्वामी जिस भाव में स्थित है उसके अनुसार।
   (ग) महादशा स्वामी के अष्टकवर्ग में अन्तर्दशा द्वारा गृहीत राशि में जिन भावेशों ने बिंदु दिये हों, उनके अनुसार।

3. अन्तर्दशा स्वामी की शक्ति बढ़ जाती है यदि उसकी दोनों राशियों में अधिक बिन्दु हैं। यदि एक भाव में अधिक और दूसरे में कम बिन्दु हों तो उस भाव से संबंधित फल अच्छे होंगे जिसमें बिन्दु अच्छे हैं। कम बिन्दु वाले भाव के फल भावेश की दशावधि में निकृष्ट होंगें। सूर्य और चन्द्रमा चूंकि एक ही राशि के स्वामी होते हैं अतः वे इस नियम से बाहर ही हैं।
4. महादशा स्वामी और अन्तर्दशा स्वामी, नीचस्थ या दुःस्थानों में होने के कलंक से मुक्त हो जाते हैं यदि वे अधिक बिन्दु संपन्न हों। वैसे भी हर दुःस्थान के कुछ कारकत्व शुभ भी होते हैं। अच्छे बिन्दु होने पर शुभ फल की संभावना बढ़ जाती है।
5. राजयोग और धनयोग भी अपनी शक्ति सामान्य से एक या दो स्तर तक खो बैठते हैं यदि बिंदुओं की संख्या कम हो।

उदाहरण: कैनेडी की जब हत्या हुई, वे बृहस्पति-शनि-शनि दशा से गुज़र रहे थे। शनि छठे घर का स्वामी है और अपने अष्टकवर्ग में वह जहां स्थित है वहां मात्र एक बिंदु से युक्त है। शनि आठवें घर को देख भी रहा है। जहां उसके पास मात्र 2 बिंदु हैं, जबकि महादशा स्वामी बृहस्पति के अष्टकवर्ग में शनि के पास 5 बिंदु हैं किंतु बृहस्पति के पास, अन्तर्दशा स्वामी शनि के अष्टकवर्ग में केवल दो बिंदु हैं (देखिये तालिका 2-VI और 2-VII)।

6. दशा और अन्तर्दशा स्वामी के विशेष संदर्भ में, यह बात दोहरायी जानी जरूरी है कि संबंधित कक्ष्या स्वामी से बिंदु पाये ग्रह शुभ फल देते हैं। कक्ष्या का निर्धारण गोचर से ही होगा।

नोट: इसका अर्थ यह हुआ कि दशा स्वामी किसी राशि में अपने विचरणकाल में एक से फल नहीं देता। वह अपना श्रेष्ठ फल तब देता है जब उसे जन्म कुंडली में और गोचर स्थिति में, संबंधित कक्ष्या स्वामी के बिंदु मिले हुए हों। इस तरह किसी ग्रह के संयुक्त प्रभाव को ज्ञात किया जा सकता है – जब उसकी दशा चल रही हो तो उसी समय उसके गोचर को भी देखना चाहिए। कुछ विद्वानों के अनुसार दूसरे ग्रहों की अपेक्षा दशा-अन्तर्दशा के स्वामी ग्रहों की गोचर स्थिति का अधिक सूक्ष्म विश्लेषण करना चाहिये क्योंकि उस समय वे विशेष प्रभावी होते हैं।

7. आठ भागों की अन्तर्दशा

परंपरागत रूप से महादशा नौ भागों में विभाजित होती है। उनका क्रम विंशोत्तरी दशा के अनुसार होता है और हर अन्तर्दशा का काल हर ग्रह के नियत काल के अनुपात में होता है।

किंतु अष्टकवर्ग शैली में महादशाओं का काल तो विंशोत्तरी के अनुसार ही लिया गया है किन्तु अन्तर्दशाओं का क्रम और उनकी अवधि अलग तरह से ली गई हैं। उनका क्रम, कक्ष्याओं के अनुसार है – शनि, गुरु इत्यादि। अवधि सबकी बराबर है, जो कि विंशोत्तरी महादशा की अवधि के आठवें भाग के बराबर होती है।

उदाहरण के लिए, बृहस्पति की महादशा सोलह वर्ष की होती है। इसके आठ बराबर भाग करने पर हर भाग 2 वर्ष का हुआ। पहली अन्तर्दशा शनि, दूसरी बृहस्पति आदि की, अर्थात कक्ष्यानुसार होगी। फलादेश के नियम सामान्य ही होंगे।

8. बारह भागों की अन्तर्दशा

यहां हम जैमिनी ज्योतिष से प्रेरणा ले रहे हैं जिसमें दशाएं ग्रहों की न होकर राशियों की होती हैं। इस पद्धति में महादशा की अवधि 12 बराबर भागों में बांट ली जाती है। पहली अन्तर्दशा उस राशि की होगी जिसमें महादशा स्वामी स्थित हो (महादशाओं का क्रम चन्द्रमा के अंशों से निर्धारित होगा) उदाहरण के लिये हमारी उदाहरण कुंडली में बृहस्पति की महादशा का पहला अन्तर, वृषभ राशि का होगा क्योंकि बृहस्पति वहां स्थित है। इसकी अवधि 16 माह की होगी (16 सालों को 12 से भाग देने पर 16 माह के बारह बराबर हिस्से बनेंगे)।

पहले अन्तर के फल नवम भाव के अनुरूप होंगे और बिंदुओं की उस संख्या के अनुसार होंगे जिनसे बृहस्पति अपने अष्टकवर्ग में वहां (वृषभ में) युक्त होगा। (देखें तालिका 2-VI) - यानी 5 बिंदु। जिस समय यह अन्तर चल रहा था राष्ट्रपति 'ह्वाइट हाउस' में दृढ़ता से विराजमान थे, उनकी लोकप्रियता शिखर छू रही थी। इन परिणामों का सही स्वरूप उन ग्रहों के कारकत्व पर निर्भर करेगा जिन्होंने उपर्युक्त बिंदु प्रदान किए हैं। दूसरा अन्तर मिथुन का हुआ जहां गुरु 6 बिंदुओं से युक्त है। जिन दो ग्रहों ने वहां बिंदु प्रदान नहीं किये, वे हैं लग्नेश बुध और अष्टमेश मंगल। राष्ट्रपति की हत्या इसी काल में हुई। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि मेष में जहां बुध की मंगल से युति है, वहां गुरु मात्र 3 बिंदुओं से युक्त है और इस युति पर षष्ठेश होकर शनि दृष्टि डाले है।

9. उपर्युक्त अन्तर्दशाओं को (जैसे 7 और 8 में) फिर से आठ बराबर भागों में बांटा जा सकता है। जिनके स्वामी कक्ष्याओं के क्रम में होंगे। हर उपभाग की अवधि लगभग एक या दो महीने की होगी। इस प्रकार 16 महीने की पहली अन्तर्दशा को आठ बराबर भागों में बांटने पर उपभाग दो माह का होगा। मंगल, जिसने उदाहरण कुंडली में बिंदु प्रदान नहीं किया है, कक्ष्या क्रम के अनुसार तीसरे

---

[1] चूंकि मंगल आठवें भाव में स्थित है, संभव है उनकी हत्या का षडयंत्र इसी काल में रचा गया हो।

उपभाग का स्वामी हुआ (प्रथम और द्वितीय उपभाग क्रमशः शनि और गुरु के हैं)। मंगल की इस उप-उपदशा के दो माह अशुभ हो सकते थे जो बृहस्पति की महादशा प्रारंभ होने के 20 महीने (16+2+2) बाद शुरू हुए। उसके बाद की अशुभ अवधि छठे उप-उप भाग की होगी जिस कक्ष्या का स्वामी बुध है और बुध ने भी वृषभ राशि में बृहस्पति को कोई बिंदु नहीं दिया है। यह अवधि बृहस्पति की महादशा लगने के 26 माह (16+2+2+2+2+2) के बाद शुरू हुई। पारंपरिक विंशोत्तरी दशा के अनुसार यह अवधि बृहस्पति-शनि-शनि रही, जब राष्ट्रपति का हत्या हुई।

नोट: यह भी देखें कि बुध के अष्टकवर्ग में मिथुन राशि में बृहस्पति ने भी कोई बिंदु प्रदान नहीं किया है (तालिका 2-V) इससे बृहस्पति, मिथुन और बुध के परस्पर संबंधों की पुष्टि होती है।

अष्टकवर्ग दशा

समयावधि: दशा की अष्टकवर्ग पद्धति सबसे भिन्न है क्योंकि ग्रहों की दशा-अवधि निश्चित नहीं हैं। यह ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु पर निर्भर होती है। एक ग्रह के अनुसार जितनी आयु मिलेगी उतनी ही उसकी दशा होगी। अष्टकवर्ग आयु गणना की विभिन्न विधियां अगले अध्याय में दी गई हैं।

क्रम: पहली दशा उस ग्रह की होगी जो लग्न, चन्द्रमा और सूर्य में सबसे बली होगा। उसके बाद उन ग्रहों की दशा आएगी जो दशा स्वामी से केन्द्र में स्थित हों; फिर उनकी जो पणफर भावों (2, 5, 8, 11) में हो, और अंत में उनकी जो अपोक्लिम भावों (3, 6, 9, 12) में हों। ग्रहों का बल षड्बल के अनुसार लिया जाता है।

नोट : जहां अन्य दशा पद्धतियों में दशा अवधियां और उनके क्रम, विभिन्न ग्रहों के अनुसार होते हैं, अष्टकवर्ग दशा पद्धति सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धांत पर यहां भी अडिग है। सबसे पहले तो अष्टकवर्ग विधि से आयु की गणना की जाती है जो स्वतः ही ग्रहों की परस्पर स्थिति दर्शाती है। फिर दशाओं का क्रम भी ग्रहों की स्थिति और अपने नेता ग्रह अर्थात् प्रथम दशानाथ के सापेक्ष उनके बल से निर्धारित होता है। विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी और योगिनी दशायें इस दृष्टि से भिन्न हैं। वे किसी अन्य ग्रह को संदर्भ में न लेकर केवल चन्द्रमा के अंशों पर ही निर्भर होती हैं। उनकी अवधि और क्रम भी निश्चित होते हैं। उनकी लोकप्रियता का एक कारण संभवतः उनकी गणनाविधि की सरलता है।

अष्टकवर्ग दशा की अन्तर्दशा

किसी ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा का निर्धारण निम्नांकित नियमों के अनुसार किया जाता है।

(क) मुख्य ग्रह की आधी अवधि उस ग्रह द्वारा दी जायेगी जिसकी उसके साथ युति हो।

(ख) तत्पश्चात् महादशा के अनुपात में 1/3 अवधि की अन्तर्दशा उन ग्रहों की होगी जो महादशा स्वामी से नवम और पंचम भाव में स्थित हों।

(ग) उसके बाद महादशा के अनुपात में 1/7 अवधि की अन्तर्दशा उस ग्रह की होगी जो उससे सप्तम घर में बैठा है।

(घ) अंत में महादशा के अनुपात में 1/4 अवधि की अन्तर्दशा उससे आठवें और चौथे भाव में बैठे ग्रहों की होगी। यदि एक भाव में एकाधिक ग्रह हों तो उनमें से जो अधिक शक्तिशाली हो केवल उसी का विचार करना चाहिए।

18

आयु विचार

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥

मनुस्मृति II-121

अनुभवी, मान्य जनों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करने वाले पुरुष की आयु, विद्या, यश और बल, ये चारों वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

आयु विचार ज्योतिष शास्त्र का सबसे जटिल विषय है। कुछ ज्योतिषी इसके लिये अष्टकवर्ग विधि पर भरोसा करते हैं, क्योंकि इसमें आयु निर्धारण के लिये हर ग्रह द्वारा प्रदत्त वर्ष और दिनों की गिनती संभव है, जिसका कुल योग, कुछ संशोधनों के साथ उन वर्षों की संख्या देता है, जिन्हें पूरा करने के बाद जातक की मृत्यु संभावित होती है।

शास्त्रों में अष्टकवर्ग द्वारा आयुर्विचार की कई विधियां दी गई हैं। यहां केवल चार विधियां दी जा रही हैं।

1. अष्टकवर्ग बिंदु विधि

इस विधि में एक राशि में पड़े शोधनपूर्ण बिंदुओं के समकक्ष वर्ष, माह और दिनों की संख्या दी गई है, जो निम्नांकित तालिका में दिये गये हैं:

भाव में बिन्दु	*वर्ष*	*माह*	*दिन*
0	0	0	2
1	0	0	1½
2	0	0	1
3	0	0	½
4	0	0	7½
5	2	0	0
6	4	0	0
7	6	0	0
8	8	0	0

हर ग्रह के भिन्नाष्टकवर्ग में हर घर को देखें। हर ग्रह के लिए 12 घरों द्वारा दी गई आयु को जोड़ें और उसका आधा कर दें। इसी प्रक्रिया को सभी ग्रहों और लग्न के लिये दोहरायें। सबका कुल योग जातक की आयु होगी।

उदाहरण: हमारी उदाहरण कुंडली के लिये सूर्य के अष्टक वर्ग से प्राप्त आयु की गणना इस प्रकार होगी:

भाव	*बिन्दु*	*वर्ष*	*माह*	*दिन*
लग्न	2	–	–	1
दूसरा	5	2	–	-
तीसरा	4	–	–	7½
चौथा	4	–	–	7½
पांचवां	6	4	–	–
छठवां	5	2	–	–
सातवां	4	–	–	7½
आठवां	3	–	–	½
नौवां	4	–	–	7½
दसवां	4	–	–	7½
ग्यारहवां	3	–	–	½
बारहवां	4	–	–	7½
	योग	8	1	47
	कुल योग का आधा	4	0	23½

इस तरह सूर्य द्वारा प्रदत्त आयु 4 वर्ष 23½ दिन हुई। अन्य ग्रह और लग्नाष्टक इसी तरह निम्न आयु वर्ष प्रदान कर रहे हैं। इस प्रकार ग्रहों द्वारा प्रदत्त कुल आयु 53 वर्ष 4 महीने और ¼ दिन निकल रही है। राष्ट्रपति कैनेडी वास्तव में 46 वर्ष, 5 वर्ष और 23 दिन जीवित रहे।

ग्रह	*वर्ष*	*माह*	*दिन*
सूर्य	4	–	23½
चन्द्र	6	–	20½
मंगल	4	–	14½
बुध	9	–	15¼
बृहस्पति	11	–	8¼
शुक्र	9	–	12½
शनि	2	–	17¾
लग्न	8	–	8¾
	53	4	¼

2. अष्टम भाव में बिंदुओं की विधि

हर ग्रह के भिन्नाष्टकवर्ग में लग्न से अष्टम घर के शोधन-पूर्व बिंदुओं से सभी ग्रहों के शोध्य पिंड को गुणा करें। गुणनफल को 27 से विभाजित करें। भागफल उस ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु होगी। सब ग्रहों से प्राप्त संख्या कुल आयु होगी। यदि योग 100 से अधिक हो तो उस में से 100 घटा दें। फिर नक्षत्र-वर्षों को सूर्य-वर्षों में बदलने के लिए उसे 324 से गुणा करके 365 से भाग दें।

हमारी उदाहरण कुंडली के लिए विभिन्न ग्रहों द्वारा प्रदत्त आयु:

सूर्य	:	103 x 3/27	=	309/27	=	11.44
चन्द्र	:	152 x 2/27	=	304/27	=	11.26
मंगल	:	144x4/27	=	576/27	=	21.33
बुध	:	142x6/27	=	852/27	=	31.56
बृहस्पति	:	104x3/27	=	312/27	=	11.56
शुक्र	:	35x4/27	=	140/27	=	5.18
शनि	:	79 x 2/27	=	158/27	=	5.85

केवल गुणनफल को जोड़ने पर 95 नक्षत्र वर्ष आये।

उसे सूर्य वर्ष में बदलने पर 95×324/365=84 वर्ष 4 महीने हुए।

संख्या 100 वर्ष से कम होने के कारण, इसमें किसी संशोधन की आवश्यकता नहीं है।

3. शोध्य पिंड विधि

एक ग्रह का शोध्य पिंड लें और 7 से गुणा करें और 27 से भाग दें। भागफल उस ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु की संख्या होगी।

विशेष नियम

(अ) यदि उपर्युक्त भागफल 27 से कम हो तो उसे ज्यों का त्यों रख लें।

(ब) यदि भागफल 27 और 54 के बीच हो तो उसे 54 से घटा दें।

(स) यदि भागफल 54 और 81 के बीच हो तो उसमें से 54 घटा दें और शेष संख्या उस ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु मान लें।

(द) यदि प्राप्तांक 81 और 108 के बीच हो तो उसे 108 से घटा दें और शेष को आयु मान लें।

संशोधन या हरण

(i) यदि दो या अधिक ग्रह एक राशि में हों तो उपर्युक्त रीति से प्राप्त आयु-संख्याओं को दोनों ग्रहों के लिये आधा-आधा कर दें।

(ii) यदि कोई भी ग्रह नीचस्थ हो या अस्त हो तो उसके द्वारा प्रदत्त वर्षों को आधा कर दें।

(iii) यदि ग्रह शत्रु-क्षेत्री हो तो वर्षों की संख्या एक तिहाई कम कर लें। उदाहरण के लिये यदि 18 वर्ष आएं तो एक तिहाई यानी 6 कम करके 12 मान लें।

(iv) यदि कोई क्रूर ग्रह राशि चक्र के प्रकाशित अर्द्धभाग में हो (सातवें से बारहवें भाव में) तो निम्नांकित विधि से संशोधन करें:

बारहवां भाव	-	पूर्ण हरण
ग्यारहवां भाव	-	अर्द्ध हरण
दसवां भाव	-	एक तिहाई हरण
नवां भाव	-	एक चौथाई हरण
आठवां भाव	-	1/5 हरण
सातवां भाव	-	1/6 हरण

(v) प्रकाशित या उदित अर्द्धभाग में यदि सौम्य ग्रह हों तो क्रूर ग्रहों के लिये दिये गये हरणों को आधा कर लें।

(vi) यदि ग्रह-युद्ध में कोई ग्रह पराजित हो तो 1/3 घटा दें।

(vii) यदि सूर्य और चन्द्रमा में ग्रहण लगा हो (पूर्णिमा अथवा अमावस्या के दिन राहु या केतु से युति) हो तो आयु 1/3 घटा दें।

नोट: यदि एक ग्रह पर एक से अधिक हरण लागू होते हों तो अधिकतम हरण लागू करें।

(viii) नक्षत्र वर्षों को सूर्य वर्षों में बदलने के लिये 324 से गुणा करके 365 से भाग दें।

उदाहरण: हमारी कुंडली के लिये निम्नांकित तालिका तैयार की जा सकती है:

ग्रह	शोध्य पिंड	x $^{7}/_{27}$ के बाद भागफल	विशेष नियम	हरण	कौन से हरण लग रहे हैं	अधिकतम हरण	कुल वर्ष
सूर्य	103	26	26	½	(i), (iii) & (iv)	(i)	13
चन्द्र	152	39	15	पूर्ण	(iv)		–
मंगल	144	37	17	½	(i) & (iv)	(i)	8-5
बुध	142	36	18	½	(i), (iii) & (iv)	(i)	9
गुरु	104	26	26	½	(i), (iii) & (iv)	(i)	13
शुक्र	35	9	9	½	(i) & (iv)	(i)	4-5
शनि	79	20	20	½	(iii) & (iv)	(iv)	10
					योग	58	

उन्हें सूर्य वर्षों में बदलने पर

$$58 \times \frac{324}{365} = 51 \text{ वर्ष लगभग}$$

नोट: हरण के कुछ नियम तर्कपूर्ण हैं, परन्तु कुछ आधारहीन प्रतीत होते हैं। यदि ग्रह कमज़ोर हों, जैसे नीचस्थ, अस्त या शत्रुक्षेत्री तो उन्हें कम आयु देनी ही चाहिये।

किसी भी ग्रह को 27 से अधिक वर्ष देने की क्षमता प्रदान नहीं की गई है। नियम (ब) के अनुसार 28 वर्ष की आयु 53 से अधिक है क्योंकि 28 प्रदान करेगा 26 वर्ष और 54 से घटाने पर 53 मात्र एक वर्ष देगा। यह नियम तनिक निरंकुश सा प्रतीत होता है।

संगणक की मदद लेने पर 7/27 को करीब 0.26 और 324/365 को 0.89 एवं 7/27 × 324/365 को एक साथ 0.23 लिया जा सकता है)।

4. सर्वाष्टकवर्ग विधि

इस विधि के अन्तर्गत आयु निर्णय करने के लिये सर्वाष्टक वर्ग के बिन्दुओं का उपयोग किया जाता है। इसके लिये निम्नांकित विधि है:

(अ) सर्वाष्टकवर्ग संख्याओं में से 12 के गुणकों को निकाल दें।

(ब) फिर त्रिकोण और एकाधिपत्य शोधन करें।

(स) राशि पिण्ड, ग्रह पिण्ड की गणना करें और उनका योग करके शोध्य पिंड निकालें, जैसा किसी भी ग्रह के लिये किया जाता है।

(द) सर्वाष्टकवर्ग के शोध्य पिंड को 7 से गुणा कर 27 से भाग दें।

(ध) यदि प्राप्तांक सौ से अधिक हो तो इसमें से 100 घटा दें। यदि 100 से कम हो तो, उसे ऐसे ही रहने दें।

(न) शेष को 324 से गुणक 365 से भाग दें और आयु के सौर वर्ष प्राप्त करें।

उदाहरण कुंडली के लिए:

शोध्य पिंड = 338 + 50 = 388

सकल आयु= $388 \times \frac{7}{27} = 100.59$ (भागफल 100 हुआ)

सौर वर्ष $= 100 \times \frac{324}{365} = 88$ वर्ष

32	24	24	29
38	18-I ए जे.एफ. कैनेडी सर्वाष्टकवर्ग		24
30			22
31	25	28	30

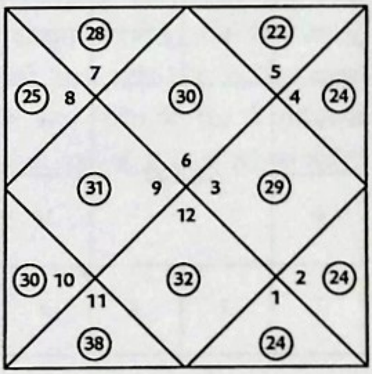

12 के गुणक हटाने के बाद

8	0	0	5
2	18-I बी		0
6			10
7	1	4	6

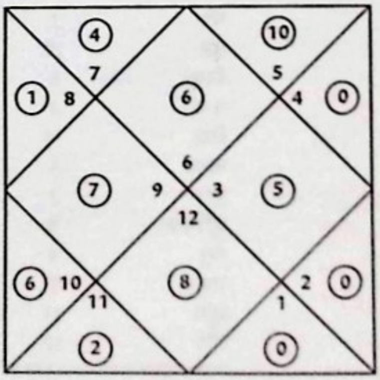

त्रिकोण शोधन के पश्चात्

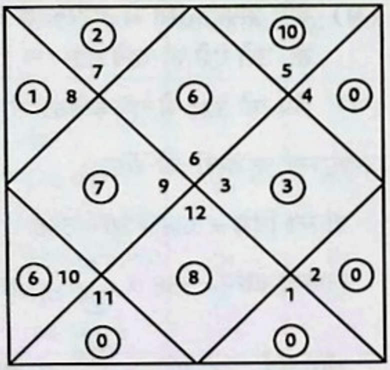

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात्

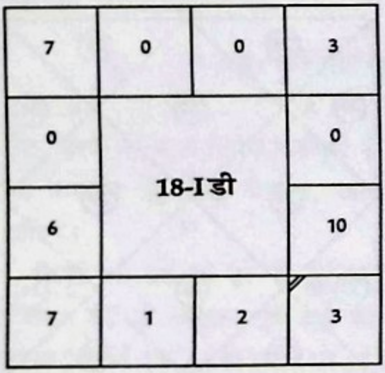

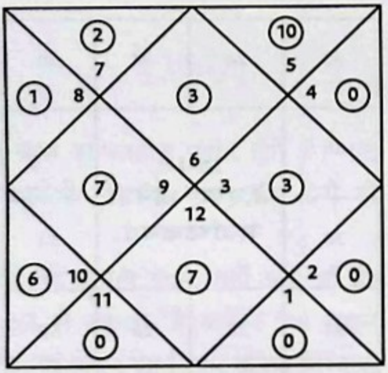

राशि गुणक

राशि	*राशि गुणक*	*बिन्दु*	*गुणनफल*
मेष	7	0	0
वृष	10	0	0
मिथुन	8	3	24
कर्क	4	0	0
सिंह	10	10	100
कन्या	5	3	15
तुला	7	2	14
वृश्चिक	8	1	8
धनु	9	7	63
मकर	5	6	30
कुंभ	11	0	0
मीन	12	7	84
		राशि पिंड	338

ग्रह गुणक

ग्रह	*राशि*	*ग्रह गुणक*	*बिन्दु*	*गुणनफल*
सूर्य	वृष	5	0	0
चन्द्र	सिंह	5	10	50
मंगल	मेष	8	0	0
बुध	मेष	5	0	0
बृहस्पति	वृष	10	0	0
शुक्र	वृष	7	0	0
शनि	कर्क	5	0	0
			ग्रह पिंड	50

इसे जातक का नक्षत्रायुः कहते हैं

नोट: जैसा कि देखा जा सकता है, अलग-अलग विधियां अलग-अलग आयु-गणना देती हैं। अनेक जन्मकुंडलियों पर हमने इन्हें आज़मा कर देखा और पाया कि वे जातक द्वारा वास्तव में भोगी हुई आयु से काफी भिन्न रहीं। अतः हम यह समझ सकते हैं कि ये गणित पर आधारित विधियां आयु-निर्णय के क्षेत्र में भरोसेमंद नहीं हैं। दशा विश्लेषण में मारक इत्यादि का विचार आयु के संबंध में श्रेष्ठतर संकेत देता है।

19

एकादश कहां से

आद्यन्तरहिते देवि आद्याशक्ति महेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥

महालक्ष्मी-अष्टकम्

आदि और अन्त से रहित, दिव्यता की निधि, आद्या शक्ति, महेश्वरी, योग से उद्भूत, योग की जन्मदात्रि, महालक्ष्मी तुम्हें नमन हो।

शास्त्रों में एकादश भाव को 'सभी प्रकार के लाभ' का कारक बताया गया है — आय, प्राप्तियां, इच्छाओं की पूर्ति, आय का स्वरूप, परितोष, सम्मान, विशेष श्रेणी, उत्कृष्टता, राजकीय कृपा, पैतृक संपत्ति आदि। संक्षेप में ग्यारहवां घर साक्षात् 'लाभ' ही है।

वह नियम जो अष्टकवर्ग में 'आय' से जुड़ने के कारण काफी लोकप्रियता पा चुका है, वह है:

यदि ग्यारहवें घर में दसवें घर से ज़्यादा बिंदु हों तो इसका अर्थ है 'कम मेहनत, अधिक लाभ'।

परन्तु प्रश्न उठता है कि ग्यारहवां कहां से? स्पष्टत: 'लग्न' से, किंतु क्या केवल लग्न से ही? क्या अन्य स्थान ऐसे नहीं हैं जिनसे ग्यारहवें घर का अधिक सार्थक अध्ययन विशेष संदर्भों में किया जा सके। यदि साहस करके ज्योतिष शास्त्र के अथाह समुद्र में गहरी पैठ लगाई जाये तो ऐसे कई रहस्य खुल जायेंगे जो उन नौसिखियों की पकड़ में कभी नहीं आ सकते जो केवल सतह पर तैरते हैं।

नोट: यहां याद रखने वाली बात यह है कि ग्यारहवां घर न केवल दसवें घर से दूसरा है, वह बारहवें घर से बारहवां भी है- इस प्रकार दो ऋण (-) मिलकर एक धन (+) का निर्माण कर रहे हैं।

विभिन्न स्थान, जहां से ग्यारहवें घर का परीक्षण सार्थक रूप से किया जा सकता है:

1. जन्म लग्न से
2. चन्द्र लग्न से
3. सूर्य लग्न से
4. शनि से
5. दशा-नाथ से
6. अन्तर्दशा नाथ से
7. पदलग्न से
8. कारकांश से
9. उपपदलग्न से
10. इन्दु लग्न से

विवेचन

1. **लग्न से,** क्योंकि यही वह मुख्य भाव है जहां से जन्मकुंडली का विश्लेषण प्राय: किया जाता है। अष्टकवर्ग में भी लग्न को बिन्दुओं के आठ स्रोतों में एक मानकर एक गौरवपूर्ण स्थान दिया गया है।
2. **चन्द्रमा से,** क्योंकि जीवन का अनुभव मन से किया जाता है, जिसका कारक चन्द्रमा है। मन:स्थिति से ही जातक के सुखी या दु:खी होने का पता चलता है।
3. **सूर्य से,** क्योंकि वह तन, आत्मा, पिता और राज्य का द्योतक है। वे उच्चाधिकारी जिनके 'गुण' अपने राजनैतिक संरक्षकों के परावर्तित ओज में ही खिल पाते हैं, उनके लिए सूर्य की सुस्थिति अत्यावश्यक है। यह उन लोगों के जीवन में भी परोक्षरूप से क्रियाशील रहता है जिनके पिता या श्वसुर अथवा दूसरे रिश्तेदार सही पदों पर आसीन होकर समयानुसार उनके व्यवसाय की वृद्धि में सहायक होते हैं।
4. **शनि से,** क्योंकि वह कर्म, परिश्रम, लग्न और दृढ़ निश्चय का कारक है। वे लोग जो अपनी मेहनत और निजी प्रतिभा के कारण जीवन में आगे बढ़ते हैं, उनकी कुंडली में शनि से ग्यारहवां घर बलवान होता है। शनि सामान्य जनमानस का भी प्रतीक होता है। अत: जब भी शनि से ग्यारहवां भाव बल पाता है या अष्टकवर्गीय दृष्टि से बली होता है तो वे व्यक्ति ऊंचे उठते हैं जिनका व्यवसाय जनता से जुड़ा हो और जनता में उनकी लोकप्रियता पर निर्भर करता हो, जैसे प्रजातंत्र में राजनेता आदि।
5. **दशानाथ से,** क्योंकि दशा विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि उस घर को लग्न मानकर दशा अवधि का फलादेश दें जिस घर में दशानाथ स्थित हो। यदि दशानाथ से एकादश भाव बली हो तो जातक उस दशा में, अपनी मेहनत से ज्यादा, सहज ही कमा लेगा। अलग-अलग दशाओं में व्यक्ति की आय अलग-अलग हो सकती है।

6. **अन्तर्दशानाथ से,** क्योंकि यह पूर्ववर्ती नियम का विस्तार ही है। यदि दशा और अन्तर्दशा नाथ एक दूसरे से 3-11 जैसे संबंध में हैं तो ऐसा समय धनदायी होगा। यदि दशा और/या अन्तर्दशा स्वामी अपने आप में भी बली हों तो भी अच्छे फल मिलेंगे।

7. **पदलग्न से,** क्योंकि जैमिनी ज्योतिषशास्त्र में पदलग्न, सामान्य लग्न के समकक्ष माना जाता है। पदलग्न लग्न स्वामी से उतने ही घर दूर होता है, जितना लग्न से लग्न स्वामी दूर होता है। कैनेडी की हमारी उदाहरण कुंडली में लग्न स्वामी बुध लग्न से आठवें घर में है। अत: पदलग्न बुध से आठवां घर यानि वृश्चिक है (लग्न से तीसरा घर) और वहां से ग्यारहवां घर कन्या का, अर्थात् जन्म लग्न का घर है।

8. **कारकांश से,** क्योंकि कारकांश जातक के व्यवसाय के स्वरूपादि पर प्रकाश डालने कि लिये विशेष रूप से जाना जाता है। कारकांश आत्मकारक की नवांश स्थिति होती है, और आत्मकारक वह ग्रह होता है जिसके अंश जन्मकुंडली में सबसे अधिक हों। हमारी उदाहरण कुंडली में बुध आत्मकारक है, क्योंकि उसके अक्षांश 27°53' सर्वाधिक हैं। मेष में होने के कारण उसका नवांश धनु है। अत: कारकांश लग्न धनु है। दसवां घर उन्नति का स्वरूप जानने के लिए और ग्यारहवां उन्नति की सीमा जानने के लिए देखा जाता है।

9. **उपपद लग्न से,** क्योंकि जैमिनी ज्योतिष के प्राचीन शास्त्रों में वर्णित है कि उपपद से ग्यारहवां घर आय के स्रोतों के गुण (नैतिक या अनैतिक) को बताता है। उपपद द्वादश भाव से उतने ही घर दूर होता है जितना द्वादशेश द्वादश भाव से। उदाहरण कुंडली में द्वादशेश सूर्य द्वादश भाव से दशम भाव में स्थित है, अत: उपपद लग्न कुंभ हुआ क्योंकि कुंभ राशि सूर्य से दशम भाव में है। उपपद लग्न (कुंभ) से एकादश (धनु) में क्रूर ग्रह का अर्थ है अनैतिक साधन और शुभग्रह का अर्थ है नैतिक साधन। इसी तरह उपपद से सप्तम से विवाह के बारे में पता चलता है। आधुनिक समय में क्रूर ग्रह का अर्थ अनिवार्य रूप से 'अनैतिक' नहीं है।

10. **इंदु लग्न से,** क्योंकि इंदु लग्न विशेषत: धन और समृद्धि के लिये है। प्राचीन ऋषियों ने इंदु लग्न का आविष्कार जन्मकुंडली में समृद्धि का स्तर और समय जानने के लिये ही किया था। यह भी कह सकते है कि वर्तमान युग में जब आर्थिक समृद्धि ही सुख का दूसरा नाम है, इंदु लग्न और उसके माध्यम से जन्मकुंडली का विश्लेषण विशेष महत्त्व रखता है।

इंदु लग्न निकालने की विधि

सातों ग्रहों को एक-एक संख्या दी गई हैं* (राहु, केतु को छोड़कर):

सूर्य	:	30	गुरु	:	10
चन्द्र	:	16	शुक्र	:	12
मंगल	:	6	शनि	:	1
बुध	:	8			

(अ) लग्न से नवमेश और चन्द्र से नवमेश की संख्याओं का योग करें।

(ब) इस योग को बारह से भाग देकर शेषफल निकालें।

(स) जन्म कालीन चन्द्रमा से शेषफल की संख्या तक भाव गिनें। प्राप्त भाव ही इन्दु लग्न है।

इंदु लग्न के सामान्य उपयोग

1. इंदु लग्न में दोषहीन शुभग्रह या उच्चस्थ क्रूर ग्रह हो तो जातक करोड़पति होता है।
2. इस लग्न पर सामान्य क्रूर प्रभाव हों तो सामान्य आर्थिक स्थिति होगी।
3. जब इंदु लग्न से अनेक ग्रह संबंध बनाये हों, वहां स्थित हों, दृष्टि रखते हों अथवा वहां से दूसरे या ग्यारहवें स्थान पर हों या, इससे केन्द्र स्थानों पर स्थित हों तो उच्च आर्थिक स्थिति सुनिश्चित हो जाती है।
4. **दशाः** आर्थिक लाभ उन ग्रहों की दशा में होते हैं जो इन्दु लग्न से शुभ संबंध रखते हैं। यह संबंध दोनों ही तरह से हो सकता है – इन्दु लग्न की स्थिति दशास्वामियों के सापेक्ष या इन्दु लग्न से दशा-स्वामियों की स्थिति के द्वारा। उदाहरण के लिये, यदि इन्दु लग्न दशास्वामी से पंचम है तो आय लेखन या अन्य रचनात्मक कार्यों से होगी अथवा संतान इस दशा में अच्छे परिणाम दिखा सकती है।
5. **गोचरः** जब ग्रह इन्दु लग्न से उपचय घरों (3, 6, 10, 11) में हों तो वे अष्टकवर्ग और सर्वाष्टकवर्ग के बिंदुओं के अनुपात में धन-संपत्ति में बढ़ोत्तरी करते हैं।
6. धनयोग इन्दु लग्न से देखे जा सकते हैं। धनयोग में प्रथम, द्वितीय, एकादश, पंचम, नवम और दशम भावों के स्वामी विभिन्न सुयोग स्थापित करते हैं।

*इन संख्याओं का तार्किक आधार ज्ञात नहीं है।

ज्योतिषियों के पास अधिकतर लोग आर्थिक समृद्धि के बारे में जानने के लिए आते हैं। चूंकि अष्टकवर्ग, विभिन्न घरों/राशियों का बल जानने की श्रेष्ठ विधि है - दशा और गोचर दोनों के लिये - अतः हमें जन्मपत्रियों का परीक्षण इन्दु लग्न के सन्दर्भ में करना चाहिए।

इन्दु लग्न के संदर्भ में कुछ कुंडलियों का विश्लेषण

आगे के पृष्ठों में जो शोधकार्य हम दिखा रहे हैं, उनमें हमारा ध्यान निम्न मुद्दों पर केन्द्रित है:

(अ) इन्दु लग्न से दसवें और ग्यारहवें घर की स्थिति - सर्वाष्टकवर्ग बिंदुओं के आधार पर और/या लग्नेश और एकादशेश के अष्टकवर्ग बिंदुओं के आधार पर

(ब) इन्दु लग्न के संदर्भ में धनयोग/राजयोग

(स) इन्दु लग्न के संदर्भ में ही दशा और गोचर के प्रभाव

पी. वी. नरसिंह राव

राव साहब की कुंडली पिछले अध्यायों में शनि और गुरु के संयुक्त गोचर प्रभावों के लिये देखी जा चुकी है। आइये यहां उसी कुंडली को 'एकादश' की दृष्टि से देखें।

यदि इस कुंडली को हम मूल लग्न से देखें तो एकादश भाव में 26 बिंदु हैं जबकि दशम में 34 हैं, जो एक अच्छी स्थिति नहीं है। दसवें घर में भी लग्नेश बुध की उपस्थिति के कारण जो धनयोग बन रहा है उसे दो आग्नेय क्रूर ग्रहों की उपस्थित दूषित कर रही है, जिसमें सूर्य द्वादशेश और मंगल अष्टमेश है और कोई अन्य शुभ प्रभाव वहां नहीं है। दो महत्त्वपूर्ण ग्रह, शनि और गुरु द्वादश भाव में पहुंचकर विशेष बली नहीं रहे हैं। दूसरे और नवें घर का स्वामी शुक्र भी आठवें घर में जाकर अपनी चमक खोये हुए है।

अब ज़रा इन्दु लग्न से इसी कुंडली को देखें - सारी स्थिति एक नाटकीय रूप से परिवर्तित दिखाई देगी।

इन्दु लग्न का निर्धारण

1. लग्न से नवम वृषभ है, जिसके स्वामी शुक्र की संख्या 12 है।
2. चन्द्र से नवम वृश्चिक है, जिसके स्वामी मंगल की संख्या 6 है।
3. दोनों के योग (18) को 12 से भाग देने पर 6 शेष रहता है। चन्द्र से छठे स्थान पर सिंह राशि है जो इन्दु लग्न हुई।

इन्दु लग्न से ग्यारहवें में 34 हैं जबकि दसवें में मात्र 25, यह लाभ के दृष्टिकोण से एक अत्यंत शुभ स्थिति है।

चन्द्र 30	केतु शुक्र 34	25	सूर्य मंगल बुध 34
30	पी.वी. नरसिंह राव 28.6.1921 13.20 वारंगल, आन्ध्र प्रदेश		26
30			इन्दु लग्न गु. श. 26
28	28	राहु 23	23

दशा भोग्य शनि: 8 वर्ष 6 माह 3 दिन

4	7	4	बुध 7
6	बुध का अष्टकवर्ग		4
3			4
4	4	4	3

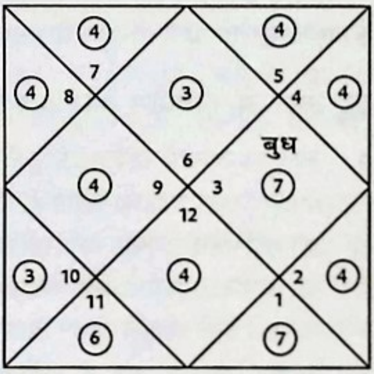

5	5	3	5 सूर्य
5	सूर्य का अष्टकवर्ग		3
4			4
5	3	2	4

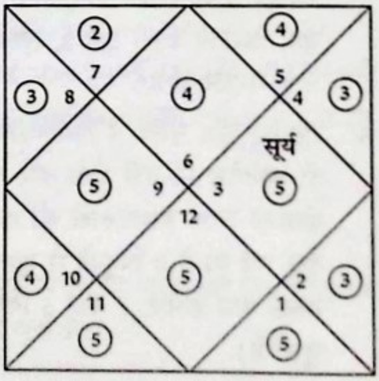

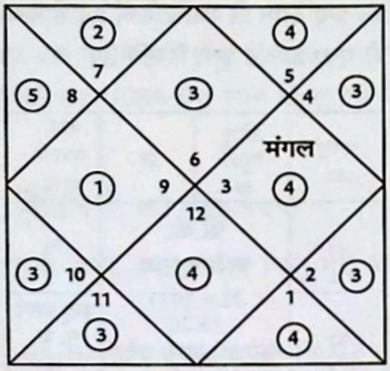

सूर्य से ग्यारहवें में भी 34 हैं और दसवें में 30, वह भी लाभकारी है। इंदिरा गांधी के रूप में राव साहब को एक संरक्षक मिला था। चन्द्रमा से ग्यारहवें में 30 बिंदु है जबकि दसवें में 28 - वह भी सुखद स्थिति है।

शनि से उनकी स्थिति उतनी ही दृढ़ है जितनी इंदु लग्न से, चूंकि शनि वहीं स्थित है। एक राजनेता के लिये शनि से ग्यारहवां भाव एक महत्वपूर्ण स्थान होता है।

इंदु लग्न से राजयोग और धनयोग

1. स्वयं इंदु लग्न में मात्र 26 बिंदु हैं, जो तनिक कम हैं, किंतु लग्नेश सूर्य के वहां 4 और मिथुन जहां वह स्थित है, में 5 बिंदु हैं, फिर लग्न में पंचमेश और सप्तमेश की उपस्थिति राजयोग बना रही है। पर यह भी विचारणीय तथ्य है कि ये दोनों ग्रह क्रमशः अष्टमेश और षष्ठेश भी हैं। यही कारण है कि उन के प्रधानमंत्रित्व काल में इतने घोटाले सामने आए।
2. लग्नेश, एकादश भाव में, द्वितीयेश और एकादशेश के साथ है। चतुर्थेश और नवमेश होकर मंगल योगकारक है, जो लग्न में 4 बिंदुओं से युक्त है और बुध, जिसकी उससे युति है, लग्न में 7 बिंदुओं से युक्त है। इस तरह यह एक बली धनयोग बना।
3. दशमेश शुक्र नवम में स्थित होकर, पंचमेश गुरु से दृष्ट है। यदि गुरु साथ ही अष्टमेश भी नहीं होता और यदि दशमेश शुक्र राहु-केतु की धुरी पर नहीं होता तो उनके शासनकाल का राजनैतिक वातावरण घोटालों से दूषित न होता। शुक्र नवें घर में 8 बिंदुओं से युक्त है जबकि अपनी राशियों वृषभ और तुला में उसके पास क्रमशः 7 और 5 बिंदु हैं, जिसकी पुस्तक में अन्यत्र चर्चा की जा चुकी है।

4. चन्द्रमा एक श्रेष्ठ विपरीत राजयोग (विमल) बना रहा है क्योंकि वह द्वादशेश होकर अष्टम में स्थित है। चन्द्रमा मीन राशि में 5 बिंदुओं से, कर्क में 4 और सिंह (इंदु लग्न) में 6 बिंदुओं से युक्त है (चन्द्रमा का अष्टकवर्ग यहां नहीं दिखाया गया)।
5. बृहस्पति का सूर्य एवं चन्द्र से संबंध राजपुरुषों के लिये हमेशा ही सहायक होता है। बृहस्पति राशि कुंडली में सूर्य की राशि में है और नवांश में चन्द्रमा से उसकी युति है।

सावधानी: ग्यारहवां घर मात्र धन का भाव नहीं होता। इच्छापूर्ति और महत्वाकांक्षाओं के फलीभूत होने का घर भी होता है। इन्दु लग्न से और जन्म लग्न से दूसरे घर में भी मात्र 23 बिंदु है, जो ग्यारहवें घर की स्थिति से बिल्कुल अलग हाल कहते हैं। पार्टी अध्यक्ष पार्टी फंड को निजी फंड न मानें तो ही श्रेयस्कर होता है।

दशा

कुछ महत्वपूर्ण दशायें जैसे शनि और बुध की दशा उनके बचपन और युवावस्था में आकर चली गईं। उनका राजनैतिक जीवन 1954 में प्रारंभ हुआ जब वे शुक्र की महादशा से गुज़र रहे थे। उसके बाद भी वे उत्तम दशाओं से गुज़रे, जैसे सूर्य, चन्द्र और मंगल की दशाएं, जो सभी उनकी कुंडली में बली अवस्था में हैं।

उनकी मंगल-गुरु दशा चल रही थी जब वे प्रधानमंत्री बने। उनका मंगल ग्यारहवें घर में है जबकि गुरु तो इन्दु लग्न में ही है। उन्होंने अपने कार्यकाल के पांच साल पूरे किये। विषम परिस्थितियों के चलते जिन शक्तिशाली ग्रहों की अन्तर्दशाओं ने उन्हें सत्ता में बने रहने में सहयोग किया वे थे शनि, बुध, केतु और शुक्र। उनके अष्टकवर्गीय बल और महत्व की चर्चा हम अन्यत्र कर चुके हैं।

उनकी मंगल-सूर्य (जन्म लग्न से क्रमशः अष्टमेश और द्वादशेश) की दशा जनवरी 1996 में प्रारंभ हुई।

राहु महादशा प्रारंभ होते ही उनका राजनैतिक पतन शुरु हो गया और उन्होंने अपनी सारी शक्ति और प्रभाव खो दिया। उनका राहु दूसरे घर (मारक भाव) में मात्र 23 बिंदुओं से युक्त है।

गोचर

जब वे प्रधानमंत्री बने तब सर्वाधिक महत्वपूर्ण गोचर ग्रह शनि और गुरु थे। उनके प्रभावों की चर्चा हम एक पूर्व अध्याय में कर चुके हैं।

अमिताभ बच्चन

अमिताभ बच्चन हमारे समय के एक ऐसे करोड़पति हैं जो न केवल खुद को बल्कि दूसरों को भी करोड़पति बनाने की योग्यता रखते हैं।

इन्दु लग्न

(i) जन्म लग्न से नवम भाव तुला है, जिसके स्वामी शुक्र के पास 12 की संख्या है।

(ii) चन्द्र से नवम भाव मिथुन है, जिसके स्वामी बुध के पास 8 की संख्या हैं।

(iii) उनके योग (20) से 12 का गुणक निकालने पर शेषफल 8 बचा। जन्मकालीन चन्द्रमा से आठवां घर वृषभ है जो इन्दु लग्न हुआ।

यदि हम जन्म लग्न कुंभ से इस कुंडली को देखें तो यह किसी लोकप्रिय अभिनेता या अरबपति की कुंडली नहीं मालूम पड़ती। पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश और दशमेश का अष्टम में जाने का और द्वितीयेश और एकादशेश का छठे में चले जाने का क्या तात्पर्य हो सकता है? इतना अवश्य है कि जन्म लग्न से ग्यारहवें में 32 और दसवें में 29 बिंदु हैं।

किंतु यदि हम इसी कुंडली को इंदु लग्न से देखें तो परिदृश्य पूरा ही बदल जाता है।

1. एकादशेश बृहस्पति जहां स्थित है, वहां अपने अष्टकवर्ग में 7 बिंदुओं से और सर्वाष्टकवर्ग में 42 बिंदुओं से युक्त है। वह वहां अपनी उच्चराशि में बैठकर इन्दु लग्न से नवम एवं एकादश स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।
2. इन्दु लग्न से एकादश भाव, मीन को चार अन्य महत्वपूर्ण ग्रह भी देख रहे हैं - द्वितीयेश और पंचमेश बुध, चतुर्थेश सूर्य, लग्नेश शुक्र और सप्तमेश मंगल।
3. लग्नेश शुक्र नीचस्थ तो है परंतु उसका शक्तिशाली नीचभंग राजयोग भी है। षष्ठेश का नीचस्थ होना वैसे भी लक्ष्मी के आगमन के द्वार खोलता है। शुक्र के अपने अष्टकवर्ग में, जहां इन्दु लग्न है, वहां 6 बिंदु हैं। उससे दशम में भी 6 बिंदु हैं और पंचम स्थान, जहां शुक्र स्वयं स्थित है, वहां 4 बिंदुओं से युक्त है। शुक्र ने वृषभ और तुला में तो बिंदु दिया ही है, कन्या में भी एक बिंदु दिया हैं। इन्दु लग्न में ही 33 बिंदु हैं जहां स्वयं योग कारक शनि केन्द्र और त्रिकोण (चतुर्थेश और पंचमेश) का स्वामी होकर बैठा है। यही नहीं यह योगकारक शनि एकादशेश बृहस्पति को देख भी रहा है।

4. उच्चस्थ पंचमेश बुध चतुर्थेश सूर्य के साथ युक्त होकर श्रेष्ठ राजयोग बना रहा है। वृषभ में बुध के भिन्नाष्टक में आठ बिंदु हैं। (यहां चार्ट नहीं दिखाया गया)।

27	26	इन्दु लग्न शनि (व) 33	29
केतु 31	अमिताभ बच्चन अक्टूबर 11, 1942		गुरु 42
24			राहु 23
32	29	चन्द्र 21	मंगल सूर्य बुध (व) शुक्र 20

जन्मकालीन भोग्य दशा: 13 वर्ष, 10 दिन

3	4	6	3
6	शुक्र का अष्टकवर्ग		4
4			4
5	5	3	शुक्र 4

3	5	5	6
5	गुरु का अष्टकवर्ग		7 गुरु
3			3
4	3	7	5

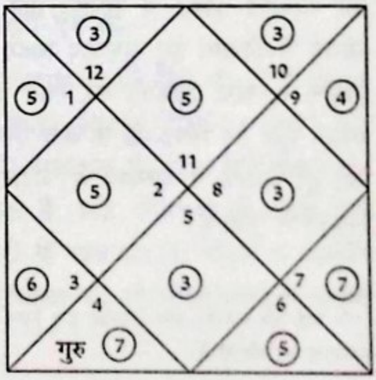

5. एकादशेश गुरु चन्द्रमा के साथ गजकेसरी योग बना रहा है। कर्क में उच्च का होकर बृहस्पति 7 अंकों से युक्त है। तुला में, जहां चन्द्रमा स्वयं स्थित है, वहां भी बृहस्पति 7 बिन्दुओं से युक्त है। चन्द्रमा भी बराबर का बल देते हुए, कर्क में पूरे आठ बिंदुओं से युक्त हैं, जहां बृहस्पति स्थित है। तुला में वह 4 बिंदुओं से युक्त है जहां वह स्वयं स्थित है। इस तरह किसी योग के वास्तविक बल को जानने के लिये अष्टकवर्ग एक उत्कृष्ट विधि सिद्ध होती है। अंत में देखिये कि ऐसा बलशाली बृहस्पति चन्द्रमा से दशम भाव में स्थित है।

दशा

अमिताभ बच्चन ने फिल्मी जगत में प्रवेश, बृहस्पति की महादशा के अंत में किया, किंतु उनका वास्तविक भाग्योदय तब हुआ जब शनि की महादशा सन 1971 के अंत में शुरू हुई- उस ग्रह की दशा जो इंदु लग्न में स्थित है। उनके शनि के पास कुछ अन्य योग्यतायें भी हैं। वह जन्म लग्न का स्वामी है, वह वक्री है ('फलदीपिका' के ग्रंथकार मंत्रेश्वर के अनुसार वक्री ग्रह उच्च ग्रहों के समान प्रभावशाली होते हैं)। शनि इन्दु लग्न वृषभ के लिये योग कारक भी है। स्वयं इन्दु लग्न, अमिताभ की जन्म कुंडली में सबसे प्रबल ग्रह बृहस्पति से एकादश भाव में है, जिसने शेष सभी ग्रहों को भी गतिमान कर दिया है। इन्दु लग्न से एकादशेश बृहस्पति ही हर ग्रह से उसकी शक्ति संग्रहीत करने में प्रभावशाली रहा है। स्वामी शुक्र समेत पांच ग्रह इंदु लग्न से ग्यारहवें घर मीन को देख रहे हैं।[1] एक मजेदार तथ्य यह भी है कि यह घर जन्म लग्न से द्वितीय भाव पड़ता है। ध्यान से देखें तो जन्म लग्न से ग्यारहवें भाव में यह ताकत नहीं है।

शनि-बृहस्पति की दशा में अमिताभ अपने महानायकत्व के शीर्ष पर रहे, शनि की महादशा 1990 में समाप्त होने पर करोड़ों कमाकर, वह सक्रिय फिल्मी जीवन से विश्राम हेतु चुपचाप बाहर हो गए। फिर बुध-शुक्र ही उन्हें स्वघोषित निवृत्ति से बाहर निकाल कर लाये और एबीसीएल शुरु कराया। इन्दु लग्न का स्वामी शुक्र है। 1995-96 के बाद उनकी फिल्मों को वह तूफानी सफलता हासिल नहीं हुई जिसके वे अभ्यस्त थे। महादशा और अन्तर्दशा, दोनों के स्वामी मात्र 20 बिंदुओं से युक्त हैं।

---

[1]यदि कई सारे धनयोग और राजयोग इन्दु लग्न के साथ-साथ लग्न से भी बन रहे हों तो यह अतिरिक्त सफलता का द्योतक है।

बुध-सूर्य, बुध-चन्द्र और बुध-मंगल में अमिताभ बच्चन कुछ शान्त रहे, जो ठीक भी था। अन्तर्दशानाथों के पास केवल 20 या 21 बिन्दु ही थे। उनकी बुध-राहु अप्रैल 2000 में प्रारम्भ हुई। 'शनिवत् राहु' के अनुसार अच्छे दिन वापस आने के संदर्भ बनने शुरू हो गए। बुध-बृहस्पति शुरू हुई नवम्बर 2002 में और वे 'कौन बनेगा करोड़पति' नामक टी.वी. सीरियल पेश करके खुद भी करोड़पति बन गए। इस दशा ने उनकी दूसरी पारी की शुरूआत की जो पहली पारी से किसी तरह कम नहीं है। बुध-शनि 2005 में प्रारम्भ हुई और उसने उनकी चंहुमुखी सफलता में चार चांद लगा दिये। शनि की गौरवगाथा पहले कही जा चुकी है।

गोचर

1971-72-73 में जब उनका अपना फिल्मी कैरियर उठान पर था तब शनि इन्दु लग्न से ही गुज़र रहा था। इन सालों में बृहस्पति वृश्चिक, धनु और मकर पर रहा, वृश्चिक और मकर से वह इंदु लग्न को देख भी रहा था।

1995-96 में फिल्मी क्षेत्र में उनकी वापसी का श्रेय भी शनि को जाता है जो मीन से गुज़रते हुए वृषभ स्थित इंदु लग्न को देख रहा था। बृहस्पति भी वृश्चिक से इंदु लग्न को देख रहा था।

तनिक विषयान्तर करके यह भी देखें कि जुलाई 1982 में जब अमिताभ फिल्म 'कुली' की शूटिंग के दौरान हुई दुर्घटना में मृत्यु के समीप पहुंच गये थे, तब शनि और मंगल, दोनों ही कन्या पर विचरण कर रहे थे और कन्या सर्वाष्टकवर्ग में मात्र 20 बिंदुओं से युक्त होकर सबसे कमज़ोर राशि है- अपने निजी भिन्नाष्ट. कवर्गों में शनि के 2 और मंगल का 1 बिंदु है। कन्या, जन्म लग्न से अष्टम भाव है और चन्द्रमा से बारहवां है। कन्या का 'काल पुरुष' में छठा भाव होने का भी विशेष महत्व है। उस समय शनि-सूर्य की दशा चल रही थी जो द्वादशेश ओर सप्तमेश हैं।

डॉ. दीपक चोपड़ा, एम.डी.

यहां हम उस व्यक्ति की जन्मकुंडली को उदाहरण-स्वरूप लेने जा रहे हैं जिसने अमेरिका की राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक बिकी किताबें 'परफेक्ट हेल्थ' और 'एजलेस बॉडी, टाईमलेस माईन्ड' लिखी हैं। आजकल वे ह्यूमन पोटेन्शियल एंड माइन्ड/बॉडी मेडिसिन के कार्यकारी निदेशक हैं, और सेंडियागो में सेन्टर फॉर माइन्ड/बॉडी में सलाहकार भी हैं। महेश योगी के छात्र रहे डॉ. चोपड़ा ने आयुर्वेद और संपूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति में ध्यान की महत्ता को लोकप्रिय बनाने में अग्रणी कार्य किया है।

29	26	राहु 30	23
31	डॉ. दीपक चोपड़ा अक्टूबर 22, 1946 15:45 स्था. समय दिल्ली		शनि 40
20			इन्दु लग्न 35
27	शुक्र केतु 27	गुरु सूर्य बुध मंगल 24	चन्द्र 25

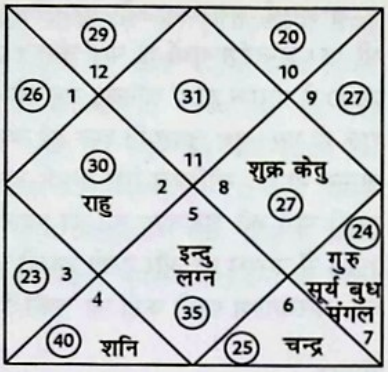

भोग्य दशा : सूर्यः 1 व-11 मा-14 दिन

3	5	5	5
4	सूर्य का अष्टकवर्ग		6
4			5
2	4	सूर्य 4	1

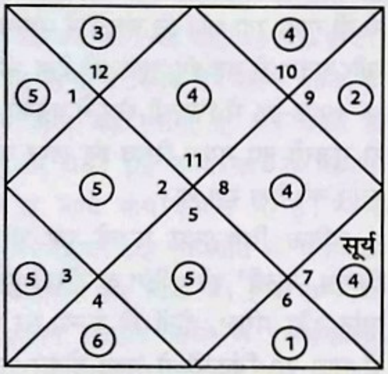

6	3	4	5
6	बुध का अष्टकवर्ग		6
3			5
4	3	बुध 4	5

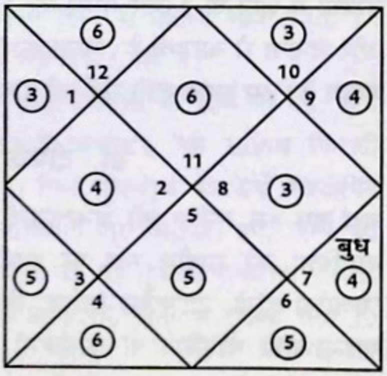

वे भारत में इतना नहीं जाने जाते जितना अमेरिका में, क्योंकि उनकी जन्मकुंडली के अनुसार भी विदेश ही उनकी 'कर्म भूमि' होनी थी।

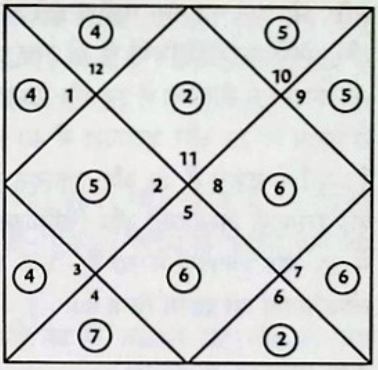

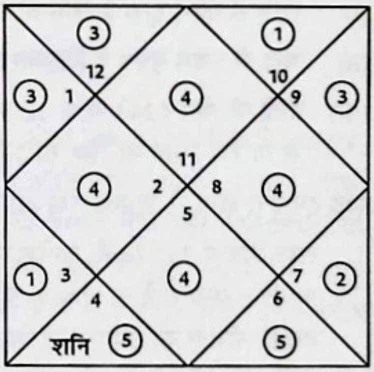

शिकागो सन टाइम्स ने उनकी पुस्तक 'परफेक्ट हेल्थ' की समीक्षा करते हुए लिखा, "उपचार की प्राचीन विधियों के साथ नवीन अनुसंधान को जोड़कर दीपक चोपड़ा एक आधुनिक हिपोक्रेट सिद्ध हुए हैं" 'योर एरोजिनस जोन्स व 'रियल मैजिक' जैसी पुस्तकों के लेखक वेयन डायर ने डॉ. चोपड़ा की पुस्तक 'एजलेस बॉडी, टाईमलेस माईन्ड' के बारे में यह टिप्पणी की जो काबिले-गौर है— "जरावस्था की समस्या से जुड़े सभी प्रश्नों को हल करने की दिशा में नई खोज है। किसने कल्पना की होगी कि इस सार्वभौमिक पहेली का भेद हमारे शरीर में न होकर हमारी चेतना में छिपा है? निस्संदेह डॉ. दीपक चोपड़ा जैसा कोई विलक्षण मेधावी ही ऐसी खोज कर सकता था।"

जन्म लग्न से भी अनेक उत्कृष्ट राजयोग और धन योग उनकी कुंडली में उपस्थित हैं किंतु हमारा विनम्र निवेदन यह है कि जब तक इन्दु लग्न से भी उतनी ही मनभावन तस्वीर न उभरती हो, जातक इतना समृद्धिशाली नहीं हो सकता।

शरीर और मन का नया मसीहा होने के साथ-साथ चोपड़ा ने अपनी पुस्तकों, भाषणों और संबंधित गतिविधियों से भी अकूत धन अर्जित किया है।

जन्म लग्न से दशम में 27 और एकादश में भी 27 बिन्दु हैं- लगभग औसत। चन्द्रमा से दशम में 23 और एकादश में 40 — यह त्वरित उछाल का जबरदस्त उदाहरण है। सूर्य से दशम में 40 और एकादश में 35 - दोनों ही अच्छे बिन्दु हैं - डॉ. चोपड़ा कई सरकारी अस्पतालों और चिकित्सा संस्थाओं द्वारा बुलाये जाते हैं। शनि से दशम में 26 और एकादश में 30 हैं - एक ठीक ठाक वृद्धि है। इसमें उनकी पुस्तकों की लोकप्रियता का रहस्य छिपा है।

इन्दु लग्न:

(i) लग्न से नवम तुला है जिसका स्वामी शुक्र 12 की संख्या देगा।

(ii) चन्द्र से नवम वृषभ है जिसका स्वामी भी शुक्र है अर्थात् 12 की संख्या।

(iii) दोनों के योग (24) में से 12 का गुणक निकालने पर शेष आया 12, चन्द्रमा से बारहवें स्थान पर सिंह राशि है जो इन्दुलग्न हुआ।

यदि हम इन्दु लग्न से कुंडली देखें तो यह तस्वीर सामने आती है:

1. लग्न सिंह में 35 बिंदु हैं, लग्नेश सूर्य के सिंह राशि में 5 और तुला में 4 बिंदु हैं। वह तीन अन्य ग्रहों के साथ है और नीचभंग राजयोग भी बना रहा है। इस तरह उसकी नीचता का उपयुक्त परिहार भी हो रहा है। यह महत्वपूर्ण है कि इन्दु लग्न उन्हीं चार ग्रहों की युति से एकादश स्थान पर है जो इस कुंडली में समस्त ऐश्वर्य की कुंजी छिपाये हैं।

2. द्वादशेश चन्द्रमा धन कारक द्वितीय भाव में है और द्वादश भाव विदेश का कारक 40 अंकों से युक्त होकर कुंडली का सर्वाधिक बली भाव भी है — जिसका साफ संकेत है विदेश जाकर असीम समृद्धि की प्राप्ति। कर्क में चन्द्रमा के 7 बिंदु हैं और कन्या में 4, जहां वह अवस्थित है। शनि के मकर राशि में 1 बिंदु और कुंभ में 4, और कर्क में 5 हैं जहां वह स्थित है।

3. एकादशेश बुध, इन्दु लग्न के स्वामी सूर्य के साथ पराक्रम के घर तृतीय भाव में बैठा है। यहीं पर लेखन का कारक व आध्यात्मिक और धार्मिक ग्रंथों का कारक स्वयं गुरु भी क्रमशः पंचमेश व अष्टमेश होकर उनके साथ स्थित है। त्रिकोणेश और केन्द्र दोनों का स्वामी होकर योगकारक मंगल, इनके साथ बैठकर विशेष ऊर्जा दे रहा है। मंगल और बुध तर्क शक्ति के दाता हैं, बृहस्पति उसमें लेखकीय बुद्धिमत्ता प्रदान कर रहा है और सूर्य उस लेखन को सर्वजनहिताय के लक्ष्य से

जोड़ रहा है। बुध के मिथुन में 5 बिन्दु हैं, कन्या में भी 5 हैं और तुला में 4 बिन्दु हैं, गुरु के धनु में 5, मीन में 4 और तुला में 6 अंक है (और इस तरह सूर्य से अस्त होने का दोष भी क्षीण हो गया)। मंगल के मेष में 4, वृश्चिक में 3 और तुला में भी 3 अंक हैं।

4. एक अर्थ-त्रिकोण का स्वामी शनि (छठा घर) दूसरे अर्थ त्रिकोण के घर (दूसरे घर) को देख रहा है जहां द्वादशेश बैठा है - यह भी विदेश में समृद्धि पाने का सूचक है।
5. चार ग्रहों का प्रतिस्थापक ग्रह शुक्र चौथे घर में उत्प्रेरक ग्रह केतु के संग बैठकर दसवें घर को देख रहा है। इसी कारण यह कुंडली किसी भी औसत कुंडली से काफी ऊंची उठ गई है।

दशा

सूर्य से शुरु करके डॉ. चोपड़ा ने दशाओं का बहुत अच्छा क्रम देखा है। चन्द्रमा, मंगल और राहु के बाद 1983 में बृहस्पति की महादशा के आरम्भ के साथ उनकी ख्याति फैलनी शुरु हुई। बृहस्पति इंदु लग्न के स्वामी सूर्य और एकादशेश और द्वितीयेश बुध के साथ संबद्ध है। 'परफेक्ट हेल्थ' बृहस्पति-बुध की दशा में 1990 में लिखी गई। 1994-95 में बृहस्पति-सूर्य की दशा चली और उनकी लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ती गई।

गोचर

1983 में शनि 2 बिंदु लेकर तुला से गुज़र रहा था। तभी 6 बिंदु लेकर बृहस्पति भी वहां से गुज़र के ही चुका था और अब वृश्चिक में भी 6 बिंदुओं से युक्त होकर विचरण कर रहा था। 1990 में बृहस्पति कर्क पर था जो उसका उच्च स्थान है। बृहस्पति के अपने अष्टकवर्ग में 7 बिंदु हैं तथा सर्वाष्टकवर्ग में 40, 1994 में बृहस्पति पुनः तुला में 6 बिंदुओं से युक्त होकर आया और तत्पश्चात् वृश्चिक में 6 बिंदुओं से होकर गुज़रा।

निज़ाम हैदराबाद

राजनैतिक दृष्टिकोण से निज़ाम की कुंडली की चर्चा हम एक पिछले अध्याय में कर चुके हैं, लेकिन तब हमारी चर्चा का आधार सर्वाष्टकवर्ग ही था। सरसरी निगाह से देखें तो ऐसा कुछ भी नही है जो इस जन्मकुंडली को असाधारण

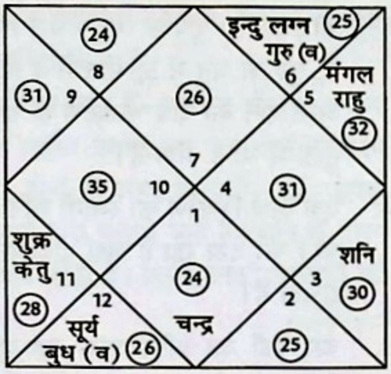

जन्म दशा : शुक्र-मंगल

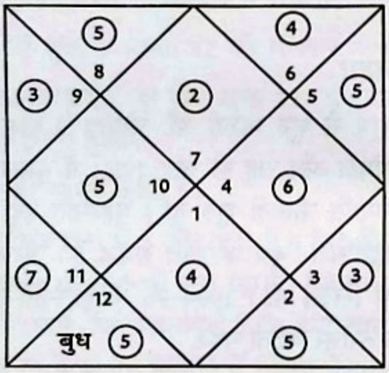

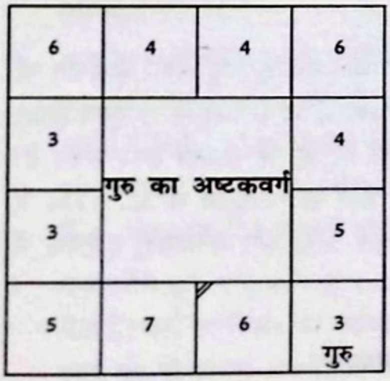

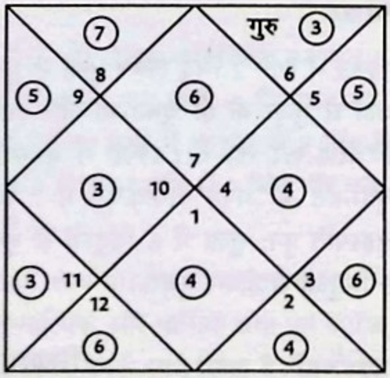

सिद्ध करे। केन्द्र रिक्त हैं, सिवाय सप्तम भाव में अकेले बैठे चन्द्रमा के। बारहवें घर में पहुंचकर गुरु भी अपना ओज खो बैठा है। जिस जन्मकुंडली में तीन ग्रह वक्री हों, और उनमें से एक नीच का हो, वह विशेष तो होगी ही।

इन्दु लग्न

(i) लग्न से नवमेश बुध की संख्या 8 है।

(ii) चन्द्र से नवमेश गुरु की संख्या 10 है।

(iii) दोनों के योग से 12 घटायें और चन्द्रमा से शेष 6 तक गिनने पर कन्या राशि में इन्दु लग्न आता है।

इन्दु लग्न से राजयोग व धनयोग

1. लग्न में 25 बिंदु हैं जो औसत से नीचे है। लेकिन इस क्षति की भरपाई वहां गुरु की उपस्थिति से हो रही है जो चतुर्थ और सप्तम भाव का स्वामी है, लग्नेश बुध भी लग्न को देख रहा है, गुरु और बुध ने न केवल घर परस्पर बदल लिये हैं, अपितु वे एक दूसरे को देख भी रहे हैं। बुध दशमेश भी है। इस तरह चारों केंद्र परस्पर जुड़ जाते हैं।

2. बृहस्पति के लग्न में मात्र 3 बिंदु हैं किंतु धनु और मीन में क्रमशः 5 और 6 बिंदु हैं।

3. बुध जहां स्थित है वहां 5 बिंदु हैं, और वह मिथुन और कन्या में क्रमश 3 और 4 बिंदुओं से युक्त है। एक प्रचलित मान्यता है कि जब कोई नीचस्थ ग्रह वक्री हो जाये तो बहुत बली हो जाता है और समृद्धि की उत्पत्ति करता है।

4. लग्नेश बुध को पंचमेश और षष्ठेश शनि दशम भाव से देख रहा है। शनि पंचमेश होकर दशम भाव में बैठा है।

5. मंगल, विपरीत राजयोग बनाते हुए बुध को देख रहा है। मंगल वक्री होने के कारण एकादश भाव पर भी प्रभाव डाल रहा है।

6. इस कुंडली में अर्थ-त्रिकोण तुला, कुंभ और मिथुन में पड़ रहे हैं। (2, 6, 10वां घर)। द्वितीयेश शुक्र छठे घर में है और षष्ठेश शनि दसवें घर में है। इस तरह तीनों अर्थ त्रिकोण एक दूसरे से और लग्नेश (जो दशमेश भी है) से जुड़ गये हैं।

7. शुक्र, जो द्वितीयेश और नवमेश है, उसे गुरु वक्री होकर सप्तम दृष्टि से देख रहा है। बुध भी वक्री होकर शुक्र से युति बना रहा है। सूर्य और बुध की युति तो है ही।

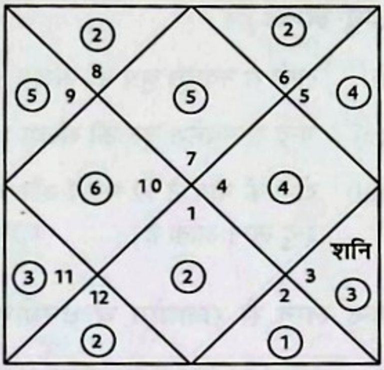

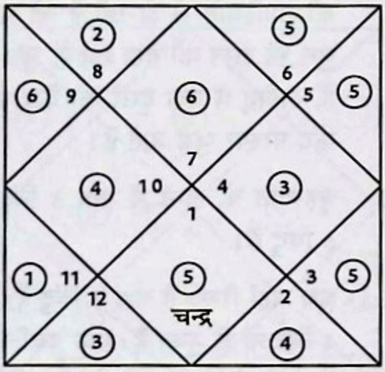

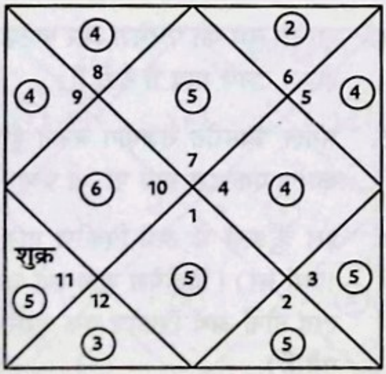

8. इस तरह हम देखते है कि लग्नेश बुध जन्म कुंडली में, चन्द्रमा को छोड़कर सभी ग्रहों से जुड़ गया है, किंतु नवांश में चन्द्रमा कन्या में है और मीन में बुध-गुरु युति को देख रहा है।

9. वक्री होकर गुरु चन्द्रमा को देख रहा है जिसका एकादशेश होने के कारण हमारी इस चर्चा में विशेष महत्व है। जहां चन्द्रमा स्थित है वहां 5 बिंदुओं से युक्त है और कर्क राशि में 4 बिंदुओं से। चन्द्रमा ने इन्दु लग्न में 5 बिंदु प्रदान किये हैं।
10. इन्दु लग्न से दशम स्थान पर 30 और एकादश में 31 बिंदु है। लग्नेश बुध ने एकादश भाव में 6 बिंदु प्रदान किये हैं।

हाल के इतिहास में सर्वाधिक धनी व्यक्तियों में से एक निज़ाम की कुंडली में इंदु **लग्न** से निर्मित होते बलशाली धनयोगों और राजयोगों को दिखाने के लिये उपर्युक्त 10 सुयोग ही पर्याप्त हैं।

दशा

निज़ाम का जन्म शुक्र-मंगल दशा में हुआ था। द्वितीयेश शुक्र छठे घर में है। 1915 में जब वे बड़े हो गये थे, तब मंगल की महादशा शुरु हुई। जन्म लग्न से मंगल न केवल ग्यारहवें है, वह इन्दु लग्न के स्वामी बुध और उससे द्वितीयेश शुक्र को भी देख रहा है। साथ ही अगली महादशा के स्वामी राहु के साथ युति बनाये है। मंगल और राहु ने उन्हें असीम धन दिया। राजनैतिक अस्थिरता तब ही आई जब गुरु-शुक्र की दशा शुरु हुई।

गोचर

मुख्य ग्रहों के गोचर प्रभाव, देश की आजादी के समय कैसे रहे यह एक पूर्व अध्याय में हम देख चुके हैं।

जेफ बीजोज़

हैदराबाद का निज़ाम 20वीं सदी का धनिक था। अब आइए खंगालते हैं 21वीं सदी के धनिक की कुंडली। जेफ बीजोज़ दुनिया के सबसे धनवान व्यक्तियों में से एक हैं। मीन लग्न की इस कुंडली में अनेक राजयोग और धनयोग वैसे भी बन रहे हैं पर इन्दु लग्न से क्या परिस्थिति बन रही है यह देखना दिलचस्प होगा। मीन लग्न से एक प्रबल धनयोग है द्वितीयेश और एकादशेश की एकादश भाव में युति। यह युति इस कारण भी बहुत महत्वपूर्ण है कि दोनों ग्रह मंगल एवं शनि क्रमशः उच्च और स्वगृही हैं। चन्द्रमा और बुध की युति भी राजयोग बना रही है। बृहस्पति लग्नेश और चन्द्रेश दोनों एक साथ है, स्वगृही है, लग्न में है और लाभेश शनि द्वारा दृष्ट है। सूर्य दशम भावमध्य के एकदम निकट होकर दिग्बली है।

इन्दु लग्न की गणना

1. लग्न से नवमेश मंगल है जिसे 6 अंक प्राप्त हैं।
2. चन्द्रमा से नवमेश सूर्य है जिसे 30 अंक प्राप्त हैं।
3. दोनों के योग (30+6=) 36 को 12 से भाग दें तो एक प्रकार से 12 शेषफल है, जिसे चन्द्रमा से गिनने पर वृश्चिक राशि आती है। अतएव वृश्चिक इस कुंडली का इन्दु लग्न है।

इन्दु लग्न से राजयोग एवं धनयोग

1. लग्नेश मंगल उच्च का होकर चतुर्थेश, शनि के साथ युति कर रहा है, यह एक राजयोग है जो उपचय स्थान में बन रहा है। लग्न को धनेश एवं पंचमेश बृहस्पति देख रहा है जिसकी दृष्टि लाभ भाव पर भी है। लग्नेश मंगल से दशम स्थान में 41 बिन्दु हैं।
2. इन्दु लग्न से केन्द्र में मित्रराशिगत शुक्र है जो नवांश में स्वराशि तुला में स्थित है। शुक्र के अपने स्थान में 3/27 बिन्दु हैं, किन्तु वृषभ में 5 एवं तुला में 7 बिन्दु हैं। शुक्र से नवम में 41 बिन्दु हैं।
3. सबसे विशेष बात यह है कि धन भाव में चार ग्रहों की युति है। ये ग्रह हैं· नवमेश चन्द्रमा, दशमेश सूर्य तथा एकादशेश बुध। यह स्थिति न केवल धर्म-कर्माधिपति योग बना रही है वरन् प्रबल धनयोग भी निर्मित कर रही है। इस युति से 11वें भाव में 41 बिन्दु हैं।

जेफ बीजोज़ ने चन्द्रमा की दशा में 'अमेजन' की स्थापना की। चन्द्रमा न केवल इन्दु लग्न का नवमेश है, वह राजयोग और धनयोग का महत्वपूर्ण घटक भी है। क्या यह केवल संयोग है कि जेफ बीजोज़ की चन्द्रमा की दशा 5 जुलाई 1994 को प्रारम्भ हुई और इसी तारीख को 'अमेजन' की स्थापना हुई। चन्द्रमा की दशा के दस साल बाद आई मंगल की दशा जिसने बीजोज़ को बड़े धनवानों की लिस्ट में शामिल करा दिया। 1997-98 राहु-शनि के आते-आते बीजोज़ को दुनिया का सबसे अधिक धनी व्यक्ति घोषित कर दिया गया। तब तक उन्होंने 100 बिलियन डालर की संपदा बना ली थी। राहु से अष्टम में मंगल-शनि का बड़ा राजयोग बन रहा है, जिसमें षष्ठेश मंगल विपरीत राजयोग बना रहा है। राहु से एकादशेश भी मंगल ही है। राहु से नवम में शुक्र है और दशम में बृहस्पति। केतु अपने सहयोगियों और अपने राशीश बृहस्पति एवं नक्षत्रेश शुक्र के अनुसार काम कर रहा है।

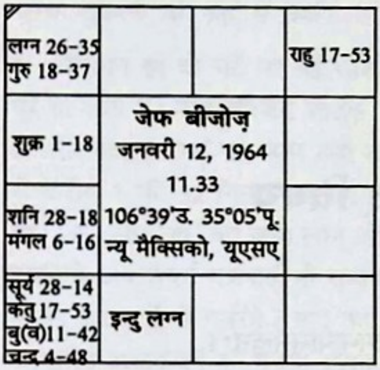

समुदाय अष्टकवर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
लग्न	3	5	4	2	2	5	6	5	3	5	3	6	49
सूर्य	3	3	2	5	7	5	5	4	2	6	5	1	48
चन्द्र	2	6	7	2	2	5	6	3	5	2	5	4	49
मंगल	4	4	0	3	4	3	5	2	3	5	5	1	39
बुध	6	4	2	3	6	5	8	4	3	5	5	3	54
गुरु	5	3	6	4	5	4	6	3	6	6	2	6	56
शुक्र	5	5	3	4	3	3	7	7	4	3	3	5	52
शनि	0	5	4	4	3	2	4	3	4	4	2	4	39
	25	30	24	25	30	27	41	26	27	31	27	24	337

जो लोग कहते हैं कि छठे, आठवें और बारहवें भावों में बिन्दु कम होने चाहिएं, उन्हें इस कुंडली का अवलोकन अवश्य करना चाहिए। इसमें सर्वाधिक बिन्दु 41 प्रमुख लग्न मीन से आठवें में और इन्दु लग्न वृश्चिक से बारहवें में हैं। 'अमेजन' एक ग्लोबल कम्पनी है (बारहवां भाव) जिसने नवाचार (अष्टम भाव) का भरपूर उपयोग करके बीजोज़ को दुनिया के धनवानों की सबसे अगली पंक्ति में ला खड़ा किया है।

बीजोज़ के प्रशंसकों और विरोधियों दोनों की कमी नहीं है। सन् 2022 में उनकी नेटवर्थ लगभग 177 बिलियन डालर्स है।

20

विवादास्पद विषय

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥

भगवद्गीता VII-25

मेरे स्वरूप के योगमाया से पूर्णतया आवृत्त होने के कारण मोहग्रस्तजन
मेरे अजन्मे व अपरिवर्तनशील रूप को नहीं पहचान पाते।

किसी भी विकासमान प्रायोगिक विज्ञान की भांति, अष्टकवर्ग के क्षेत्र में भी विद्वान परस्पर मतभेद रखते हैं। हम यह अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि ज्योतिष के छात्रों के समक्ष उन्हें निष्पक्ष भाव से रख दें। आशा है भविष्य में अनुसंधानकर्त्ता सांख्यिकी के आधार पर कई विवादों को हल करके किसी निश्चित मत पर पहुंच सकेंगे। सांख्यिकी पर आधारित अनुसंधान में कंप्यूटर का प्रयोग विशेष सहायक होगा विशेषकर अष्टकवर्ग के क्षेत्र में।

1. भाव कुंडली बनाम राशि कुंडली

कुछ विद्वानों का मत है कि अष्टकवर्ग गणना जन्म कुंडली (सामान्य कुंडली) से न करके भाव कुंडली से करनी चाहिये।

जैसा कि सब जानते हैं, लग्न के सही अंश ही भाव-मध्य निश्चित करते हैं और एक भाव उसके दोनों ओर लगभग 15° तक रहता है। श्रीपति एवं अन्य गुणीजनों द्वारा दिया गया यह सिद्धांत भावों में ग्रहों की स्थिति में प्रायः परिवर्तन कर देता है, विशेषकर यदि लग्न बहुत कम अंशों पर हो अथवा बहुत अधिक। इस तरह प्रायः भाव, राशि के समान नहीं होता और एक से अधिक राशि तक फैला होता है। अतः यदि एक भी ग्रह भाव कुंडली में अपना स्थान बदल ले तो अष्टकवर्ग की पूरी गणना में परिवर्तन आ जायेगा।

भाव कुंडली के पक्ष में तर्क

1. औसतन हर दो घंटे पर नई राशि का उदय होता है और 24 घंटे में 12 लग्न पूरे हो जाते हैं। मान लीजिये जातक 'क' का जन्म तब हुआ हो जब लग्न 1° का हो और जातक 'ख' का जन्म उसी राशि में 29° पर हुआ हो। 'ख' का जन्म 'क' से करीब 1 घंटे 52 मिनट बाद तब हुआ जब अगली राशि का उदय होने ही वाला था। 'क' और 'ख' की जन्म लग्न और ग्रहों की स्थिति जाहिर है, समान रहेगी और इसलिये अष्टकवर्ग गणनाएं भी समान होंगी। किंतु क्या 'क' और 'ख' जीवन भर समान घटनाओं से गुजरेंगे? यदि नहीं, तो इसका अर्थ यह हुआ कि राशि चक्र पर आधारित अष्टकवर्ग की गणना उचित नहीं है।

वे जुड़वां बच्चे जो कुछ मिनटों के अन्तराल पर जन्म लेते हैं और अलग-अलग भाग्य भोगते हैं, इसका ज्वलंत उदाहरण हैं।

2. भाव कुंडली लग्न के समान अंश होने के बावजूद अक्षांशों के बदल जाने पर भी बदल जाती है, जबकि जन्म कुंडली में इसका पता नहीं लगता।

3. यद्यपि अधिकतर ज्योतिषी भाव कुंडली को अधिक महत्ता नहीं देते और अपनी भविष्यवाणियां जन्म कुंडली को आधार बनाकर करते हैं, किंतु यह शास्त्र सम्मत नहीं है। शास्त्र यही कहते हैं कि दोनों कुंडलियों को देखा जाये क्योंकि एक ग्रह एक राशि में होते हुए भी अगले या पिछले भाव-संबंधित फल दे सकता है। इसके विपरीत अपने रेखाशों के अनुसार दो ग्रह अलग राशियों में होकर भी भाव-संधि के एक ओर होने पर, उसी एक भाव से संबंधित फल देंगे।

4. कुछ योग केवल भावों के आधार पर बनते हैं, राशियां कोई भी हों। जैसे गज केसरी योग के लिये मात्र इतना आवश्यक है कि चन्द्रमा और बृहस्पति एक दूसरे से केन्द्र में हों। राशियां बीच में नहीं लाई जाती, यद्यपि योग के बलाबल का अनुमान लगाने में उन पर एक दृष्टि अवश्य डाली जानी चाहिए।

5. राशि पर आधारित कक्ष्या निर्धारण हर जातक के लिये हर ग्रह का गोचर एक समान कक्ष्या में मानकर चलेगा क्योंकि राशि का 1/8 विभाजन निश्चित है। चूंकि समान लग्न वाले जातकों द्वारा भोगे गये फल अलग-अलग होते हैं यह कक्ष्या विभाजन उचित नहीं। कक्ष्या निर्धारण अधिक संवेदनशील बनाया जा सकता है यदि वह भाव-संधि पर आधारित हो न कि राशि-संधि पर।

कल्याण वर्मा और गुणाकर भी इसी मत का समर्थन करते हैं। अत: इस मत के अनुसार अष्टकवर्ग गणना भाव कुंडली पर आधारित होनी चाहिये न कि राशि कुंडली पर।

राशि कुंडली के समर्थन में तर्क

राशि कुंडली के आधार पर अष्टकवर्ग गणना के समर्थक उपर्युक्त तर्कों का खण्डन निम्न तर्कों से करते हैं:

1. वैदिक ज्योतिष की पूरी परंपरा हमें राशि चक्र पर आधारित रहने को बाध्य करती है।

(अ) राज योग, अरिष्ट योग व अन्य योग लग्न से राशियों की स्थिति पर आधारित होते हैं। पराशर भावों के समान विभाजन को ही लेकर चलते हैं। जैमिनी और वराहमिहिर राशि और भाव स्थितियों में भेद नहीं करते। केवल मंत्रेश्वर, श्रीपति और बाद के लेखकों ने ही भाव एवं राशियों में अन्तर करके भ्रम उत्पन्न किया है। वराहमिहिर ने 'भवन' शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है वह भाव जहां ग्रह का निवास है। ग्रह एक समय में किसी निश्चित राशि में ही रहता है। प्राचीन शास्त्र भी राशि को ही सर्वोपरि बताते हैं और दोनों को एक समान मानकर ही चलते हैं।

(ब) वर्ग कुंडलियां जैसे नवांश, दशांश, त्रिशांश आदि सभी राशियों के सूक्ष्मतर विभाजनों पर ही आधारित हैं, भावों को कहीं विचार में नहीं लिया जाता। जन्म लग्न के अंशों से जो भी अन्तर पड़ता है वह वर्ग कुंडलियों में सामने आ जाता है। कुंडलियां बनाते हुए षष्ट्यंश (राशि के साठवें भाग की) कुंडली भी बनती है। जब हमारा शास्त्र इतने सूक्ष्म वर्गों तक गया है तो उसे भाव बनाम राशि विवाद में उलझाया जाना अनुचित है।

(स) नाड़ी अंश (150वां भाग) को पुनः पूर्व-भाग और परा-भाग में बांटकर राशि के 300वें भाग तक की गणना की जा सकती है। नाड़ी अंश के पहले भाग में जन्मा जातक उसी नाड़ी अंश के दूसरे भाग में जन्मे जातक से भिन्न जीवन भोगता है।

(द) यदि भाव का सिद्धांत अपनाया जाये तो हर ग्रह के भिन्नाष्टक वर्ग की गणना के लिये हर ग्रह पर आधारित भाव-संधि की अलग-अलग गणना पहले करनी चाहिए।

(ध) भिन्न रेखांशों पर आधारित भावों की गणना असमान भावों का निर्माण करती है। अधिक रेखांशों पर जन्मे जातक की कुंडली में अत्यधिक असमान भाव हो जाते हैं और कभी-कभी दो भाव एक ही राशि में समाहित हो जाते हैं। यह असमानता कुछ राशियों में शून्य बिंदुओं की स्थिति पैदा कर देगी। यह विसंगति भाव-आधारित अष्टकवर्ग को अर्थहीन कर देगी।

(न) जैमिनी ज्योतिष जिसमें ग्रह-दशा के स्थान पर राशि दशा का प्रयोग चलता है, व्यर्थ में ही हास्यास्पद उलझन में घिर जायेगा यदि राशि बनाम भाव का वितंडा खड़ा कर दिया जाये।

2. (अ) तात्कालिक मित्रता आदि मुख्यतया राशि आधारित होती है। उन्हें केवल भाव-आधार देना अर्थहीन होगा।

(ब) किसी भाव का स्वामित्व एक राशि के पास होता है। जब एक भाव दो राशियों में बंटा हो तो स्वामित्व किसके पास माना जायेगा और इस तरह के सिद्धांतों को कैसे लागू करेंगे जैसे - केंद्र में क्रूर ग्रह नैसर्गिक शुभता व अशुभता खो देते हैं।

3. (अ) त्रिकोण-शोधन राशियों के आधार पर किया जाता है। भाव-आधारित शोधन का कोई आधार नहीं है।

(ब) एकाधिपत्य शोधन ग्रह स्वामित्व के आधार पर किया जाता है। यदि यह शोधन भाव पर आधारित किया जाये तो शोध्यपिंड एकदम बदल जाएंगे।

(स) राशि गुणक के सिद्धांत को बदल कर भाव गुणक बना लेना शास्त्र की मूल भावना पर कुठाराघात करना है।

4. कक्ष्या को राशि के आठ बराबर भागों पर आधारित किया गया है, हर भाग 3°45' का है। भाव पर इस सिद्धांत को लागू करके इस सिद्धांत को तोड़ने मरोड़ने की आज्ञा कैसे दी जा सकती है। जो विद्वान ऐसा करते भी हैं वे यह तक देखने की आवश्यकता नहीं समझते कि भाव पूरे 30° का है भी या नहीं (जो कि प्राय: नहीं होता)। भाव-आधारित विधि में 3°45' की अवधि भी हर भाव के लिये परिवर्तनशील होगी। उसकी गणना हर भाव के लिये अलग करनी होगी हर भाव के 1/8 भाग के बराबर, अत: कक्षा कभी 3° की और कभी 4° की (और कभी बीच की) हो जाएगी। इनके अनुसार भाव आधारित पद्धति के समर्थक अपनी उलझनें अनावश्यक रूप से बढ़ा रहे हैं।

2. कुल बिन्दु 337 या 386

यह मतभेद सर्वाष्टक बिंदुओं की कुल संख्या 337 मानी जाए या 386, इस पर आधारित है। यह अन्तर लग्नाष्टक के 49 बिंदुओं को सर्वाष्टक में शामिल करने से आता है। लग्नाष्टक के 49 को 337 में जोड़ें तो 386 बनता है।

लग्नाष्टक को क्यों 'नहीं' जोड़ा जाए?

1. विभिन्न ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्गों में लग्न से शुभ स्थानों पर बिन्दु लिये गए हैं और हर ग्रह द्वारा प्राप्त किये कुल बिंदुओं में लग्न द्वारा प्रदत्त बिंदु भी सम्मिलित होते हैं। तालिका 20-I में लग्नाष्टक बिंदु वही हैं और उसी क्रम में हैं जो तालिका 2.1 में विभिन्न ग्रहों के लिये लग्न के अन्तर्गत दिये गये है। अत: लग्नाष्टक को सर्वाष्टक बिंदुओं में जोड़ा जाये तो लग्न की ओर से आये बिंदु दो बार जोड़ में आ जायेंगे।

2. लग्न एक स्थिर अवधारणा है और ग्रहों की तरह चलायमान नहीं है। इसलिये लग्न को भी उसी तरह प्रयुक्त किया जाये जैसे ग्रहों को - यह असंगत होगा।

3. यदि लग्नाष्टक का योग सर्वाष्टक में जोड़ें तो कुल 386 बिंदु हो जाते हैं। 386 को 12 से भाग देने पर प्राप्तांक 32 आता है, जिसे औसत अंक माना जाना चाहिये। जबकि 337 को 12 से भाग देने पर 28 आता है जो सर्वस्वीकृत औसत अंक है। किसी भी शास्त्रीय पुस्तक में 32 को औसत अंक नहीं माना गया। वह जादुई अंक 28 ही है जिसके ऊपर ग्रह अच्छा फल देते हैं और नीचे कमज़ोर होते जाते हैं। 28 ही सर्वत्र औसत अंक माना गया है।

लग्नाष्टक को क्यों सम्मिलित किया जाए

1. महर्षि पराशर ने लग्न का अष्टकवर्ग भी सातों ग्रहों के अष्टकवर्ग की तरह दिया है ताकि पूरा 'अष्टक' बन जाये। यह मात्र संयोग प्रतीत होता है कि ये बिंदु करीब-करीब उन्हीं स्थानों पर हैं (2 स्थानों के अपवाद को छोड़कर) जो लग्न द्वारा विभिन्न ग्रहों के निजी अष्टक वर्गों में दिये गये हैं। यह दोहराव नहीं है क्योंकि लग्नाष्टक में विभिन्न ग्रह अपने-अपने स्थान से लग्न के निजी भिन्नाष्टक में शुभ बिंदु प्रदान करते हैं (न कि लग्न से शुभ स्थानों पर जैसा कि अन्य ग्रहों के भिन्नाष्टक में लग्न द्वारा दिये बिंदु होते हैं)। ये दोनों नितान्त भिन्न बातें हैं और इनके द्वारा बिंदु बिल्कुल अलग राशियों में देय होते हैं।

2. लग्नाष्टकवर्ग आयु निर्धारण में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि हर ग्रह द्वारा दिये गये वर्षों को लग्न द्वारा दिये गये वर्षों से जोड़ना होता है।

3. यद्यपि लग्न स्थिर होता है किंतु लग्नेश तो गोचर करता ही है इसलिये लग्नेश के गोचर का विचार करते समय लग्नाष्टक वर्ग को (लग्न स्वामी के निजी अष्टकवर्ग के साथ-साथ) प्रयुक्त करना चाहिये। विशेषकर तब जब जातक के मन, बुद्धि और शरीर से संबंधित घटनाओं पर विचार किया जा रहा हो।

लग्नाष्टकवर्ग रुग्णता इत्यादि के काल निर्धारण में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

लग्नाष्टक बनाने के लिए तालिका 20-I का प्रयोग अभीष्ट है:

तालिका 20-I: ग्रहों से शुभ स्थान

लग्नाष्टक वर्ग									(49)
सूर्य	3	4	6	10	11	12			
चन्द्र	3	6	10	11	12				
मंगल	1	3	6	10	11				
बुध	1	2	4	6	8	10	11		
बृहस्पति	1	2	4	5	6	7	9	10	11
शुक्र	1	2	3	4	5	8	9		
शनि	1	3	4	6	10	11			
लग्न	3	6	10	11					

तालिका 20-I का प्रयोग अपनी उदाहरण कुण्डली पर करें तो लग्न का निम्नांकित प्रस्तारक तैयार होता है।

तालिका 20-II: लग्न का प्रस्तारक

	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य	✓			✓	✓		✓				✓	✓	6
चन्द्र		✓	✓	✓			✓			✓			5
मंगल	✓		✓			✓				✓	✓		5
बुध	✓	✓		✓		✓		✓		✓	✓		7
बृहस्पति		✓	✓		✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	9
शुक्र		✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓			7
शनि	✓	✓		✓		✓	✓		✓				6
लग्न			✓	✓				✓			✓		4
भिन्नाष्टक लग्न	4	5	5	6	3	5	4	3	2	5	5	2	(49)

1. लग्न में छठे, आठवें और बारहवें भावों से अधिक बिन्दु अच्छे स्वास्थ्य का परिचायक है।

2. लग्नाष्टकवर्ग में कम बिन्दुओं वाली राशियों पर से पाप ग्रहों का गोचर स्वास्थ्य हानि का सूचक होता है।

कुंडली में लग्नाष्टक को इस प्रकार दर्शाया जा सकता है:

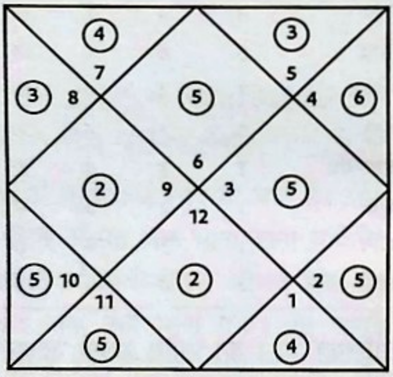

3. राहु का अष्टकवर्ग

पराशर ने राहु के अष्टकवर्ग को नहीं लिया है, केवल यवनाचार्य ने लिया है (संदर्भ शंभु होरा प्रकाश व अन्य)। राहु चूंकि एक छाया ग्रह है, उसे अष्टकवर्ग में शामिल नहीं किया गया है। उसे किसी राशि का स्वामित्व भी नहीं दिया गया है। संभवतः इन्हीं करणों से न तो राहु को शेष सात ग्रहों की तरह सर्वाष्टक वर्ग में कोई स्थान दिया गया है, और न उसे किसी कक्ष्या का स्वामी बनाया गया है।

निस्संदेह राहु के भिन्नाष्टक वर्ग का सदुपयोग राहु के गोचर, दशा और अन्तर्दशा के प्रभावों को देखने के लिये किया जा सकता है। यदि राहु को 18 वर्ष की दशा का स्वामी बनाया जा सकता है और सामान्य गोचर में भी इसका विचार किया जा सकता है (जन्म चन्द्र से 3, 6, 10, 11 स्थानों में शुभ) तो इसे अष्टकवर्ग में क्यूं नहीं सम्मिलित किया जा सकता।[1]

आश्चर्य है कि यवनाचार्य या किसी अन्य आचार्य ने भी केतु के अष्टकवर्ग[2] पर क्यों नहीं ध्यान दिया। यह हमारी धृष्टता ही होगी यदि केतु के लिये भी वही शुभ स्थान मान लें जो राहु के लिये माने गए हैं क्योंकि इसके लिए कोई शास्त्रीय आधार उपलब्ध नहीं है।

---

[1] राहु के पक्ष में जो तर्क ऊपर दिये गये हैं वे केतु के संबंध में भी दिए जा सकते हैं।

[2] केतु के अष्टकवर्ग के लिए कृपया हमारी पुस्तक 'प्रैक्टिकल अष्टकवर्ग' देखें।

तालिका 20-III: ग्रहों से शुभ स्थान[3]

राहु अष्टकवर्ग								(43)
सूर्य	1	2	3	5	7	8	10	
चन्द्र	1	3	5	7	8	9	10	
मंगल	2	3	5	12				
बुध	2	4	7	8	12			
बृहस्पति	1	3	4	6	8			
शुक्र	6	7	11	12				
शनि	3	5	7	10	11	12		
लग्न	3	4	5	9	12			

तालिका 20-IV: राहु का प्रस्तारक

राशि ▶	1 मंगल बुध	2 सूर्य शुक्र गुरु	3	4 शनि	5 चन्द्र	6 लग्न	7	8	9	10	11	12	कुल योग
सूर्य		✓	✓	✓		✓		✓	✓		✓		7
चन्द्र	✓	✓			✓		✓		✓		✓	✓	7
मंगल		✓	✓		✓							✓	4
बुध		✓		✓			✓	✓				✓	5
बृहस्पति		✓		✓	✓		✓		✓				5
शुक्र	✓						✓	✓				✓	4
शनि	✓	✓	✓			✓		✓		✓			6
लग्न		✓			✓			✓	✓	✓			5
राहु का भिन्नाष्टक	3	7	3	3	4	2	4	5	4	2	2	4	(43)

---

[3]डॉ. बी.वी रमन ने मंगल से सप्तम स्थान पर भी एक बिंदु देकर राहु के लिये कुल अंक 43 से बढ़ाकर 44 लिये हैं। हमने जितने भी संदर्भ ग्रंथों का अवलोकन किया, *फलदीपिका* और *शंभु होरा शास्त्र* समेत, सब 43 बिंदु ही मानते हैं।

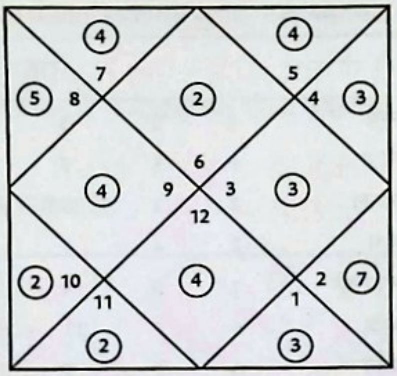

तालिका 20-III का प्रयोग कर अपनी उदाहरण कुंडली के लिये राहु का प्रस्तार चक्र तालिका 20-III में दर्शाया गया है।

5 नवम्बर 1960 में कैनेडी जब राष्ट्रपति निर्वाचित हुए तब राहु चन्द्रमा पर 4°20'56' से गुज़र रहे थे। ऐसा राहु-चन्द्र दशा में हुआ। राहु के अष्टकवर्ग में सिंह का चद्रमा 4 बिंदुओं से युक्त है।

4. त्रिकोण शोधन की विधि

'त्रिकोणेषु तु यन्न्यूनं तत्तुल्यं त्रिषुशोधयेत्'

त्रिकोण शोधन कैसे किया जाये, इसे लेकर मुख्य विवाद पराशर की उपर्युक्त पंक्ति की व्याख्या को लेकर ही है।

प्रथम दृष्टिकोण: 1. जब किसी त्रिकूट में तीनों स्थानों पर समान बिंदु न हों तो तीनों में से सबसे कम संख्या को घटाकर शेष रख लें (कृपया शोधन संबंधित अध्याय 15 देखें)।

अन्य दृष्टिकोण: 1. जब किसी त्रिकूट में बिंदुओं की संख्या असमान हो तो सभी को लघुतम संख्या के बराबर मान लें।

प्रथम दृष्टिकोण उत्तर भारत में मान्य है जबकि दूसरा दक्षिण भारत में, जिसे वहां बलभद्र के होरा रत्न ने लोकप्रिय किया।

2. दोनों ही दृष्टिकोण सिद्धांत नं. 2 पर एक मत हैं - यदि किसी त्रिकूट में एक संख्या शून्य हो तो घटाने की आवश्यकता नहीं, किंतु यह दूसरे दृष्टिकोण से संगति नहीं रखता।

3. दोनों ही दृष्टिकोण तीसरे सिद्धांत पर भी एक हैं - यदि तीनों संख्यायें समान हों तो सभी को शून्य के बराबर मान लें। यह भी दूसरे दृष्टिकोण के साथ मेल नहीं खाता।

4. दोनों दृष्टिकोण चौथे सिद्धांत पर भी एक हैं– यदि किसी गुट में दो शून्य हों तो तीसरे को भी शून्य मान लें, किंतु यह प्रथम दृष्टिकोण के मूल भाव के विरुद्ध जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि दोनों ही दृष्टिकोणों के समर्थक, स्वयं अपने दृष्टिकोण में असंगति उत्पन्न करके भी दूसरे दृष्टिकोण से 'कुछ न कुछ' लेने को तैयार हैं। 'जातक पारिजात' दूसरे दृष्टिकोण को मानता है, जहां पहले के साथ समझौता किया गया है। केवल 'प्रश्न मार्ग' कहता है कि जहां किसी त्रिकूट में एक या दो शून्य हों तो तीसरे को भी शून्य मान लें - जो दूसरे दृष्टिकोण से संगति रखता है। किन्तु प्रथम दृष्टिकोण की सहमति में कहता है कि यदि सभी संख्यायें एक कूट में समान हों तो सभी को शून्य मान लें।

अंतिम रूप से शोध्य पिंड की गणना पर इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ेगा कि कौन-सा दृष्टिकोण अपनाया जाये। केवल विस्तृत सांख्यिक-संधान ही निश्चित करेगा कि किससे सही परिणाम सामने आयेंगे।

5. बिन्दु: पराशर बनाम वराहमिहिर

यह विवाद ग्रहों की स्थिति से मूल शुभ स्थानों को लेकर है। यद्यपि वैदिक ज्योतिष के आधार ऋषि पराशर और वराहमिहिर सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि और लग्न के अष्टकवर्ग पर एकमत हैं किंतु चन्द्रमा और शुक्र पर मतभेद है। इसे तालिका में विवादास्पद बिंदुओं पर वृत्त बनाकर दिखाया गया है।

	पराशर	वराहमिहिर
चन्द्र का अष्टकवर्ग जन्मकालीन बृहस्पति से शुभ स्थान	1 (2) 4 7 8 10 11	1 4 7 8 10 11 (12)
शुक्र का अष्टकवर्ग जन्मकालीन मंगल से शुभ स्थान	3 (4) 6 9 11 12	3 (5) 6 9 11 12

इन मतभेदों को छोड़कर शेष शुभ स्थान दोनों के यहां समान हैं क्योंकि इन शुभ स्थानों के निर्धारण का तर्काधार विलुप्त है अतः किसी भी एक का समर्थन या विरोध करना हमारे लिये संभव नहीं है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में पराशर को माना है। इस पुस्तक में हम वरामिहिर के अनुसार चले हैं। डॉ. बी. वी. रमन ने वराहमिहिर को प्रामाणिक माना है।

अन्तर केवल दो स्थानों पर होने के कारण सर्वाष्टक वर्ग एवं भिन्नाष्टक वर्ग पर मामूली असर पड़ता है। किन्तु शोध्य पिण्ड की गणना में इनसे उथल-पुथल हो सकती है।

सर्वशंसाचक्रः
अष्टकवर्ग एक दृष्टि में

अष्टकवर्ग और जन्म कुंडली के सभी महत्वपूर्ण अंगों को इस चक्र में एक साथ दर्शाया गया है। जन्म कुंडली में ग्रहों की राशि और भाव स्थिति के साथ-साथ, इसमें सर्वाष्टक वर्ग, भिन्नाष्टक वर्ग और प्रस्तार चक्र भी दिये गये हैं।

सर्वशंसाचक्र एक ही दृष्टि में राशि कुंडली एवं गोचर पर आधारित अष्टकवर्गीय विश्लेषण करने में सहायता करता है।

चक्र की निर्मितिः

हमारी उदाहरण कुंडली का सर्वशंसाचक्र यहां दिखाया गया है।

1. सबसे आंतरिक चक्र 'भाव' दर्शाता है।
2. उससे बाहर के चक्र में भाव में स्थित राशियां दिखाई गई हैं।
3. फिर जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति है।
4. उससे बाहर के चक्र में, सर्वाष्टक वर्ग की संख्याएं और परिधि के साथ-साथ क्रम से सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि के भिन्नाष्टकवर्ग दिये गये हैं। इस प्राकृतिक क्रम को छोड़ इनको कक्ष्या के क्रम में भी दर्शाया जा सकता है।
5. उसके बाद के बाहरी चक्र में सबसे पहले शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में उन ग्रहों को दर्शाया गया है जिन्होंने शुभ बिंदु प्रदान किये हैं। यहां कैनेडी की उदाहरण कुंडली के लिये बनाये गये सर्वशंसाचक्र में कन्या राशि में शनि, गुरु, मंगल, बुध और लग्न द्वारा प्रदत्त बिंदु दर्शाए गये हैं। सूर्य, शुक्र और चन्द्र ने कन्या राशि में कोई बिंदु नहीं दिये।

   शनि के प्रस्तार चक्र से मिली यह सूचना अष्टकवर्ग विश्लेषण के एक महत्वपूर्ण तत्व पर रोशनी डालती है – कि किस कक्ष्या में बिंदु है और किस में नहीं।

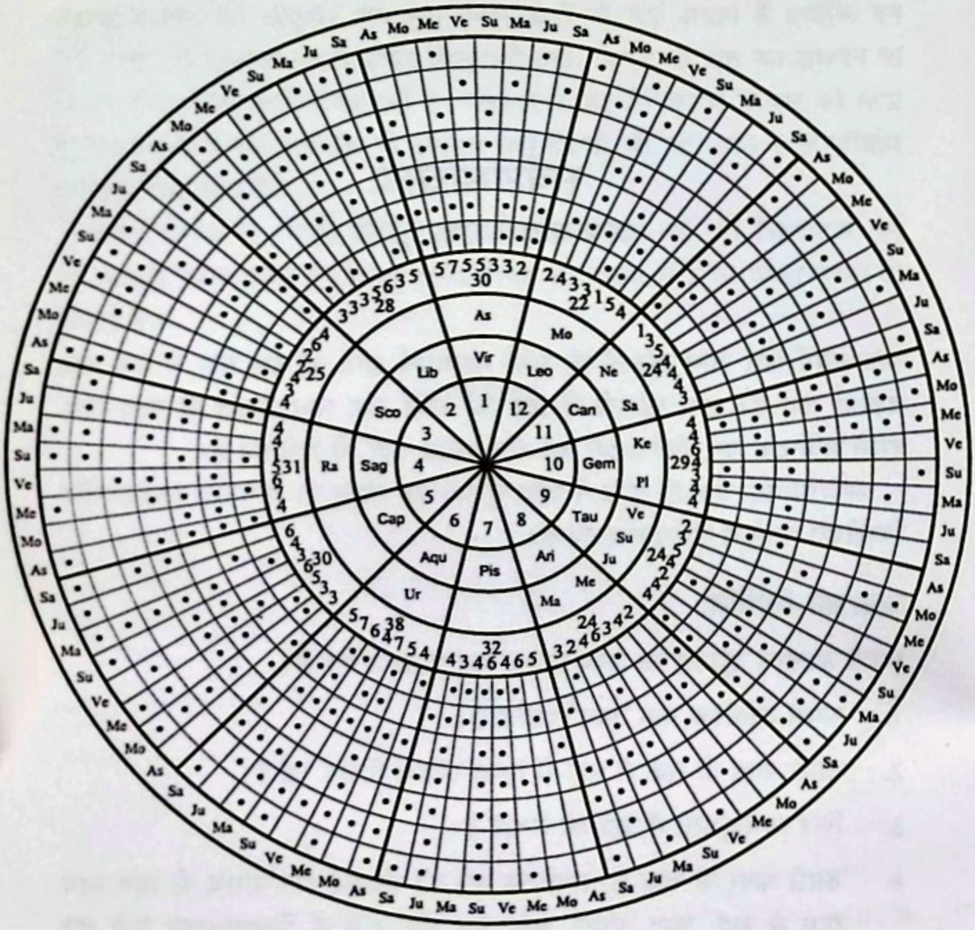

6. शनि के वृत्त के बाद बाहर की ओर बढ़ते हुए वृत्तों में क्रमशः शुक्र, गुरु, बुध, मंगल, चन्द्रमा और सूर्य के प्रस्तार चक्र दिये गये हैं।

7. सबसे बाहर का वृत्त, कक्ष्या स्वामियों के क्रम को ध्यान रखकर बनाया गया है। वे नियम जो इस सर्वशंसाचक्र के प्रयोग के आधार हैं, प्राय: अध्याय 3, 5 और 6 में दिये गये हैं।

अधिकतर कंप्यूटर प्रोग्राम अष्टकवर्ग गणनायें तालिका के स्वरूप में देते हैं। कुछ प्रोग्राम अष्टकवर्ग को सर्वशंसाचक्र के स्वरूप में भी देते हैं जिसमें सारी सूचनाएं एक ही वृत्ताकार तालिका में समाहित हैं।

'आईकास' पर दो शब्द

सत्यं-परं-धीमहि

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (आईकास) वैदिक ज्योतिष पठन-पाठन में संलग्न एक उत्कृष्ट संस्था है। इस संस्था की नींव डॉ बी. वी. रमन ने वर्ष 1984 में रखी थी और यह संस्था आज भी ज्योतिर्विद्या और उससे सम्बन्धित अन्य विधाओं को प्रसारित करने में निरंतर कार्यरत है।

डॉ बी. वी. रमन को 20वीं सदी का वराहमिहिर माना जाता है। डॉ रमन ने आधुनिक युग में ज्योतिष ज्ञान को यथोचित सम्मान दिलाने का बीड़ा उठाया। उन्होंने अनेक प्राचीन ज्योतिष ग्रंथों का अनुवाद अंग्रेजी में किया ताकि भारत और विदेश का शिक्षित समुदाय विषय को भली-भांति जान सके। उनकी भविष्यवाणियां समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं जो अधिकांशतः सत्य निकलीं जिनके कारण उन्हें ज्योतिष जगत में एक विशेष सम्माननीय स्थान मिला। अपनी अनुवाद की हुई पुस्तकों के कारण उनके आसपास समाज के अनेक उच्चासीन महानुभाव आकर्षित होने लगे। इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के जुड़ने से आईकास जैसी संस्था को मजबूत बुनियाद मिली।

वर्तमान समय में प्रो. ए. बी. शुक्ल आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) इस संस्था के मानद राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। वे अपने शोधों द्वारा ज्योतिष विषयों के मूल तत्वों को समझने की दिशा में कार्यरत हैं। उन्होंने, 'ज्योतिष एक वेदांग है', को स्थापित करने में सराहनीय कार्य किया है। उनका मानना है कि भगवद् गीता, वेद, उपनिषद व पुराण आदि ज्योतिष ज्ञान के मूल उद्गम हैं।

यह संस्था देश भर के अपने 55 से अधिक केंद्रों में (वर्तमान में) विधिवत रूप से ज्योतिष पाठ्यक्रम चलाती है। इस संस्था से अब तक हजारों छात्र-छात्राएं ज्योतिष का विधिवत रूप से ज्ञान अर्जित कर चुके हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, न्यायाधीश, वैज्ञानिक, चिकित्सक, अभियंता, प्राध्यापक, चार्टर्ड अकाउंटेंट व अन्य क्षेत्रों से सम्बन्धित विशिष्ट लोगों ने इस संस्था में ज्योतिष का अध्ययन किया और उनमें से अनेक ज्योतिष के शिक्षक बनकर निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं। यहां के पाठ्यक्रम 6 माह से लेकर 2 वर्ष तक के हैं।

यह संस्था नियमित रूप से सत्र के अंत में विद्यार्थियों के ज्ञान का आंकलन करती है और उन्हें ज्योतिष प्रवीण, ज्योतिष विशारद, वास्तु प्रवीण, वास्तु आचार्य, हस्तरेखा प्रवीण, हस्तरेखा विशारद, नाड़ी प्रवीण और नाड़ी विशारद की उपाधि प्रदान करती है। परीक्षा नियंत्रक (सीओई) जून व दिसंबर माह में वर्ष में दो बार इन उपाधियों के लिए परीक्षा आयोजित करता है।

यहां विद्यार्थियों को ज्योतिष के विभिन्न विषयों पर शोध करने के लिए प्रेरित किया जाता है व 'ज्योतिष भूषण' की उपाधि दी जाती है। आईकास के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कई विषयों पर शोध किये हैं जिनमें वक्री ग्रह, अतिवर्ती नक्षत्र आदि शामिल हैं।

आईकास के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री एस. एन. कपूर ने वर्ग कुण्डलियों पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। डॉ बी. वी. रमन के पद चिन्हों पर चलते हुए उन्होंने अपने कार्यकाल में अनेक छात्रों को शोध के लिए प्रेरित कर उनका मार्ग दर्शन किया है।

अंध विश्वास से परे समाज के उच्च शिक्षित वर्ग से आने वाले अनेक लोग ज्योतिष के अध्यापन में जुटे हैं ताकि इस विज्ञान को आम लोगों तक पहुंचाया जा सके। यह संस्था ज्योतिष, हस्त रेखा और वास्तु जगत के गणमान्य विद्वानों को एक छत्र के नीचे लाने का प्रयास कर रही है ताकि उन सब के ज्ञान में एक सामंजस्य स्थापित हो सके और ज्योतिष क्षेत्र में प्रगति हो सके।

आईकास, ज्योतिष जगत की एक शीर्ष संस्था है, जो ज्योतिष को विश्व में उचित सम्मान व स्थान दिलाने के लिए अथक प्रयास कर रही है। इस उद्देश्य से आईकास के कई सदस्य विदेशों में जाकर ज्योतिष विषयों पर अपने विचार, ज्ञान आदि की प्रस्तुति करते रहते हैं।

BOOKS PUBLISHED BY CoE - ICAS

- **Vastu Chintamani:** Based on Lectures of Prof. A. B. Shukla *–Navneet Kaushik*
- **वास्तु चिन्तामणि :** प्रोफेसर आर्य भूषण शुक्ल के व्याख्यानों पर आधारित *–नवनीत कौशिक*
- **Navamsha :** An Essential Tool for Predictive Astrology *–Dr. T S Vasan*
- **नवांश :** फलादेश के लिए अनिवार्य वर्ग *–डॉ. टी एस वासन*
- **Mathematical Astrology** *–S Tyagarajan*
- **गणितीय ज्योतिष** *–एस त्यागराजन*
- **Palmistry : Sutra & Siddhanta** *–Vinay Aditya*
- **हस्तरेखा :** सूत्र एवं सिद्धान्त *–विनय आदित्य*
- **Birth Time Determination :** Medical, Scriptural and Astrological Perspectives *–Kuldeep Jiwani (Guide: Prof. A. B. Shukla)*
- **Nadi Praveshika :** A Handbook for Teachers & Students Conceptualized by *Prof. A. B. Shukla. Editors: Vinay Aditya, Soumya Kumar*
- **Education & Profession :** Based on Half a Century of Study and Research *–Justice S. N. Kapoor, Vinay Aditya*
- **Fascinating Venus** *–Pt. Satish Sharma*
- **Multifaceted Dispositors** *–M. G. Kastwar*
- **Splendour of Vargas :** Most Influential Divisional Charts *Conceptualized by: Justice S. N. Kapoor, Prof. A. B. Shukla* *Edited by: Vinay Aditya*
- **Dr. B. V. Raman :** Jottings from his Astrological Diary ... And More *Compiled by: Gayatri Devi Vasudev*
- Indian Council of Astrological Sciences (Examinations Prospectus)

Buy books online at: www.eshopicas.com

Books are available at:
all ICAS Chapters, Centres, Office of CoE and Amazon

पुस्तक के विषय में

- अष्टकवर्ग जैसे दुरूह एवं शुष्क विषय पर पहली बार एक दिलचस्प पुस्तक।
- अष्टकवर्ग का गणित एक उदाहरण कुंडली द्वारा दर्शाया गया है।
- सर्वाष्टकवर्ग के नियम विभिन्न कुंडलियों पर लगाकर दर्शाए गए हैं।
- अष्टकवर्ग के सिद्धान्त प्रधानमंत्रियों, राष्ट्रपतियों एवं अन्य विशिष्ट जनों की कुंडलियों पर लगाकर दिखाए गए हैं।
- साढ़े-साती का सही आकलन – अष्टकवर्ग द्वारा।
- समृद्धि कब, क्यों और कितनी – इन्दु लग्न एवं अष्टकवर्ग के सम्मिश्रण से ज्ञात करें।
- अष्टकवर्ग में विवादास्पद विषयों पर तर्कसम्मत गहन टिप्पणियां।
- खोज-परक विद्यार्थियों के लिए अष्टकवर्ग में नई सामग्री।
- अन्यान्य उदाहरण कुंडलियों द्वारा अष्टकवर्ग के सिद्धान्तों का सटीक प्रतिपादन।

विनय आदित्य बी.टेक., आई आई टी कानपुर, ज्योतिष बृहदाचार्य (ICAS)

1990 से ज्योतिष के पठन-पाठन में संलग्न हैं। अनेक देशी-विदेशी ज्योतिष संस्थाओं के संकायों में सक्रिय हैं- जैसे ICAS (भारत), Astrovedic Akademie (जर्मनी व यूरोप) ACVA (अमरीका), BAVA (ब्रिटेन)।

प्रकाशन और मुद्रण द्वारा जीविकोपार्जन के साथ-साथ कई अन्य विषयों में दिलचस्पी है, यथा - फोटोग्राफी, होम्योपैथी, देसी चिकित्सा पद्धतियां, ट्रान्सैक्शनल एनालिसिस, विपश्यना एवं अन्य ध्यान पद्धतियां।

9 788195 499830

मूल्यः ₹ 350/- रुपए